मगही

लोक-साहित्य

[पटना विश्वविद्यालय द्वारा डी० लिट्० उपाधि के लिए स्वीकृत "मगही भाषा और साहित्य का अध्ययन" शीर्षक शोध-प्रबन्ध का एक अंश]

डॉ० सम्पत्ति अर्याणी, एम० ए० (हिन्दी-पालि), डी० लिट०
हिन्दी विभाग, सायंस कालेज
पटना विश्वविद्यालय, पटना

हिन्दी साहित्य संसार
दिल्ली-७ :: पटना-४

प्रकाशक
किरण प्रकाशन
जहानाबाद (गया)





प्रथम संस्करण १९६५



मूल्य : दस रुपये



मुद्रक :
कालिका प्रेस, आर्यकुमार रोड, पटना-४
और
पटना वीकली नोट्स प्रेस, आर्यकुमार रोड, पटना-४

मगही भाषा-समृद्धि एवं उसकी गौरवमयी संस्कृति

की

मूर्तिमयी देवी, वरदात्री, प्रेरणादात्री

मंगलमयी माँ

(श्रीमती शान्ति देवी)

के

चरण-कमलों में

यह श्रद्धा-सुमन

समर्पित !



श्रीमती शान्ति देवी

प्राक्कथन

डॉ॰ सम्पत्ति अर्याणी लोक साहित्य की मर्मज्ञा हैं। अभी हाल ही में आपने मगही भाषा और साहित्य पर अनुसंधान करके डी॰ लिट्॰ की उपाधि पटना विश्वविद्यालय से प्राप्त की है। मगही लोक साहित्य आपकी ही रुचि है। अपने डी॰ लिट्॰ के अनुसंधान के निमित्त मगही क्षेत्र में घूम फिर कर जो सामग्री आपने प्राप्त की थी प्रतीत होता है उसका कुछ अंश इस ग्रंथ में उन्होंने दिया है।

भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से भारत का हिंदी भाषी क्षेत्र विविध महत्त्वपूर्ण बोलियों का जीता जागता जनालय है। इस क्षेत्र की अनेक बोलियों में वह जीवन शक्ति मिलती है जो उसमें स्वतंत्र भाषा की भावना पैदा करती है। ऐसी कितनी ही बोलियों का वर्णन हम ग्रियर्सन की लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया में मिलता है। किन्तु उनके उन विवरणों से हमें भाषा की भाषा वैज्ञानिक प्रकृति और प्रगति का पता चलता है। किसी भाषा या बोली की यथार्थ सामर्थ्य का ज्ञान हमें उसके साहित्य से अथवा उसकी अभिव्यंजना के प्रकृत स्वरूप से होता है।

डॉ॰ अर्याणी को यह श्रेय दिया जायगा कि उन्होंने मगही के सम्बन्ध में इस अनुसंधान द्वारा यही महत्त्वपूर्ण कार्य सम्पन्न किया है। मगही भाषा में प्राप्त लोक साहित्य का संग्रह एक कमी की पूर्ति करता है। हमें मगही की अभिव्यंजना सामर्थ्य का भी इससे ज्ञान हो जाता है।

हिन्दी में इधर लोक-साहित्य के विषय में एक चमत्कारक जागरण दिखाई पड़ती है। विदित होता है कि विद्वानों की मनीषा लोक-साहित्य में प्रवृत्त हो चली है। इस प्रवृत्ति के दो रूप स्पष्ट दिखायी पड़ते हैं—एक स्वतंत्र दूसरा विश्वविद्यालय की उपाधि के निमित्त। दोनों ही रूपों में हिन्दी में अच्छा कार्य हुआ है। यह वास्तव में श्लाघनीय है।

इन श्लाघनीय प्रयत्नों को कई पहलुओं में देखा जा सकता है। एक पहलू वह है जिसके लिए विदेशियों ने भारतीय लोक-साहित्य में रुचि दिखायी। इस पहलू के भी दो पक्ष थे—एक शासित को अधिकाधिक जानना—राजनीतिक पक्ष। दूसरा वैज्ञानिक अनुसंधान के विश्व मत प्रवर्त्तन में योग देना—ज्ञान यज्ञ का पक्ष। उन्नीसवीं-बीसवीं शती में विदेशियों के प्रयत्नों के ये दोनों पक्ष कहीं परस्पर गुँथे कहीं पृथक होकर लोक-साहित्य के संकलन और वैदुष्य-चर्चा को प्रोत्साहित करते रहे। विदेशी शासन में यह स्थिति प्रायः ज्ञान विज्ञान के सभी क्षेत्रों की थी।

दूसरा पहलू—रेनेसाँ या पुनराहरण का था। भारत ने श्रुतियों या कंठस्थ ज्ञान की परम्परा को आदि काल से महत्त्व दिया था। भारतीय इतिहास में हमें ऐसे कई प्रयत्न मिलते हैं जहाँ यहाँ की मौखिक परम्परा को संकलित करने के महत् प्रयत्न हुए हैं।

सबसे पहला प्रयत्न तो वेदों का ही है। वेदों की श्रुति संज्ञा महत्त्वपूर्ण संकेत से युक्त है। भगवान वेदव्यास ने अपने युग में सर्वत्र व्याप्त परंपराओं से समन्वित व्यवस्थित और संपादित किया। चारों वेदों के इस रूप पर वेदव्यास की छाप है वेदव्यास से पूर्व वेदों का क्या स्वरूप है इसका आज हमें ठीक ठीक पता नहीं। वेदव्यास ही महाभारत के संकलन कर्त्ता हैं—महाभारत क्या है? वह भी तो समस्त ऐतिहासिक परम्पराओं का संग्रह है जिसे व्यास जी ने वह रूप दिया जो आज प्राप्त है।

व्यास जी ने यह सब कुछ संस्कृत भाषा में किया। किन्तु संस्कृत से भिन्न प्रकृति की भाषा 'पैशाची' में ऐसा ही कार्य 'गुणाढ्य' ने किया—बड्ड कहा (बृहत् कथा) के द्वारा, जिसका संस्कृत रूपान्तर कथासरित्सागर में मिलता है। ऐतिहासिक विकास से भारतीयों की यह प्रवृत्ति खो गयी थी। सभी जातियों में ऐसे युग आते हैं जो अतीत के महान् ग्रन्थों से अभिभूत रहते हैं और उनसे अलग जाकर विचार ही नहीं कर सकते। मौलिकता का मूल्य ही नहीं रहता। वेद, पुराण, महाभारत, रामायण और कथासरित्सागर के बाद ऐसा ही युग भारतीय इतिहास में आया। इन्हीं ग्रन्थों की चर्चा करना, इन्हीं से सामग्री लेकर कथा-कृतियाँ रचना—युगधर्म—हो गया।

इसी प्रवृत्ति का नामकरण हुआ—आस्तिक प्रवृत्ति, वैदिक प्रवृत्ति या आर्य प्रवृत्ति। इस प्रवृत्ति ने अद्भुत रूप से 'रेजीमेण्टेशन आव थाट' अथवा "वैचारिक सीमा नियन्त्रण" सिद्ध किया। अतः लोकसाहित्य की ओर लौटने की प्रवृत्ति को पुनराहरण कहा जा सकता है।

बाद में श्री शान्ति ने जन विज्ञान की प्रवृत्ति को एक बार लोकाभिमुख करने का प्रयत्न किया पर उसकी प्रवृत्ति का मूल था—वही धार्मिक धरातल। यह धार्मिक लोकाभिमुख प्रवृत्ति हमें बंगाली भाषा के क्षेत्र में विशेष दृष्टिगोचर मिलती है, जहाँ विविध जनतान्त्रिक सम्प्रदायों ने लोक समाज अथवा लोकसाहित्य से सामग्री लेकर उसे अपने सम्प्रदाय प्रचार का माध्यम बनाया। "मनसा मंगल" आदि की कथा एक ऐसा ही विशेष उदाहरण है।

जो भी हो, उन्नीसवीं बीसवीं शती में भारतीय लोकसाहित्यिक प्रयत्न पुनराहरण के प्रयत्न थे। "Back to Vedas", "Back to Nature" की भाँति "Back to folk" भी एक नारा कहा जा सकता है।

इसी पुनराहरण को अन्तर-राष्ट्रीय लोकसाहित्यिक आन्दोलनों से विशेष प्रेरणाएँ मिलीं। ये आन्दोलन ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र के ही थे। अतः पुनराहरण का सबंध भाषाविज्ञान, इतिहास, दर्शन, धर्म विज्ञान आदि से होता रहा।

हिन्दी के क्षेत्र में लोकसाहित्य के इस नव जागरण के अच्छे फल मिले हैं। अनेकों बोलियों के क्षेत्रों में लोक-साहित्य का संकलन और उसका अध्ययन हो चुका है। पर मगही की सम्पत्ति पर यदा-कदा ही कुछ लिखा गया है। डॉ० अर्यांणी ने इस क्षेत्र में कुछ जम कर कार्य किया है। उसीका प्रसाद है—यह संग्रह।

इस संग्रह में तीन अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में "मगही की लोक-कथाएँ" दी गई हैं। इन लोक-कथाओं को लेखिका ने मगही के विविध क्षेत्रों तथा खंडों के नाम से दिया है अर्थात् गाँवों और नगरों के नाम से। इस प्रकार मगही के अन्तर्गत नालंदा, राजगृह, बेगमपुर, दानापुर, मनेर, खुसरूपुर, गया, जहानाबाद, रफुआकोल, सिमिरिया, बड़हिया, जमुई, पलामू, लतेहार, धनबाद, कुमारटोली, राजाडेरा, रांची, सिंहभूम से कथाएँ ली गयी हैं। मैथिली मिश्रित मगही में दक्षिण मुंगेर और बाढ़ के नमूने लिये गये हैं।

पूर्वी मगही में मानभूम जिला, बामरा, हजारीबाग जिला, रांची जिला, मयूरभंज स्टेट और मालदा जिला से उदाहरण लिए गये हैं।

स्पष्ट है, इस अध्याय में लेखिका ने बोलियों के स्वरूप को स्पष्ट करने के लिए उदाहरण-स्वरूप कहानियाँ दी हैं। इनका जितना भाषा-विज्ञान की दृष्टि से महत्त्व है, उतना लोककथाओं की दृष्टि से नहीं। किन्तु भाषा के स्वरूप को स्पष्ट करना भी आवश्यक माना जा सकता है।

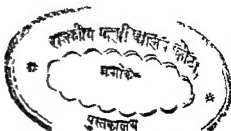
द्वितीय अध्याय के सकलन सपादन में प्रथम अध्याय से भिन्न क्रम और भिन्न दृष्टि अपनायी गयी है। इसमें लोकगीत अवसरानुकूल विषयों के आधार पर दिए गए हैं। अतएव मगही लोकगीतों के स्वरूप, प्रकृति और सांस्कृतिक तत्त्व का पूरा प्रतिनिधित्व इस संकलन में हमें मिलता है। प्रत्येक गीत के अन्त में टिप्पणी देकर और पाद-टिप्पणी में विशिष्ट शब्दों के अर्थ देकर इस संग्रह को लेखिका ने पूर्णतः उपयोगी बनाने का प्रयत्न किया है। इसमें भी लोककथा गीत विशेष ध्यान आकर्षित करते हैं।

तृतीय अध्याय में "मगही का प्रकीर्ण साहित्य" दिया गया है, जिसमें कहावतें मुहावरे और बुझौवल हैं।

इस प्रकार समूचे मगही लोकसाहित्य का इस ग्रंथ में एक अच्छा परिचय प्राप्त हो जाता है। इसके संकलन में लेखिका को निश्चय ही बहुत श्रम करना पड़ा होगा। पर इस ज्ञान के यज्ञ में उनकी यह आहुति श्लाघ्य ही मानी जायगी। आशा की जाती है कि आगे वे और भी पूर्ण और बड़ा संग्रह वैज्ञानिक प्रणाली से संग्रह करके प्रस्तुत करेंगी। इस संग्रह से अपने लोक साहित्य विषयक कार्य का उन्हें आरंभ मानना चाहिए, इति नहीं।

आगरा
२७-७-६४

डॉ० सत्येन्द्र,
के० एम० इन्स्टीट्यूट
आगरा विश्वविद्यालय
आगरा



निवेदन

किसी भी देश की समग्र सामाजिक सांस्कृतिक चेतना का प्रतिनिधित्व एवं प्रकाशन वहाँ का साहित्य ही करता रहा है। अब तक इस श्रेय का सेहरा केवल शिष्ट साहित्य के ही माथे बाँधा जाता रहा, पर पिछले दो तीन दशकों से विद्वानों ने अनुभव करना आरम्भ किया कि उपर्युक्त दृष्टिकोण एकांगी एवं अपूर्ण है। कारण शिष्ट साहित्य समाज के एक छोर पर विशिष्ट वर्ग की ही गाथा प्रस्तुत करता रहा है, जबकि राष्ट्र एवं समाज की मौलिक संस्कृति का निर्माता तो जनसामान्य रहा है। इस लोकसामान्य की जीवन झाँकी शिष्ट साहित्य में नहीं के बराबर मिलता है। वस्तुतः इसकी बाँकी झाँकी अपनी सम्पूर्णता में सन्नद्ध रूप में लोकसाहित्य में ही मिलती है। इस दृष्टि से भारतीय लोकसाहित्य का महत्त्व अनुपेक्षणीय एवं अपरिसीम है। कारण महनीय संस्कृति का दावा जिन वर्गों के अतीत को प्राप्त है, उनमें सम्भवतः यह सर्वोपरि है। यह प्रसन्नता का विषय है कि जब से भारतीय विद्वानों ने उक्त तथ्य का अनुभवगम्य साक्षात्कार किया है, भारतीय लोकसाहित्य के अनुशीलन परिशीलन की प्रवृत्ति प्रखर हो चल पड़ी है।

पिछले कुछ वर्षों में भारतीय लोकसाहित्य पर अच्छा एवं सराहनीय कार्य किया गया है। इस क्रम में हिन्दी की विविध बोलियों—ब्रजभाषा, भोजपुरी, मैथिली, मालवी, राजस्थानी, अवधी आदि के भाषागत पक्ष एवं लोकसाहित्य पर विस्तृत एवं अभिनन्दनीय अध्ययन प्रस्तुत किए गये हैं। यह आश्चर्य का विषय रहा कि मगध क्षेत्र की मगही भाषा एवं उसका लोकसाहित्य चिरकाल तक उपेक्षणीय बना रहा। आश्चर्य का विषय इसलिए कि मगध क्षेत्र किंवा मगध का भारतीय संस्कृति के निर्माण में जो योगदान है उसे कौन भुला सकता है? [illegible] दिया गया और जब क्षेत्र विशेष की ही सर्वांशतः उपेक्षा कर दी गई तब उसकी भाषा एवं लोकसाहित्य का उपेक्षणीय बना रहना तो सहज अन्वय क्रम में ही द्रष्टव्य है। पर यह उपेक्षा भी आकस्मिक नहीं थी। इसका ऐतिहासिक पृष्ठाधार था। उसके औचित्य की मीमांसा का यहाँ अवकाश नहीं है, पर वस्तुस्थिति का सत्य यही है। यही कारण है कि डा० ग्रियर्सन की अनावृष्ट चर्चा के अतिरिक्त अन्यत्र इस गौरवमयी समृद्ध भाषा के स्वरूप एवं साहित्य के संस्थापन विश्लेषण का प्रयास नहीं मिलता।

पर यह उपेक्षा मगही भाषा के लिए आगे चल कर विघातिनी प्रमाणित हुई। कारण इस उपेक्षा के फलस्वरूप उत्पन्न अराजकतामयी स्थिति को इसके अस्तित्व शून्य होने का प्रमाणपत्र मान लिया गया और बड़े असुन्दर दावे सामने रखे जाने लगे। अपनी भाषा से सहज स्नेह स्वाभाविक है, पर इसकी अभिव्यक्ति किसी अन्य भाषा के अस्तित्व की अस्वीकृति के मूल्य पर होना ठीक नहीं। दुर्भाग्यवश मगही भाषा और साहित्य को यह दुर्भाग्य झेलना पड़ा।

मगध पुत्री होने के नाते उपर्युक्त स्थिति से मैं पर्याप्त कष्ट पाती रही। और इसी कष्टमयी स्थिति से उस निश्चय का जन्म हुआ, जो मगही भाषा एवं साहित्य के अध्ययन संकलन, सम्पादन प्रकाशन के मेरे संकल्प में बदल गया। जहाँ तक इस संकल्प को कार्यान्वित करने के प्रयास का प्रश्न है, वह सन् १९५३ से प्रारम्भ हुआ और सन् १९५७ से पूर्ण व्यवस्थित ढंग से चलने लगा।

वस्तुत जो संकल्प मैंने किया था, उसे 'व्यक्ति' का नहीं, किसी 'संस्था' का होना चाहिए था। पर जब 'व्यक्ति' द्वारा 'संस्था' का कार्यभार उठा लिया गया हो, तो लक्ष्य-पूर्ति के मार्ग में अनेकानेक कठिनाइयों एवं बाधाओं का आ खड़ा होना स्वाभाविक ही था। यह देखकर प्रसन्नता होती है कि विद्वज्जनों की दृष्टि में अपनी लक्ष्य पूर्ति में मैं कृतकार्य रही।

प्रस्तुत ग्रंथ मेरे डी० लिट्० की उपाधि के निमित्त स्वीकृत शोध प्रबन्ध "मगही भाषा और साहित्य का अध्ययन" के साहित्य खंड का परिशिष्ट भाग है। इसमें मगह क्षेत्र के बारम्बार पर्यटन के फलस्वरूप लोककंठ से संचित मगही लोकगीतों, लोककथागीतों, लोककथाओं, लोकनाट्यगीतों, लोकगाथाओं, मुहावरों, कहावतों एवं पहेलियों के कुछ चुने नमूने अपने प्रकृत स्वरूप सौंदर्य के साथ प्रस्तुत हैं। 'उपोद्घात' में इनकी विवेचनात्मक पृष्ठभूमि प्रस्तुत कर दी गई है। उसके साथ इनके अवलोकन से मगही लोकसाहित्य के स्वरूप-वैविध्य एवं समृद्धि का सहज ही अनुमान हो जाता है।

मगही लोक-साहित्य पर शोध कार्य करने की प्रेरणा प्रातः स्मरणीय आचार्यवर डॉ० विश्वनाथ प्रसाद (निदेशक केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय दिल्ली) से मिली थी। उनके बहुमूल्य निर्देशन के अभाव में न अपनी लक्ष्य पूर्ति में कभी उत्साह नहीं हो पाती। उनके चरण-कमलों में मैं अपने श्रद्धा सुमन समर्पित करती हूँ। परम आदरणीय आचार्य डॉ० सत्येन्द्र ने प्रस्तुत ग्रंथ का प्राक्कथन लिख कर जो प्रोत्साहन मुझे दिया है, उसके लिए हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ।

इस क्रम में श्रद्धेय आचार्य डॉ० शिवनन्दन प्रसाद (उपनिदेशक, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, दिल्ली), डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय स्व० महापंडित राहुल सांकृत्यायन, स्व० आचार्य नलिन विलोचन शर्मा स्व० ब्रह्मदेव नारायण (ऐडवोकेट, पटना हाईकोर्ट), स्व० डॉ० बद्री नारायण प्रसाद (भूतपूर्व कार्य वाहक पटना विश्वविद्यालय), पूज्य पिता स्व० बाबू डरोशाह जी, श्री भगनलाल जी, श्री रामनारायण शास्त्री (राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना), श्री चन्द्रशेखर प्रसाद सिन्हा (राजगीर) से जो बहुमूल्य सहयोग एवं निर्देशन मुझे मिले हैं, उनके लिए, उनके प्रति एवं अन्यान्य सभी महानुभावों के प्रति जिनसे किसी भी प्रकार की सहायता मुझे मिली है, मैं हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करती हूँ।

स्नेहमयी जननी श्रीमती शान्तिदेवी परमादरणीय श्री हरिदास दवाल, प्रिय बहन श्रीमती पुष्पा अर्याणी श्रीमती कौशल्या अर्याणी, श्रीमती कृष्णा अर्याणी, प्रिय अनुज श्री देवेन्द्र कुमार, श्री रामनाथ गुप्त एवं प्रिय पुत्रवधू श्रीमती प्रतिभा अर्याणी, कुमारी उषा अर्याणी एवं कुमारी किरण अर्याणी को धन्यवाद देना अपने को धन्यवाद देने जैसा लगता है। मगही लोक *साहित्य के संग्रह, संकलन, पाण्डुलिपि-निर्माण एवं विविध संस्करों में उपलब्ध ज्ञातव्य तथ्यों के* विवरण संचयन में इनसे अपार सहायता मिली है।

अंततः मगही क्षेत्र के वे अगणित शिक्षित—अशिक्षित ग्रामीण एवं नागर नर-नारी जन मेरे कोटिशः धन्यवाद के पात्र हैं, जिनकी कृपा से ही मगही लोक साहित्य की बहुमूल्य मणियाँ प्राप्त हो सकीं।

सम्पत्ति अर्याणी

नवम्बर १९६४
राजेन्द्र नगर, पटना—४

ध्वनि-संकेत

⊥ (अ)—ह्रस्व विलम्बित अथवा उदासीन स्वर का संकेत-चिह्न। यथा—ह्लइ। सगलेइ।

ऽ (अऽ)—यह दीर्घ विलम्बित स्वर का लिपि चिह्न है। व्यंजनान्त अथवा स्वरान्त शब्दों के अन्त में आकर उसका यह विलम्बित उच्चारण प्रकट करता है। यथा— न ऽ। वह ऽ। आव ऽ।

ॅ (ऑ)—यह स्वर 'ऑ' का ह्रस्व रूप है। उच्चारण में प्राय यह 'अ' की तरह सुनाई पड़ता है। यथा—कॉटलक। ऑक्लक।

ˇ (ऍ)—ह्रस्वोच्चरित 'ए' स्वर। यथा—ऍरहरा। ऍक्को।

ˇ (ऐॅ)—ह्रस्वोच्चरित 'ऐ' स्वर। यथा—ऐॅसनो। कैॅसनो।

ॅ (आॅ)—ह्रस्वोच्चरित 'आ' स्वर। यथा—आॅहि। मरोॅरलक।

ॅ (औॅ)—ह्रस्वोच्चरित 'ओ' स्वर। यथा—बोलोॅलकइ। गिरौॅलक्इ।



विषय-सूची

उपोद्घात

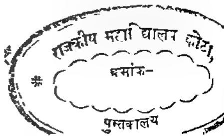
प्रथम-अध्याय

मगही की लोक-कथाएँ

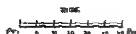
द्वितीय अध्याय

मगही के लोकगान

लोकगीत



मगही भाषाक्षेत्र





उपोद्घात

उपोद्घात

लोक-साहित्य का स्वरूप

'लोक' पद का अर्थ विराट् समाज की ओर संकेत करता है। ऋग्वेद् के पुरुष सूक्त के १० ६० मन्त्र में कहा गया है —

"सहस्रशीर्षा पुरुष सहस्राक्ष सहस्रपात्।

अर्थात् "वह (लोक) विराट् पुरुष है, जिसे हजारों सिर, हजारों आंखें एवं हजारों चरण हैं। अत 'लोक' पद का अभिप्रेत अर्थ साधारण जनसमाज ही है। इसी में यह विराट् कल्पना समाहित हो जाती है। भूत-भविष्य-वर्तमान मे प्राप्य मानव-समाज की नैसर्गिक प्रवृत्तियाँ तज्जन्य उनके आचार व्यवहार, मान्यताएँ, धार्मिक आस्थाएँ तथा मौलिक द्वन्द्वों के आधार पर उत्पन्न प्रतिक्रियाएँ आदि सभी सम्मिलित हैं, इस शब्द में अन्तर्भावित हैं। चूँकि इन नैसर्गिक प्रवृत्तियों का सम्बन्ध अभिव्यक्ति से है और अभिव्यक्ति का साहित्य से, अत लोकाभिव्यक्ति जब अपने रागात्मक गुणों के कारण आलोचित होती है, तब उसे 'लोक-साहित्य' की संज्ञा दी जाती है।

लोक-साहित्य की अर्थगत व्याप्ति बड़ी ही विशाल है। यह किसी व्यक्ति विशेष द्वारा निर्मित नहीं होता। उसके पीछे परम्परा वर्तमान रहती है, जिसका सम्बन्ध समाज से रहता है। उसकी अभिव्यक्ति सामूहिक होती है। वे सारी मौखिक अभिव्यक्तियाँ, जो व्यक्ति के व्यक्तित्व के कठघरे से बाहर की हैं तथा जो समान रूप से समाज की आत्मा को व्यक्त करने की क्षमता रखती हैं, लोक-साहित्य की श्रेणी में आती हैं।

लोक-साहित्य और परिनिष्ठित साहित्य का अन्तर

लोक-साहित्य 'परिनिष्ठित साहित्य' से स्वभावत कहीं अधिक व्यापक है। यही कारण है कि यह परिनिष्ठित साहित्य के लिए उपजीव्य साहित्य का कार्य करता है। इसे ही दृष्टिपथ में रख कर विद्वानों ने 'लोकसाहित्य' की तुलना बहती हुई नदी से की है और परिनिष्ठित साहित्य की किनारों में बँधे हुए जलाशय से।। जब जलाशय का पानी सूखने लगता है, तब नदी के पानी से उसकी पूर्ति की जाती है, और परिनिष्ठित साहित्य जब विकास की गति में पीछे पड़ने लगता है, तब लोक साहित्य के अध्ययन से उसे सहायता मिलती है।

परिनिष्ठित साहित्य नियमों के कठघरे में बंद होता है। उसकी एक बँधी सुनिश्चित अभिव्यंजना प्रणाली होती है। उसमें रमणीयता लाने के लिए सप्रयास रस, अलंकार, गुण आदि साहित्यिक तत्त्वों की योजना की जाती है। पर कहा जा चुका है कि लोक साहित्य इन बंधनों से मुक्त और स्वच्छंद होता है। उसके सुनिश्चित रचयिता होते हैं और वह लिखित रूप में जीवित रहता है। पर लोक-साहित्य सामाजिक उद्‌गारों का प्रतिनिधित्व करता है। उसके रचयिता अज्ञातप्राय होते हैं और वह मौखिक परम्परा में जीवित रहता है। यही कारण है कि कुछ विद्वानों

ने इसे "अपौरुषेय" भी कहा है। वेद का भी 'अपौरुषेय' कहने का बहुत सम्भव है, यही रहस्य हो। इस दृष्टिकोण को स्वीकार कर लेने पर भारतीय साहित्य का बहुत बड़ा हिस्सा लोक-साहित्य में अन्तर्भुक्त किया जा सकता है।

लोक साहित्य एवं लोकवार्त्ता

मगही लोक साहित्य की विवेचना करने के पहले लोकवार्ता पर प्रकाश डालना आवश्यक है, क्योंकि मगही लोकसाहित्य उसी का अंग है।

"लोकवार्ता" शब्द अंग्रेजी के "फोकलोर (Folklore) पर्यायवाची पद के रूप में प्रचलित है। हिन्दी में इसके मुख्य रूप से प्रचार करने का श्रेय श्री कृष्णानन्द गुप्त एवं डा० वासुदेव शरण अग्रवाल को है। डा० वासुदेव शरण अग्रवाल ने हिन्दी में वर्णवा के वार्ता-सम्बन्धी प्रथा के अनुरूप (८४ वैष्णवों की वार्ता, गृहवार्ता आदि) फोकलोर का "लोकवार्त्ता" पर्याय स्वीकृत किया है।[1] डा० सत्येन्द्र[2] भी "लोकवार्ता" को ही 'फोकलोर' का पर्यायवाची पद मानते हैं। फोकलोर का प्रचलित अर्थ है—जनता का साहित्य, ग्रामीण कहानी आदि। पर उसका विशिष्ट अर्थ है—जनता की वार्ता। जनता जो कुछ कहती सुनती है या उसके सम्बन्ध में जो कुछ कहा सुना जाता है, वह सब लोकवार्ता है। जिस प्रकार प्रत्येक देश की अपनी भाषा होती है उसी प्रकार इसकी अपनी लोकवार्ता होती है। लोकवार्ता का उद्गम स्थल जनता का मानस होता है। इस प्रकार यदि प्रत्येक देश की लोकवार्ता का विधिवत् संग्रह किया जाये तो प्राचीन से अर्वाचीन काल तक की वहां की बौद्धिक नैतिक, धार्मिक और सामाजिक अवस्था का सम्पूर्ण चित्र उपस्थित हो सकता है।

"फोकलोर" के सम्बन्ध में बॉटकिन के विचार द्रष्टव्य हैं —"लोकवार्ता बहुत दूर की या कोई बहुत प्राचीन वस्तु नहीं है बल्कि वह हमलोगों के बीच का ही एक गतिशील एवं जीवित सत्य है। कारण, यहां अतीत वर्तमान से और अशिक्षित समाज उस समाज से कुछ कहना चाहता है, जो अपने मौलिक मौखिक एवं लोकतान्त्रिक संस्कृति के मूल और प्रारम्भिक रूपों के मनन से अपनी कलाओं की जड़ तक पहुँचना चाहता है और जिससे उसकी कलाओं के ऐतिहासिक विकास पर प्रकाश पड़ता है।"[3]

लोकवार्ता के विषय विस्तार पर शार्लट सफिया बर्न ने अत्यन्त वैज्ञानिक ढंग से प्रकाश डाला है। उन्हीं के ही आधार पर डा० सत्येन्द्र[4] ने भी इस पर विचार प्रस्तुत किया है। उनके

१ भारतीय लो० सा०—पृ० १४

२ व्र० लो० सा० अ०—पृ० २

३ Folklore is not som thing far away and long ago, but real and living among us —Here the past has something to say to the present and bookless world to a world that likes to read about itself, concerning our basic, oral and democratic culture as the root of arts and as a sidelight on history

—अमेरिकन फोकलोर (पाकेटबुक) की भूमिका— पृ० १५

४ हैंडबुक आव फोकलोर शार्लट सोफिया बर्न तथा ब्र० लो० सा० अ०—पृ० ४-५

अनुसार "लोकवार्त्ता" शब्द जातिबोधक शब्द के रूप में प्रतिष्ठित हो गया है । इसमें पिछड़ी जातियों में प्रचलित या अपेक्षाकृत समुन्नत जातियों के असंस्कृत समुदायों में अवशिष्ट विश्वास, रीति-रिवाज, कहानियाँ, गीत तथा कहावतें आती हैं । प्रकृति के चेतन तथा जड़ जगत् के भूतप्रेतों की दुनियाँ, मानव के सामाजिक आचार-व्यवहार, जादू-टोना, सम्मोहन-वशीकरण, तावीज, भाग्य, शकुन, रोग तथा मृत्यु आदि के सम्बन्ध में आदिम एवं असभ्य विश्वास लोकवार्त्ता के क्षेत्र में आते हैं । इनके अतिरिक्त विवाह, उत्तराधिकार, बाल्यकाल और प्रौढ़ जीवन की सामाजिक प्रवृत्तियाँ, त्योहार, युद्ध, आखेट, मत्स्य व्यवसाय तथा पशुपालन आदि विषयों से सम्बन्धित विभिन्न व्यवहार एवं अनुष्ठान आदि सभी इसी के अन्तर्गत आते हैं । इतना ही नहीं, धर्मगाथाएँ, अवदान (लीजेंड), बैलेड, किंवदन्तियाँ, पहेलियाँ तथा लोरियाँ भी इन्हीं के विषय हैं । संक्षेप में लोक की सहज मानसिक परिधि के अन्तर्गत जो भी वस्तु आ सकती है, वह सभी इसके क्षेत्र में परिगणनीय है ।

सोफिया बर्न ने "फोकलोर" के विषय को तीन श्रेणियों में विभाजित किया है जिन्हें डा० सत्येन्द्र ने निम्नांकित रूप से प्रस्तुत किया है[1]—

१. लोक विश्वास एवं अंध परंपराएँ, जो निम्नांकित से सम्बन्धित हैं :—

(क) पृथ्वी एवं आकाश से;
(ख) वनस्पति जगत् से;
(ग) पशु-जगत से;
(घ) मानव से;
(ङ) मनुष्य-निर्मित वस्तुओं से;
(च) आत्मा तथा दूसरे जीवन से;
(छ) परा-मानवी व्यक्तियों से;
(ज) शकुनों-अपशकुनों, भविष्यवाणियों, आकाशवाणियों से;
(झ) जादू-टोनों से;
(ञ) रोगों तथा स्थानों की कला से ।



२. रीति-रिवाज तथा प्रथाएं :—

(क) सामाजिक एवं राजनीतिक संस्थाएं;
(ख) व्यक्तिगत जीवन के अधिकार, व्यवसाय, धन्धे तथा उद्योग;
(ग) तिथियाँ, व्रत तथा त्योहार;
(घ) खेल-कूद तथा मनोरंजन ।

३. लोक-साहित्य :—

(क) कहानियाँ—(अ) जो सच्ची मान कर कही जाती हैं ।
(आ) जो मनोरंजन के लिए होती हैं ।
(ख) गीत सभी प्रकार के

---

१ ए हैंडबुक अव फोकलोर : पृ० ४ तथा ब्र०लो० सा०अ० - पृ० ६—७ ।

(ग) कहावतें तथा पहेलियाँ

(घ) पद्यबद्ध कहावतें तथा स्थानीय कहावतें।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि लोकवार्ता का क्षेत्र बहुत व्यापक है। लोक साहित्य लोकवार्ता का ही एक महत्वपूर्ण अंग है, जिसमें अनायास भाव से प्राप्त साहित्यिक सौंदर्य से मंडित जनमानस की गद्य पद्यात्मक अभिव्यक्तियाँ अन्तर्भावित हैं।

मगही लोक-साहित्य का सामान्य परिचय

मगही लोक-साहित्य विशाल एवं अगाध भारतीय लोक साहित्य का ही एक महत्वपूर्ण भाग है और उसकी समस्त सांस्कृतिक परम्पराएँ इसमें सुरक्षित हैं। इसका विस्तार-क्षेत्र 'मगध जनपद' है। अतः यहाँ भी ऐतिहासिक सांस्कृतिक पीठिका की हल्की झाँकी अपेक्षित है।

वैदिक साहित्य के अनुशीलन से ज्ञात होता है कि प्राचीन काल में बिहार तीन भागों में विभाजित था—मगध, अंग और विदेह। 'मगध' के सम्बन्ध में विशेष संकेत वहां नहीं मिलते। वैदिक साहित्य के प्राचीन अंग ऋग्वेद, संहिता में 'कीकट' नाम से जिस प्रदेश की निन्दित चर्चा मिलती है, उसका बहुत कुछ संकेत मगध से ही माना जाता है। बहुत संभव है, उस समय तक यह प्रदेश आयतर जातियों का निवास स्थान रहा हो और मध्य एशिया से आगत आर्य जाति की सभ्यता का आलोक वहां न पहुँचा हो। मगध में व्यवस्थित रूप से आर्य राज्य की स्थापना का उल्लेख "वाल्मीकिरामायणम्" के अध्याय ३२ में मिलता है। इस राज्य के प्रथम संस्थापक आर्य-वसु थे, जिनके बाद चन्द्रगुप्त और महान् अशोक जैसे सम्राटों की समृद्ध परम्परा में यह शासित होता रहा। सभ्यता और सांस्कृतिक गरिमा की दृष्टि से भारतीय इतिहास में मगध प्रदेश का अत्यधिक महत्त्व रहा है।

जहाँ तक 'मगही' के उदय का प्रश्न है, यह 'मागधी प्राकृत' एवं 'मागधी अपभ्रंश' से उद्भूत हुई है। डॉ॰ ग्रियर्सन ने भाषा-तत्त्व के आधार पर आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं को तीन उपशाखाओं (बाहरी, मध्य एवं भीतरी) में विभक्त किया है। इनके अन्तर्गत छः भाषा-समुदाय हैं। मगही भाषा बाहरी उपशाखा के पूर्वी समुदाय के बिहारी वर्ग के अन्तर्गत आती है। यद्यपि बिहारी, उड़िया, बंगला, असमी आदि कई भाषाएं 'मागधी' से प्रसूत हैं, तथापि केवल 'मगही' का ही नामकरण 'मागधी' के आधार पर हुआ है। वर्तमान मगही भाषा प्राचीन मगध क्षेत्र में ही सीमित नहीं है। यह समस्त गया, पटना तथा हजारीबाग जिलों में बोली जाती है। इनके अतिरिक्त पलामू, मुंगेर, भागलपुर के बड़े भागों में भी 'मगही' बोली जाती है।

अन्य भाषाओं के लोक-साहित्य की तरह मगही भाषा का लोक-साहित्य भी विषय-वैविध्य की दृष्टि से पर्याप्त विस्तृत एवं अनायास भाव से प्राप्त उच्च काव्यात्मक मूल्यों के कारण स्पृहणीय रूप से समृद्ध है। साथ ही विशाल मगध-क्षेत्र के विस्तृत जन-जीवन के सूक्ष्म पर्यालोचन के लिए यह एक ऐसे संवेदनशील दर्पण के रूप में वर्तमान है, जिसमें उनके समस्त आचार-व्यवहार, हर्ष-विषाद, रूढ़ियाँ-आकांक्षाएँ, प्रवृत्तियां एवं संस्कार प्रतिबिम्बित हो उठे हैं।

जैसा कि पहले कहा गया, विषय-वैविध्य एवं प्रकार वैविध्य दोनों ही दृष्टियों से मगही लोक साहित्य स्पृहणीय रूप से समृद्ध है। विषय-वैविध्य की दृष्टि से इसकी विवेचना के पूर्व "प्रकार वैविध्य" का संक्षिप्त अध्ययन कर लेना उपयुक्त होगा। 'प्रकार' शिल्प-विधान को कहते हैं। शिल्प-विधान का सम्बन्ध रूपाकृति-निर्माण से होता है। परिनिष्ठित साहित्य के विभिन्न रूपों की तरह लोक साहित्य के भी विभिन्न रूप होते हैं। दूसरे शब्दों में साहित्य में, जिन्हें हम विधाएं कहते हैं, उनकी स्थिति लोक-साहित्य में भी वर्त्तमान है। लोक कवि इसके लिए यद्यपि कृत्रिम रूप से सचेष्ट नहीं होता, तथापि लोक-साहित्य में प्राप्य विभिन्न 'विधाओं' के पार्थक्य का कुछ आधार अवश्य है और अन्तत उद्देश्य भी। मगही लोक-साहित्य में जो विभिन्न विधाएँ मिलती हैं, उनमें प्रमुख हैं—

(क) लोककथा
(ख) लोकगीत
(ग) लोककथा गीत
(घ) *लोक नाट्यगीत*
(ङ) लोकगाथा
(च) कहावतें
(छ) मुहावरें
(ज) पहेलियाँ।

लोककथा—मगही लोककथाओं का प्रारम्भ प्राय उस व्यक्ति की भूतकालीन स्थिति के सूचन से होता है, जिसके विषय में कथा चलती है। यथा—

(क) एगो राजा हला आ एगो डोम के बेटा हला। (अफला)

(ख) गंगा के किनारे गाँव में एगो पंडित जी रहते हलथिन। (बिसबास के महिमा)

(ग) एगो कानू हलन। (लड़ाकिन मेहराक बस में)

(घ) एगो हलन चूल्हो अउर एगो हलन सियारो। (जितिया के महातम)

कभी-कभी इन लोककथाओं का आरम्भ सहसा होता दीखता है और कभी कभी किसी विशेष या रूढ दृष्टिकोण के प्रकाशन से। यथा—

(क) कोई आदमी एगो देओता के तपस्या करके एगो अइसन संख पैलकई कि ओकरा से जो माँगऽ हलइ, ऊ मिलऽ हलइ। (ढपोरसंख)

(ख) बनिया सब सुभाव के कमजोर होवा हइ। जरी-जरी-सा बात में डेरा जा हइ। (डरपोक बनिया)

'मध्य' में मूल कथा होती है। इन कथाओं का विकास कभी तो स्वाभाविक घटना-क्रम से होता है और कभी दैवी घटना-क्रम से। प्रथम की प्रधानता सामाजिक तत्वों पर पल्लवित लोक-

कथाओं में मिलती है एवं द्वितीय की उन लोककथाओं मे, जिनमे किसी अद्भुत पात्र का होना या दैवी शक्ति की महिमा का प्रतिपादन होता है।

इन लोककथाओं का 'अन्त' कभी तो कथा के अवसान के सूचन से होता है, कभी उसके अवसान एवं उस पर चिन्तन करने की अपेक्षा के विज्ञापन से, कभी मगल कामना से और कभी प्रतिपाद्य के उपदेश से। यथा—

(क) सौदागर घर चल आयल। छोटकी पुतोहिया के बड़ी असीस देलक, जे अप्पन धरमो बचौलक आ ससुर के जान भी। (धरम के जय)

(ख) खिस्सा गेलन वन में, सोंचऽ अप्पन मन में। (धोखा के बदला)

(ग) जैसन ओकर दिन फिरल ओयसन सबके फिरे। (राजा भोलन)

(घ) सौ के सवाई भल, बकि कुजड़ा के दूना न भल। (सेठ आउ कुजड़ा)

लोकगीत—मगही लोकगीत प्राय छोटे होते हैं, पर आकार की सक्षिप्तता के साथ ही उनमें भाव की एकतानता होती है। मगही लोकगीतों में मुक्तक काव्य के कई गुण वर्तमान मिलते हैं। यथा—मुक्तक काव्य 'तारतम्य' के बन्धन से मुक्त रहता है और उसका प्रत्येक पद अपने में पूर्ण होता है, ऐसा ही मगही लोकगीतों में भी होता है। गेयपदों (मुक्तकों) की तरह मगही गीतों में सगीत तत्त्व प्रधान रहता है।

मगही लोकगीतों का आरम्भ प्राय 'वर्ण्य' प्रसग के स्पष्ट या साकेतिक निर्देश से होता है। यथा—

(क) आज सुहाग के रात, चदा तुहू उगिहऽ।

(ख) पारहिं ऊपर पसैलिया एक कोयली।

'मध्य' में इन लोकगीतों का विकास या तो वर्ण्य भाव के पुनरावृत्तिमूलक विस्तार से होता है या कथात्मक वर्णना का आश्रय लेकर। देवगीतों का कथात्मक वर्णना से ही विकास होता दीखता है। इन गीतों का 'अन्त' प्राय प्रतिपाद्य आकांक्षा, धर्म, घटना या परिणाम के सूचन से होता है।

लोककथा गीत—जैसा कि इनके नाम से स्पष्ट है, ये गीत तो होते हैं, पर इनमें कथा की प्रधानता होती है। इनका 'प्रारम्भ प्राय उस घटना के किंचित् विस्तृत विवेचन से होता है, जो सम्पूर्ण कथा-भाग का बीज रूप होता है। 'मध्य' में इन कथाओं का विकास चलता रहता है। 'अन्त' प्राय किसी कारुणिक अभिव्यक्ति से होता है, जो उसकी होती है, जो कथा के परिणाम का भोक्ता होता है।

लोकनाट्य गीत—वस्तुत ये 'लोकगीत' हैं। 'नाट्य' विशेषण पद के प्रयोग का मुख्य कारण इनका इतिवृत्तात्मक एवं कथोपकथन में निबद्ध होना ही है। दूसरे ये विभिन्न अवसरों पर अभिनीत किए जाते हैं, अत इस दृष्टि से भी इनका नाट्यगीत कहलाना अर्थ-सगति रखता है। लोकनाट्य गीत दो रूपों में होते हैं। प्राय ये कथोपकथनों में होते हैं। विभिन्न पात्रों का, जो

प्राय दो से अधिक नहीं होते, इनमें अभिनय किया जाता है। यथा—'बगुली', 'जाट जाटिन' आदि लोकनाट्यगीत देखे जा सकते हैं। कुछ नाट्यगीतों में कथोपकथनों का अभाव होता है। सम्बद्ध पात्रों की मूर्तियाँ बीच में रख ली जाती हैं। उनसे सम्बन्धित इतिवृत्त महिलाओं का दो पक्ष दोनों ओर से गाता है। उदाहरणार्थ 'सामा-चकवा' नामक लोकनाट्यगीत को देखा जा सकता है।

ये नाट्यगीत वस्तुत बहुत छोटे होते हैं—प्राय छ पंक्तियों से लेकर बत्तीस पंक्तियों के। संवादों की संख्या प्राय पाँच से लेकर तेईस तक होती है। ये संख्याएँ घट-बढ भी सकती हैं। इन लोकनाट्य गीतों का आरम्भ प्राय किसी ऐसी घटना के वर्णन या उपदेश दान से होता है, जो उनके इतिवृत्त पक्ष को विस्तार देता है। उदाहरणार्थ—बगुली लोकनाट्य गीत में बगुली के रूठ कर जाने का कारण पूछा जाना है, जिसके फलस्वरूप कथा का विकास होता है। "जाट जाटिन" लोकनाट्य गीत का प्रारम्भ उपदेश दान से होता है। मध्य में कथा का विस्तार मात्र होता है। अन्त प्राय पुनरावृत्तिमूलक होता है और कथा-समाप्ति का संकेत देता है।

लोकगाथा—लोकगाथा को लोकसाहित्य के अन्तर्गत 'महाकाव्य' का सा गौरव प्राप्त है। शास्त्रीय महाकाव्य के सभी लक्षणों का अन्वेषण इन लोकगाथाओं में नहीं किया जा सकता है, क्योंकि ये 'लोककाव्य' के अन्तर्गत हैं। पर वे चारित्रिक विशेषताएँ, जो 'मुक्तक' (गीत) एवं प्रबन्ध को एक दूसरे से पृथक् करती हैं, यहाँ भी वर्तमान होती हैं। उदाहरणार्थ 'लोकगीतों' में जीवन के आंशिक रूप की ही अभिव्यक्ति हुई दीखती है, जबकि 'लोकगाथाओं' में जीवन का व्यापक रूप चित्रित होता दीखता है। इनके कथानक में विस्तार वैविध्य, प्रवाह एवं गाम्भीर्य, ये चारों तत्त्व वर्तमान होते हैं, जो शिष्ट साहित्य में भी 'महाकाव्य' की प्रधान शर्तें हैं।

महाकाव्य के लक्षणों को दृष्टिपथ में रखते हुए विचार करने पर स्पष्ट होता है कि लोकगाथाएँ सर्गबद्ध नहीं होतीं। वे प्रवाह शैली में प्रस्तुत की गई होती हैं, अर्थात् एक विशिष्ट शैली में प्रारम्भ होकर उनकी कथा का प्रवाह अन्त तक चलता रहता है। इनका प्रधान 'नायक' होता है, जो धीरोदात्त, गुणान्वित एवं पराक्रमी होता है। इनका कथानक प्राय प्रख्यात सज्जनाश्रित होता है। इनका प्रारम्भ प्राय नमस्क्रिया से होता है। बीच-बीच में यत्र तत्र खलों की निन्दा एवं सज्जनों की प्रशंसा भी मिल जाती है। इनमें 'वीर', 'शृंगार' अथवा 'शान्त' रस प्रधान भाव से स्थित होता है एवं हास्य रसादि गौणभाव से। सन्ध्या, सूर्योदय आदि के वर्णन आकस्मिक रूप से आते दीखते हैं।

उदाहरणार्थ "लोरकाइन" नामक मगही लोकगाथा को देखा जा सकता है। यह प्रवाह-शैली में प्रस्तुत लोकमहाकाव्य है। इसका नायक लोरिक है। यद्यपि वह क्षत्रिय कुलोत्पन्न नहीं है, तथापि महाकाव्य के नायक के अधिकांश गुण उसमें वर्तमान हैं। नायकत्व की दृष्टि से उसे "धीरललित" माना जा सकता है। वह बलिष्ट शरीर, सौंदर्य, पराक्रम प्रत्युत्पन्नमतित्व आदि विभिन्न गुणों से मण्डित है। 'लोरिक' की कथा लोक जीवन में प्रख्यात है। उसका प्रारम्भ देव वन्दना से होता है। (यद्यपि प्रस्तुत संकलन में यह अंश हटा दिया गया है।) बीच में यत्र-तत्र भले-बुरे की प्रशंसा-निन्दा भी मिल जाती है। रसदृष्टि से यह 'वीर रस प्रधान है एवं 'शृंगार' 'हास्य' तथा 'शान्त' रस इसमें गौण भाव से स्थित हैं। संध्या, सूर्योदय आदि के सचेष्ट भाव से

किये गये वर्णना का इसम अभाव है। वे आरस्मिक रूप मे रहीं आ जाएँ तो आ जाएँ। इनका नामकरण नायक के चरित्र को प्रधान मान कर हुआ है।

मगही कहावत मुहावरा एव पहेलियो की विवेचना आगे मगही के 'प्रकीर्ण साहित्य' के अन्तर्गत प्रस्तुत की जायगी।

ऊपर संकलित शिल्प विधियो म प्राप्य मगही लोक-साहित्य की भाव राशि का अनुमान लगाना कठिन ही नहीं असभव है। कारण लोक साहित्य की भाव दिशाएँ शिष्ट साहित्य की तरह सीमित और उचित अनुचित के मेनापभव में आबद्ध नहीं होता, सामान्यतया जीवन का प्रत्येक भाग एव महत्वपूर्ण क्षण उसम मूल हो गया दीखता है। जीवन म सुख दुख, राग विराग आदि के क्षण हमेशा परिलक्षित होते रहते हैं। इन क्षणो म सामान्यत मानव की भावनाएँ पूर्णत सवेदनशील हो जाती हैं और रूप या शोक में पूरा नमागर उद्गारो के रूप में फूट पडती हैं। सुख दुख के इन क्षणो की न तो सीमा ही कूती जा सकती है और न उनका वर्गीकरण ही किया जा सकता है। वे अनन्त हैं और उनके रूप भी अनन्त हैं। प्रकृति सुषमा को देखकर मानव-मन जहा विमुग्ध होता है वहा उसकी भयकरता से सत्रस्त भी होता है। दैनंदिन जीवन की बहुत सारी घटनाएं आनन्द शोक विस्मय और स्पर्धादि का उद्रेक करने वाली होती हैं। फिर सामाजिक परिवेश म भी कई घटनाएं ऐसी आती हैं जो मानव मन को तरलित और उसकी वृत्तियों को गतिशील करती हैं। ऐतिहासिक घटनाओ एव राजनीतिक परिवर्तनो के विषय म भी यही बात कही जा सकती है। लोकसाहित्य की ये विशेषताए मगही लोक साहित्य म भी पूर्णत वर्तमान हैं और उसम अभिव्यक्त व्यापक जीवनानुभव के रूप म परिलक्षित होती हैं। सामान्यतया मानव जीवन का कोई भी पक्ष ऐसा नहीं है जो मगही लोक साहित्य मे चित्रित होने से शेष रहा हो। यह अवश्य है कि इस चित्रण म हृदय की सवेदनाओ का ही एकच्छत्र साम्राज्य है और निर्गुण सत्ता का छोड़ और मस्तिष्क के परिश्रम से उद्भूत होने वाले चमत्कारिक तत्वों का वहाँ अभाव है।

मगही लोककथाओ म जो जीवनानुभव व्यक्त हुए हैं उनका सम्बन्ध मुख्यत तीन से है—

१ उन स्थितियो के चित्रण से जो जीवन म किसी वस्तु या घटना के धार्मिक महत्त्व का प्रतिपादन करते हैं,

२ उन स्थितियो के चित्रण से जो जीवन के नैतिक प्रश्न के उत्कर्ष पर प्रकाश डालते हैं एव

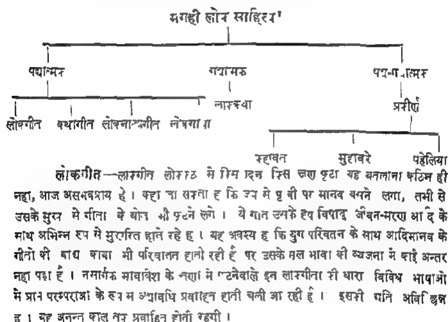
३ उन स्थितियो के चित्रण से जो जीवन के मनोरंजन पक्ष से सम्बन्धित हैं। इन तीनों के उदाहरण स्वरूप 'तिनिया के मन्तम' बरत के जप एव 'डपोर शख' शीर्षक लोककथाओ का अवलोकन किया जा सकता है।

मगही लोकगीतो म आभव्यक्त जीवन का पाट बहुत चौड़ा है। इनमें जहाँ लोक-जीवन का सामान्य सामाजिक धरातल वर्तमान है वहाँ उनके विशिष्ट सम्बन्धो के सूक्ष्मातिसूक्ष्म विश्लेषण भी उपलब्ध हैं, जहा मगही जन जीवन के अन्ध विश्वासों एव रूढियो की अभिव्यक्ति मिली है, वहाँ उसकी धार्मिक अवस्थाओ का भी चित्रण हुआ है।

मगही लोकगाथागीतों एवं लोकगाथाओं में मगह के सामन्ती जीवन के कटु-मधुर अनुभव सुरक्षित हैं। जीवन का व्यापक अनुभव इसकी कहावतों एवं मुहावरों में भी सुरक्षित है। लोकनाट्यगीतों एवं बुझौवलों का मुख्य सम्बन्ध मगह जीवन के मनोरंजन पक्ष से ही है, वैसे लोकनाट्यगीतों में पारिवारिक जीवनानुभव की समृद्ध थाती सरक्षित है।

मगही लोक-साहित्य का वर्गीकरण

श्रुति परम्परा से प्राप्त सम्पूर्ण मगही लोक साहित्य सामग्री के वैविध्य को दृष्टिपथ में रखते हुए इसका निम्नांकित प्रकारेण वर्गीकरण प्रस्तुत किया जा सकता है—



लोकगीत—लोकगीत लोक कंठ में किस दिन किस क्षण फूटा यह बतलाना कठिन ही नहीं, आज असम्भवप्राय है। कहा जा सकता है कि जब से पृथ्वी पर मानव बसने लगा, तभी से उसके मुख से गीतों के बोल भी फूटने लगे। ये गीत उसके हर्ष विषाद जीवन-मरण आदि के साथ अभिन्न रूप से सुरक्षित होते रहे हैं। यह अवश्य है कि युग परिवर्तन के साथ आदिमानव के गीतों की बाह्य काया में परिवर्तन होता रहा है पर उसके मूल भावों की व्यंजना में कोई अन्तर नहीं पड़ा है। रागात्मक भावावेश के क्षणों में फूटनेवाले इन लोकगीतों की धारा विविध भाषाओं में प्राप्त परम्पराओं के रूप में अद्यावधि प्रवाहित होती चली आ रही है। इसकी गति अविच्छिन्न है। यह अनन्त काल तक प्रवाहित होती रहेगी।

लोक गीतों की भारतीय परम्परा

हमारा प्राचीनतम लिखित साहित्य वेद है। उनके पारायण से ज्ञात होता है कि विविध संस्कारों के अवसर पर लोकगान होता था। ये लोकगान 'गाथाओं' के नाम से प्रसिद्ध थे।[2] पालि जातकों में कहानियों के बीच बीच में गाथाओं के व्यवहार मिलते हैं, जैसे कि आधुनिक भारतीय भाषाओं की अनेक लोककथाओं में आज भी देखा जा सकता है। जातक-गाथाओं के अध्ययन से प्रतीत होता है कि ये लोकगीतों के पूर्वरूप हैं। परवर्ती महाकाव्य तथा पौराणिक युग में भी हमें लोकगानों की विद्यमानता के प्रमाण मिलते हैं। आदिकवि वाल्मीकि ने अपनी "रामायण"

१ प्रस्तुत ग्रंथ में इन्हीं वर्गों के अन्तर्गत मगही लोक साहित्य के कतिपय आदर्श नमूने प्रस्तुत किये गये हैं।

२. 'ब्राह्मण' और 'आरण्यक' ग्रन्थों में 'गाथाओं' का उल्लेख अनेक बार हुआ है।

में भगवान् राम के जन्म के अवसर पर गन्धर्वों के मधुर गान एवं नाचनेगानेवाले तथा बनाने वाले सूत, मागध एवं वन्दीजनों का उल्लेख किया है।[१] भागवतकार व्यासदेव ने भी श्रीमद्भागवत में श्रीकृष्णजन्म के अवसर पर रमणियों द्वारा सम्मिलित गान गाये जाने का वर्णन किया है।[२] बड़े होने पर भी श्रीकृष्ण व्रज की रमणियों के बीच स्वयं लोकगान गाते सुनते पाये जाते हैं।[३] इससे अनुमान होता है कि उस समय भी शुभ संस्कार एवं आनन्द विलास के अवसर पर लोकगीतों के गायन की प्रथा वर्तमान थी।

महाकवि कालिदास ने अपने 'रघुवंश' महाकाव्य में ग्रामीण स्त्रियों द्वारा महाराज रघु के यश गाये जाने का वर्णन किया है —

इक्षुच्छायानिषादिन्यस्तस्य गोप्तुर्गुणोदयम्।
आकुमारकथोद्घातं शालिगोप्यो जगुर्यशः॥[४]

अर्थात् "ईख की छाया में बैठी हुई धान की रखवाली करनेवाली किसानों की पत्नियों ने सबकी रक्षा करने वाले उन रघु महाराज की शूरता, उदारता आदि गुणों से प्रकट हुए यश का जिसकी चर्चा किशोर और बालक तक करते थे, गान किया।

परवर्ती महाकवियों में 'किरातार्जुनीयम्' महाकाव्य के प्रणेता भारवि (६०० ई०)[५] एवं शिशुपालवधम् महाकाव्य के प्रणेता माघ (६५०-७०० ई०)[६] ने अपने महाकाव्यों में ऐसे वर्णन प्रस्तुत किये हैं—'धान के खेतों की रखवाली करती ग्रामीण वधुएँ इतनी मनोहर स्वर में गीत गाती थीं कि उन्हें (धान के पौधों को) खाने के लिए आये मृगदल स्वर संगीत से विभोर होकर खाने की सुध बुध भूल जाते थे और वो ही खड़े रह जाते थे।"

प्राकृत युग में लोकगीतों की बड़ी उन्नति हुई। इसके प्रमाण राजा हाल या शालिवाहन के संग्रह "गाथासप्तशती" में मिलते हैं। इस संग्रह की अनेक गाथाएँ गीतिकाव्य के उत्कृष्ट नमूनों के रूप में देखी जा सकती हैं[७]। अनेक स्थलों पर ऐसे प्रमाण मिलते हैं, जिनमें स्त्रियाँ

---

१ वाल्मीकिरामायण बालकाण्ड, श्लोक सं० १६-१७-१८।
२ भागवत दशम स्कन्ध।
३ भागवत दशम स्कन्ध।
४ रघुवंश सर्ग ४ श्लोक २०।
५ संस्कृत साहित्य की रूपरेखा पृ० ६२।
६ संस्कृत साहित्य की रूपरेखा पृ० ७२।
७ गेहिन्या महानसकर्ममसोमलिनितेन हस्तेन।
स्पृष्टं मुखमुपहसति चन्द्रावस्थां गतं दयितः॥

अर्थात् रसोई बनाते समय कालिख लगे हाथ से छूने के कारण कालिमा लगे गृहिणी के मुख को देख कर उसका स्वामी उसकी हँसी उड़ा रहा है—अहा! अब तो चाँद में और तुममें कोई अन्तर ही न रहा!

अपनी थकान को हल्का करने के लिए श्रमगीत गाती हुई दीख पड़ती हैं। बारहवीं शताब्दी में प्रसिद्ध कवयित्री विज्जका ने धान कूटनेवाली महिलाओं का बड़ा ही मनहारी वर्णन प्रस्तुत किया है।[1] महाकवि श्री हर्ष ने स्त्रियों द्वारा जाता के साथ गाये जाने वाले गीतों का उल्लेख किया है।[2] अपभ्रंश काल भी लोकगीतों की परम्परा से समृद्ध है। उस समय के अनेक काव्य-ग्रन्थों में नाना प्रकार की गाथाओं का उद्धरण उपलब्ध होता है।

"भविस्सयत्तकहा" में ऐसी अनेक गाथाएँ उपलब्ध होती हैं। स्त्रियों द्वारा अनेक मंगलमय अवसरों पर गीत गाये जाने का उल्लेख कई मध्ययुगीन काव्य-ग्रन्थों में भी मिलता है। यथा—महाकवि तुलसीदास ने स्त्रियों द्वारा मनोहर स्वर में गीत गाये जाने का उल्लेख किया है।[3] श्री रामचन्द्र जी के विवाह के अवसर पर स्त्रियों द्वारा गाली गाये जाने का भी उन्होंने उल्लेख किया है।[4]

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि लोकगीतों की भारतीय परम्परा अत्यन्त प्राचीन है और वह कभी विच्छिन्न नहीं हुई है। इसका नमार्गत प्रवाह आज भी उसी स्वच्छन्दता के साथ जारी

---

१ विलासमसृणोल्लसन्मुसललोलदोः कन्दली ।
परस्परपरिस्खलद्वलयनिस्वनोद्बन्धुरा ॥
लसन्ति कलहुंकृतिप्रसभकम्पितोरः स्थल-
त्रुटद्गमकसंकुला कलमकण्डनगीतय ।

अर्थात् धान कूटने वालियों का गाना बड़ा ही मनोहारी प्रतीत होता है। वे बड़ी सुन्दरता के साथ हाथ में मूसल लिए हुई हैं। मूसल के उठाने तथा गिराने के कारण चूड़ियाँ खनक रही हैं। उन चूड़ियों की खनक के साथ मिलकर वह गान और सुन्दर हो गया है। जब वे मूसल गिराती हैं, तब उस समय उनके मुख से हुंकारी निकल पड़ती है और वक्षस्थल कम्पित हो जाते हैं। वही गान की सुरभि बन कर छा रहा है।

२ श्री हर्ष नैषधीयचरित सर्ग २, श्लो० ८५।

३ चली संग लइ सखी सयानी।
गावत गीत मनोहर बानी॥

४. नारिवृन्द सुर जेंवत जानी।
लगीं देन गारीं मृदु बानी॥

है।[1] "मगही लोकगीत" भी इसी समृद्ध परम्परा की एक महत्त्वपूर्ण कड़ी के रूप में प्रवहमान हैं।

मगही लोकगीतों का वर्गीकरण

अन्य भाषाओं की भाँति मगही लोकगीतों में भी विषय दृष्टि से एक वैविध्य व्यापक स्तर पर दीख पड़ता है। इसे दृष्टिपथ में रखते हुए डॉ० विश्वनाथ प्रसाद ने मगही लोकगीतों का निम्नलिखित वर्गीकरण प्रस्तुत किया है[2]

१ संस्कार गीत—सोहर, मुण्डन, जनेऊ, विवाह आदि।
२ गाथा गीत—राजा भरथरी, टोलन आदि।
३. ऋतु गीत—फगुआ या होली, चैता आदि।
४. व्यवसाय गीत—रोपनी-सोहनी के गीत, जँतसार, धोबियों के गीत आदि।
५ मनोरंजन या पर्व गीत—तीज, जाँतया आदि।
६ भजन या स्तुतिगीत—प्रभाती, शीतला माता, शिवजी आदि के गीत।
७ लीला गीत—भ्रमर, टोमरच आदि।
८. वर्णीय गीत—विरहा, पँवाड़ा के गीत आदि।
९ जादू-टोना और मान के गीत—जैसे : सर्प बिच्छू के विष झाड़ने के गीत, भूत-प्रेत झाड़ने के गीत।
१० विशिष्ट गीत—खड़िया के गीत, पानी माँगने के गीत आदि।
११ लोरियाँ—बच्चों को सुनाने मनाने के गीत।
१२ बालक्रीड़ा गीत—बालमनोरंजन सम्बन्धी गीत।
१३ तीर्थ गीत—जगन्नाथपुरी, गंगा जी आदि के गीत।
१४. सामयिक गीत—रेलगाड़ी, नर आभूषण-फैशन सम्बन्धी, खादी, गांधी जी, स्वराज आदि सम्बन्धी गीत

---

१. वाल्मीकि जी इस प्रवहमान भारतीय परम्परा पर टिप्पणी करते हुए लोक-साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान प० श्री रामनरेश त्रिपाठी ने कहा है—"वाल्मीकि, भागवतकार, विद्यापति और तुलसीदास, इनमें से किसी ने यह नहीं बतलाया कि वे गीत कौन-से थे। अवश्य ही वे वही कण्ठस्थ गीत रहे होंगे, जो आज भी हैं। समय के अनुसार उन्होंने भाषा का जामा बदल लिया है। जैसे—हिन्दू लोग पहले पीताम्बर ओढ़ते थे, मुसलमानी राज में कुरता पहनने लगे और अब अंग्रेजी राज्य में कोट पहनते हैं। पर कपड़ों के अन्दर शरीर है हिन्दू का ही। इसी प्रकार गीतों का सिलसिला प्राचीनकाल से एक सा चला आ रहा है। भाव पुराने हैं, भाषा नयी है।—कविता कौमुदी — भाग–५।

२. "मगही संस्कार गीत"—निवेदन (पृ० ख)

मगही लोकगीतों का उपर्युक्त वर्गीकरण अपनी जगह सही और उपयोगी है। पर उसमें फैलाव अधिक आ गया है। उसके आलोक में ही इनका वर्गीकरण अधिक वैज्ञानिक रूप में यों प्रस्तुत किया जा सकता है। वर्गीकरण का आधार उनके उद्देश्य विशेष का दृष्टिगोचर होने वाला प्रामुख्य है।

मगही लोकगीत

संस्कारगीत	क्रियागीत	ऋतुगीत	देवगीत	बालगीत	विविधगीत
सोहर, मुंडन, जनेऊ विवाह आदि	जँतसार रोपनी आदि	होली चैती आदि	पौराणिक देवता सम्बन्धी, ग्राम देवता सम्बन्धी	लोरी खेलगीत चकचंदा आदि	झूमर, बिरहा, अलचारी, गोदना निर्गुण सामायिक आदि

मगही लोकगीतों के वर्ण्य

संस्कार गीत—मगही लोकगीतों के वर्ण्य विषय का हल्का संकेत उनके उपर्युक्त वर्गीकरण से ही मिल जाता है। मगही संस्कार गीतों की पृष्ठभूमि जहाँ पारम्परिक शास्त्रीय रूढ़ि विधानों से सम्पृक्त है, वहाँ लोक मंगल की भावना ने भी उनको व्यापकता प्रदान की है। 'संस्कारों' का भारतीय चिन्ताधारा में महत्वपूर्ण स्थान है। वे जीवन के विभिन्न अवसरों को महत्व एवं पवित्रता प्रदान करते हैं। वे इस बात पर जोर देते हैं कि जीवन के विकास का प्रत्येक चरण केवल शारीरिक क्रिया नहीं है। उसका सम्बन्ध मनुष्य की बुद्धि, भावना और उसकी आत्मिक अभिव्यक्ति से है। वे अनुपेक्षणीय हैं। यदि व्यक्ति इनके प्रति उदासीनता या अवज्ञा प्रदर्शित करने लगता है, तो फिर ये संस्कार उसकी तन्द्रा और अवज्ञा का निराकरण करते हैं एवं जीवन के विकास के क्रमों के महत्त्व का स्पष्टीकरण सामूहिक तथा सामाजिक स्तर पर करते हैं। संस्कारों के अभाव में जीवन की घटनाएं शरीर की दैनिक आवश्यकताओं और आर्थिक व्यापारों के समान अनाकर्षक, चमत्कारहीन और जीवन के भावुक संगीत से रहित हो जाती हैं। संस्कारों की एक विशेषता यह है कि उनके साथ मूल्य गर्भित विश्वास और विचार लगे रहते हैं। इन्हीं के लिए मनुष्य जीना चाहता है। इन संस्कारों से सम्बद्ध लोकगीतों में समाज और व्यक्ति की आशाओं आकांक्षाओं, जीवन की समस्त विचारधाराओं एवं गतिविधियों की अभिव्यक्ति को पूर्ण अवकाश प्राप्त होता है।

'सोहर'[1] में शिशु-जन्म से सम्बद्ध गीत गाये जाते हैं। ये गीत आनन्द-उछाह की भावनाओं से परिपूर्ण होते हैं। इसका एक कारण यह है कि सृष्टि में मानव के अमर होने और व्यापकता प्राप्त करने की बलवती कामना सन्तान की परम्परा द्वारा ही फलवती होती है। मगही सोहरों के वर्ण्य विषयों का क्षेत्र अति व्यापक है। पति-पत्नी के प्रेम-मिलन, गर्भ की स्थापना, गर्भिणी की विविध स्थितियों, शिशु जन्म एवं तत्सम्बन्धी उत्सव, प्रसूति के नैहर एवं ससुराल के आनन्द व्यवहार के सुन्दर विश्लेषण आदि इन सोहर गीतों में उपलब्ध होते हैं।

संस्कारगीतों में कुछ तो ऐसे होते हैं, जिनका आनुष्ठानिक महत्त्व होता है, और अनुष्ठान विशेष के साथ उनका गाया जाना अनिवार्य होता है। पर अनेक ऐसे होते हैं, जो अवसर विशेष पर सामान्य रूप से गाये जाते हैं। जहाँ तक मगही सोहर गीतों का प्रश्न है, इनका विशेष अनुष्ठानिक महत्त्व नहीं है। अधिकांश सोहर जन्म के प्रसंग में किसी भी अवसर पर गाये जाते हैं। कुछ ही सोहर ऐसे मिलेंगे, जिनका संबंध किसी विशेष

1 'सोहर' शब्द की व्युत्पत्ति के मूल में संस्कृत का "शुभ" धातु माना जाता है, जिससे शोभन, शोभा आदि तत्सम शब्द बने हैं। हिन्दी में "सोहना", "सुहावना", भोजपुरी में "सोहल", मगही में "सोहल", व्रज में "सोभर" आदि इसके तद्भव रूप हैं। इनका व्यवहार "अच्छा लगने एवं 'सुहावना लगने' के अर्थ में किया जाता है। "सोहर जन्मोत्सव के अवसर पर गाये जाने वाले गीत हैं। अतः "सोहर' को बहुत शुभ एवं सुहावना मानना उचित ही है। उत्तर प्रदेश के पश्चिमी भागों में "सोहर के अन्य पर्याय भी प्रचलित हैं। यथा सोभर, सोहला, सोहिलो, सोभिलो, सोहिले आदि। संस्कृत के "शोकहर' शब्द से भी 'सोहर" की व्युत्पत्ति मानी जा सकती है। यथा—शोकहर सोअहर-सोहर। सन्तानाभाव के शोक को हरण करने वाले उक्त समय प्रसंग में ही इसका गायन है। इसीलिए "सोहर" का एक पर्याय "मंगल' गीत भी है। यथा—मगही गीत की निम्नांकित पंक्ति में 'मंगल" का व्यवहार "सोहर" के लिए हुआ है—

आजु ललना के बधइया,
गावहुँ सखि मंगल हे।

'रामचरित मानस' में रामचन्द्र के जन्म के अवसर पर 'मंगल गीत' गाये जाने का उल्लेख महाकवि तुलसीदास ने किया है।—

गावहिं मंगल मंजुल बानी,
सुनि कलरव कलकंठ लजानी।

यहाँ "मंगल" शब्द का व्यवहार "सोहर" के अर्थ में ही हुआ है"

मगध में पुत्र-जन्म के अवसर पर "नृत्य" के साथ "सोहर' गाये जाने की भी प्रथा है। "नृत्य-संयुक्त सोहर-गान" में भाग लेने वाले व्यवसायी कलाकार होते हैं। यथा—

(१) पँवरिया (२) बक्खो बराइन और (३) खेलनी।

इनके "सोहर गीतों" में प्रायः भगवान रामचन्द्र के जन्म का उल्लेख रहता है यथा—

"सिरी रामचन्दर जलम लेलन चैत रमनवमी।"

यह पंक्ति 'टेक' के रूप में उनके गीत में प्रयुक्त होती है।

'अवसर' 'विधि' या 'अनुष्ठान' से है। यथा—प्रसववेदना, नारकटाई, सूती के स्नान, छठी, ओख ॲजाई आदि विधियों से सम्बद्ध गीत। पर इन्हें भी अनिवार्य रूप से उसी अवसर विधिया अनुष्ठान के समय नहीं गाया जाता। सोहर गीत तो मंगलगान के रूप में जन्मोत्सव संबंधी सभी अवसरों, विधियों एवं अनुष्ठानों के समय सामान्य रूप से गाये जाते हैं।

"चूडाकरण संस्कार" हिन्दू समाज के सोलह संस्कारों में एक है। लोक जीवन में यही संस्कार 'मुण्डन' के नाम से प्रसिद्ध है। इस अवसर पर बालक के सिर के बाल प्रथम बार छीले जाते हैं। मुण्डन के समय मुण्डन सम्बन्धी गीत गाये जाते हैं। एक ओर पुरोहित निर्दिष्ट शास्त्रीय विधान मंत्रोच्चार के साथ चलाते हैं, दूसरी ओर मुण्डन गीत चलते हैं। इन गीतों के वर्ण्य विषय मुंडन-सम्बन्धी विधि विधानों से भरे होते हैं। कहीं बालक मुंडन की कामना व्यक्त करते पाये जाते हैं, कहीं माता-पिता की ओर से यह कामना व्यक्त की जाती है। कहीं मुंडन के विधान को सम्पन्न करने के लिए माता-पिता विविध "पॅवनियों," (ब्राह्मण, नाऊ, माली, कुम्हार बढ़ई, धोबी आदि) का आह्वान करते पाये जाते हैं, कहीं बदले में ये सभी नेग लेने के लिए आतुर दिखाई पड़ते हैं; कहीं परिजन "मुण्डन" की निर्विघ्न समाप्ति के लिए देव-स्तुति करते दिखाई पड़ते हैं, कहीं ननद-भावज के बीच "नेग" के प्रसंग पर मीठी चुटकियाँ चलती पायी जाती हैं और कहीं मुण्डन के मंगलमय होने के लिए टोने-टोटके के भावों की भली व्यंजनाएँ की जाती हैं।

शिशुजन्म के बाद तीसरा महत्त्वपूर्ण संस्कार "यज्ञोपवीत" (जनेऊ) का है। हिन्दू समाज में उपनयन संस्कार के अवसर पर शास्त्रीय विधि के अनुसार बालक को 'यज्ञोपवीत' धारण कराया जाता था। इस संस्कार के साथ एक आस्था जुड़ी होती थी कि जन्म से मनुष्य शूद्र होता है और यज्ञोपवीत संस्कार के बाद ही वह 'द्विज' बनता है[1]। फिर इस संस्कार के बाद ही बालक गुरु के पास विद्याध्ययन के लिए भेजा जाता था।[2] यह आस्था और परम्परा अद्यावधि चल रही है।

'वाल्मीकि रामायणम्' में भी राम के जन्म के अवसर पर गंधर्वों के गाने एवं अप्सराओं के नाचने का उल्लेख हुआ है। यथा—

> जगु कलम्ब गन्धर्वा ननृतुश्चाप्सरसो गणा।
> देवदुन्दुभयो नेदु पुष्पवृष्टिश्च खात्पतन्॥
>
> (वा॰ रा॰ बालकाण्ड—१८ १८)

मगध में पुत्र-जन्म के अवसर पर नृत्य संयुक्त-सोहर गान के आयोजन की प्रथा प्राचीन काल का ही अवशेष है। यह प्रथा अब क्रमशः उठ रही है। इससे हमारा समाज इस प्रसंग में उपर्युक्त व्यवसायी जातियों द्वारा प्रदान किये जाने वाले लोक साहित्य के महत्त्वपूर्ण दाय से क्रमशः वंचित हो रहा है।

१ जन्मना जायते शूद्र संस्कारात् द्विज उच्यते।

२ उपनीयते गुरुसमीप प्राप्यते अनेनेति उपनयनम्।

मगध क्षेत्र में यज्ञोपवीत संस्कार या जनेऊ में शास्त्रीय विधि को बहुत प्रधानता दी जाती है। जनेऊ गीतों में इन विविध विधि विधानों का विस्तृत वर्णन उपलब्ध होता है। इनमें कहीं बालक जनेऊ धारण करने की इच्छा व्यक्त करता हुआ पाया जाता है और कहा माता पिता आदि उचित समय पर जनेऊ देने का आश्वासन देते देखे जाते हैं, कहा जनेऊ के लिए मण्डपाच्छादन के दृश्य और कार्यक्रमों का वर्णन होता है, कहा विविध "पॅवनिएँ" जनेऊ के विधान में भाग लेने के लिए आमंत्रित होते देखे जाते हैं, कहा बालक ब्रह्मचारी वेश में सुसज्जित होता हुआ दिखाया जाता है कहीं भिक्षाटन करता हुआ विद्यार्जन के लिए काशी काश्मीर के यात्रा-पथ पर अग्रसर होता हुआ दिखाया जाता है। प्रायः इन गीतों में विविध विधि विधानों के प्रति परिजनों की क्रियाओं एवं प्रतिक्रियाओं का यथार्थ चित्र उपलब्ध होता है। इनमें अधिकांश स्थलों पर बालक विशेष के स्थान पर *श्रीराम श्रीकृष्ण आदि पौराणिक व्यक्तियों के* जनेऊ संस्कार का उल्लेख किया जाता है। वस्तुतः इनके नाम भर लिए जाते हैं अभिप्राय बालक विशेष से ही होता है। दूसरे शब्दों में 'विशेष' का नाम लेकर सामान्य का ही बोध कराया जाता है। बहुत संभव है कि इन सांस्कृतिक नामों को संबद्ध करने के मूल में यज्ञोपवीत कराये जा रहे बालक के प्रति मंगल-कामना अन्तर्निहित हो।

जन्मोपरान्त परिलक्षित होने वाले इन संस्कारों के पश्चात् **"विवाह संस्कार"** सर्वाधिक प्रधान एवं महत्त्वपूर्ण है। यह संस्कार समाज की सभ्य एवं असभ्य सभी जातियों में बड़े उत्साह के साथ सम्पन्न किया जाता है। जन्म मुण्डन जनेऊ आदि की ही भांति 'विवाह-संस्कार" में भी दोनों प्रणालियाँ चलती हैं—**(१) वैदिक एवं शास्त्रोक्त प्रणाली**। इसका सम्पादन पुरोहित कराते हैं। एवं **(२) लौकिक प्रणाली**। इसके सम्पादन में प्रधान हिस्सा महिलाओं का रहता है। इसमें पुरुष लोग भी भाग लेते हैं यद्यपि स्त्रियों से उनका लौकिक आचार कम होता है। संख्या की दृष्टि से लौकिक आचार वैदिक आचारों से बहुत अधिक हैं। वस्तुतः वैदिक आचारों को धुरी माना जा सकता है, उस धुरी के चारों ओर लोकाचारों का संश्लिष्ट ताना बाना निर्मित होता है। प्रत्येक लोकाचार के साथ उससे सम्बद्ध गीत गाये जाते हैं। इन गीतों का आनुष्ठानिक महत्त्व होता है। पर इनके अतिरिक्त ऐसे गीतों की संख्या भी अनन्त है जिसमें किसी देवता के जीवन वर्णन द्वारा लोक जीवन का प्रतिनिधित्व हुआ है अथवा वर वधू के प्रणय सम्बन्धों एवं अन्य प्रसंगों का सामान्य रूप में उल्लेख हुआ है। आनुष्ठानिक महत्व वाले गीत तो अनुष्ठान विशेष के साथ अवश्य गाये जाते हैं पर सामान्य विवाह गीत विवाह में सभी अवसरों पर सामान्य रूप से गाये जाते हैं।

विवाह-गीतों को निम्नांकित वर्गों में रखा जा सकता है—

(१) अनुष्ठान संबंधी गीत,

(२) सामान्य गीत,

(३) सामान्य जीवन की झाँकी देनेवाले देवगीत

(४) देवगीत,

(५) विसर्जन ।

(१) अनुष्ठान सम्बन्धी गीत—कहा जा चुका है कि अनुष्ठान सम्बन्धी गीतों का उतना ही महत्त्व होता है, जितना किसी शास्त्रीय विधि के साथ उच्चरित होने वाले मन्त्रों का। कारण, विविध अनुष्ठानों के अवसर पर उनसे सम्बद्ध गीतों का गाया जाना अनिवार्य होता है। इन अनुष्ठान गीतों में कहीं तो अनुष्ठान विशेष में किए जाने वाले कृत्य एवं विधियां के साथ सामान्य पारिवारिक जीवन की झांकियां मिलती हैं और कहीं अनुष्ठान विशेष का उल्लेख मात्र होता है। अनेक अनुष्ठान गीत टोने-टोटके के रूप में गाये जाते हैं और उनमें न सरसी वर्णन मिलते हैं। यथा—स्नान गीत, जोआ के गीत आदि। बहुत से ऐसे अनुष्ठान गीत भी मिलते हैं, जिनमें कहीं अनुष्ठान विशेष की क्रियाओं का उल्लेख नहीं मिलता पर उनमें उत्कृष्ट मानवीय भावनाओं का निरूपण मिलता है। कुछ अनुष्ठान गीत ऐसे होते हैं, जो वर और कन्या के घर समान रूप से गाये जाते हैं, पर कुछ ऐसे होते हैं जो केवल वर के घर में अथवा कन्या के घर में गाये जाते हैं। इसका कारण यह है कि अनेक विधि विधान वर और कन्या के घर में सामान्य रूप होते हैं। परन्तु कई विधान ऐसे हैं, जो केवल वर के घर सम्पन्न होते हैं और कई केवल कन्या के घर सम्पन्न होते हैं। तदनुकूल ही दोनों के घर में गाये जाने वाले गीतों में अन्तर होता है।

२ सामान्य गीत—अनेक विवाह गीत ऐसे हैं, जो सामान्य रूप से विवाह के सभी अवसरों पर गाये जाते हैं। इनमें गार्हस्थ्य जीवन के बहुरंगे मनोरंजक चित्र प्रस्तुत किये जाते हैं। इनमें भावों के वैविध्य के साथ ही विभिन्न शैलियों की कोमल संयोजना भी दिखाई पड़ती है। सामान्य गीतों की भी तीन श्रेणियां मिलती हैं—(१) वे, जो वर और कन्या के घर में सामान्य रूप से गाये जाते हैं। इनमें दम्पति के मिलन की पृष्ठभूमि, नवमिलन, हास-परिहास, आनन्द-विनोद आदि से सम्बंधित भावनाओं के वर्णन को प्रमुख स्थान दिया जाता है। (२) वे, जो केवल वर के घर में गाये जाते हैं। इनमें कहीं करुण भावों की छाया नहीं दिखाई पड़ती। सर्वत्र संयोग-शृंगार, हास-परिहास, आनन्द उत्साह आदि के प्रसंगों की सुन्दरतम अभिव्यक्ति मिलती है। (३) वे, जो केवल कन्या के घर में गाये जाते हैं। इनमें मूल रूप से करुण भावधारा प्रवाहित रहती है। माता-पिता के लिए वर के चुनाव की समस्या, चुनाव होने पर दहेज की समस्या और फिर अन्ततः कन्या के विछोह की वेदना आदि के वर्णन से सारे गीत तरलित रहते हैं।

३. सामान्य जीवन की झाँकी देने वाले देवगीत—इस वर्ग के अन्तर्गत आने वाले गीतों में दैविक एवं लौकिक दोनों भावनाओं की व्यंजना मिलती है। इनमें एक ओर जहाँ किसी पौराणिक आख्यान एवं देवी-देवता के नामों का उल्लेख रहता है, वहाँ दूसरी ओर सामान्य मानवीय भावनाओं, विधि-विधानों, प्रथाओं-अनुष्ठानों आदि का उल्लेख रहता है। देवताओं के जीवन वर्णन द्वारा सामान्य लोक-जीवन की अभिव्यक्ति ही इन गीतों का प्रमुख उद्देश्य होता है।

(४) देवगीत—विवाह के अवसर पर अनेक ऐसे गीत गाये जाते हैं, जिनका उद्देश्य विविध देवताओं की स्तुति होता है। इन गीतों की भी दो श्रेणियां हैं—(१) प्रतिबन्धक अनुष्ठान गीत। इनमें उन प्राकृतिक शक्तियों एवं मानवी दुष्टात्माओं को प्रसन्न करने के लिए आमन्त्रित किया जाता है, जिनसे किसी न किसी रूप में अनुष्ठान में बाधा पहुँचने का भय रहता है। यथा-आँधी, पानी, बताश, चोटी, मक्खी, लड़ाई, झगड़ा आदि। (२) स्तुति गीत—इनमें विवाह आदि शुभ

संस्कारों में सहभागी होने के लिए विविध देवताओं को आमंत्रित किया जाता है। इस आह्वान का उद्देश्य यही है कि वे रक्षक बन कर मंगलिक कार्यों का निर्विघ्न समापन होने दें। यथा—शिव, हनुमान, जगन्नाथ, सन्ध्या आदि।

(५) विसर्जन गीत—वैवाहिक अनुष्ठानों के अन्त में विसर्जन गीत गाये जाते हैं। इन गीतों में वर वधू के लिए आशीर्वाद एवं मंगलकामनाएँ व्यंजित होती हैं। साथ ही इनमें देवताओं के प्रति धन्यवाद तथा गुरुजनों के प्रति बधाई की भावना अभिव्यक्त होती है।

संस्कार गीतों में विवाह गीत के पश्चात् 'मृत्यु गीत' भी उल्लेख्य हैं। हिन्दुओं के षोडश संस्कारों में यह भी एक है। मृत्यु संस्कार में शास्त्रीय एवं लौकिक दोनों अनुष्ठान होते हैं, पर गीतों में इनका वर्णन नहीं होता। कारण, संभवतः यह है कि इनमें 'शोक' का भाव इतना गहरा होता है कि गीत प्रस्फुटित ही नहीं हो पाता। पर मृत्यु के अवसर पर गाये जाने वाले कुछ निर्गुण गीत अछूत वर्ण के लोगों में प्रचलित हैं। इन गीतों में आत्मा-परमात्मा का मिलन, प्रिया प्रियतम के संबंध के लौकिक दृष्टान्तों द्वारा कराया गया है। इनमें संसार से विदाई का दृश्य अत्यन्त कारुणिक रूप में प्रस्तुत हुआ है। कहीं जाने वाली आत्मा का विषाद नहीं दर्शाया गया है। प्रायः प्रियतम-मिलन के लिए ससुराल रूपी बैकुंठ जाती आत्मा उत्कंठित और प्रसन्न दीख पड़ती है। सद्गुरु सच्ची राह दिखाते हुए पाये जाते हैं। प्रायः सभी गीतों में कबीरदास या अन्य सन्त कवि का उल्लेख सद्गुरु के रूप में होता है।

क्रियागीत—मगही लोकगीतों का दूसरा प्रमुख वर्ग "क्रिया गीत" (Action song) का है। क्रिया गीत वे हैं जिन्हें किसी 'क्रिया' के साथ गाया जाता है। इन गीतों के उद्देश्य दो हैं—

(१) क्रिया करते समय शरीर में थकान का अनुभव न होने देना तथा

(२) क्रिया के साथ मनोरंजन करते चलना। इस वर्ग में मुख्यतः तीन श्रेणियों के गीत उपलब्ध होते हैं—

क. जँतसार

ख. रोपनी और

ग. सोहनी

इन तीनों गीत श्रेणियों में करुण रस की प्रधानता होती है। मगही में जँतसार गीतों की संख्या बहुत है, पर रोपनी-सोहनी के गीतों की संख्या कम। इसका कारण यह है कि रोपनी-सोहनी के अवसर पर भी 'जँतसार' गीत बहुलता से गाये जाते हैं। वर्ण्य विषय की दृष्टि से भी तीनों में बहुत अधिक सादृश्य है।

'जँतसार'—का अर्थ होता है "जाँते का गीत"। चक्की या जाँता चलाते समय जो गीत गाये जाते हैं, उन्हें 'जँतसार' कहते हैं। इनमें पीसनेवालियों के मन को प्रेम, करुणा और उदारता में भिगो कर कुटुम्बियों के अपद्य बर्ताव के कारण पैदा हुए विक्षोभ को निकालने की चेष्टा भरी रहती है। इन गीतों में शृंगार-वर्णन का अभाव नहीं होता, फिर भी नारी-हृदय की वेदना, कसक, टीस आदि की व्यंजना प्रधानतया वर्तमान रहती है। करुण रस के प्रायः सभी प्रसंग इनमें वर्णित होते हैं। पुत्रहीना वन्ध्या, विधवा, विरहिणी, उपेक्षिता आदि सभी नारी-वर्गों

की मनःस्थिति का चित्रण इन गीतों में बड़ी सहजता से होता है। 'जँतसार' के इन गीतों में छोटी-छोटी कथाएँ धागे में फूलों के समान गुँथी होती हैं। ये गीत उत्तेजक नहीं होते, बल्कि बहुत कोमल, मधुर, और चिरस्थायी प्रभाव छोड़ने वाले होते हैं। रात्रि के पिछले प्रहर में जाते के घर्-घर् स्वर के साथ मिलता हुआ नारी-कंठ-स्वर बड़ा ही मधुर प्रतीत होता है।

'रोपनी' के गीत धान रोपते समय गाये जाते हैं। इन गीतों के गाने में भी जँतसार गीतों की भाँति थकान को विस्मृत करने एवं मनोरंजन करते हुए लगन के साथ काम करने की भावना सन्निहित रहती है। धान रोपने का कार्य प्रायः मुसहर, चमार आदि जातियों की स्त्रियाँ करती हैं। ऊपर से प्रायः वर्षा होती रहती है, धान के खेतों में पानी भरा रहता है, चारों ओर हरियाली और कीचड़ का दृश्य छाया रहता है। ऐसे समय में ये महिलाएँ 'धनरोपनी' करती हुई गीत गाती हैं। 'रोपनी' का कार्य घर से बाहर खेत में होता है। अतः स्त्रियाँ इन गीतों में प्रायः ऐसे ही प्रसंगों को प्रस्तुत करती हैं, जिनमें पुरुष स्त्री से छेड़-छाड़ करता है और स्त्री उसे फटकारती है। इसके अतिरिक्त वे इन गीतों में नारी हृदय के अनेक सुकुमार भावों को भी उनकी वेदना और गार्हस्थ्य जीवन की विविध अनुभूतियों के साथ व्यक्त करती हैं।

'सोहनी' के गीत खेतों में उत्पन्न व्यर्थ की घासों और पौधों को काट कर अलग करने के समय गाये जाते हैं। खेतों से व्यर्थ की घासों और पौधों को काट कर अलग निकालने को ही 'सोहनी' कहते हैं। इस वर्ग के गीतों की एक विशेषता यह होती है कि ये प्रायः सविन कथानकों के साथ होते हैं। इनका आकार अन्य गीतों से बड़ा होता है। इसी कारण से इनको 'कथागीतों' के वर्ग में भी रखा जा सकता है। मगही 'कथागीत' में 'चनिया या 'भागवत' आदि नायिकाओं से जो सम्बद्ध गीत हैं, वे सोहनी के अवसर पर भी गाये जाते हैं। 'सोहनी' के गीतों में सास-बहू का परस्पर दुर्भाव वर्णित है, तो कहीं पति का पत्नी के प्रति अविश्वास; कहीं स्वेच्छाचारी शासकों की बर्बरता का चित्रण है, तो कहीं विदेशी शासक मुगलों के द्वारा भारतीय नारी के सतीत्वहरण का और इन भ्रष्टाचार लिप्त शासकों से अपने सतीत्व की रक्षा के प्रयास वर्णित हैं। रसात्मक दृष्टि से जँतसार के गीतों की ही नाईं ये बड़े कारुणिक होते हैं।

ऋतुगीत— मगही लोकगीतों का तीसरा प्रमुख वर्ग ऋतुगीतों का है। विविध ऋतुओं में भिन्न भिन्न शैली के गीत गाये जाते हैं। इनमें तदनुरूप भाव-परिवर्तन भी पाया जाता है। यथा— वसन्त ऋतु में **'होली' और 'चैती'** गाये जाते हैं और वर्षाऋतु में **'बरसाती'** और 'कजली'। **'होली'** गीत होली पर्व के अवसर पर गाये जाते हैं, जो फागुन महीने में पूर्णिमा परिवा को मनाया जाता है। इस महीने के नाम पर ही इस अवसर पर गाये जाने वाले गीतों की दूसरी संज्ञा 'फाग' या 'फगुआ' भी है। 'होली' के इन गीतों में पारस्परिक सम्मिलन, मैत्री, हर्ष उल्लास और मस्ती को अभिव्यक्त करने वाले भावों की ही प्रधानता होती है। राग-रंग का चित्रण तो पूरे गीत में छाया होता है। इस क्रम में लौकिक अथवा देव-चरित्रों के माध्यम से एक ही प्रकार की भाव व्यंजना एवं कार्य-व्यापार प्रदर्शित किए जाते हैं। कहीं लौकिक पात्राएँ एवं पात्र अबीर-गुलाल के साथ राग रंग में रत दिखाई पड़ते हैं, तो कहीं राधा-कृष्ण सोल्लास फाग खेलते दृष्टिगोचर होते हैं, कहीं शिव और गौरी के बीच 'होरी' मची दीखती है, तो कहीं राम

और सीता होली के रंग में रंगे दिखाई पड़ते हैं। इन सभी में शृंगार भाव को ही प्रमुखता दी जाती है। रंग गुलाल के साथ शृंगार का इन गीतों में अपूर्व सामंजस्य दिखलाया गया है। इनमें कहीं स्वकीया का प्रेम दर्शाया गया है, तो कहीं परकीया का। पर सर्वत्र उल्लास एवं हर्ष से सवलित भावों को ही प्रश्रय दिया गया दीखता है। 'होली' के इन गीतों को गाने की दो विधियाँ प्रचलित हैं—

१ पहली विधि, जिसमें गायक एक दल बना कर ढोल कभी या खरताल के साथ मस्ती में झूम झूम कर गाता है।

२ दूसरी विधि जिसमें गउआ के गवैये दो दलों में विभक्त होकर बैठ जाते हैं। एक व्यक्ति के हाथ में ढोलक रहता है और कुछ अन्य लोगों के हाथ में 'झाँझ' या 'झाल'। कुछ लोग जोड़ी लेकर भी बजाते हैं। दोनों दलों में कुछ एक गउआ होता है और गेय सवाद शैली में 'होली' का गायन चलता रहता है।

'चैती' गीत मगही में चैत मास में गाये जाते हैं। इन गीतों में वसन्त की मस्ती तथा उमंग से भरी रंगीली भावनाओं का अनोखा सौंदर्य अंकित होता है। इनमें माधुर्य एवं रसमयता का अद्भुत सम्मिश्रण द्रष्टव्य है। यह चैत मास भी विचित्र है। प्रारंभ से अन्त तक इसमें चतुर्दिक पर्वों, उत्सवों एवं मेलों का आयोजन होता रहता है।

'चैती' गीत दो प्रकार के होते हैं—

क घाटो चैती एवं

ख साधारण चैती।

'घाटो' चैती के गायक दो दलों में विभक्त हो जाते हैं। गीत के साथ ढोल और झाल बजाये जाते हैं। पहला एक दल एक पंक्ति गाता है, तो दूसरा दल उसके 'टेक' पद को उच्च स्वर में बल देता जाता है। इस प्रकार 'घाटो' चैती के गायन में प्रत्येक दल को किंचित् विश्राम मिल जाता है। पहला दल जिस स्वर से गाता है, दूसरा दल उससे उच्च स्वर में 'टेक' पद गाता है। जब गाने का अन्त होने लगता है, तब गाने वाले उच्चतम स्वर का प्रयोग करने लगते हैं। गवैये और श्रोता, दोनों का जोश पराकाष्ठा पर पहुँच जाता है। फिर एकाएक गाने की समाप्ति होती है। 'साधारण चैती' को या तो केवल एक गायक ढोल और झाल के साथ गाता है या एक समूह बना कर कई एक गायक एक साथ गाते हैं।

'चैती' के इन गीतों में प्रेम के विविध स्वरूपों की भाव-भरी व्यंजनाएँ सम्पन्न हुई हैं। इनमें संयोग शृंगार को विशेष स्थान मिला है। कहीं चैत मास में अनुभूत आलस्य का वर्णन हुआ है, तो कहीं राधा कृष्ण एवं गोपियों के प्रेम-सम्बंधों का विश्लेषण किया गया है, कहीं राम-सीता का आदर्श दाम्पत्य प्रेम दर्शाया गया है, तो कहीं पति-पत्नी का प्रेम-कलह और मिलन विद्रोह वर्णित हुआ है, कहीं राम और उनके भाइयों के बीच का नैसर्गिक स्नेह दिखलाया गया है, कहीं स्वकीया और परकीया प्रेम के विविध रूप दर्शाए गये हैं। चैती गीतों में प्राय लघु कथानकों के माध्यम से ही उपर्युक्त भाव-व्यंजनाएँ सम्पन्न हुई हैं।

'चेती' गाने की एक विशेष शैली होती है। इस वर्ग के गीत की प्रत्येक पंक्ति के प्रारंभ में 'हो रामा' का प्रयोग होता भी है और कभी नहीं भी होता है। 'घाटो' और 'साधारण' दोनों चैती में ऐसा सामान्य रूप से होता है। दूसरी पंक्ति के प्रथम दो पदों की पुनरावृत्ति उस पंक्ति के गायन की समाप्ति पर फिर की जाती है। ये दो पद 'टेक' पद का काम देते हैं।

'बरसाती' मे पावस ऋतु मे गाये जाने वाले गीत सम्मिलित हैं। ये **'बरसाती' 'बारहमासा' 'छौमासा' 'चौमासा'** और 'कजरी' के नाम से प्रसिद्ध है। इन गीतों में विविध मासों के प्राकृतिक सौन्दर्य-वर्णन के साथ मानवीय भावनाओं का प्रकृत चित्रण भी किया जाता है। सामान्यत मगही 'बरसाती' गीतो म गार्हस्थ्य जीवन की विविध अनुभूतियां के चित्र एव नारी के दिव्य सतीत्व को प्रस्तुत करने वाले वर्णन उपलब्ध होते हैं। मगही 'बारहमासा' गीतो में प्राय विप्रलम्भ शृंगार के वर्णन ही प्रधानता मिली है। इस कारण इनमें बुद्धितत्व की अपेक्षा रागात्मक तत्व की ही प्रमुखता रहती है। बारहमासो मे से प्रत्येक मास का वर्णन क्रम मे किया जाता है। साथ ही प्रत्येक मास की रूप रेखा संक्षेप में दी जाती है। इनमे जिन उपकरणों से ऋतु वर्णन की योजना की जाती है, वे प्रचलित एव सर्वानुभूत होते हैं। विरहिणी उन्हीं को लेकर अपने प्रवासी प्रियतम का स्मरण करती है। प्राय लोक प्रचलित बारहमासों का प्रारंभ आषाढ़ मास से होता है, यद्यपि इसके लिए कोई निर्धारित नियम नहीं है। ऐसे 'बारहमासों' का भी अभाव नहीं है, जिनका प्रारंभ चैत से या अवसर के अनुसार होता है। वर्षा ऋतु मे छौमासा या चौमासा गीत भी गाये जाते हैं। छौमासा मे प्राय छ महीनों की अनुभूतियों का उल्लेख होता है और चौमासा में प्राय चार महीनो की अनुभूतियों का। इनमें कहीं नायिका की विरहानुभूतियों का वर्णन होता है, कहीं गार्हस्थ्य जीवन की विविध अनुभूतियों पर प्रकाश डाला जाता है। पारिवारिक जीवन के विविध सबंधो पति-पत्नी सास बहू, ननद भावज, पिता पुत्री, भाई-बहन आदि का सुन्दर विश्लेषण इन गीतों में मिलता है।

सावन-भादो मास म मगही-क्षेत्र में 'कजरी' या कजली' गाई जाती है। 'कजली' गीतों के साथ झूला का अनिवार्य सबंध प्रतीत होता है। कारण झूला झूल कर इसके गाने की प्रथा प्राय समस्त मगध क्षेत्र म प्रचलित है। सावन भादो मे मन्दिरो में भगवान को भी झूला झुलाया जाता है। इसे 'झूलन' कहते हैं। 'झूलन' देखने के लिए इन महीनों में मन्दिरों मे भक्तों की भीड लगी रहती है। झूला के साथ गाये जाने के कारण 'कजली' गीत बडे ही कर्ण-मधुर हो जाते हैं। प्राय किसी बडे बाग मे या खुले मैदान मे या नदी तट पर किसी सघन वृक्ष की डाली म डोरी लगा उस पर पीढा डाल कर झूला बना लिया जाता है। कुछ लोग झूले पर बैठ होते ह और कुछ खडे होकर पेंग मारते होते हैं। सभी झूला झूलते हुए सम्मिलित स्वर में 'कजली' गाते हैं। किसी स्थान पर दल बना कर ढोल के साथ भी कजली गाने की प्रथा है।

वर्ण्य विषय की दृष्टि से 'कजरी या 'कजली' मे सयोग एव वियोग शृंगार के चित्ताकर्षक वर्णन मिलते हैं। ऋतु-शोभा मे वर्षा वर्णन को प्रधानता दी जाती है। वर्षा के साथ विरहिणी के आँसू मिल कर वातावरण को पूर्ण करुणा सिक्त बना देते हैं। डा० ग्रियर्सन ने कहा है—

"इन गीतों का वातावरण करुण रस से पूर्ण है, यद्यपि इनमें विभिन्न भावनाएँ और भाव पाये जाते हैं। "कजरी में गार्हस्थ्य जीवन के विविध पदों की झाँकियों के साथ सामयिक विषयों का भी उल्लेख रहता है।

देवगीत—मगही लोकगीतों का चौथा महत्त्वपूर्ण वर्ग 'देवगीतों' का है। 'देवगीत' दो अवसरों पर गाये जाते हैं—(क) किसी संस्कार के अवसर पर एवं (ख) किसी पूजा, व्रत-त्योहार के अवसर पर। संस्कार गीतों का सांकेतिक अध्ययन हम पिछले पृष्ठों में कर चुके हैं। पूजा, व्रत-त्योहार आदि के अवसर पर गाये जाने वाले गीतों को दो उपवर्गों में बाँटा जा सकता है—(क) सामान्य देवगीत, जो किसी भी पूजा, उत्सव, व्रत आदि के समय मांगलिक दृष्टि से गाये जाते हैं। इनका आनुष्ठानिक महत्त्व नहीं है। (ख) विशेष देवगीत, जो किसी पूजा, व्रत, त्योहार आदि के अवसर पर अनिवार्य रूप से गाये जाते हैं। इनका आनुष्ठानिक महत्त्व होता है।

मगध में जिन देवताओं की पूजा होती है, वे दो श्रेणियों में बाँटे जा सकते हैं—१. पौराणिक देवता, जो परम्परा से पूजित होते चले आ रहे हैं और जिनके नाम के साथ अनेक पौराणिक इतिवृत्त जुड़े हुए हैं। यथा—शिव, पार्वती, गणेश, राम, सीता, लक्ष्मण, हनुमान, कृष्ण, रुक्मिणी, राधा, सूर्य, विधाता, गंगा, नाग, सन्ध्या, दुर्गा देवी आदि। इन देवताओं के साथ अन्य पात्रों के नाम भी जुड़े हुए हैं जिनकी गणना देवपात्रों में ही होती है—यथा महाबल दशरथ, जनक, कौशल्या, सुमित्रा, कैकेयी, भरत, शत्रुघ्न, लवकुश शबरी, वासुदेव, नन्द, देवकी, यशोदा प्रद्युम्न, गोपी, राधा, आदि। इन देवी-देवताओं से सम्बद्ध गीत समस्त भारतीय भाषाओं के क्षेत्र में कतिपय रूपान्तरों के साथ प्रचलित हैं। इनके इतिवृत्त भी सर्व ज्ञात हैं।

२. ग्राम देवता, जिनके सम्बन्ध में कोई पौराणिक आख्यान, अभी तक ज्ञात न हो सका है, पर जो विविध मांगलिक अवसरों पर श्रद्धा से पूजित होते हैं। ग्राम देवताओं की संख्या काफी बड़ी है। इनमें कतिपय प्रमुख हैं—रामठाकुर, बन्दी मनुख, परमेसरी और सोखा-सोखाइन आदि। ये गृहदेवता हैं, कारण ये कुलदेवता' के रूप में गृहस्थों के घर में विराजमान रहते हैं। मगध के प्रत्येक गृहस्थ के घर में एक अलग कोठरी रहती है, जिसे 'देओता घर' या 'सिराघर, कहा जाता है। इसी में 'देवता' रहते हैं। प्रत्येक जाति या परिवार में अपनी-अपनी परम्परा के अनुसार किसी विशेष कुलदेवता को मान लिया जाता है। तथा—किसी के देवता रामठाकुर होते हैं, किसी के बन्दी, किसी के मनुस आदि। प्रत्येक गृहस्थ के 'सिराघर' में उपर्युक्त देवताओं में से किसी एक की 'पिंडी' रहती है, इसे 'सिरापिंडी कहते हैं। कुलदेवताओं से अलग ग्रामदेवताओं में अन्य प्रमुख हैं—गोरेया बाबा, डिहवाल गोरेया, चूहरमल, बड़तार बाबा, बाबा-साहब, बरहम बाबा, दरगाही पीर, डाक बाबा, अगिनमाई, दखिनाहा-बाबा, कोयला वीर, फूल डोक, पंचदेवता भैरो बाबा, डेलवागोसाई, पटन देवी, राम बाबा, महारानी मइया, महारानी-बिधिन आदि।

वर्ण्य विषय की दृष्टि से विचार किया जायगा तो मालूम होगा कि सामान्य देवगीतों' में प्राय देव देवी के माहात्म्य का ही वर्णन किया जाता है। यह देवस्तुति विविध रूपों में की जाती है। कहीं देवता के दिव्य रूप एवं गुणों की प्रशंसा की जाती है, कहीं देव मन्दिर के सौन्दर्य का बखान होता है। कहीं देवता की अवज्ञा करने से जीव दण्डित होते हुए देखे जाते हैं, कहीं उनको

भक्ति, पूजा, अर्चना आदि से वे सुख समृद्धि पाते हुए दीख पड़ते हैं और वहीं देव पीठ की रक्षा एवं स्वच्छता में संलग्न दीख पड़ते हैं। पूजार्चन के मूल में भगवान से सुख सम्पत्ति तथा पारिवारिक वृद्धि पाने की आकांक्षा रहती है। इन आकांक्षाओं की सुन्दर व्यंजना इन देवगीतों में होती है।

"विशेष देवगीतों' का आनुष्ठानिक महत्त्व होता है, ऐसा कहा जा चुका है। मगध क्षेत्र में अनेक व्रत त्योहार मनाये जाते हैं। यथा-असाढ का चसगौरा, तीज, कर्मा धर्मा, जितिया, गोधन छठ आदि। इन अवसरों पर गाये जाने वाले इन गीतों में सबद्ध व्रत त्योहारों के माहात्म्य आदि का वर्णन होता है।

बालगीत—मगही लोकगीतों का पाँचवाँ महत्त्वपूर्ण वर्ग 'बालगीतों' का है। इस वर्ग में वे गीत आते हैं, जिससे किसी न किसी रूप में बाल मनोरंजन होता है। मनोरंजन भी दो प्रकार का होता है—(क) शुद्ध मनोरंजन, जिसका उद्देश्य मात्र मनोरंजन होता है एवं दूसरा सोद्देश्य मनोरंजन, जिसका उद्देश्य मनोरंजन के साथ कुछ सीख देना भी होता है। इस तथ्य को दृष्टिपथ में रख कर मगही बाल-गीतों का निम्नांकित वर्गीकरण प्रस्तुत किया जा सकता है—

क. लोरियाँ
ख. पालने के गीत
ग. शिशु-गीत
घ. खेल के गीत
ङ. शिक्षाप्रद गीत
च पहेलियाँ और ढकोसले।

'लोरियों' के अन्तर्गत उन गीतों को लिया जा सकता है, जिन्हें बच्चों को गोद में लेकर सुलाने के समय गाया जाता है। ऐसे गीतों में 'चाँद मामा' का बार-बार उल्लेख होता है। माता सब के साथ इन गीतों को गाती है। 'पालने के गीत' लोरियों के ही दूसरे रूप होते हैं। बच्चे रोयें नहीं तथा उन्हें नींद आ जाये, इसलिए उनकी माता उन्हें पालने में सुला कर झूला झुलाती हैं। इस समय वह गीतों को भी गाती जाती है। इन गीतों में से एक का कुछ अंश इस प्रकार है—

बबुआ रे, तू कथी के ?
ककड़ी के दुसा के ?
चोआ चनन के पुरिया के।
मइया हउ लवँगिया के।
बाबू जी जफरवा के।

शिशु-गीतों में हम उन लोकगीतों को ले सकते हैं, जो लोरियों एवं पालने के गीतों के अन्तर्गत नहीं आते। इन गीतों में मनोरंजन की प्रधानता होती है। यथा—

चान मामू, चान मामू हँसुआ द !
से हँसुआ काहे ला ? घसवा गढ़ावेला ?
से घसवा काहे ला ? गोरुआ खिलावेला ?
से गोरुआ काहे ला ? गोबरा पुरावेला ?
से गोबरा काहे ला ? गेहुँमा सुखावेला ?

और इसी प्रकार यह गीत आगे बढ़ता जाता है। मगही लोक साहित्य में खेल के गीतों का भंडार अत्यन्त समृद्ध है और वह जन जीवन की व्यावहारिक चेतना की विभिन्न दिशाओं की ओर संकेत करता है। साधारणतया एक वर्ष से लेकर बारह चौदह वर्ष तक के बच्चों की गतिविधि की इनमें बड़ी ही मनोहर झाँकी मिलती है। छोटे बच्चों के मनोरंजन गीतों में "घुघुआ मनेरिया" से शुरु होने वाले गीत का बड़ा महत्त्व है। बड़े बच्चे छोटे बच्चों को पैरों की सुपलियाँ जोड़ कर उन्हीं पर बिठा लेते हैं। और पैर मारते नीचे से ऊपर एवं ऊपर से नीचे ले जाते हैं। इसके साथ ही वे "घुघुआ मनेरिया" वाला गीत भी गाते रहते हैं। गीत गायन की इस प्रक्रिया में जहाँ उनका मनोरंजन होता है, वहाँ शारीरिक व्यायाम भी होता रहता है। 'तार काटो तरकुल काटो' वाला गीत भी कुछ इसी प्रकार का है जो मगध क्षेत्र में सर्वत्र प्रचलित है। पहेली बुझाते हुए गाये जाने वाले खेल-गीतों का भी बड़ा महत्त्व है। इससे जहाँ बच्चों में जिज्ञासा का आविर्भाव होता है, वहाँ उनकी परिष्कृत बुद्धि का भी परिचय मिलता है। जैसे—एक गीत में एक लड़का गाता हुआ पूछता है—किसकी टाँग लम्बी होती है? किस पक्षी के पंख उजले होते हैं? कौन पेट के बल चलता है? हृदय में किसकी बात छिपी होती है? दूसरा लड़का गाता हुआ जवाब देता है कि गरुड़ की टाँग लम्बी होती है। बगुले के पंख उजले होते हैं। साँप पेट के बल चलता है और बहुआ की बातें हृदय में छिपी रहती है। गिनती सीखने के लिए जो गीत प्रचलित हैं, वे भी बड़े सार्थक और उल्लास का संचार करने वाले हैं। यथा—

गन फकीरा राम, दो राम जी के नाम।
गन फकीरा दू त दूजे के चाँद॥

ये गीत जहाँ बालकों का मनोरंजन करते हैं वहाँ उनके लिए बहुमूल्य सीखें भी प्रस्तुत करते हैं। खेल-खेल में ही बच्चों का ज्ञान कोश समृद्ध हो जाता है।

बच्चे अपना मनोरंजन अनेक बार पहेलियों से करते हैं और कभी-कभी मुहावरेदार उक्तियों से भी करते हैं। इनमें प्रायः जन जीवन के मनोरंजक पहलुओं की समीक्षा रहती है। इसमें गप्पें मारना, रोब गाँठना, ख्याली पुलाव पकाना, कंजूसी और अनाहूत मेहमानी निभाना आदि सभी शामिल हैं। जैसे, निम्नांकित पंक्तियों में "कंजूसी" और "मान न मान मैं तेरा मेहमान" पर छींटाकशी की गई है—

सुक्ख धान सँभ ले आयऽ तीन बिहान ले,
मोर चटिया[1] पेनवे घाव, दौ महीना से उतरे ताव,
हम पहुँना[2] दुर्जोधन नाँव,[3] बरस रोज ले घर ना जाऊँ॥

पहेलियों के विभिन्न रूप होते हैं। बड़े बच्चों के लिए जो पहेलियाँ होती हैं, वे जरा कठिन होती हैं। कई एक तो गणित का सुन्दर चमत्कार छिपाए होती हैं। उनसे जहाँ उनका मनोरंजन होता है वहाँ उनकी बुद्धि की भी परख होती है। एक पहेली का सारांश है—

'चार मन्दिर हैं। चारों के आगे चार पोखर हैं। उनके जल में धोने पर फूल दूने हो जाते हैं। एक पुजारी कुछ फूल लेकर गया और चौथे मन्दिर में चढ़ाने पर एक फूल भी नहीं बचा। तो वह कितने फूल लेकर चला था।

---

१. खड़ाऊँ, जूता। २. मेहमान। ३. नाम।

मध्यम अवस्था के बच्चे छोटी एवं सरल पहेलियाँ बुझाते हैं, जिनमें कुछ संकेत लिए हुए होते हैं और कुछ बूझना होता है। कुछ में संगीतात्मक ध्वनियाँ बहुत अधिक होती हैं, जो बड़ी ही कर्णप्रिय होती हैं। जैसे—

एक चिरैया पट ओकर पंख दूनो पट।
ओकर खलरी उजार, ओकर मॉस मजेदार॥ (केला)

विविधगीत—

मगही लोकगीतों का छठा महत्त्वपूर्ण वर्ग "विविधगीतों" का है। विविध गीतों में झूमर, बिरहा, अलचारी, गोदना, निर्गुण एवं सामयिक गीत को सम्मिलित किया गया है।

"झूमर" का अर्थ है 'झूमना' या 'झूम कर नाचना'। महिलाएँ झुण्ड में खड़ी होकर झूम-झूम कर "झूमर गाती हैं। ये गीत किसी भी शुभ संस्कार या आनन्दमय अवसर पर गाये जाते हैं। ये गीत मानो रस के कलश होते हैं। रस का सबंध भावों से है और झूमर गीतों की सर्वप्रमुख विशेषता है—उनकी भावात्मकता। इन गीतों में श्रृंगार रस के संयोग पक्ष में यह भावात्मकता उल्लास, आनन्द आदि के रूप में अभिव्यक्त होती है तो वियोग पक्ष में प्रिय-मिलन की कामना, विरहजनित वेदना, व्याकुलता आदि की विवृत्ति के रूप में।

"बिरहा गीत" कारुणिक शैली में गाये जाते हैं, इससे इनका हृदय पर गहरा प्रभाव पड़ता है। यों नाम से बोधित होता है कि 'बिरहा' विरह के गीत हैं, पर इनमें संयोग पक्ष की भी झाँकियाँ मिलती हैं। सच पूछा जाये, तो इनमें प्रेम के सभी रूपों की झाँकियाँ मिलती हैं। इनके अतिरिक्त धार्मिक आस्थाएँ, नारी की सन्तान कामना गार्हस्थ्य जीवन के विविध चित्र आदि भी इन बिरहा गीतों में मिलते हैं। बिरहा' गीत विवाहादि शुभ संस्कारों के अवसर पर प्राय प्रतिद्वन्द्विता के साथ गाये जाते हैं। दो दलों के लोग आमने सामने बैठ कर एक के बाद एक बिरहा गाते हैं। जो दल अंत में आगे गाने में असमर्थता प्रकट कर देता है वह पराजित मान लिया जाता है। उपर्युक्त अवसरों के अतिरिक्त कृषक गण खेतों में काम करते हुए, मजदूर लोग घास छीलते हुए, चरवाहे पशुओं को चराते हुए, बलगाड़ी वाले आधी रात में सड़क पर बैलगाड़ी हाँकते हुए 'बिरहा गीत गाते जाते हैं। कारुणिक शैली में गाये जाने के कारण ये हृदय पर गहरा असर डालते हैं। 'बिरहा' में प्रायः गीत की चार कड़ियाँ होती हैं। अत्यन्त छोटे होने के कारण ये रस के छींटे भर दे पाते हैं। इनके गायक सामान्यतया 'पुरुष' होते हैं और गायन की एक भिन्न शैली ही होती है।

'अलचारी' गीत की एक शैली है, जिसमें या तो लाचारी की स्थिति का उल्लेख होता है या व्यंग्यात्मक, विनोदात्मक एवं हास्यरसात्मक शैली में पत्नी की श्रेष्ठता एवं पति की हीनता दिखलायी जाती है। कहीं कहीं विशुद्ध प्रेम प्रसंग भी वर्णित मिलते हैं। ये भाव व्यंजनाएँ कभी शिव पार्वती के माध्यम से की जाती हैं और कहीं अन्य पात्रों के माध्यम से। 'गोदना' के गीत गोदहारिने सूई चुभा कर गोदना गोदते समय गाती हैं। गोदते समय गोदाने वाली को बड़ा कष्ट होता है। ये गीत उसका ध्यान दूसरी ओर केन्द्रित कर सूई के दंश को धीमा कर देते हैं। अब तो नहीं, पर हाल हाल तक गोदना को मगह-क्षेत्र में सौंदर्य का एक साधन माना जाता था। गोरे अंगों पर काले काले गोदने उन्हें बहुत प्रिय लगते थे। फिर कुछ दिनों पूर्व हिन्दू

स्त्रियों के लिए 'गोदना' अनिवार्य माना जाता था। यह धर्म का एक अंग ही बन गया था। गोदना गीतों के मूल में उपर्युक्त उद्देश्यों के अतिरिक्त शृंगार भावना भी निहित थी।

'निर्गुण' गीतों में अलौकिक तत्त्व चिन्तन को प्रधानता दी जाती है। विश्व क्या है? इसका निर्माता कौन है? जीवात्मा को प्रेरित करने वाली शक्ति कौन सी है? आदि जिज्ञासाओं की विशद चर्चा इन गीतों में मिलती है। इन गीतों के गायक प्रायः साधु-फकीर होते हैं। ग्रामीण जनता नहीं। अतः विश्व के प्रति उदासक्ति भाव, ईश्वर के प्रति अनुराग तथा संसार के साथ मोह के परित्याग के उपदेश इन गीतों में भरे मिलते हैं।

'सामयिक गीत' से तात्पर्य उन अत्याधुनिक मगही लोक गीतों से है, जिनपर नवयुग की छाप मिलती है। इनमें नवीन आभूषण, नूतन फैशन, नये शासक एवं उनकी नीति आदि का उल्लेख हुआ है। इनके अतिरिक्त इनमें देश में जगी राष्ट्रीय चेतना की लहर, स्वराज्य के महत्त्व, विदेशी शासन सत्ता एवं उसके अत्याचार, पराधीनता के कारण, विश्वयुद्ध आदि की भी अच्छी अभिव्यक्ति हुई है।

मगही लोकगीतों की भावधारा

यदि मगही लोकगीतों का भावात्मक विभाजन किया जाये तो संक्षेप में निम्नांकित वर्ग प्रस्तुत किए जा सकते हैं—

१ लोक जीवन का सामाजिक धरातल
२ प्रेम सम्बन्धों के विश्लेषण
३ मार्मिक प्रसंग
४ धार्मिक आस्थाएं
५ जड़ चेतन का समन्वय।

१ लोक जीवन या सामाजिक धरातल

मगही लोकगीतों में लोक जीवन का सामाजिक धरातल बड़े ही पुष्ट रूप में व्यक्त हुआ है। कारण कि लोकगीत लोक-जीवन का ही स्वर है। सामान्य जनजीवन की झाँकी जैसी लोकगीतों में मिलती है वैसी महाकाव्यों में नहीं क्योंकि महाकाव्य निश्चित परिपाटी पर चलते हैं। उनके नायक को तो धीरोदात्त ही रहना है। भला वे महलों को छोड़ टूटी मड़ैया में कैसे रह सकेंगे। शिष्ट कवियों की एक निश्चित लकीर होती है जिसके वे फकीर बने रहते हैं। पर लोक कवि जन जीवन की एक इकाई होता है, जिसमें अभिव्यक्ति की स्वाभाविक क्षमता होती है। उस अभिव्यक्ति में वही कुछ आ पाता है जो उनके जीवन में होता है—और वह अच्छा भी हो सकता है, बुरा भी। लोक कवि पुरुष एवं नारी दोनों के मनोजगत् से अपनी जानकारी प्रकट करता है। उसकी अनुभूति की पैनी पकड़ अद्भुत है। वह अपनी अनुभूति को सजाने एवं सबल बनाने के लिए वायवीय कल्पनाओं एवं निराधार उड़ानों को प्रश्रय नहीं देता। वह उन्हीं वस्तुओं

को ग्रहण करता है, जो उनके दैनान्दन जीवन के परिवेश में आती है। उदाहरणार्थ—मगही का एक छोटा गीत चित्र प्रस्तुत है—

जलवा मे चमकऽ हई चिल्हवा मछलिया,
रैनिया चमऽकई तरवार।
सभवा में चमकई सामी के पगडिय,
हुलसऽ हई जियरा हमार।।

अर्थात् 'जल में जिस प्रकार चिल्हवा मछली चमकती है रात्रि में जिस प्रकार पैनी तलवार चमकती है, वैसे ही सभा में मेरे स्वामी की पगड़ी चमक रही है, जिसे देख देख मेरा जी हुलस रहा है।''

यह एक नारी का वचन है। अपने स्वामी को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सुख बढ़ चढ़ कर देखने सुनने की अभिलाषा प्रत्येक नारी का एक स्वाभाविक रूप से होती है। पारस्परिक स्नेह बंधन में यह भावना सजग रहती है। उपर्युक्त पंक्तियों से यह कितनी सम्पूर्णता के साथ ध्वनित होती है। इस गीत में उपमाएँ कितनी सार्थक है। 'चिल्हवा' अपनी प्रतीकात्मक योजना के अनुसार उसके स्वामी के स्वस्थ रूपात्मक शरीर की ओर संकेत करती है एवं 'तरवार' वीरत्व की ओर। 'हुलसऽ हई' शब्द आन्तरिक प्रसन्नता का बोध कराता है, जो परमानन्द सहोदर होती है।

मगध की नारी की आकांक्षाओं अभिलाषाओं को जानने का सबसे अच्छा माध्यम यहाँ के लोकगीत ही है। कारण कि लोकगीतों के सृजन में अधिकांश देवियों का ही हाथ होता है। ये आकांक्षाएँ अभिलाषाएँ विवाह, पुत्र प्राप्ति सतीत्व रक्षा, वैभव प्राप्ति आदि सभी से सम्बद्ध होती हैं। इस क्रम में जिन लोकगीतों में अतिशयोक्ति की व्यंजना होती है, उसमें बड़ा ही चमत्कार आ जाता है। जैसे—

पिया पिया रटि के पियर भेलइ देहिया,
लोगवा कहइ कि पाडु रोग।
गाँमा के लोगवा मरमियो न जानइ,
भेलइ न गवनवा मोर।।

अर्थात् 'पिया पिया रटते रटते मेरी देह पीली पड़ गई, परन्तु लोग इसका कारण पाण्डु रोग बतलाते हैं। मर्म की बात क्या जानें कि इसका मूल कारण अब तक "गवनवाँ मोर" न होना ही है।

इन मगही लोकगीतों में घरेलू जीवन की बड़ी ही विशद अभिव्यक्ति मिलती है। कहीं सास वधू के कर्कश सम्बन्ध आते होते हैं, तो कहीं भाई-बहन का उत्कट पारस्परिक प्रेम। कहीं माँ का वात्सल्य प्रेम छलक उठा आया है, तो कहीं भावज-ननद का परिहास। इनमें कहीं-कहीं ऐसे चित्र भी मिलते हैं, जो करुणा से आप्लावित होते हैं। जैसे—बाल विधवा का विलाप

उदाहरणार्थ एक गीत में लड़की पूछती है—"माँ तुमने सबकी शादी कर दी पर मेरी कब करोगी ?" इस पर माँ का उत्तर है—

"तोहरो वियहली गे मैना वाले जब पनमाँ
तोहरो वियहुआ मरिये गेलउ रे कि ॥

बचपन में शादी और उस अबोधावस्था में ही पति की मृत्यु का संवाद पाकर बेचारी की क्या दशा हुई होगी उसकी अभिव्यक्ति शक्ति के बाहर है। अन्त में रुआँसी होकर वह कहती है—

"हमरा वियहुआ मइया मरिए जे गेलन,
उनकर चैंतियो दे वतलाइए रे कि ॥

—"ऐ माँ ! मेरे स्वामी तो मर ही गये। अब क्या सोचना ? पर उनकी चिता कहाँ सजी थी, उसे ही जरा बतला दे।" माँ दुख के साथ उत्तर देती है—

सावन भदउआ के अलउ बूढ़ी धधिया।
ओरे में गेलउ चैंतिदा दहिये रे कि ॥

—"प्यारी बेटी पिछले सावन-भादों में जोरों की बाढ़ आयी थी, इसी में उनकी चिता बह गई। यह सुन कर बेटी को ऐसा लगा, जैसे उसकी छाती फट जायेगी। उसने स्वामी के दर्शन तक न किए, मिलन की कथा तो दूर रही। रोते रोते बोली—

रोइए रोइए मैना मइया से बोललइ।
अगे चैंतिया दहि गेलन धरतिया न कि ॥

—"प्यारी माँ चिता तो बह ही गई, पर वह धरती तो नहीं बही, जिस पर चिता सजी थी ?"

अन्तिम पंक्ति में कितनी पीर और पातिव्रत्य की भावना संजोयी है, कहने की आवश्यकता नहीं।

लोककवि ने उन चित्रों को भी अंकित करने में संकोच नहीं दिखलाया है, जो सुन्दर नहीं कहे जा सकते। मगही गीतों में सौतियाडाह, सास बधू के कटु सम्बन्ध, ननद भावज की प्रतिद्वन्द्विता तथा छलना आदि के अनेक चित्र उपलब्ध हैं। इन गीतों में मागधी जनता के आर्थिक पक्ष का भी विश्लेषण बड़े ही सुन्दर रूप में हुआ है। इस परिच्छेद में आने वाले मगही गीतों में और भी कई खूबियाँ नजर आएँगी। यथा—

"कहाँ गेले सोमर ? चोरी करे बाबू !
मारो खैलें सोमर ? बड़ी मार बाबू !
दबकले न हल सोमर ? दीया बरलक बाबू !
भगलें न हल सोमर ? सब छेंक लेलक बाबू !
फिन जयमें सोमर ? टंग टुटलइ बाबू !"

उपर्युक्त गीत में सबसे पहले तो उनका नाटकीय संवाद हमारा मन मोह लेता है। फिर एक घटना विशेष के प्रत्येक अंग का जितना विश्लेषण हुआ है, उसका क्या कहना। साथ ही जन साधारण की दैन्य स्थिति का भी बड़ा ही करुणापूर्ण संकेत मिलता है।

जन-जीवन में फैलती राष्ट्रीय चेतना का द्योतन भी मगही लोकगीतों में हुआ है। भारत के इतिहास-निर्माण में मगध का महत्त्व सर्वविदित है। स्वातंत्र्य भावना की जो नयी लहर चली, उसने मागधी जनता को खूब प्रभावित किया। "जाँत के गीतों" में इसकी बड़ी ही मर्म-स्पर्शी झाँकी मिलती है। एक गीतांश प्रस्तुत है—

हम तो टिकुवा गढ़ायब, ओ पर जयहिन लिखायब
हम तो नेकलेस गढ़ायब ओ पर जयहिन लिखायब ॥

रीति-रिवाजों एवं प्रथाओं के विश्लेषण के लिए तो ये गीत अद्भुत हैं। जन-मन अपने मूल रूप में प्रशिक्षित नहीं होता। वह नाना लोक परम्पराओं और अन्ध विश्वासों से आक्रान्त होता है। मागधी समाज में विवाह के अवसर पर वर के द्वारा दहेज माँगने की प्रथा प्रचलित है। लोकगीतों में इसके अनेक चित्र उपलब्ध होते हैं यथा—

दूलहा मलीन है काहे मन मैल है।
दुलहा मलीन है, घड़िया के वास्ते,
घड़िया भी देवइ, चैनमा भी देवइ ॥

परिस्थिति विशेष की जैसी सूक्ष्म व्याख्या मगही लोकगीतों में मिलती है, वैसी महाकवियों के लिए भी दुर्लभ है।

प्रेम सम्बन्धों के विश्लेषण

यौन सम्बन्धों का विश्लेषण अन्यान्य लोकगीतों की तरह मगही लोकगीतों में भी खूब हुआ है। इनमें शृंगार के सहज-स्वाभाविक चित्र मिलते हैं। यथा—

"फूल लोढ़े गेली ससुर फुलवरिया,
बगिया में पियवा अइलन हमार।
एक खोंइछा लोढ़ली, दूसर खोंइछा लोढ़ली,
बगिया में फुलवा देलन छितराय।"

—मैं फूल तोड़ने के लिए ससुर जी की फुलवारी में गयी थी कि वहीं मेरे 'पिया' आ गये। एक 'खोंइछा' फूल मैंने तोड़ा, फिर दूसरा 'खोंइछा' तोड़ा कि प्रियतम ने 'खोंइछा' खोल कर उपवन में सारे फूल बिखेर दिए। शृंगार रस का कितना सरस स्वाभाविक चित्रण है। यों तो इस प्रकार प्रेम-सम्बन्धों का विश्लेषण करने वाले चित्रों का सब प्रकार के गीतों में प्राधान्य है, पर विवाह के गीत, विशेष कर कोहबर के गीत, कथागीत एवं ऋतु गीतों में विशेष रूप से पाये

जाते हैं। कोहबर के गीतों में प्राय नव विवाहित दम्पति के हास परिहास चित्रित होते हैं। नवेली वधू के भावों का वर्णन लोक रवि बड़े मनोयोग से प्रस्तुत करता है। उदाहरणार्थ एक मगही गीत का भावार्थ प्रस्तुत है। वधू अपने पति से कह रही है—मैं तो इलायची के फूल लूँगी, मैं तो लवंग के फूल लूँगी। 'पति पूछता है—' मैं उसे पाऊँगा कहाँ ?' "वधू कहती है—"प्यारे। पंछी का रूप धर कर बाबा जी की फुलवारी में चले जाना और फूल ले आना। भौंरे का रूप धर कर चले जाना और रस चूम कर ले आना।' वर चला गया। उसने एक फूल तोड़ा, फिर दूसरा फूल भी। इतने में वेष बदल कर उसका साला पहुँच गया। उसने लवंग की "गाछ" में उसे बांध दिया और सोने की छड़ी से अपने 'जीजा' को मारने लगा। पति ने रोते हुए अपनी प्रिया को पत्र लिखा—"प्राणप्यारी प्राणों के लाले पड़ गये हैं। लवंग के 'गाछ' में बाँध दिया गया हूँ, जरा अपने भाई को पत्र भेज कर छुड़ा दो न" हँसते हुए वधू ने पत्र लिखा—"ऐ माली ! अपने चोर को छोड़ दो। उसे सोने की छड़ी से मत मारो।"

वर-वधू के शृंगार चित्रों के अलावा, अन्य लोकगीतों के समान ही मगही में भी प्रेमी-प्रेयसी के प्रणय सम्बन्धों का विश्लेषण करने वाले बहुत से गीत मिलते हैं। काव्य में इसके दो पक्ष मिलते हैं—संयोग एवं वियोग। मगही में ऐसे बहुत गीत मिलते हैं, जिनमें संयोग एवं विप्रलंभ शृंगार की स्वाभाविक एवं मर्मस्पर्शी अभिव्यक्तियां हैं। संयोग का एक चित्र ऊपर प्रस्तुत किया गया है। विप्रलभ शृंगार के चित्रों में विरह सम्बन्धी भावनाएँ मुखरित हो उठी हैं। उनमें वह कृत्रिमता नहीं है, जो प्राय महाकाव्यों में दीख पड़ती है। विरहिणी के उच्छ्‌वास, उसकी तड़प, उसकी सम्पूर्ण वेदना इनमें साकार हो उठी है यथा—एक विरहणी कहती है—

"जहिया से पिया मोरा गैलऽ तू विदेसवा,
बलमुआ हो ! तोरा बिन अँखियो न नींद।
जहिया से पिया मोरा गैलऽ तू विदेसवा
बलमुआ हो, कइलीं न सोरहों सिंगार।
कहियो न सजौलीं हम फुलवा सेजरिया।
बलमुआ हो सपना भे गेल मोरा नींद।"

कितना सात्विक प्रेम है। उसे इसका अफसोस होता है कि काश ! वह जान पाती कि उसका प्रियतम परदेश चला जायेगा, तब तो किसी भी हालत में उसे जाने नहीं देती—

"एही हम जनिती पियवा, जयथिन परदेसवा हो,
बाँधती हम रेसम के डोर।
रेसम बधनमा पिया टुटिए फाटिए जयतइ
बाँधती हम अँचरा के कोर।

अब तो प्रतीक्षा ही प्रतीक्षा है । उसकी घड़ियाँ भी विरहिणी के लिए असह्य हो रही हैं। प्रिय से अब तक कुछ संदेशा तक नहीं आया है । इससे रह-रह कर उसका हृदय अंदेशे के होले में डोलने लगता है। वह स्वयं संदेशा भेजने को व्याकुल है, पर क्या करे ? कैसे भेजे—

कथिए फारि-फारि कोरा कगदवा पिया,
कथिए केरा मसिहान हे ।
कथिए चीरि-चीरि कलमा बनाई पिया,
कथिए लिखी हुई बात हे ।।"
आँचर फारि-फारि कोरा कगदवा प्यारी,
नयने कजरवा मसिहान हे।
अंगुरी चीरि-चीरि कलमा बनाई प्यारी
लखी न देहु दुई बात हे।"

नायिका कहती है—क्या फाड़ कर कागज बनाऊँ ? स्याही कहा से लाऊं ? क्या चीर कर कलम बनाऊँ ? बताओं न कैसे दो टूक बातें लिखूं ? सखी उत्तर देती है— आँचल फाड़ कर कागज बना ले। नयनों में लगे काजल की स्याही घोल ले और अँगुलिया चीर कर कलम तैयार कर ले, और फिर दिल की सारी बातें लिख।

३. मार्मिक प्रसंग

जीवन में कुछ ऐसी परिस्थितियाँ आती हैं, जब हमारे मनोविकार पूर्णतः गतिशील होते हैं। काव्य में इन्हीं मनोविकारों को 'स्थायी' भाव एवं 'व्यभिचारी' भाव की संज्ञाएँ दी गई हैं। इन भावों की गतिशीलता के परिवेश में सब तरह के अवसर आते हैं। लोकगीत इन्हीं भावों की शाब्दिक काया है। अतः उनमें हमारी चेतना को स्पर्श करने की पर्याप्त शक्ति है। उदाहरणार्थ 'बाँझपन' को लीजिए। हिन्दू-समाज में 'सन्तान' का बड़ा महत्त्व है। मगही लोककवि कहता है कि कोई बाँझ स्त्री पुत्र-प्राप्ति के लिए एक जगह खड़ी होकर, सूर्यदेव की प्रार्थना करने लगी। पास ही बिल में बैठी नागिन ने कहा—जरा दूर जाकर 'सूरज बाबा' को प्रणाम करो। कहीं तुम्हारी छाया पड़ने से मैं भी बाँझ न हो जाऊँ। इसे सुन कर बेचारी करुणार्द्र हो उठी।

बेटी की विदाई भी ऐसे ही मार्मिक प्रसंगों में है। बेटे की तरह उसका भी जन्म होता है। माँ-बाप बड़े प्यार से उसका लालन-पालन करते हैं। पर, एक दिन वह पराई हो जाती है। बिछुड़ते समय उनके हृदय की जो दशा होती है, सो तो वही जानते हैं। इसी प्रसंग का वर्णन राजस्थानी लोकगीत 'कोयलडी' में होता है, जिसमें बेटी की विदा के समय परिवार की स्त्रियाँ आँसुओं में डूबी हुई आती हैं—

"ओ मेरी हरे-भरे वन की कोयल ? तू सबको उदास कर कहाँ चली ? 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' में कालिदास ने इस दृश्य का बड़ा ही मर्मस्पर्शी चित्र खींचा है। पढ़ते वक्त कौन सहृदय नहीं रो उठेगा ? महर्षि कण्व कहते हैं—

"यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया
कण्ठः स्तम्भितवाष्पवृत्तिकलुषश्चिन्ताजडं दर्शनम्।
वैक्लव्यं मम तावदीदृशमहो स्नेहादरण्यौकसः
पीड्यन्ते गृहिणः कथं नु तनयाविश्लेषदुःखैर्नवैः।"

सीता की शादी हो रही है। कन्यादान का प्रसंग है। व्यामोह, विह्वलता और चिन्ता के कारण राजा जनक की बड़ी ही करुण दशा हो चली है। लोककवि कहता है—

धर-धर कँपथिन भूप जनक जी, जुगल नयन ढरे नीर हे।
केहि विधि दान करब हम सिय के चित न रहत मोर धीर हे।

बेटी की विदा के समय गृहस्थों को जो मार्मिक व्यथा सहनी पड़ती है, उसे मागधी लोककवि ने निम्नांकित पंक्तियों में मानो और भी मूर्त कर दिया है। शब्दों के गागर में उसने वेदना का सागर भर दिया है—

गउनमा के दिनमा धरायल, गउना नगिचायल हे।
सखी करथिन चतुरइया, बाबू के फटलई करेजवा,
रे जैसे भादों काँकर, मइया के ढरे नयना लोर,
रे जैसे भादों ओरी चुए।।

गौने का दिन निश्चित हो गया है। सखियाँ मिल कर प्यारी सहेली की विदाई की तैयारी कर रही हैं। पर बाबू की छाती विदा के समय फटी जा रही है, जैसे भादों में ककड़ी फट जाती है। मैया के नयनों से झर झर आँसू झरते हैं जैसे भादों में ओरी (ओलती) से पानी गिरता है।

४. धार्मिक आस्थाएँ

हम भारतीयों का सम्पूर्ण जीवन धार्मिक आस्थाओं से ओतप्रोत है। लोकगीतों में इनका व्यापक स्वरूप दृष्टिगोचर होता है। संस्कार, पुनर्जन्म, देवी देवता आदि के गीत इन्हीं में अन्तर्हित हैं। जन्म से मरण तक षोडश संस्कारों का विधान है। इन संस्कारों के पीछे मंगल एवं कल्याण की भावनाएँ ही काम करती हैं। लोकगीतों में इन संस्कारों का यही स्वरूप प्रकाशित होता है। प्रत्येक संस्कार अवसरविशेष से सम्बन्धित है और उक्त अवसर पर गाये जाने वाले लोकगीतों में इन संस्कारों की बड़ी मार्मिक झाँकियाँ मिलती हैं।

'हाल' की 'गाथा सप्तशती' में इस परम्परा के कई एक स्थलों पर सुन्दर संकेत मिलते हैं। भागवतकार ने भी इसका उल्लेख किया है। वाल्मीकीय रामायण के बालकाण्ड के १२ वें अध्याय का नौवाँ श्लोक एवं रघुवंश के तीसरे सर्ग का १६ वाँ श्लोक भी इसी ओर संकेत करता है। संस्कार गीतों में मुख्यतया प्रसंगानुकूल रीति रिवाज, उल्लास, हर्ष आदि का विश्लेषण होता है। शृंगार का संयोग पक्ष इनका मुख्य वर्ण्य विषय है। बच्चे का जन्म हो जाने के बाद मागधी नारियाँ प्रसूतिगृह में बैठ जाती हैं और गाती हैं —

"अजी दादा लुटाने अनधन सोनमा,
अरे दादी लगाने रेसम के फुदना,
पुरइन पाती से निकले गोपाल ललना।"

उक्त अवसर पर परिवार के सदस्यों की मनोवैज्ञानिक स्थान का बड़ा ही सूक्ष्म विश्लेषण इन गीतों में मिलता है। यहाँ एक बात ध्यान में रखने लायक है—वह है पुत्र जन्म के प्रति माता पिता का आकर्षण। शायद इसका मूल कारण यह है कि पुत्र द्वारा वंश परम्परा की रक्षा होती है। वह माता पिता की वृद्धावस्था में अवलंब एवं मरण पश्चात् श्राद्धादि धर्मविहित कर्म सम्पादन करने वाला होता है।

जन्म के साथ ही विवाह संस्कार के प्रति मागधी लोकभावना का अत्यधिक झुकाव दीख पड़ता है। विवाह के क्रम में उपस्थित होने वाले प्रत्येक विधान का ये उल्लेख करते हैं। इनके गीतों में एक मनोहर प्रसंग तब आता है जब वह दरवाजे पर पहुंचता है। मुख्य द्वार पर कुछ नारियाँ हाथों में अक्षत पान एवं दीप धूप सुवासित थाल लिए खड़ी रहती हैं। अगल बगल के छज्जे स्त्रियों से खचाखच भरे रहते हैं। अजीब समां रहता है। प्रसन्न चेहरों पर उल्लास चमकता है। पटाखों की आवाज वातावरण में जोश पैदा करती है और उठती रहती है थरथरानी, सिहरन भरी एक लय एक ताल पञ्चम स्वरों में थिरकती गीतों की सुमधुर झंकार—

नदिया किनारे नैया लायो रे, झँपकि बूँदा बरसे।
बाबू मोरा है अलबेला रे नजरियो ना लागे ।।

देवी देवताओं के गीत भी भावना परिवेश में आते हैं। इन गीतों में प्रायः राम कृष्ण, महादेव तुलसी, शीतला गंगा आदि के रूप गुणों का उल्लेख होता है। इस प्रसंग में कुछ बातें विशेष द्रष्टव्य हैं। राम कृष्ण आदि परमेश्वर के अवतार माने जाते हैं लोकगीतों में सामान्य जन का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनके रूप उनके प्रेम आदि में जन जीवन ही मुखर होता है। यथा—

जनक दुलारी, गेलन फुलवारी
ले ले सखियन दस संग।
चम्पा चटक चमेली तोड़लन,
चीर गुलाबी रंग।
भले रघुनाथ के दीठ पड़ल ।।

कितना सुन्दर गीत चित्र है। एक अन्य गीत में [illegible] ण के माध्यम से सामान्य जीवन का हास-परिहास अति सुन्दरता से व्यक्त किया गया है—

"छोटे मोटे ग्वालिन देखन बड़ सुन्दर,
चली अयलन दहिया बेचन हो रामा।
इ पारे मथुरा उ पारे गोकुला,

बीचे ठइयाँ कान्हा धयलन बहियाँ हो रामा ।

छोड़ू छोड़ू कान्हा रउया, हमरो अँचरवा,

पड़ो जयतो, दही के छिटकवा हो रामा ।

तोरा लेखे अगे ग्वालिन दही के छिटकवा,

मोरा लेखे अतर गुलबवा हो रामा ।

महादेव से सम्बद्ध गीतों में अद्भुत रस का पूर्ण परिपाक हुआ है । यथा—

मथवा जे अइले महादेव, बड़े-बडे जट हे ।

कंधवा जे अइले महादेव, बघिनी के छाल हे ॥

पाछे बाहर भेलन सासु हे मदारन ।

गोहुमन सप्पा छोड़ले फुफकार ॥

भला सासु भला गेलऽ हे डेराई ॥

तोरा लेखे अहे सासु गोहुमन साँप ।

मोरा लेखे अहे सासु गज मोती हार ॥

जड़ चेतन का समन्वय—

मगधी लोकगीतों में जड़त्व में चेतनता के आरोप के अनेक उदाहरण मिलते हैं । मगध की जनता के लिए गंगा एक सामान्य नदी नहीं, एक देवी[1] है, जिनमें दुखों को दूर कर सुखों से भरपूर करने की पूरी शक्ति है । उसका रूपायन एक नारी के रूप में होता है, जो माँगों में टिकुली 'साटती' है, ओढ़नी ओढ़ती है एवं नाक में नथ पहनती है । चारों घाटों के बीच खेलती रहती है । कितना सुन्दर रूप खड़ा किया गया है । इसी प्रकार 'शीतला'[2] भी एक देवी के रूप में वर्णित एवं चित्रित हुई हैं । गीतों में 'शीतला देवी' का उल्लेख प्रायः उनकी सात बहनों के साथ होता है । सब के रूप, प्रकृति, रुचि एवं महिमा का गीतों में विस्तृत वर्णन होता है ।

अलौकिक तत्त्वचिंतन प्रायः उन लोकगीतों में मिलता है, जिसे फकीर गाते चलते हैं । ब्रह्म क्या है ? विश्व को किसने बनाया ? जीवात्मा को कौन प्रेरित करता है ? आदि जिज्ञासाओं की विशद् चर्चा उनमें मिलती है । उन लोकगीतों के अध्ययन से पता चलता है कि उनमें जो भावनाएँ संजोयी गई हैं, वे प्राचीन परम्परा से प्रभावित हैं । यह प्रभाव उनमें किस प्रकार आया, कहना मुश्किल है । उदाहरण के लिए एक मगही गीत प्रस्तुत है—

साधो लोक से पराइ, गुन गाइ गाइ बहुरी न आवइ एना ।

ककरे बले विषया में, लगाई पेसल मनमा,

कउन जे ढुलकावे, उत्तम जोड़ी में परनमा ।

---

१ देखिए इसी संग्रह में गंगा-सम्बन्धी गीत ।

२. देखिए इसी संग्रह में शीतला-देवी-सम्बन्धी गीत ।

ककरे बले अँकुरइ, कठ मे वचनमा,
कउन देव देलक मोरा कान अउ नयनमाँ।
कनमों के कान साधो, मनमो के मनमा,
वचनों के वाक से, उ परनमों के परनमा।
अँखियो के आँख, भिन्न भिन्न रूप धारी,
ओकर प्रतापे आहो में रहे सनचारी।

स्पष्ट है कि उपर्युक्त प्रक्रिया पर कठोपनिषद् के निम्नांकित मंत्रों का प्रभाव है —

केनेषितं पतति प्रेषितं मनः, केन प्राणः प्रथमः प्रैति युक्तः।
केनेषितां वाचमिमां वदन्ति चक्षुः श्रोत्रं क उ देवो युनक्ति ॥
श्रोत्रस्य श्रोत्रं मनसो मनो यद् वाचो ह वाचं स उ प्राणस्यप्राणः
चक्षुषश्चक्षुः रतिमुच्य धीराः, प्रेत्यास्माल्लोकादमृता भवन्ति ॥

लोकगीतों के माध्यम से जन जीवन का एक और पहलू सामने आता है—वह है प्रकृति से उसका तादात्म्य सम्बन्ध। लोकगीतों में प्रकृति से मानवीय सम्पर्क की जितनी सरल एवं सरस व्याख्या मिलती है उतनी अन्यत्र दुर्लभ है। यह स्वाभाविक ही है। कारण लोकगीत मानवसमाज की उन श्रेणियों में ज्यादा गूँजते हैं जिन पर आधुनिक सभ्यता का प्रकाश बहुत कम पड़ा है।

मगही लोककथा गीत

वस्तुतः ये लोकगीत ही हैं पर इसमें कथातत्त्व की प्रधानता होती है। इन लोककथा गीतों का प्रारंभ प्रायः उस घटना के किंचित विस्तृत वर्णन से होता है जो सम्पूर्ण कथा भाग का बीजरूप होता है। मध्य में इन कथाओं का वर्णनात्मक विस्तार चलता रहता है। अंत प्रायः कारुणिक अभिव्यक्ति से होता है। यह कारुणिकता उस पात्र के आश्रित होती है, जो कथा के परिणाम का भोक्ता होता है।

उदाहरणार्थ एक-दो मगही लोककथागीतों को देखा जा सकता है। एक की नायिका है—'दौलत'[1] जिसके जीवन का कारुणिक अवसान पिता के धार्मिक अन्धविश्वास के आघात में होता है। कथा का सारांश यों है—एक राजा ने पोखरा खुदवाया, जिसमें पानी नहीं आया। ज्योतिषियों ने कहा—"पोखरे में पानी तभी आ सकता है, जब आप अपनी कन्या दौलत का बलिदान देंगे।" राजा ने हजाम भेज कर छल से अपनी विवाहिता कन्या दौलत को बुलवाया। जैसे ही वह पिता की ड्योढ़ी पर पहुँची, माँ ने कहा—'बेटी! हाथ में सिंदूर का सिनोरा लो और पोखरा पूज कर घर में आओ।' दौलत जैसे ही पोखरा पूजने को प्रविष्ट हुई कि उसमें पानी आने लगा। क्रमशः पानी उसके पैर, ठेहुना, कमर, गर्दन को छूता लिलार की टिकली तक पहुँच गया। वह आर्त्तनाद करती रही, पर किसी ने उसे नहीं बचाया। अन्त में वह डूब गई। पुत्री के इस निष्करुण बलिदान के बाद सचमुच पोखरा पानी से लबालब भर गया।

1 देखिए इसी संग्रह में पृ० ६१-६२ तक।

दोलन के इस कथागीत के अनेक प्रतिरूप भारत के विविध क्षेत्रों में मिलते हैं ।[1] कथा-प्रधान इस गीत में 'नरबलि प्रथा' में सामान्य जन की आस्था का तत्त्व हमारा ध्यान आकृष्ट करता है। ऐतिहासिक दृष्टि से देखने पर पता चलता है कि "नरबलि-प्रथा" का उल्लेख प्राचीनतम भारतीय साहित्य वेदों तक में सुरक्षित है। परवर्ती वैदिक साहित्य में शुनःशेप की बलि की पूरी कहानी है। वरुण आर्य देवता है, फिर भी नर-बलि लेने के लिए आग्रहशील हैं। आर्य ऋषियों के समक्ष पूरे अनुष्ठान के साथ बलि होने जा रही है। शुनःशेप आर्य अजीगर्त का पुत्र है। अजीगर्त स्वयं अपने पुत्र की बलि देने को प्रस्तुत है।[2]

एक दूसरा मगही कथागीत है जिसकी नायिका 'चंपिया' है। यह सामन्तशाही के प्रतीक राजा की लावण्य लिप्सा से अपने सतीत्व की रक्षा के लिए अपने प्राणों का उत्सर्ग करती है। कथा का सारांश यों है— अद्वितीय सुन्दरी चंपिया पोखरा से स्नान करके वहाँ अपने लम्बे केश झाड़ने लगती है। राजा नारायण सिंह की दृष्टि उस पर पड़ जाती है और वह मुग्ध हो जाता है। वह चंपिया के भाई गंगाराम से उसकी याचना करता है। गंगाराम के इनकार करने पर राजा उसे बंदी बना लेता है। चंपिया की भाभी चंपिया के रूप की भर्त्सना करती है और कहती है— 'तेरे रूप के कारण ही मेरे स्वामी बँधे गये।' चंपिया मर्माहत होकर भाई को छुड़ाने का निश्चय कर लेती है। वह गोद के बालक को भाभी को देकर सोलहों श्रृंगार के साथ राज-दरबार पहुँच कर भाई को छुड़वा देती है। स्वयं राजा के साथ महल की ओर चलती है। राह में चंपिया के पिता का बनवाया पोखर है। जब डोली पोखर के पास पहुँचती है, तो वह प्यास का बहाना करके, राजा से अनुमति लेकर पोखर पर पहुँचती है। वहीं पानी पीने के क्रम में

---

१ (क) श्री रामनरेश त्रिपाठी ने 'सीतापुर' में निम्नांकित आशय का कथागीत पाया था— राजा अर्जुन सिंह के एक कन्या हुई, जिसका नाम दौलत देवी रखा गया। राजा ने बारह वर्ष तक तालाब खुदवाया, पर पानी न निकला। ज्योतिषियों ने कहा— "पोखरे को दौलत बेटी का बलिदान चाहिए।" दुःखी राजा ने अपनी सतवन्ती रानी से सारी बातें कहीं। पति की प्रतिष्ठा रक्षा के लिए अपनी प्राण-प्यारी पुत्री की बलि के लिए रानी तैयार हो गई। सारी सभा के सामने दौलत के बलिदान के साथ ही, पोखरा पानी से भर गया। पुत्री बलिदान से विह्वल राजा को रानी ने ही आश्वासन दिया— 'तुम्हारी बेटी ने तुम्हारा नाम रख लिया।'' (हमारा ग्राम साहित्य - पृ० १६४-६६)

(ख) श्री श्याम परमार ने इसी प्रसंग को 'बालाबऊ' के गीत में प्रस्तुत किया है। यह गीत मालवा में, विशेष रूप से मध्यभारत के शाजापुर, देवास और उज्जैन जिले के गाँवों में गाया जाता है। इससे मिलता-जुलता एक दूसरा कथा-गीत निमाड़ी में प्रचलित है। (भारतीय लो० सा० पृ० १५८-६५)

(ग) ब्रजभाषा की "ओघ द्वादशी" की कहानी से भी उपर्युक्त कहानियों की समानता है। (डा० सत्येन्द्र "भारतीय साहित्य" : वर्ष ३, अंक ३ - जुलाई १९५८)

२. वाजसनेयी संहिता में नर-बलि का उल्लेख है। श्री राजेन्द्र लाल मित्र ने सन् १८७६ के "जर्नल आव एशियाटिक सोसायटी" में "भारत में नर-बलि" शीर्षक निबंध लिखा था। इसमें उन्होंने स्थापनाएँ की थीं कि प्राचीनकाल में हिन्दू अपने देवताओं को नर-बलि देने में सक्षम थे। ऋग्वेद का शुनःशेप का मंत्र नर-बलि अथवा पुरुषमेध यज्ञ से ही संबद्ध है।

आत्म-बलि-दान कर लेती है।[१]

उपर्युक्त मगही लोककथा गीत के विभिन्न रूपान्तर अन्य भारतीय लोकभाषाओं में मिलते हैं।[२] इन कथागीतों से मध्ययुगीन सामाजिक स्थिति एवं 'सतीत्व' आदि हिन्दू नारी आदर्शों पर अच्छा प्रकाश पड़ता है।

उपर्युक्त कथागीतों के सम्बन्ध में कुछ तथ्य द्रष्टव्य हैं। प्रायः इनका गायन वर्षा ऋतु में होता है। जब वर्षा होने में विलम्ब होता है, तब स्त्रियाँ अर्द्धरात्रि के पश्चात् एकत्र होकर करुण स्वर से इन्हें "झोरे" के रूप में गाती हैं। उनका इस सम्बन्ध में विश्वास होता है कि उनके करुण स्वर से बलिदान के गीत गाने पर इन्द्र भगवान प्रसन्न होकर जल की वर्षा अवश्य करेंगे। ऐसी अनेक कथाएं भारतीय एवं विदेशी साहित्य में उपलब्ध होती हैं, जिनमें किसी आकांक्षा की पूर्ति या देवी देवता के क्रोध को शान्त करने के लिए 'नरबलि' का उल्लेख मिलता है। कुछ दिनों से 'नर बलि' की प्रथा उठ गई है। पर, अभी भी परम्परा के रूप में यह जन-विश्वास चल रहा है कि यदि बलिदान की कहानी दुहरा दी जायेगी, तो मानसिक रूपेण वास्तविक बलिदान हो जायेगा और देवता प्रसन्न होकर कामना पूर्ण अवश्य करेंगे।

मगही लोकनाट्य गीत

'गीत और 'नाट्य' का सम्बन्ध प्राचीन काल से चला आ रहा है। मगही में ऐसे अनेक गीत हैं, जो गेय होने के साथ ही 'अभिनेय' भी हैं। मूलतः ये नारी के गीत हैं इसलिए इनमें लोक-जीवन विशेषतः नारी के जीवन के विविध व्यापारों का वर्णन मिलता है। फिर उन्हीं का विभिन्न हर्ष उल्लास के अवसरों पर अभिनय किया जाता है। इन विशिष्ट प्रकार के (लोकनाट्य) गीतों का क्रम प्रश्नोत्तर शैली में निम्नांकित ढंग से चलता है—

स्त्रियों का एक दल मिल कर गाता है—

---

१ इस कथागीत का एक अन्य मगही प्रतिरूप भी मिलता है। इसमें चनिया के स्थान पर 'भागवन' का वर्णन मिलता है। इसमें वह पोखर पर नहीं, झरोखे पर बैठी सोने की कंघी से केश झाड़ती दीख पड़ती है। रूप लोभी राजा नारायणसिंह के स्थान पर एक मुगल शासक "मिर्जा रसिया" है। भाई गंगाराम के स्थान पर होरिलसिंह है। अन्य कथा प्रसंग पूर्ववत् हैं।

२. श्री रामनरेश त्रिपाठी ने इस गीत के कई प्रतिरूप प्रस्तुत किए हैं। यथा बिहार में पाये जाने वाले गीत की नायिका है—'भागवन'। भाई है—'होरिलसिंह।' दुर्जन है 'मिरजा रसिया'। फैजाबाद से प्राप्त गीत की नायिका है—'कुसुमा' पिता 'जउधन' है, लुटेरा—'मिर्जा' है। बलिया से प्राप्त गीत में बहन 'कुसुमा' है, भाई 'गंगाराम' है एवं लुटेरा 'मिरजा' है। इसी वर्ग के एक अन्य गीत में नायिका 'कुसुमा' है और लुटेरा 'भोजमल' है, शेष घटनाएँ मिलती-जुलती हैं।

[कविता कौमुदी—भाग—५ पृ० ३६८—३८१]

"कहवाँ से रूसले कहाँ जा हऽ हे बगुलो ?

नाट्यगीत की नायिका 'बगुली' अपने दल के साथ उत्तर देती है—

"ससुरा के रूसल नहिरा जा ही हे दीदिया ।"

—इसी प्रकार आगे की पंक्तियों का साभिनय उच्चारण किया जाता है ।

सामान्यतया इन लोकनाट्य गीतों की भाषा सरल, स्वाभाविक और अकृत्रिम होती है और भावों का प्रेषण सहज भाव से सम्पन्न होता है । इनके रंगमंच खुले मैदान, घर के आँगन, खलिहान, परती खेत, बाग-बगीचा, पथ, मन्दिर या ग्राम के चौपाल होते हैं । स्वभावतः इन पर पर्दे का व्यवहार नहीं होता, न रंगमंचीय सजावट होती है । अभिनय भी वैयक्तिक भावनाओं का प्रकाशक नहीं होता है । प्राय समूह, जाति अथवा समाजविशेष की भावनाएँ ही सामूहिक अभिनय के रूप में व्यक्त होती हैं । जहाँ तक पात्रों का प्रश्न है, पुरुषों के नाटक में केवल पुरुष पात्र ही भाग लेते हैं और स्त्रियों के नाटक में केवल स्त्रियाँ ही भाग लेती हैं । आवश्यकतानुसार अपने नाटक में पुरुष स्त्रियों की भूमिका में स्त्रियोचित वेशभूषा के साथ उतर आते हैं और स्त्रियाँ पुरुषों की भूमिका में पुरुषोचित वेशभूषा के साथ उतर आती हैं । स्त्रियों के नाटकों के विषय सीमित होते हैं । वे प्रधानतः पारिवारिक जीवन के विविध पक्षों, सम्बन्धों एवं गार्हस्थ्य जीवन की विविध अनुभूतियों को व्यक्त करने योग्य कथानक चुनती हैं, जब कि पुरुषों के नाटकों में सामाजिक कथानकों के अतिरिक्त पौराणिक, धार्मिक एवं ऐतिहासिक कथानकों को भी स्थान दिया जाता है । जहाँ तक इन नाटकों के दर्शकों का प्रश्न है, स्त्रियाँ अपने नाटकों में पुरुषों के लिए प्रतिबन्ध रखती हैं । स्त्रियों के नाट्य की दर्शिका स्वयं स्त्रियाँ ही होती हैं, जब कि पुरुषों के नाटकों में ऐसा कोई प्रतिबन्ध नहीं होता । उनके नाटक स्त्री-पुरुष समान रूप से देख सकते हैं ।

मगही-क्षेत्र में स्त्रियों द्वारा अभिनीत होने वाले 'लोक नाट्यगीत' अनेक हैं, जो अद्यावधि लोककंठ में ही बसे हैं । *इन पंक्तियों की लेखिका ने इस वर्ग के चार नाट्यगीतों का संकलन-संपादन किया है । वे ये हैं—*

(क) बगुली

(ख) जाट-जाटिन

(ग) सामा-चकवा

(घ) डोमकच

'बगुली' में गार्हस्थ्य धर्म की मर्यादाओं पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है । इस नाट्यगीत के आरंभ में 'बगुली' एक लालची वधू के रूप में प्रस्तुत होती है । उसकी इस प्रकृति की सभी महिलाएँ आलोचना करती हैं । बगुली रुष्ट होकर नैहर भागना चाहती है । दूसरे दृश्य में बगुली नदी-तट पर मल्लाह से उस पार नैहर पहुँचाने की प्रार्थना करती होती है । मल्लाह उस पार पहुँचाने के मूल्य में उससे कोई न कोई आभूषण ठगना चाहता है । पर, वह इस पर

राजी नहीं होती। अन्त में वह उसका 'यौवन' माँगता है, जो एक कुलीन वंश की महिला के लिए अदेय है। यहीं कुली नी कामना को गहरी ठोकर लगती है। उसे घर की सीमाओं को लाँघने के कुफल का ज्ञान हो जाता है और वह घर लौट आती है। शेष नाट्य गीतों में भी गार्हस्थ्य जीवन के सम्बन्ध में कोई न कोई सीख मिलती है। ये सीख सरल कथानकों पर आधारित हैं। यथा—"जाट-जाटिन" में "जाटिन" नहर के दम्भ पर उपहास दिखाता है, पर जाट उसे गार्हस्थ्य जीवन की सफलता की कुंजी "विनय" की सीख देता है। "मामा-चकवा" में भाई-बहन के पवित्र स्नेह सम्बन्ध की मर्मस्पर्शी व्यंजना हुई है। डोमकच का अभिनय घर के घर पर बारात के चले जाने के बाद रात्रि में होता है। इसका उद्देश्य मनोरंजन है पर मूलतः इसमें पुरुषों के प्रायः सूने घर के संरक्षण (चौकसी) का भाव निहित होता है।

मगध क्षेत्र में पुरुषों द्वारा अभिनीत होने वाले नाट्य विभिन्न पर्वों तथा अवसरों पर सम्पन्न होते हैं। कतिपय उल्लेखनीय नाट्य हैं—स्वांग, नौटंकी, रामलीला, रासलीला बिदेसिया आदि। स्वांग को लोकधर्मी नाट्य परम्पराओं में विशेष महत्त्व प्राप्त है। इसमें शृंगार-प्रवृत्तियों को बहुत छूट मिली होती है। हास्य की भी प्रधानता रहती है। स्वांग करने-वाले की वेशभूषा ऐसी होती है कि हँसी आये बिना नहीं रह सकती। विषय का चुनाव भी हास्य प्रधान होता है। स्वांग बना कर लोग विविध स्थानों में घूमते हैं। इनके पात्रों के साथ बहुत लोगों की टोली चलती है। स्वांग का अभिनय विशेष कर होली, सलोनी आदि के अवसर पर होता है। 'नौटंकी' स्वांग का ही एक भेद है। इसमें भी शृंगार तथा हास्य की प्रधानता होती है। 'रामलीला' में रामचरित मानस की कथा के आधार पर राम की विभिन्न लीलाओं का अभिनय किया जाता है। कौशल्या सुमित्रा, कैकेयी सीता आदि नारी पात्रों का अभिनय भी पुरुष ही करते हैं। दशहरे के अवसर पर रामलीलाएँ अधिक प्रदर्शित की जाती हैं। रासलीला में गोपियों के साथ व्रज में कृष्ण लीलाएँ दिखलायी जाती हैं। ये लीलाएँ प्रायः राग गान संयुक्त होती हैं। 'बिदेसिया' बिहार का विख्यात लोकनाट्य है। इसमें स्थानीय प्रेम प्रसंग एवं सामाजिक समस्याओं के संदर्भ को लेकर चलता है। विशेषकर सामाजिक कुरीतियों पर इसमें करारी चोट की जाती है।

मगही लोकगाथा[1]

सामान्य स्वरूप

मगही लोकगाथाओं का भण्डार विशाल एवं अपार समृद्धियों से परिपूर्ण है। पर ये रत्न यों ही मार्ग में बिखरे नहीं मिलते। उनकी खोज करनी होती है, समुद्रों का अतल छानना होता है

---

१ विविध भाषाओं में 'लोकगाथा' की भिन्न भिन्न संज्ञाएँ हैं—

	भाषा या बोली	नाम
(क)	गुजराती	कथा गीत / पवाडा।
(ख)	राजस्थानी	गीतकथा / पवाडा।
(ग)	व्रज	प्रबन्ध गीत / पमारा।
(घ)	महाराष्ट्री / छत्तीसगढ़ी	पँवाडा।
(ङ)	मालवा	पवाड़े

और रातों की अंधेरी गहराइयां मापनी होती हैं। मगही लोकगाथाओं का विपुल भंडार भी सर्व समक्ष आ सके इसके लिए सोत्साह लगन एवं परिश्रम की जरूरत है। अपने सीमित सामर्थ्य एवं प्राप्त सुविधाओं के बल पर इन पंक्तियों के लेखक ने कतिपय मगही लोकगाथाओं का संकलन किया है उससे कुछ सामान्य विशेषताएं या प्रस्तुत की जा सकती हैं।

मगही लोकगाथाओं के रचयिता प्राय अज्ञात हैं। उनके जन्म मरणादि का विवरण तो दूर नामोल्लेख आदि का ज्ञान भी असंभव है। ये लोकगाथाएं लोककंठ में परम्परा से पलती रही हैं अतः इनके प्रामाणिक मूलपाठ का अभाव है और वह स्वाभाविक भी है। कारण, अपने रचयिताओं के हाथों से निकल कर जब ये लोकगाथाएं समाज की थाती बन गई होंगी, तो कालान्तर में उनके रूपाकार एवं भाषा में अनेकानेक परिवर्तन अपरिहार्य हो गए होंगे। यही कारण है कि इन लोकगाथाओं के पाठान्तर सहज भाव से दृष्टिगोचर हो जाता है। लोरिकाइन, 'गोपीचंद' कुंवर विजयी आदि सभी गाथाएं उत्तर भारत के प्राय सभी क्षेत्रों में अत्यंत लोकप्रिय हैं। अतः यह कह सकना कठिन है कि किस क्षेत्र में प्रचलित लोकगाथा का पाठ प्रामाणिक है।

सभी मगही लोकगाथाएं गेय हैं। उनकी अपनी संगीत पद्धति है। जैसी लोकगाथा होती है, उनके साथ वैसा ही वाद्ययन्त्र बजाया जाता है। यथा—वीरत्वात्मक लोकगाथाओं के साथ ढोल बजाया जाता है। वीरता का स्वर ओजपूर्ण होता है। योगियों द्वारा गायी जाने वाली लोकगाथाओं की संगत सारंगी से बनती है। जिसका स्वर करुण एवं शान्त होता है। यह संगीत गाथाओं के श्रवण से उत्पन्न वाले प्रभाव को गंभीर बनाने में अपना महत्वपूर्ण एवं अपरिहार्य योगदान रखता है। यही कारण है कि बिना संगीत के गाथा सुनने का कुछ मूल्य नहीं रह जाता। संगीत के साहचर्य से ही गाथाओं का अपेक्षित प्रभाव पड़ता है।

विस्तार की दृष्टि से मगही लोकगाथाएं प्राय बड़ी हैं। इनमें अनेक ऐसी हैं जिनका विस्तार महाकाव्य से कम नहीं है। उदाहरणार्थ 'लोरिकाइन' को देखा जा सकता है। कथानक की इस विशालता के कई कारण हैं। एक तो यह कि इनमें विविध पात्रों के जीवन का सांगोपांग वर्णन होता है। दूसरा यह कि लोकगाथा के निर्माण में सम्पूर्ण समाज का सामूहिक योगदान रहता है। प्रत्येक व्यक्ति उसमें कुछ न कुछ जोड़ता ही है। इस प्रकार नवीन कथानकों के जुड़ाव से कालान्तर में गाथाओं का आकार विशाल हो जाता है। अपनी विशालता के बाद भी मगही

(च) अंगरेजी — पापुलर सांग / बैलेड।

(छ) भोजपुरी / मगही — लोकगाथा / पवारा।

मगही में 'पँवाडा' शब्द 'पँवरिया' नामक विशेष जाति से संबंध रखता है। 'पवरिया' लोग भाड या जोगड़ा जाति के अन्तर्गत आते हैं। ये लोग पुत्र जन्म, विवाह आदि शुभ संस्कारों के अवसर पर अपने यजमान के यहां पहुँचकर पवारा गाते हैं। इनके गीतों में 'सोहर' 'भ्रमर' तथा राजा पुरुषोत्तम की प्रशस्ति की प्रधानता रहती है। इनका गान नृत्य से सम्बन्ध रखता है। गान और नृत्य के साथ तुरही, घंटी और ढोलक भी बजाये जाते हैं।

लोकगाथाएं अपने रचयिताओं के व्यक्तित्व से अप्रभावित हैं । ऐसा लगता है कि सभी वर्गों के पात्रों एवं सभी प्रकार की घटनाओं तथा परिस्थितियों के चित्रण के बाद भी उनकी दृष्टि हमेशा स्वयं में तन्मय रही है और उसका मन मुख्यतः लोकजीवन एवं लोक संवेदना में ही रहा है। स्थानीयता का पुट इनमें भरपूर है । प्रायः मगह समाज में प्रचलित सभी संस्कार, पूजा पाठ व अन्य धार्मिक विश्वास का इनमें सगुण भाव में प्रवेश दीखता है। इसके बावजूद इनमें उपदेशात्मक अथवा प्रचारात्मक प्रयास का अभाव पाया जाता है। यह अन्य बात है कि अन्य रूप से इनमें शुभाशुभ मान्यताओं के प्रति प्रेम, ईश्वर भक्ति, कर्तव्य निष्ठा, साहस, शौर्य, प्रेम, मित्रता आदि के सन्देश भरे हैं । पर रचयिता का लक्ष्य उपदेश देना नहीं है । उपरोक्त शिक्षाएं ऊपर से वह स्वयं है । शिल्प तत्व की दृष्टि से इन लोकगाथाओं में अलंकृत शैली का अभाव दृष्टिगोचर होता है। ये सही अर्थ में लोककाव्य (Poetry of Folk) हैं । हृदय में हृदय की अनुभूति एवं स्वाभाविक उद्गार को अत्यन्त सरलता एवं आत्मीयता से व्यक्त करने की प्रवृत्ति ही यहां प्रधान है । लोकगाथाओं का अज्ञात कवि शब्दों से हृदय को छूने का अपना आधार बना कर बढ़ा चलता है। यह अन्य बात है कि स्वाभाविक रूप में कुछ अलंकार रस-तत्वादि का समावेश उनमें दीखता है। वस्तुतः उनका प्राण तत्व नैसर्गिक अभिव्यक्ति की स्वाभाविकता, सादगी, सरलता, सात्विक अनुभूति एवं रसात्मक प्रवाह में सन्निहित होता है।

मगही लोकगाथाओं का वर्गीकरण

लोकगाथाओं के वर्गीकरण में विषय[1] को ही आधार बनाना समुचित है। इससे यह सरलता से ज्ञात हो जाता है कि किस गाथा में कौन भावना प्रमुख है । अतः विषय की दृष्टि से मगही लोकगाथाओं को निम्नलिखित वर्गों में प्रस्तुत किया जा सकता है—

१ *वीररसात्मक लोकगाथाएँ*
२ *प्रेमकथात्मक लोकगाथाएँ*
३ *रोमांचकथात्मक लोकगाथाएँ*
४ *योगकथात्मक लोकगाथाएँ, और*
५ *अलौकिक तत्व-प्रधान लोकगाथाएँ।*

मगही की वीररसात्मक लोकगाथाओं के रूप में आल्हा, लोरिकायन, कुँअरविजयी, छतरी घुघुलिया आदि को रखा जा सकता है। 'आल्हा' लोकगाथा के नायक आल्हा

---

[1] मगही लोकगाथाओं के वर्गीकरण के लिए दो आधार अपनाए जा सकते हैं — (१) आकार एवं (२) विषय। 'आकार' की दृष्टि से मगही में दो प्रकार की गाथाएं मिलती हैं लघु एवं वृहत्। 'लघु' गाथाओं को कथागीत की संज्ञा दी गई है और उन पर पहले विचार भी हो चुका है । वृहत् गाथाएं महाकाव्य के समान विराट हैं । एक-एक गाथा का सम्पूर्ण वर्णन में महीनों का समय लग सकता है। यथा—लोरिकायन, कुँअरविजय आदि ।

उदात्त है। इसमें दोनों वीरों के बावन युद्धों का वर्णन है। दोनों ने युद्धों में अद्वितीय वीरता दिखलाई है। प्रत्येक लड़ाई का कारण विवाह है। इस गाथा में अनेक राजाओं एवं स्थानों के वर्णन आये हैं, पर उनमें पृथ्वीराज चौहान, जयचन्द, परमाल, माहिल आदि मुख्य हैं। प्रायः बरसात के दिनों में ढोलक पर आल्हा गाया जाता है। जनविश्वास है कि इसके गाने से पानी बरसता है। यद्यपि 'आल्हा' मूलतः बुन्देली लोकगाथा है, तथापि मगही क्षेत्रीय प्रभावों के साथ यह मगध क्षेत्र में पर्याप्त लोकप्रिय है। "लोरिकाइन"[1] में अहीर जाति के अद्वितीय वीर एवं लोरिक के असाधारण वीरचरित एवं उत्साहपूर्ण जीवन गाथा का वर्णन है। 'लोरिकाइन' अहीरों का जातीय काव्य है जिसे वे अपना समझते हैं और अभी भी किसी शुभ कार्य के अवसर पर बड़े प्रेम, उत्साह और श्रद्धा से गाते हैं। राम गाथा 'रामायण' के अनुकरण पर इस काव्य का नामकरण 'लोरिकाइन' हुआ है। मगही में इसकी संज्ञा 'लोरकी' या 'लोरायन' है। "कुँअरविजयी"[2] में अलौकिक वीरता सम्पन्न कुँअरविजयी के साहसिक गाथा एवं उत्साहपूर्ण जीवन गाथा का वर्णन है। इसी भाँति "छतरी दुलाचा"[3] में जन्म से ही दैवी वरदान प्राप्त क्षत्रिय राजा घुघुलिया के अद्भुत पराक्रम एवं उदात्त जीवन-गाथा का वर्णन है।

प्रेमकथात्मक वर्ग में मगही की वे लोकगाथाएँ रखी जा सकती हैं, जिनमें केन्द्र भाव के रूप में 'प्रेम' प्रतिष्ठित है। मगही में निम्नांकित प्रेम प्रधान लोकगाथाएँ वर्तमान हैं— रेशमा, शोभानायक, सारंगा सदाबिरिछ, राजा ढोलन आदि। "रेशमा"[4] लोकगाथा की नायिका रेशमा ही है। इसमें उसके निर्व्याज एवं सच्चे प्रेम का मर्मस्पर्शी चित्र प्रस्तुत किया गया है। "शोभानायक" लोकगाथा का नायक शोभानायक स्वयं ही है। यह व्यापारी वर्ग का है। इसमें युद्ध या रोमांच का दृश्य कहीं नहीं आता। सम्पूर्ण गाथा में शोभानायक और उसकी पत्नी के विरह और प्रेम का ही सुन्दर निरूपण हुआ है। "सारंगा-सदाबिरिछ" का नायक सदाबिरिछ है और नायिका सारंगा। ये दोनों सहपाठी थे। इसी बीच उनके हृदय में परस्पर प्रेम अंकुरित हो गया। पर बाधा यह थी कि सारंगा एक राजा की बेटी थी और सदाबिरिछ एक साधारण नागरिक का बेटा था। फिर सारंगा विवाहिता थी और सदाबिरिछ अविवाहित था। प्रेम मार्ग में अनेक कठिनाइयाँ आती हैं, पर अन्त में दोनों प्रेमियों का मिलन हो जाता है। इस गाथा में दोनों के प्रेम, प्रेम पथ की बाधाओं एवं अन्तिम मिलन का अत्यन्त मर्मस्पर्शी चित्रण हुआ है। "राजा ढोलन" में राजा ढोलन की प्रेमकथा वर्णित है। इनका विवाह बाल्यकाल में ही "मँगा" नामक कन्या से हो गया था, पर अनेक बाधाओं के कारण चिर काल तक दोनों

---

१ "लोरिकाइन" के कई प्रतिरूप मगध क्षेत्र में उपलब्ध होते हैं। पर इनमें एक प्रतिरूप को ही लिपिबद्ध करने का अवसर मुझे मिल सका है। इस पर इसके गायक का कहना था कि वह अति संक्षेप में लिख रहा है। इस सम्बन्ध में उक्ति प्रचलित है— 'सात काट रमायन, अनगिनत काट लोरकाइन'। देखिए—इसी ग्रन्थ में पृ० १००—१३-।

२ देखिए—पृ० १६२—१७०।

३. देखिए—पृ० १४४—१५३।

४. देखिए पृ० १५४—१६१।

का मिलन न हो सका। बचपन में ही विवाह हो जाने के कारण दोनों को अपने परिणय-बंधन की जानकारी तक न थी। बड़े होने पर जब दोनों को पता चला तब मिलन के लिए प्रयत्न करने लगे। अन्त में टोवन ने मार्ग की सारी बाधाएं नष्ट कर डाली और अपनी पत्नी का द्विरागमन कराया। सारी गाथा प्रेम और विरह से परिप्लावित है।

रोमांचक कथात्मक लोकगाथाओं के उदाहरण स्वरूप सती बिहुला, सोरठी आदि मगही लोकगाथाएं रखी जा सकती हैं। 'सती बिहुला' लोकगाथा की नायिका बिहुला है, जिसके सतीत्व की महत्ता सम्पूर्ण गाथा में प्रतिपादित की गई है। इसका सतीत्व उसी श्रेणी का है जिस श्रेणी की सती सावित्री का था। अपने सतीत्व के बल से वह अनेक अलौकिक कृत्य सम्पादित करती है। यथा— पत्थर के चावलों से भात सिझाना, पत्थर की मछलियों को तल कर सिद्धा लेना आदि। वह अपने अखंड सतीत्व के बल से अलौकिक शक्ति सम्पन्न स्त्री के रूप में प्रतिष्ठित हो जाती है, जो अपने पति बाला लखन्दर को सर्प दंश से मृत्यु के बाद, सदेह स्वर्ग जाकर जीवित लौटा लाती है। बिहुला की सारी गाथा रोमांचकारी घटनाओं से परिपूर्ण है। इस गाथा का सम्बन्ध बंगाल के 'मनसा' सम्प्रदाय से माना जाता है। बंगाल में बिहुला देवी की पूजा का व्यापक प्रचार भी है। मगध क्षेत्र में प्रायः नागपंचमी के दिन बिहुला की गाथा गायी जाती है। जनविश्वास है कि इस दिन इस गाथा को सर्प भी बड़े अनुराग से सुनते हैं। इसे गाते समय यदि सर्प दिखाई पड़ जाये तो उसे श्रोता समझ कर मारा नहीं जाता है। "सोरठी" लोकगाथा की नायिका सोरठी ही है, नायक बिरिजभार है। सोरठी का जन्म एक राजा के घर में होता है, पर एक द्वेषी ब्राह्मण की सलाह से उसका पिता उसे एक काठ की पेटी में बंद कर गंगा में बहा देता है। एक कुम्हार सोरठी को नदी से छानता और उसे पालता है। इसी अलौकिक कृपा से गरीब कुम्हार राजा हो जाता है। बाद में घटना चक्र में पड़ कर वह अपने असली पिता के पास पहुंचती है, जहाँ गोरखनाथ के शिष्य बिरिजभार से उसका प्रेम हो जाता है। बिरिजभार अनेक साधनाओं एवं तपों के बाद गुरु गोरखनाथ की कृपा से उसे पाता है। अन्त में दोनों में विवाह हो जाता है। इस गाथा में दोनों नायक-नायिका दिव्य एवं अलौकिक शक्ति-सम्पन्न हैं। सारी कथा रोमांचकारी घटनाओं से पूर्ण है। यथा—सोरठी के स्पर्श से काठ का सन्दूक का स्वर्ण मंजूषा में परिणत हो जाना, बिरिजभार का कई बार मृत्यु की गोद में सोने पर भी जीवित हो जाना, अनेक पात्र पात्रियों का सदेह स्वर्ग जाना आना, इन्द्र से मिलन एवं अप्सराओं का धरती पर आगमन आदि।

योगात्मक वर्ग में वे गाथाएं आती हैं, जिनमें योग एवं वैराग्य की कथाएं वर्णित होती हैं। मगही में ऐसी दो गाथाओं की जानकारी मुझे मिली है— (१) राजा भरथरी और (२) राजा गोपीचन्द। "राजा भरथरी" की गाथा के नायक स्वयं राजा भरथरी (भर्तृहरि) ही हैं। इनकी गणना नवनाथों में होती है। इनका सम्बन्ध उज्जैन के राजवंश से था। इनकी पत्नी का नाम सामदेई था और बहन का नाम मैनावती। 'मैनावती' गोपीचन्द की माता मानी जाती है। इस प्रकार गोपीचन्द राजा भरथरी के भांजे ठहरते हैं। भरथरी ने गुरु गोरखनाथ का शिष्यत्व ग्रहण कर राज्य का परित्याग किया था। इसकी गाथा में प्रधानतः भरथरी और रानी सामदेई की कथा वर्णित है। गुरु के आदेश पर भरथरी अपनी पत्नी सामदेई

को "मा" कह कर भिक्षा मांगते हैं। इस समय का दोनों का संवाद बड़ा मर्मस्पर्शी है। इस गाथा में नाथधर्म के व्यावहारिक पक्ष की बड़ी सुन्दर व्यंजना हुई है।" राजा—गोपीचन्द[1] की गाथा में गोपीचन्द के वैराग्य का मर्मस्पर्शी वर्णन हुआ है। ये भी नवनाथों में एक हैं, जिनका नाथ सम्प्रदाय में बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है। इनकी माता जलन्धरनाथ की शिष्य थीं और कहा जाता है कि माता के ही आग्रह पर गोपीचंद ने युवावस्था में वैराग्य धारण किया था। पर गोपीचन्द की गाथा के मगही प्रान्तर में माता मैनावती सामान्य माताओं की भाँति मातृसुलभ कोमलता एवं कातरता में व्याप्त प्रतीत दिखाई देती है। वे पुत्र को वैराग्य ग्रहण करने से रोकती हैं, और न रुकने पर रोती हैं। गोपीचन्द के वैराग्य के समस्त प्रसंग बड़े कारुणिक हैं। माता मैनावती और बहन बिरना से गोपीचन्द का संवाद बड़ा मर्मस्पर्शी उतरा है। योगात्मक वर्ग के अन्तर्गत आने वाली गाथाओं के गायक "जोगी जाति" के लोग होते हैं, जो "सारंगी" पर इन्हें गाते हैं। गोपीचन्द के नाम पर इस सारंगी का नामकरण 'गोपीचन्द' हो गया है। ये जोगी इन योगात्मक लोकगाथाओं को ऐसी करुण शैली में गाते हैं कि श्रोता पर उनका मार्मिक प्रभाव पड़ता है और वे अश्रुसिक्त हो उठते हैं।

अलौकिक कथानत्त्व प्रधान लोकगाथाओं में अब तक एक ही लोकगाथा का पता इन पंक्तियों की लेखिका को चल सका है। यह लोकगाथा है "नेटुआ दयाल सिंह"। नेटुआ दयाल सिंह ही इस लोकगाथा के नायक और नटुआ जाति की विभूति हैं। ये देवी के बड़े भक्त थे, जिसके फलस्वरूप उनमें अलौकिक शक्ति आ गई थी। इनका अपना मकान "भकोरा" था पर विवाह बचपन में ही "बंगरी शहर" में हो गया था। युवक होने पर ये अपनी पत्नी धनिया की विदाई कराने गये। मार्ग में अनेक बाधाएँ आईं। बंगरी शहर में तो इन्हें जादू के युद्ध का सामना करना पड़ा। पर इन पर देवी का इष्ट होने से सर्वत्र इन्हें विजय प्राप्त हुई। अन्त में ये अपनी पत्नी को विदा करा घर ले आये। इस सम्पूर्ण गाथा में अनेक अलौकिक तत्वों का समावेश है।

मगही लोककथा

सामान्य-परिचय

मगध की जनता का जीवन ग्राम्य गल्पों से ओत प्रोत है। बालक होश सम्हालते ही नानी दादी से शिक्षाप्रद और मनोरंजक कथाएँ सुनना आरम्भ करते हैं। इनके माध्यम से उनका चरित्र निर्माण होने लगता है। कुछ बड़े होने पर वे नाना दादा के चौपालों में कथा कहानियों का वही सिलसिला देखते सुनते हैं। इसके बाद वयस्क होने पर तो वे स्वयं कथाओं के भण्डार हो जाते हैं। गृहदेवियां भी मांगलिक अवसरों पर कथा-कहानियाँ सुनती सुनाती हैं। इस प्रकार मौखिक परंपरा में ये कथाएँ सुरक्षित होती चली आ रही हैं।

मगध के लोक-जीवन में इन कथाओं का बड़ा महत्त्व है। किसी घटना या परिस्थिति के समर्थन या विरोध के अवसर पर ये बहुत काम आती हैं। इनमें मात्र कल्पना की उड़ान नहीं हृदय की वास्तविक अनुभूतियाँ संचित हैं। सुख के क्षणों में ये हार्दिक अनुरंजन करती हैं, पर

---

1. देखिये पृ० १३६-१४४।

…र के चरणों में इनसे नीति, और धैर्य आदि के सन्देश भी मिलते हैं। मगही जनता को अपने पूर्वजों से मौखिक परम्परा के रूप में प्राप्त ये कथा वैभव सर्वदा माहात्म्य से उसे सम्बद्ध बनाये रखने में समर्थ हैं।

मगही कथाओं के स्रोत—

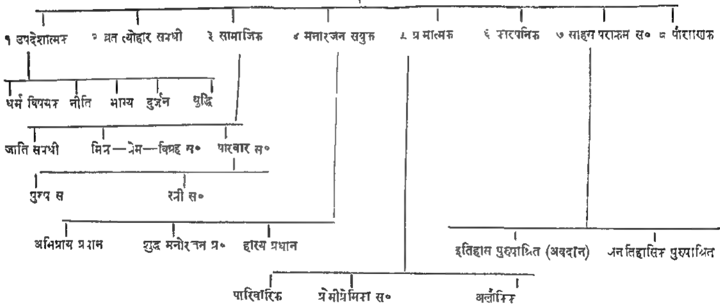
मगध क्षेत्र ही क्यों, सम्पूर्ण भारतवर्ष को कहानियों का देश कहा गया है। यहाँ लोक कहानियों की साहित्यिक अभिव्यक्ति की एक अविच्छिन्न परम्परा दिखाई पड़ती है। विश्व साहित्य का प्राचीनतम ग्रन्थ वेद है। उसके कितने ही अंश कहानी के रूप में हैं।[1] संस्कृत के अनेक आख्यान और आख्यायिकाएँ ऋग्वेद संहिता में बीजरूप में आरम्भ होकर उपनिषदों, निरुक्त, बृहद्देवता, कात्यायन सर्वानुक्रमणी और पुराणों में होते हुए पल्लवित हुए हैं। पौराणिक युग में पौराणिक कथाओं के प्रसार और विस्तार का परिणाम यह देखने में आया कि ये कथाएँ धार्मिक हो गईं। इनके सादृश्य पर अनेक दन्त कथाएँ गढ़ी जाने लगीं, जिनने परवर्ती कथा साहित्य को बहुत प्रभावित किया। इसका प्रमाण यह है कि समस्त परवर्ती संस्कृत कथा ग्रन्थों में पशु पक्षी, देव दानव, नदी-पहाड़, पेड़ पौधे आदि समस्त चराचर सजीव चरित्र के रूप में आये हैं। दन्तकथाओं की इस शैली का व्यापक प्रभाव बौद्ध जातक कथाओं में स्पष्ट रूप में आता है। संस्कृत के प्राप्य कथा ग्रन्थों में बृहत्कथाश्लोक, कथा सरित्सागर, बैताल पंचविंशतिका, शुकसप्तति, सिंहासन द्वात्रिंशिका, पंचतंत्र और हितोपदेश में व्यापक रूप से यही शैली अपनाई गई है। ये कथा-संग्रह भारतीय कथा साहित्य के स्तंभ हैं। इनके आधार पर अनेक कथाएँ गढ़ी गईं। विद्वानों का अनुमान है कि हिन्दी-भाषी प्रदेशों में जितनी भी दन्तकथाएँ और लोककथाएँ प्रचलित हैं; उनके मूल स्रोत उपर्युक्त कथा संग्रह ही हैं। मगही भी हिन्दी की एक विभाषा है, अतः स्वभावतः इन्हीं स्रोतों से उसे भी दन्तकथाओं और लोककथाओं का विपुल वैभव मिला है।

मगही लोककथाओं का वर्गीकरण

जहाँतक मगही लोककथाओं के वर्गीकरण का प्रश्न है, इसमें कई कठिनाइयाँ सामने आती हैं। कारण ये अभी तक मौखिक परम्परा में ही वर्तमान रही हैं। इनका कोई प्रामाणिक संग्रह अद्यावधि प्रकाशित नहीं हुआ है। ऐसी स्थिति में इन पंक्तियों की लेखिका के अध्ययन का मुख्य आधार मगही लोककथाओं का निजी संग्रह है। इनकी मूल प्रवृत्तियों एवं वर्ण्य विषय को दृष्टिपथ में रखते हुए इन्हें निम्नांकित वर्गों में विभक्त किया जा सकता है—

---

१. वैदिक कहानियाँ हिन्दी में प्रकाशित।


मगही लोक-कथाएँ
१ उपदेशात्मक
२ व्रत त्योहार सम्बन्धी
३ सामाजिक
४ मनोरंजन संयुक्त
५ प्रेमात्मक
६ काल्पनिक
७ साहस पराक्रम स०
८ पौराणिक
धर्म विषयक
नीति
भाग्य
दुर्जन
बुद्धि
जाति सम्बन्धी
मित्र—प्रेम—विग्रह स०
परिवार स०
पुरुष स०
स्त्री स०
अभिप्राय प्रधान
शुद्ध मनोरंजन प्र०
हास्य प्रधान
इतिहास पुरुषाश्रित (अवदान)
अनैतिहासिक पुरुषाश्रित
पारिवारिक
प्रेमीप्रेमिका स०
अलौकिक

वर्ग से भी प्रहीन होते हैं। 'बुद्धि विषयक'—कथाओं में बुद्धिबल के सामने शारीरिक बल को सर्वदा पराजित दिखाया जाता है। इस वर्ग की कथाओं में अनेक बार केन्द्रीय भाव से बुद्धिबल प्रतिष्ठित दिखाई देते हैं और उन्हीं के आसपास कथा का ताना बाना बुना होता है। उदाहरणार्थ "राजा भोलन[1] 'नारी की चतुराई'[2] आदि लोककथाएँ देखी जा सकती हैं।

व्रत त्योहार संबंधी कथाएँ

धर्म और व्रत का बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध है। इसी कारण भारत के अन्य भागों की भाँति मगध-क्षेत्र में भी व्रत का चरम महत्व प्राप्त है। व्रत तीन प्रकार के होते हैं— नित्य, नैमित्तिक एवं काम्य। 'नित्य व्रत' का अनुष्ठान आवश्यक माना जाता है। यथा—एकादशी व्रत। 'नैमित्तिक व्रत' किसी निमित्त (कारण या अवसर) को लेकर किया जाता है। यथा—चान्द्रायण व्रत। काम्य व्रत किसी विशेष कामना की सिद्धि के लिए किया जाता है यथा—सोमवार व्रत, जितिया व्रत, गोधन व्रत आदि। मगध में ये तीनों प्रकार के व्रत प्रचलित हैं।

व्रतोत्सवों के पीछे अनेक दृष्टियाँ काम करती हैं। यथा—आत्मशुद्धि, परमात्मा चिन्तन, ऋतु उत्सव आदि। पर सामान्य लोक-जन 'व्रतों' के आध्यात्मिक, सामाजिक, भौगोलिक, ऐतिहासिक, पौराणिक महत्वों का विवेचन विश्लेषण किए बिना ही परम्परा के कारण उन्हें धारण करते चलते हैं। युग युगान्तर से अमुक व्रत किये जाते रहे हैं, अमुक पर्वोत्सव मनाया जाता रहा है, अमुक अनुष्ठान किए जाते रहे हैं, ये ही भावनाएँ प्रेरणा शक्ति बन कर व्रत त्यहारों की ओर उन्हें प्रवृत्त करती रही हैं।

व्रत-त्योहारों के अवसर पर केवल गीत ही नहीं गाये जाते, कथाएँ भी कही जाती हैं। इन कथाओं का आनुष्ठानिक महत्व होता है। इनकी वाचिका प्रायः महिलाएँ होती हैं। कथाओं से सम्बद्ध कुछ व्रत निम्नांकित हैं—

जितिया, भैया दूज, अनन्त चौदस, छठ, शीतला, अष्टमी आदि। इन व्रतों से सम्बद्ध कथाओं में उनका माहात्म्य दर्शाया जाता है। यथा—जितिया[3] व्रत के माहात्म्य से किसी स्त्री का पुत्र विपत्ति में पड़ कर भी निखर आता है, भैया दूज[4] के व्रत के माहात्म्य से कोई स्त्री अपने प्राणप्रिय भाई को मृत्यु के कराल गाल से निकाल लेती है। इसी प्रकार अन्य व्रत कथाओं में व्रतों को नियम पूर्वक करने के कारण महिलाएं अपने प्रिय जनों की रक्षा में समर्थ होती देखी जाती हैं।

प्रायः सभी व्रत कथाओं का अन्त इस मंगल वाक्य से होता है- "जैसन उनकर दिन फिरल, ओयसहीं सबके दिन फिरे।"

सामाजिक कथाएँ

समाज व्यक्ति-समुदाय का ही नाम है। पर व्यक्ति को समुदाय के रूप में सगठित हो कर 'समाज' का रूप लेते-लेते हजारों वर्ष लग गये। इस बीच सूक्ष्म सारे परिवर्तनों ने समाज की

१ पृ० १६-२१। २. पृ० ४-६।
३. पृ० ८-६। ४. पृ० १०-११।

रूप रेखा संवारी। पर सर्वाधिक महत्वपूर्ण परिवर्तन निरन्तर बढ़ते उत्तरदायित्वों एवं जटिल होते कार्य व्यापारों का था। उन्हीं के सभालने की चिन्तन प्रक्रिया में वर्ण व्यवस्था का जन्म हुआ। *इस वर्ण-व्यवस्था ने कालान्तर में अनेक उपजातियों एवं वर्गों का जन्म दिया,* जिनके स्वभाव-संस्कार व्यापार आदि एक दूसरे से निरन्तर भिन्न होते चले गये।

इन सारी विभिन्नताओं में भी व्यक्ति-साम्य वर्तमान था। वह यह कि समाज के प्रधान अंग रूप दो ही थे—पुरुष और नारी। प्रकृति से ही नारी ने गृह भार सभाला, पुरुष ने बाहर का भार। प्रारम्भ में दोनों ही मुक्त थे, दोनों ही मुक्ति-कामी। पर बाद में गृहस्थी की जटिलताएँ बढ़ती गई और वे नारी को निरंतर जकड़ती चली गई। दूसरी ओर पुरुष उत्तरदायित्वों का यथा-साध्य निर्वाह करता हुआ भी गृह के बाहर रहकर होने से स्वभावतः निरन्तर स्वतन्त्र प्रकृति का होता चला गया। एक ऐसी भी स्थिति आयी कि दोनों के अधिकारों एवं जीवन निर्वाह स्वरूपों में पर्याप्त भिन्नता आ गई और उसमें अनेक समस्याएँ उठ खड़ी हुई। बहु विवाह समस्या, विमाता की समस्या, विधवा की समस्या आदि सभी ही अनन्य समस्याओं में से कुछ हैं। फिर मानव प्रकृति में भी एक प्रकृति वैभिन्य दृष्टि गोचर नहीं होता। उसके कारण भी समाज को नई नई अनुभूतियों के संदर्भ हमेशा प्राप्त होते रहे।

'सामाजिक वर्ग' में आनेवाली मगही लोक कथाओं में उपर्युक्त सभी समस्याओं पर प्रकाश पड़ता है। दूसरे शब्दों में इन लोककथाओं के माध्यम से मगध जनपद की लोक-चेतना के सामाजिक विकास का इतिहास पढ़ा जा सकता है। अब इन पर किंचित विस्तार से विचार आवश्यक है। *अध्ययन की सुविधा के लिए इस वर्ग की लोककथाओं को निम्नांकित उपवर्गों में बांटा जा* सकता है—

(क) जाति संबंधी

(ख) मित्रों के प्रेम और निग्रह संबंधी

(ग) परिवार संबंधी

(घ) स्त्री संबंधी

(ङ) पुरुष संबंधी

जाति सम्बन्धी लोक कथाओं में विभिन्न जातियों के स्वभाव संस्कार व्यापार आदि पर अच्छा प्रकाश पड़ता है। यथा—ब्राह्मण[1]। ये दो प्रकार के मिलते हैं—(१) पंडित, जो अपने प्रकृत गुणों के कारण राज दरबार में उचित सम्मान पाते हैं। और मूर्ख, जो वास्तव में उत्तम गुण सम्पन्न नहीं होने पर विद्वत्ता का भ्रम उत्पन्न करके जीविका चलाते हैं। कभी-कभी उनकी कलई खुल जाती है, वे धोखा भी खाते हैं। क्षत्रिय[2]—ये प्रायः राजा होते हैं उनके भी दो वर्ग दिखाई पड़ते हैं—(१) न्याय परायण, कार्यप्रिय, दानी राजा एवं (२) रसिक, शिकार-प्रेमी, बहु विवाह प्रेमी राजा। कथा-चक्र में दोनों प्रकार के राजाओं के स्वभाव-चरित्र का पूर्ण विश्लेषण होता है। कायस्थ[3] ये अपनी चतुराई के कारण प्रसिद्धि-प्राप्त करते देखे जाते हैं।

१, पृ० २२-२३, पृ० ६-७। २ पृ० २४, पृ० १६-२१। ३. पृ० १२-१३।

बनिया[1] ये अपने व्यापार प्रेम एवं प्रकृति की भीरुता का परिचय देते देखे जाते हैं। इसी प्रकार कहीं कुम्हार-कुम्हारिन की गरीबी और प्रकृति की उदारता पर प्रकाश पड़ता है तो कहीं कुंजड़े[2] के दीन व्यवसाय पर, कहीं नाऊ जाति की धूर्त्तता, एवं यजमानवृत्ति के दर्शन होते हैं, कहीं सोनार की लोभी प्रकृति के इन लोककथाओं में। कोई जाति छूटी नहीं है, जिनका आलोचनात्मक विवरण इनमें प्राप्त न होता हो। **मित्रों के प्रेम और विग्रह-संबंधी** कथाओं में उनके प्रेम और विग्रह के विविध रूप दृष्टिगोचर होते हैं इनमें केवल मनुष्य ही नहीं, पशु-पक्षी एवं अन्य अचेतन पदार्थ भी पात्र रूप में आये हैं। जो प्रेम निस्वार्थ भाव, परस्पर सहयोग की प्रवृत्ति एवं सेवावृत्ति पर आधारित होता है, वह स्थायी होता है। इसके विपरीत होने पर संघर्ष की संभावनाएं बढ़ जाती हैं। और कभी कभी तो मित्रता[3] टूट जाती है। **परिवार-संबंधी**—कथाओं में सास पतोहू, गोतिनी-ननद सातों के द्वेष[4] विमाता के अत्याचार,[5] नारी की कुटिलता[6] आदि से सम्बद्ध समस्याओं का बड़ा ही संश्लिष्ट चित्रण मिलता है। परिवार की अपनी समस्याएँ हैं। कारण 'परिवार' केवल व्यक्तियों का समूह नहीं है, वहाँ अनेक इकाइयाँ मिल कर एक होती हैं और अनेक व्यक्तिगत कामनाएं तथा मान्यताएं परिवार के आदर्शों के सामने हटानी पड़ती हैं। परिवार में स्त्री पुरुष ही रहते हैं, पर वे विविध संबंधों में बँधे होते हैं, यथा एक पुरुष किसी का पुत्र किसी का पिता, किसी का पति आदि रहता है। एक ही स्त्री किसी की पुत्री किसी की पत्नी, किसी की माता आदि होती है। सभी सम्बन्धों के बीच परस्पर सहाय्य भाव से परिवार में सुख शान्ति और समृद्धि रहती है। उसके विपरीत परिवार में विग्रह आने लगता है। मगही की लोककथाओं में उपर्युक्त प्रत्येक वर्ग एवं परिस्थितियों के यथार्थ चित्र उपलब्ध होते हैं।

मनोरंजन प्रधान लोक कथाएँ

इस वर्ग की कथाओं का प्रमुख उद्देश्य है— मनोरंजन करना। इन्हें भी तीन उपवर्गों में विभक्त किया जा सकता है—

(क) अभिप्राय-प्रधान

(ख) शुद्ध मनोरंजन-प्रधान

(ग) हास्य-प्रधान

अभिप्राय-प्रधान—लोककथाओं में मनोरंजन के साथ कुछ उपदेश के भाव निहित रहते हैं।[7] प्रायः ऐसी कहानियाँ पशु पक्षी या अचेतन पदार्थों से सम्बद्ध होती हैं। संस्कृत साहित्य में 'पंचतंत्र' एक ऐसी ही कहानी पुस्तक है, जिसकी रचना राजकुमारों को राजनीति की शिक्षा देने के लिए हुई थी। इन कहानियों के पात्र पशु पक्षी थे और इनमें कुछ न कुछ अभिप्राय सन्निहित थे। डॉ० सत्येन्द्र ने पशु-पक्षी संबंधी साभिप्राय सभी कहानियों को "पंचतंत्रीय कहानी"

---

१ पृ० ६ १० । २ पृ० १२ । ३, पृ० १-२ । ४, पृ० ७-८ । ५, पृ० १५-१७ ।
६, पृ० २७-२८ । ७ पृ० १७-१९ ।

कहा है।[1] पशु-पक्षी संबंधी पंचतंत्रीय कहानियाँ इतनी लोकप्रिय हुईं कि पाश्चात्य देशों के अनेक विद्वानों ने उन पर कार्य किया है।[2]

शुद्ध मनोरंजन-प्रधान—कथाओं में प्रायः पात्र पशु-पक्षी होते हैं। पंचतंत्र में शुद्ध मनोरंजन युक्त कहानियाँ भी उपलब्ध होती हैं। कुछ कथाओं के पात्र तो पेड़ पौधे नदी आदि अचेतन पदार्थ भी हैं। हास्य प्रधान—कथाओं में भी जड़-चेतन दोनों ही प्रकार के पात्र दीखते हैं, जो विशुद्ध हास्य की सृष्टि का प्रयास करते नजर आते हैं।

प्रेमात्मक कथाएँ

इस वर्ग की कथाओं को निम्नांकित तीन उपवर्गों में बाँटा जा सकता है—

(क) पारिवारिक प्रेमकथाएँ

(ख) सामान्य प्रेमकथाएँ

(ग) अलौकिक प्रेमकथाएँ

पारिवारिक प्रेमकथाओं[3]—में माता-पुत्र, पति-पत्नी, भाई-बहन, मित्र-मित्र एवं अन्य परिजनों आदि के पारस्परिक प्रेम आदि का वर्णन होता है। *सामान्य प्रेमकथाओं*—में किसी प्रेमी द्वारा नाना बाधाओं को पार कर अपनी प्रेमिका को पा लेने का साहसिक आख्यान होता है। *अलौकिक प्रेमकथाओं*—में अलौकिक तत्वों की प्रधानता होती है। इनमें प्रायः असामाजिक प्रेम-कामनाएं प्रश्रय पाती दीखती हैं। दोनों के प्रणय बंधन में सर्वदा के लिए बँध जाने की संभावनाएँ अल्पतम होती हैं। पर दोनों विह्वलता में मार्ग की कठिनाइयाँ झेलते रहते हैं। कुमाऊँ में "सारंगा सदावृक्ष" की प्रेम कथा इसी वर्ग की है। इसमें सदावृक्ष कितनी बार मरता और पुनः मनयत्न से जीवित हो जाता है।

काल्पनिक लोककथाएँ

इस वर्ग की लोककथाओं में कल्पनाशीलता की प्रधानता स्पष्टतया परिलक्षित होती है। इन लोककथाओं की घटनाओं में कार्य कारण संबंध का प्रायः अभाव होता है। प्रायः इनमें असंभाव्य घटनाएँ ही घटती पायी जाती हैं। यथा—कोई मर कर फूल का पौधा बन जाता है किसी राक्षस प्राण के विशेष पिंजड़े में बंद मिलते हैं, कोई परी अपने दिव्य सौन्दर्य से मानव को पराभूत करती पायी जाती है, कोई भूत-प्रेत अपने कुकृत्यों से मानव को आतंकित करता पाया जाता है कोई देवदूत आशा के संदेश लेकर आकाश से उतरता दिखाई देता है और कभी पशु पक्षी, जीव जन्तु, पेड़ पौधे मानव के सहायक बनते पाये जाते हैं। इस वर्ग की कथाओं की संख्या बहुत बड़ी है।

---

१. ब्र० लो० सा० अ०—पृ० ४८६।

२. मैक्डानल लिखित "इंडियाज पास्ट एंड प्रेजेन्ट," श्री गौरांग बनर्जी लिखित "हेलेनिज्म इन एन्शियेन्ट इंडिया" के अध्याय १४ में "फैबिल्स एण्ड फोकलोर" तथा श्री एच० एच० विल्सन कृत "ऐसेज आन सब्जेक्ट्स कनेक्टेड विद् संस्कृत लिटरेचर" प्रथम तथा द्वितीय भाग।

३. पृ० २६—३०।

साहस-पराक्रम की लोककथाएँ

इस वर्ग की लोककथाओं में प्रायः किसी वीर नायक के चरित का उल्लेख रहता है। इन्हें भी दो उपवर्गों में रखा जा सकता है—(१) इतिहास-पुरुषाश्रित एवं (२) अनैतिहासिक पुरुषाश्रित। प्रथम उपवर्ग में राजा विक्रमादित्य, राजा भोज, राजा भरथरी और राजा गोपीचन्द आदि की कहानियाँ आती हैं। इन राजाओं में वीरता के अतिरिक्त अन्य गुण भी हैं जिनके कारण इन्हें प्रसिद्धि मिली है। यथा—महाराज विक्रमादित्य और राजा भोज वीर होने के अतिरिक्त दानशील, दयालु एवं विद्वान सम्राट थे। राजा भरथरी एवं गोपीचन्द में अन्य गुणों के अतिरिक्त वैराग्य भाव की प्रधानता मिलती है जिसके कारण ये विख्यात हुए। **द्वितीय उपवर्ग** में किसी भी काल्पनिक राजा या उसके पुत्र या वीर पुरुष की वीरता एवं उसके अलौकिक कृत्यों का उल्लेख होता है। इस वीर पुरुष प्रायः बड़े बड़े भयंकर राक्षसों, दुर्जनों एवं भूत प्रेतों को अपनी शक्ति और बुद्धि से पराजित करते बताये जाते हैं। ये अपने अपूर्व शौर्य के सहारे इच्छित फल प्राप्त करते पाये जाते हैं।

पौराणिक लोककथाएँ

प्रायः देवी देवताओं से सम्बद्ध लोककथाएँ इसी वर्ग में आती हैं। इनमें उनके अलौकिक कृत्यों के वर्णन के साथ पौराणिक घटनाओं का उल्लेख भी होता है। यथा—"समुद्र मथन की कथा की"[१] "भगवान के विविध अवतारों की कथा आदि[२]। कुछ देवपात्र मानव के कार्य कलापों में विशेष सहायक होते पाये जाते हैं। इनके सम्बन्ध में अनेक काल्पनिक धारणाएँ इन कथाओं में व्यक्त होती हैं। देव पात्रों में प्रायः उल्लेख्य शिव पार्वती और विध विधाता हैं। **शिव-पार्वती**—प्रायः रात्रि में मार्ग में विचरण करते पाये जाते हैं। यात्रा के क्रम में पार्वती के हठ करने के कारण शिव को अनेक बार दीन दुखिया की सहायता करनी पड़ती है, सौभाग्यवती, पुत्रहीना को पुत्रवती तथा दरिद्र को धनी करना पड़ता है। **विध-विधाता**—ये प्रायः शिशु की छठी के दिन भाग्य लिखने के लिए रात में विचरण करते दृष्टिगोचर होते हैं। राह में विध की जिद पर विधाता को अनेक अलौकिक कृत्य सम्पादित करने पड़ते हैं। यथा—दीन दुखिया का भीषण संकट से उद्धार, मृतात्मा एवं निर्जीव में प्राण प्रतिष्ठा आदि। इन कथाओं में देवी-देवताओं के प्रति श्रद्धा, पूज्यभाव एवं विश्वास की व्यंजना की जाती है।

उपर्युक्त वर्गों की लोककथाओं के अतिरिक्त, शैली की दृष्टि से कतिपय मगही लोककथाओं को एक भिन्न वर्ग में रखा जा सकता है। वह है—

---

१. अनन्त चतुर्दशी के पर्व में थाली में दूध लेकर व्रती हौंडते हैं। पुरोहित और व्रती में वार्ता चलती है। पुरोहित पूछता है—'का मथइ हउ ?" व्रती जवाब देता है—छीर समुन्दर (क्षीर समुद्र)। पुरोहित पुनः पूछता है— केकरा खोजइ हउ ?" उत्तर—"अनन्त देवता के"। पुरोहित—"पयलऽ" ? व्रती—'हां, पयलों !'

२. रामावतार, कृष्णावतार, नृसिंह अवतार की कथाएँ।

क्रम संबद्ध लोककथाएँ

इस वर्ग की कथाएँ दो उपवर्गों में विभाजित हो सकती हैं—(क) साधारण लघु छंद कथाएँ एवं (ख) क्रम-संवाद्धत लघु छंद कथाएँ —[illegible] इनकी विशेषताएँ यों प्रस्तुत की जा सकती हैं—

इनमें विशेष गतिक्रम दृष्टिगोचर होता है। प्रायः लघुता का उपयोग होता है। कथा की पुनरावृत्ति होती चलती है। कथा का प्रभावशाली अंश छंदोबद्ध होता है। इनमें जिज्ञासात्मक विलक्षणता सन्निहित होती है। पूर्व कथित अंशों की पुनरावृत्ति [illegible] कहानियों की सहजता आदि बालसुलभ मनोवृत्ति के अनुकूल होती है। [illegible] के भाव से आधार एक बात को छोटे प्रभावपूर्ण शब्दों में कहने का भाव प्रबल होता है।

साधारण लघुछंद लोककथाओं—के उदाहरण रूप में [illegible]ला[1] शीर्षक लोककथा रखी जा सकती है। इसमें [illegible] तक कुछ ही छंदोबद्ध पंक्तियों की पुनरावृत्ति होती रहती है। क्रम-संवद्धित लघुछंद कथाओं के उदाहरण रूप में [illegible] दाना पान वाले सुग्गे की लोककथा देखी जा सकती है, जो क्रमशः [illegible] राजा रानी सांप लाठी, आग, समुद्र, हाथी और चींटी के पास पहुँच कर अपनी फरियाद सुनाता है और अपना काम न कर देने वाले को दंडित करने की प्रार्थना करता है। अन्त में चींटी को उस पर दया आ जाती है। वह मदद करने को तैयार हो जाती है फिर तो सारा [illegible] जाता है। चींटी के भय से हाथी, हाथी के भय से समुद्र और इसी क्रम से सभी भय से सुग्गे का काम करने को तत्पर हो जाते हैं। सुग्गे का लक्ष्य पूरा हो जाता है और वह [illegible] जाता है। यह लोककथा मगध क्षेत्र के समान ही अन्य क्षेत्रों में भी प्रचलित है।

मगही का प्रकीर्ण लोकसाहित्य

प्रकीर्ण साहित्य के अन्तर्गत मगही कहावतें, मुहावरों और पहेलियों को स्थान दिया गया है। सामान्यतया मगही लोकसाहित्य में अन्तर्भुक्त समस्त सामग्री के इस संक्षिप्त विवेचन क्रम में यह नीति अपनायी गई है कि जिनका स्वतन्त्र वर्ग संभव था, उनका अध्ययन स्वतन्त्र वर्ग के अन्तर्गत प्रस्तुत किया गया है। पर कुछ ऐसे साहित्यरूप हैं जो एक दूसरे से अत्यन्त सम्बद्ध हैं। यथा—कहावतें या लोकोक्ति, मुहावरे और पहेलियाँ। ये तीनों एक दूसरे से बहुत निकटता रखने वाले लोक साहित्य भेद हैं, यद्यपि इनमें प्रत्येक का अपना महत्त्व है। इनकी निकटता को दृष्टिपथ में रखते हुए इन्हें एक ही वर्ग 'प्रकीर्ण' में रखा गया है।

मगही कहावतें

मगही कहावतों का जन्म कब हुआ—सहसा इस प्रश्न का उत्तर देना बड़ा कठिन है। इतना अवश्य कहा जा सकता है कि इन कहावतों का जन्म लेखनकला के उद्भव और विकास के बहुत पूर्व ही हो चुका था। कहावत के प्रयोग वैदिक-साहित्य, जातक कथा एवं अन्य प्राचीन भारतीय साहित्य में दृष्टिगोचर होते हैं। सच पूछा जाए, तो कहावतें जगती

1 पृ० [illegible]

पौधों की भाँति उस धरती की उपज होती है, जहाँ की बोली में उनका निर्माण होता है। इन कहावतों की अपनी महिमा होती है। इनमें ओजस्वी प्राणधारा संचित होती है, जो सहज ही किसी को भी प्रभावित कर लेती है।

अन्य भाषाओं की कहावतों की भाँति मगही कहावतों में भी कम से कम और चुने शब्दों का प्रयोग होता है। संक्षिप्तता सारगर्भिता एवं सप्राणता—ये तीन बड़े गुण इन कहावतों के सहज धर्म के रूप में उपलब्ध होते हैं। इनका सांस्कृतिक-सामाजिक अध्ययन की दृष्टि से असीम महत्त्व है। कारण कहावतें लोक की सम्पत्ति होती हैं और इसीलिए किसी क्षेत्र-विशेष की अथवा किसी वर्ग-विशेष की आदिम प्रवृत्तियों एवं सामाजिक परम्पराओं को जानने में पथ-प्रदर्शक का काम करती हैं। इनसे जनता की आन्तरिक एवं व्यावहारिक विचार धाराओं को जानने में भी बहुत दूर तक सहायता मिलती है। यह भी अविवादास्पद है कि बड़े बड़े साम्राज्य नष्ट हो जाते हैं, पर कहावतें रह जाती हैं। वास्तव में कहावतें 'सिद्ध' हो चुकी होती हैं, अर्थात् उनमें सत्य का अंश प्रमाणित या प्रकट हो चुका होता है और सत्य मरता नहीं है अमर होता है।

सांकेतिक रूप में 'वस्तु बन कर आये 'विषय' की दृष्टि से मगही कहावतें विभिन्न प्रकार की हैं। यथा—सामाजिक, कृषि और पशु संबंधी, व्यंग्यात्मक, ऐतिहासिक, स्थान-संबंधी, कथात्मक आदि। सामाजिक कहावतों—का दायरा बहुत बड़ा है। इनके अन्तर्गत जाति संबंधी, नारी-पुरुष, विवाह और लोकाचार-संबंधी अनन्त कहावतें उपलब्ध होती हैं। ये कहावतें भी दो प्रकार की होती हैं सामान्य तथा विशेष। सामान्य वर्ग में आने वाली वे कहावतें हैं, जिनसे किसी सार्वकालिक या सार्वदेशिक सत्य की अभिव्यक्ति होती है। ये कहावतें काल परिवर्त्तन की गति से पूर्णतः अप्रभावित रहती हैं।[1] विशेष वर्ग में वे कहावतें आती हैं, जिनके विषय का क्षेत्र सीमित होता है। उनका आधार भी लोकानुभव होता है, पर वह सीमित निरीक्षण पर आधारित होता है। मगही की जाति-सम्बन्धी कहावतें इस विशेष वर्ग के अन्तर्गत ही आती हैं। इनसे विविध जातियों की दुर्बलताओं, उनके विषय में अन्यों के खरे अनुभव, उनके स्वभाव संस्कार पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है।[2] नारी संबंधी कहावतों में

१ (क) काम भेल, दुस्मन भेल, बैरी भेल बैद।
(ख) नींद के आगु खरहर का ?
भूख के आगु बासी का ?

२ (क) गाय आउ बराहमन (ब्राह्मण) के घुमते पेट भरे हे।
(ख) जहँ रजपूत, हुआ बात मजगूत (मजबूत)।
(ग) घर घर नाच तीन जन
कायथ, बैद, दलाल।
(घ) केतनो अहीर पढे पुरान
लोरिक छोड़ न गावे गान।
(ङ) बनिया रीझे तो हस दे।
(च) सौ चोट सोनार के, एक चोट लोहार के। आदि।

नारी-जीवन के विविध पहलुओं एवं उनकी विशिष्ट रुचि एवं प्रकृति का परिचय मिलता है ।[1] इसी तरह पुरुष संबंधी कहावतों में उनके पद की पारम्परिक सम्मान भरी धारणा एवं उनकी प्रकृति की अच्छी व्यंजना मिलती है ।[2] विवाह संबंधी कहावतों में वर कन्या की विवाह की उम्र आदि की चर्चा मिलती है ।[3] सामान्य लोकाचार से संबद्ध कहावतों में समाज विशेष के विश्वास, परम्पराओं पर अच्छा प्रकाश पड़ता है ।[4]

मगही की कृषि एवं प्रकृति संबंधी कहावतों में कृषि एवं कृषकजीवन की अनुभूतियाँ संरक्षित मिलती हैं ।[5] इनके अतिरिक्त इस वर्ग की कहावतों में प्रकृति के विविध रूप, विभिन्न पशु-पक्षियों के गुण-स्वभाव आदि की अच्छी झाँकी मिलती है। शिक्षा एवं नीति सम्बन्धी कहावतों में मगह लोक-जीवन में प्रचलित सूक्तियाँ सम्मिलित हैं, जो उन्हें सीख देने के लिए प्रचलित हुई सी प्रतीत होती हैं। इनमें जीवन का खरा अनुभव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है ।[7] व्यंग्यात्मक कहावतों में उपहास की भावना भरी होती है, पर यह उपहास दृष्टि विध्वंसात्मक न होकर आलोच्य व्यक्ति में वर्तमान दोषों को दूर करने के लक्ष्य से सन्नद्ध होती है ।[8] ऐतिहासिक

---

१ (क) बेटी पराया, घर के सोभा हे ।
(ख) लड़की गाय हे, जौन खूँटा पर बाँध दऽ ।
(ग) हे घरनी घर सोभे हे ना घरनी घर रोवे हे ।
(घ) मइया के जीउ गइया ऐसन, पूता के जीउ कसइया ऐसन ।
(ङ) बिना बोलाये मत जाहु भवानी, न मिलती बोरा पीढ़ा पानी । आदि ।
२ (क) घीउके लड्डू टेढ़ो भल ।
(ख) पुरुष आउ पहाड़ दूरे से लउके हे ।
३. कन्या बारह, वर अट्ठारह ।
४ (क) अहारे बेहारे लाज न करे ।
(ख) कमाय लंगोटी वाला, खाय टोपी वाला ।
(ग) काठ गड़ले चिक्कन, बात गड़ले खरखाड ।
५ (क) उत्तिम खेती, मद्धम बान ।
निखिद चाकरी, भीख निदान ।
(ख) धान, पान नित असनान ।
६ (क) उदन्त घोड़ी, दुदन्त गाय ।
माँगे मस गोसइयाँ खाय ।
७. (क) आप रूप भोजन, पर रूप सिंगार ।
(ख) चाल चले सादा कि निबहे बाप दादा ।
(ग) जादे नीबू मल्ले से तित्ता हो जा हे ।
८. (क) आगे बनिया, पछे सेठ ।
(ख) ऊँच बड़ेरी, खोखर बास ।
(ग) अधरा आगे रोवे, अपन दीदा खोवे ।
(घ) जयसन खाय अन्न, ओयसन हो जाय मन ।

कहावतें सपूर्ण भाव मे ऐतिहासिक नही है। उनके ऐतिहासिक होने का आधार मात्र इतना ही है कि वे भारतीय ऐतिहासिक घटनाओ एव व्यक्तियो अथवा तथ्यों से सवद्ध है।[1] यह सम्बद्धता अप्रामाणिक एव सदिग्ध भी हो सकती है। स्थान सबधी मगही कहावतों मे स्थान विशेष की किसी खास विशेषता अथवा विशेषताओ की ओर सकेत मिलता है।[2]

मगही मे कुछ कहावत ऐसी भी है जिन्हें हम 'कथात्मक' कह सकते हैं। यों तो प्राय सभी कहावते ऐसी होती हैं कि उनके उद्भव के पीछे किसी 'घटना' का हाथ अवश्य होता है, पर इस वर्ग की कहावतो को देखते ही उनके मूल मे निहित कथा झलकने लगती है। कथा प्राय किसी विशेष घटना से जुडी होती है। यह घटना जीवन के किसी भी पक्ष से सबधित हो सकती है।[3] उपर्युक्त वर्ग के अतिरिक्त भी कुछ ऐसी कहावत बच ही जाती हैं, जो सामान्य जन विश्वास धार्मिक आस्था विशिष्ट सामाजिक विचारधारा आदि की अभिव्यक्ति से सम्पन्न होती है।[4] सामान्यतया एक ही प्रसग पर बहुत सी कहावतें उपलब्ध नहीं हैं पर जो हैं, वे किसी सत्य तथ्य या मान्यता का उद्घाटन करती हैं।

मगही-मुहावरे

'मुहावरे' कहावतो से ज्यादा दूर नहीं है। अन्तर इतना ही है कि 'कहावतें' जहाँ वाणी के अलकार बन कर सर्व समक्ष आती हैं, वहा मुहावरे उसकी प्राण शक्ति बन कर। सामान्य वाक्यव्यवहार और मुहावरे मे कुछ स्पष्ट अन्तर है। सामान्य वाक्यव्यवहार का उद्देश्य कथ्य का सम्प्रेषण मात्र होता है, जब कि मुहावरों का उद्देश्य कथ्य को अत्यन्त सशक्त ढग से अनुभूत कराना होता है। यही कारण है कि मुहावरो में एक विशिष्ट प्रकार की सवेगिक तीव्रता एव सामाजिकता मिलती है। सावेगिक तीव्रता से तात्पर्य कथन की उस प्रभाव क्षमता से है, जो राग द्वेष-उत्साह मात्सर्य-वात्सल्य अवसाद आदि की भावानुभूतियों से उत्पन्न होती है। इस सावेगिक तीव्रता के अभाव मे मुहावरा की प्राणवन्तता जाती रहती है। इसी तरह सामाजिकता से तात्पर्य मुहावरा मे दीख पडने वाली शब्दो की मितव्ययिता से है। इसके अभाव मे मुहावरा की जातीयता ही समाप्त हो जा सकती है। यानी उक्त स्थिति मे 'सामान्य वाक्य खड' एव 'मुहावरे' में कोई

---

१ (क) अनरर धन पर विकरम (विक्रम) राजा।
(ख) कहाँ राजा भोज कहा गगुआ तेली।

२. पूरब के बरधा, उत्तर के मीर।
पच्छिम के घोडा, दक्खिन के चोर॥

३ (क) कोयरिन के बेटी राजा घर गेलू, तो बैगन के टेगन कहे है।
(ख) आसकताहा गिरलन कुइयाँ म, कहलन हिएँ भल हे।

४ (क) ओकर माय रसरजितिया कबलाइ हले।
(ख) खिचडी के चार इयार।
घी, पापड, दही, अचार॥
(ग) माने त देओता, न तो पत्थर।
(घ) दूधे-पूते इसल भरल रहऽ।

अन्तर ही नहीं रह जाता है। मुहावरों के उद्भव के मूल में उपर्युक्त दो ही तत्व सक्रिय रहते हैं। इन दोनों ही तत्वों की दृष्टि से मगही मुहावरे बेजोड़ हैं।

सशक्त अभिव्यञ्जना शक्ति और गम्भीर अर्थ वमन की दृष्टि से स्पृहणीय एवं अत्यन्त समृद्ध मुहावरों का विपुल भाण्डार मगही भाषा में सुरक्षित है। शक्ति के दिव्य रश्मियों की भांति ये मुहावरे समस्त मगह लोक-जीवन में व्याप्त हैं और उनसे स्फुरित होकर इसका वाङ्मय शरीर अहोनश स्वार्थ पर-लाभ करता रहता है। उपर्युक्त उद्देश्य सिद्धि के अतिरिक्त ये मुहावरे मगह लोक-जीवन के सांस्कृतिक पर्यालोचन की भी सामर्थ्य प्रदान करते हैं। सामान्यतया सांस्कृतिक, धार्मिक, पौराणिक, ऐतिहासिक, राजनीतिक या सामाजिक कोई भी पहलू ऐसा नहीं है, जिस पर ये मुहावरे प्रकाश न डालते हों।

जैसा कि कहा जा चुका है, मगही मुहावरों का कोष अत्यन्त समृद्ध है। मानव के अंग उपांग, भाव विचार, गति विधि, क्रिया अनुभूति, घर गृहस्थी, प्रकृति, कृषि, इतिहास पुराण, व्रत त्योहार आदि कहीं भी ऐसा क्षेत्र नहीं है जिनसे सम्बद्ध मगही मुहावरे उपलब्ध नहीं होते हों। ऐसी स्थिति में उन्हें वर्गों की सीमा में विभाजित करना एक दुष्कर कार्य है। यों अध्ययन की सुविधा के लिए इन्हें निम्नांकित वर्गों में विभाजित किया जा सकता है—

क. मानव शरीर संबंधी	ज. ऐतिहासिक तथ्य संबंधी
ख. मानव मनोभाव संबंधी	त. प्राचीन कथा संबंधी
ग. घर-गृहस्थी संबंधी	थ. लेनदेन संबंधी
घ. सामाजिक परम्पराओं संबंधी	द. हास्य व्यंग्य संबंधी
ङ. प्रकृति कृषि संबंधी	ध. शकुन विचार-सम्बन्धी
च. पशु पक्षी संबंधी	न. भूत प्रेत संबंधी
छ. कला शिक्षा व्यापार संबंधी	प. रोग-उपचार संबंधी
ज. राजनीति-कचहरी कानून संबंधी	फ. कला कहानी संबंधी
झ. आर्थिक परिस्थिति संबंधी	ब. आशीर्वाद संबंधी

मानव शरीर संबंधी मगही मुहावरे सिर आँख, कान नाक, आदि सभी अंगों से संबंधित मिलते हैं। इस वर्ग के मुहावरों में अभिव्यक्ति का प्रवेग स्पृहणीय मात्रा में होता है।[1] मानव मनोभाव संबंधी मुहावरों में मानव की आकृति प्रकृति स्वभाव संस्कार आदि का अच्छा संकेत मिलता है। ये मुहावरे विभिन्न मन स्थितियों की श्रेष्ठतम सटीक अभिव्यक्ति करते हैं।[2] घर गृहस्थी संबंधी मुहावरों में पारिवारिक अनुभवों की थाती सुरक्षित दीखती है।[3] अपने सम्भाव्य जीवन निर्वाह के निमित्त आवश्यक उपकरणों एवं भावना को हम व्यवहार में लाते हैं, उनका भी उन पर स्पष्ट प्रभाव दीखता है।[4]

---

१ सिर नवा के चलना। दीदा के पानी टरकना। मोछ पर ताव देना। कान के पातर होना।
२ लाल पियर होना। करेजा मसकना। हहास करना। लहालोट होना।
३ आग लगा के तमासा देखना। खा पका डालना। हाँड़ी में छेद करना।
४ सिक्हर टूटना। चिराग-गुल कराना। कुर्सी देना। डेरा डालना। सान चढ़ना।

सामाजिक परम्पराओं से संबद्ध मुहावरों में व्यक्ति-समाज अपने मनोभावों को स्पष्ट और ओजपूर्ण शैली में व्यक्त करने के लिए अपने रीति रिवाजों, धार्मिक आस्थाओं, प्रथाओं एवं आचार-व्यवहारों से शक्ति संचय के प्रयास करता दीखता है।[1] प्रकृति कृषि संबंधी मुहावरे मुख्यतया कृषक जीवन के अनुभवों पर आश्रित दीखते हैं।[2] भारत कृषि प्रधान देश है। मगह क्षेत्र तो अपनी समृद्ध कृषि-परम्परा के लिए और नामी है। ऐसी स्थिति में मगही में भी प्रकृति-कृषि संबंधी मुहावरों का बाहुल्य स्वाभाविक ही है। पशु-पक्षी भी प्रकृति के अन्तर्गत ही आते हैं। इनसे संबद्ध मुहावरों का होना भी परम स्वाभाविक ही है।[3] कला-शिक्षा-व्यापार आदि से सम्बद्ध मुहावरे व्यक्ति विशेष के प्रशंसनीय अथवा अप्रशंसनीय कलात्मक-अकलात्मक प्रयासों एवं प्रवृत्तियों की सांकेतिक मीमांसा भी उपस्थित करते हैं।[4] राजनीति कचहरी और कानून-संबंधी मुहावरों में तत्संबद्ध अनुभवों की थाती सुरक्षित होती है।[5] आर्थिक- परिस्थिति से संबद्ध मुहावरों में व्यक्ति विशेष की आर्थिक परिस्थिति के ह्रास, आशा, लाभ, पूँजी, अर्थोपार्जन की लालसा एवं दौड़ धूप आर्थिक प्रलोभन से प्राप्त होनता, क्रय विक्रय आदि की अभिव्यक्ति होती है। ऐतिहासिक तथ्य संबंधी मुहावरों में किसी इतिहास प्रसिद्ध व्यक्ति के प्रभावक चारित्रिक गुणों का संकेत होता है।[7] प्राचीन कथा-संकेतों से सम्बद्ध मुहावरों में कथात्मक अंश का तो अभाव होता है, पर उसको घेरे रहने वाली घटना का सर्वाधिक प्रभावोत्पादक मनोभाव अथवा कार्य व्यापार इनमें अभिव्यंजित होता है।[8]

खेल-कूद-संबंधी मुहावरों में सरलता के साथ-साथ भाव-गंभीरता भी मिलती है। प्रायः वे मानव प्रकृति की चतुराई अथवा कुटिल प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालते हैं।[9] हास्य व्यंग्य संबंधी मुहावरे जहाँ प्रसंग विशेष पर व्यवहृत होकर लोगों का मनोरंजन करते हैं,[9] वहाँ कुत्सित एवं विकृत प्रवृत्तियों तथा गुणों पर अधिक चोट भी करते हैं।[10] शकुन विचार से सम्बद्ध मुहावरे व्यक्ति की शंकालु एवं धर्म भीरु प्रकृति पर आश्रित हैं।[11] इसी तरह भूत प्रेत संबंधी मुहावरे व्यक्ति के जादू-टोने टोटके में विश्वास एवं उनसे परिचालित जीवनांश पर प्रकाश डालते हैं।[12] विभिन्न

१ बिरादरी से बाहर होना। बीड़ा उठाना। घंट घड़ियाल बजाना। अरदासिया लगाना।
२ झपसी लगना। कद्दू ककड़ी होना। गुल्लर के फूल होना। जड़ खोदना।
३. थान पगहा तोड़ाना। बैल होना। रंगल सियार होना। कुइयाँ के मेढक होना।
४ अपन राग अलापना। आवाज बैठना। गीत नाधना। दलाली करना।
५ रामराज होना। मियाद पुराना। कागज के राज होना। जेहल काटना।
६ भाग चरचराना। कंचन बरसना। खोटा पैसा होना। चाँदी काटना। हाँथ सरकियाना।
७. हमीर के हठ होना। बुध भगमान होना। चन्डाशोक होना। नादिरसाह होना।
८ नारद मुनि होना। मन के सीना होना। रामव न होना। चौरासी के चक्कर खाना।
९. कच्ची गोटी न खेलना। पासा फेंकना। गोटी लाल होना। पैंतरा बदलना।
१०. घोंघना फुलाना। बहुला भगत होना। बनर घुड़की देखाना।
११ मिरगा माहुर होना। नून-तेल लगाना। बिग बोकरना।
१२. दही के टीका लगाना। राई नोन निहुछना। जोग करना।
१३. देह पर देओता आना। फूँक मारना। भूत झाड़ना। मसान जगाना।

रोग तथा उपचार संबंधी मुहावरे संबंधित प्रयासों के प्रारंभ या सफलता का द्योतन करते हैं ।[१] बहुधा ये मनोभावों के क्षेत्र में भी प्रवेश कर जाते हैं ।[२] कथा कहानी से सम्बद्ध मुहावरों के मूल में कोई न कोई छोटी पुरानी कथा का संकेत छिपा होता है ।[३] इन मुहावरों के प्रयोग से ही इनके मूल में छिपी कथाएँ श्रोता के सम्मुख नाच उठती हैं । बहुधा ये मुहावरे वर्ग विशेष के संस्कार-स्वभाव की प्रकृति विशेष की ओर संकेत करते हैं ।[४] आशीर्वाद सम्बंधी मुहावरे तो मगह क्षेत्र के वृद्ध जनों के मुख से झड़ने वाले फूल हैं जो विभिन्न अवसरों पर शुभ कर्मों के शीश पर अभिवर्षित होते हैं ।[५]

मगही पहेलियाँ

'राग' और 'कौतुक' प्रियता मानव मन की प्रधान वृत्तियाँ हैं । रस शास्त्रीय दृष्टिकोण से विचार करने पर पता चलेगा कि शृंगार एवं हास्य रस के मूल में राग भावना ही बैठी है । प्रथम में यदि राग भावना का भावना प्रधान उदात्त एवं गंभीर रूप प्रकट होता है तो द्वितीय में उसका सरल, व्यावहारिक एवं अगम्भीर स्वरूप स्पष्ट होता है । इसी तरह अद्भुत रस की धारणा के मूल में कौतुक प्रियता ही सक्रिय मिलती है जिसे शास्त्रीय आचार्यों ने विस्मय के नाम से पुकारा है । पहेलियों का तात्त्विक विश्लेषण करने पर स्पष्ट होगा कि उनके उद्भव के मूल में ये दो प्रधान तत्त्व ही सक्रिय रहते हैं, अर्थात् मनोरंजन एवं कौतुक प्रियता ।

पहेलियों के उद्भव एवं विकास की परम्परा अत्यन्त प्राचीन है । सम्भवतः जिस दिन मानव ने होश सम्भाला होगा, अपनी उपर्युक्त दोनों वृत्तियों के वशीभूत हो कर पहेलियों का आविष्कार भी किया होगा । जहाँ तक लिखित साहित्य में प्राप्य परम्परा का प्रश्न है वैदिक साहित्य से ही यह परम्परा प्रवाहमान दीखती है । आत्मा परमात्मा के स्वरूप संबंध के विश्लेषण के रूपकात्मक ढंग में आये इसके कई मंत्र पहेलियों से कम कौतूहलपूर्ण नहीं हैं ।

---

१ घाव भर जाना । अग्निमांद्य निकलना ।

२. ढील मारना । समाज में घुन लगना ।

३ चौबेजी होना । कचोरस न होना ।

४. बन्टाढ़ा बराहमन होना । तरसिन होना ।

५. दूधे पूते बसल रहना । सुगिया होना । माँग हरा रहना मोर भुलना ।

६. द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते ।

तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यो अभिचाकशीति ॥

(मुण्डकोपनिषद्, तृतीय मु० प्र० ख० १)

अर्थात् 'दो पक्षी हैं जो एक साथ रहने वाले हैं परस्पर सखाभाव रखते हैं और एक ही वृक्ष का आश्रय लेकर रहते हैं । उनमें एक तो पीपल (वृक्ष) के फल को खा रहा है और दूसरा न खाता हुआ केवल देखता है ।' उपर्युक्त चित्र में भोक्ता पक्षी 'जीवात्मा' है और द्रष्टा पक्षी 'परमात्मा' ।

परवर्ती लौकिक संस्कृत साहित्य में भी पहेलियाँ बड़ी लोकप्रिय रही हैं और न केवल संस्कृत लोक साहित्य अपितु शिष्ट साहित्य में भी उनका महत्त्व स्वीकार किया गया है।[1] संस्कृत पहेलियों की परम्परा पालि साहित्य में भी प्रवहमान होती दीखती है।[2] मगही पहेलियाँ उपर्युक्त सुदीर्घ परम्परा में ही विचारणीय हैं। वैसे भी अर्थ गौरव मनोरंजन और बुद्धि परीक्षा के साधन की दृष्टि से पहेलियों का बड़ा महत्त्व है और इस दृष्टि से मगही लोक-साहित्य स्पृहणीय मात्रा में समृद्ध है।

सामान्य रूप से मगही पहेलियों में निम्न लिखित विशेषताएँ दीख पड़ती हैं—

क. सूक्ष्म निरीक्षण शक्ति
ख. बुद्धि-चातुर्य का कलात्मक प्रयोग
ग. मनोरंजन का पुट
घ. ग्रामीण जीवन की झाँकी, एवं
ङ. रसात्मक अनुभूति का संस्पर्श।

दिन भर के परिश्रम के बाद रात्रि में भोजनोपरान्त कृषक अपने परिवार के साथ ग्राम के चौपाल में बैठता है। यहाँ मनोरंजन के अन्य साधनों के साथ 'बुझौवल' का भी कार्य-क्रम चलता है। बुझौवल यह क्रम तब तक जारी रहता है, जब तक कोई उसका उत्तर देता जाता है। बुझौवल बुझाने का खेल हार जीत के खेल के समान ही होता है। जब कोई बुझौवल का उत्तर देने में असमर्थ हो जाता है, तब वह हारा हुआ मान लिया जाता है। अपने को बुद्धिमान एवं कुशाग्र मेधा सम्पन्न समझने वाले लोग भी बहुधा बुझौवल के कौतूहल मिश्रित अर्थ गौरव के सामने सिर झुका देते हैं। इस ढंग का यह कार्यक्रम तब तक चलता रहता है, जब तक सभी थक कर सो नहीं जाते। आधुनिकता के प्रसार प्रचार के साथ-साथ यह प्रवृत्ति लुप्त होती जा रही है।

---

१ अपदो दूरगामी च साक्षरो न च पण्डितः।
अमुखः स्फुटवक्ता च यो जानाति स पण्डितः॥

अर्थात् 'उसके पैर नहीं होते, फिर भी वह दूर दूर तक चला जाता है। वह साक्षर है, पर पण्डित नहीं है। उसके मुख नहीं है, फिर भी वह सारी बातें साफ-साफ कह देता है। जो उसे जानता है वह पण्डित है।' इस संस्कृत पहेली का उत्तर है, 'पत्र'।

२ हन्ति हत्थेहि पादेहि मुखं च परिसुम्भति।
स वे राजा पियो होति कं तेनमभिपस्ससि॥१॥
अक्कोसति यथाकामं आगमं चस्स इच्छति।
स वे राजा पियो होति कं तेनमभिपस्ससि॥२॥

अर्थात् "वह हाथों और पैरों से मारता है, चेहरे पर भी चोट पहुँचाता है, फिर भी वह प्रिय है। हे राजा तू उसे क्या समझता है? वह उसे जी भर कर बुरा भला कहती है और फिर भी चाहती है कि उसका आगमन होता रहे, क्योंकि वह प्रिय है। हे राजा तू उसे क्या समझता है? आदि

[म० जातक, छठी जिल्द, पृ० ३७०-३७८]

मगही भाषा में पहेलियों का इतना समृद्ध भांडार है, पर इनका निर्माता कौन है, इसकी जानकारी अभी तक नहीं हो सकी है। श्री रामनरेश त्रिपाठी ने कुछ बुझौवल 'सवासी खेरे' के घासीराम के नाम से दिए हैं।[1] श्री रामाज्ञा द्विवेदी ने अयोध्या के पास के अरोडा स्थान के राज्यवंश के सबल सिंह के नाम से कुछ अवधी की पहेलियों का प्रचलन बतलाया है।[2] हिन्दी में अमीर खुसरो और भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की पहेलियाँ और मुकरियाँ मिलती हैं। मगही पहेलियों के रचयिता अभी तक अन्धकाराच्छन्न हैं और इनका परिचय-ज्ञान शोध का विषय बना हुआ है।

सामान्यतया मगही पहेलियों का क्षेत्र इतना व्यापक है कि उन पर सम्यक् दृष्टिपात् किये बिना उनको वर्गीकृत करना संभव नहीं दीखता है। विषय संबंध की दृष्टि से मगही पहेलियाँ निम्नांकित वर्गों में विभाजित की जा सकती हैं—

क. खेती-संबंधी
ख. भोज्य पदार्थ-संबंधी
ग. घरेलू वस्तु-संबंधी
घ. प्राणी-संबंधी
ङ. प्रकृति-संबंधी
च. शरीर-संबंधी
छ. प्रकीर्ण

खेती-संबंधी पहेलियों में मुख्यतया वे आती हैं, जिनका संबंध कृषि अथवा कृषि की उपज के अन्तर्गत विभिन्न फसलों से होता है।[3] उद्देश्य प्रधानतया मनोरंजन होता है। भोज्य पदार्थ-संबंधी पहेलियाँ प्रधानतया भोजन के विभिन्न पदार्थों और, अंडा, ताड़ी, केला, नारियल, गोलमिर्च, अन्य मसाले, भात रोटी, शकरकंद, मूली, कटहल आदि से संबंधित होती हैं। इनका उद्देश्य मुख्यरूपेण कौतुक-सर्जन होता है।[4] घरेलू वस्तुओं से संबंधित पहेलियों का मुख्यरूपेण नाता गृहस्थी के सामान यथा चाकू, खटिया, चिलम, ढोलक, चलनी, ढकी, घहरना, सूआ, चूल्हा, ताला,

---

१. हि० ग्रा० सा०—पृ० २८०।
२. हिन्दु० भाग २, अंक १—पृ० २६८।
३. क. एक छौरा के नक्रिए टेढ़। (बूँट)
ख. एक छौरा के पेटने फटल। (गेहूँ)
ग. करिया बिलाई के हरियर पुच्छ। (ताड़)
घ. तनी गो डिबिया में लाल-लाल बिटिया। (मसूर)
४. क. एक घड़ा में दू रंग पानी। (अंडा)
ख. एक गाँव में ऐसन देखली, बानर दूहे गाय।
छालो काट के बीग देलक, दही लेलक लटकाय॥ (पासी) (ताड़ी)

दीपक मृद पैवन्द आदि से दृष्टिगोचर होता है ।[१] इनका उद्देश्य हास्य एवं कौतुक की सृष्टि ही होता है। प्राणी सम्बंधी पहेलियों की विषय-वस्तु—आदमी, जूँ, बेंग, बाघ, गिरगिट, मच्छर, चींटा, बिच्छू, जोंक, खटमल आदि पर आधारित होती है। इनमें जिज्ञासा का भाव प्रबल होता है। प्रकृति सम्बंधी पहेलियों का सम्बंध प्रकृति के विभिन्न उपादानों से होता है।[3] ये प्राय किसी प्रिय दृश्य को अपने मन में रूपायित होती है। शरीर सम्बंधी पहेलियाँ शरीरांग नाक, जीभ, आँख, ओंठ अंगूठा, अंगुलियाँ आदि पर आधारित रहती हैं।[४]

प्रकीर्ण वर्ग से तात्पर्य उन पहेलियों के वर्ग से है जो उपर्युक्त दो वर्गों में समाविष्ट नहीं हो पाता। इनका सम्बंध विविध विद्या से दीख पड़ता है। इन्हें निम्नांकित उपवर्गों में रखा जा सकता है—

क हथियार औजार गाड़ी रेल आदि से सम्बंधित[५]
ख गणित तथा पठन—पाठन से सम्बंधित[६]
ग प्रश्न एवं उत्तर से सम्बंधित[७]

---

१ क आधा धुआँ आधा छइयाँ।
    बलवे ने हाने बनवइया ।। (खटिया)
  ख दू दाग एक पट अक्षर सवा हाथ के रद।
    मारे पटापट तूम्हऽ नऽ का ह ? (ढेंकी)
२ क करिया ही हम करिया ही
    करिया बन म रहऽ ही,
    ललका पानी पीअऽ ही। (ढील या जूँ)
  ख चादिलपुर म चरा हाल गुन्नी म परायल।
    तरहत्थी पर हाकिम हाल नह पर पटायल ॥ (जूँ)
३ उमत न फूल खाइ चमऽ न हइ।
    भरभर गिरइ खाइ चुनऽ न हइ ।। (वर्षा की बूंद)
४ एक गेला आन्त गली, औ गेली सकरता।
    बत्तीस गो पेरवा देखली एक्के गो पर पता। (जीभ)
५ उठ त भनभन बजऽ बठ त फहराय।
    दिन भर लारा चिउ मारे अपन कुछ न खाय ॥ (जाल)
६ चार आना बकरी आठ आना गाय।
    चार रुपया भैंस बिकाय, बीस रुपया बासे जोड़ ॥

(३ भैंस १५ गाय, २ बकरी)

७ प्रश्न—बरसा बरसे रात में, भीजल सब बनराय।
        घड़ा न डूबल लोटिया पंछी पियासल जाय ॥
   उत्तर—ओस पड़ल हल रात म भीजल सब बनराय।
        घड़ा म डूबल लोटिया, पंछी पियासल जाय ॥

घ पौराणिक उपाख्यानों से सबंधित[4]

ङ जीवन-दर्शन से सबंधित[5]

उपर्युक्त विवेचन में मगही के स्पृहणीय पहेलिका साहित्य की हल्की झाँकी मिल जाती है।

मगही लोक-साहित्य में साहित्यिक सौंदर्य

सामान्य विवेचन—लोक साहित्य में साहित्यिक सौंदर्य का अन्वेषण एक दुस्तर कार्य है, कारण सामान्यतया 'लोकसाहित्य' एवं 'शिष्ट साहित्य' के पार्थक्य का आधार ही कलात्मक सौंदर्य का अभाव या सद्भाव होना है। पर अनपढ व्यक्तियों द्वारा निर्व्याज भाव से गढ़े गये लोकसाहित्य में भी 'कलात्मक सौंदर्य का सर्वथा अभाव नहीं होता। कारण सौंदर्य भावना' मानव जीवन की एक सात्विक एवं शाश्वत वृत्ति है और यह अप्रशिक्षित व्यक्तियों के जीवन में भी परिपुष्ट भाव से प्रतिफलित रहती है। यही कारण है कि उनके अपरिपक्व मस्तिष्क पर सहज ही द्रवित हो जाने वाले हृदय से फूटे उद्गारों में भी विशिष्ट प्रकार का माधुर्य होता है। इस सौंदर्य में उस कृत्रिम कलात्मकता का अभाव अवश्य होता है, जो शिष्ट साहित्य में आयास या सचेष्टता के फलस्वरूप उद्भूत होती है, परन्तु जहां तक साहित्य के चरम लक्ष्य 'रस परिपाक' का संबंध है, लोकसाहित्य शिष्ट साहित्य से अधिक सक्षम होता है।

हम जिसे साहित्यिक सौंदर्य कहते हैं उसके दो स्थूल विभाग किये जाते हैं—भावपक्ष एवं कलापक्ष। भावपक्ष में वर्ण्य वस्तु के स्वरूप एवं भावगत सौंदर्य पर विचार किया जाता है एवं कलापक्ष में उसकी सम्प्रेषणीयता को प्रभावशाली बनाने वाले रूपात्मक तत्त्वों (Formal element) पर।

लोक साहित्य की भावराशि का अनुमान लगाना कठिन है। शिष्ट साहित्य की तरह उनकी भावदिशाएं सीमित एवं उचित अनुचित के भेदोपभेद से आबद्ध नहीं होतीं। साधारणतया जीवन का प्रत्येक क्षण उनमें मूर्त हो उठता है। जीवन में सुख दुःख राग विराग आदि के क्षण हमेशा आते रहते हैं। इन क्षणों में मनुष्य की भावनाएं पूर्णतः वेगशील हो जाती हैं और हर्ष एवं शोक में परिपूर्ण हो नाना प्रकार उद्गारों के रूप में फूट पड़ती हैं। सुख दुःख के इन क्षणों की न तो सीमा ही कूती जा सकती है और न उनका वर्गीकरण ही किया जा सकता है। वे अनन्त हैं और उनके रूप भी अनन्त हैं। प्रकृति सुषमा को देख कर जहां मानव मन विमुग्ध होता है, वहीं उसकी भयंकरता से संत्रस्त भी होता है। दैनिक जीवन की बहुत सारी घटनाएं आनन्द शोक विस्मय, और कम्पादि का उद्रेक करने वाली होती हैं। फिर सामाजिक परिवेश में भी कई घटनाएं ऐसी आती हैं जो मानव मन को तरलित एवं उसकी वृत्तियों को गतिशील कर देती हैं। ऐतिहासिक घटनाओं एवं राजनीतिक परिवर्तनों के विषय में भी यही बात कही जा सकती है।

---

४ दू बेकती मिलि बाइस कान।

(रावण और मंदोदरी)

५ कोमल नार पिया संग सूतल, अंग में अंग मिलाय
पिया बिछुड़ते देखि के, संग सती होई जाय॥

(बत्ती और तेल)

लोकसाहित्य में सर्व-सामान्य रूप से पायी जाने वाली इस विशेषता की बाँकी झाँकी मगही लोक साहित्य मे भी मिलती है। सामान्यतया मानव जीवन का कोई भी पक्ष ऐसा नहीं है, जो मगही लोकसाहित्य म चित्रित होने से शेष रहा हो। यह अवश्य है कि यहाँ हृदय की संवेदनाओं का ही एक-छत्र साम्राज्य है, निर्गुण पक्ष को छोड़ शेष मे प्रौढ मस्तिष्क के फलस्वरूप उद्भूत होनेवाले चामत्कारिक तत्त्वों का नहीं।

मगही लोककथाओं म जो जीवनानुभव व्यक्त हुए हैं, उनका सबध मुख्यत तीन से है—(क) उन स्थितियों के चित्रण से जो जीवन में किसी वस्तु या घटना के धार्मिक महत्त्व का प्रतिपादन करते ह। (ख) उन स्थितियों के चित्रण से जो जीवन के नैतिक पक्ष के उत्कर्ष पर प्रकाश डालते हैं। (ग) उन स्थितियों के चित्रण से, जो जीवन के मनोरजनपक्ष से सबधित हैं। इन तीनों के उदाहरणस्वरूप क्रमिक के नाम "धरम के जय एव "डपोर सख" शीर्षक लोककथाओं का अवलोकन किया जा सकता है।

मगही लोकगीतों मे अभिव्यक्त जीवन का पाट बहुत चौड़ा है। इनमें जहाँ लोकजीवन का सामान्य सामाजिक धरातल वर्तमान है, वहाँ उनके विशिष्ट सबधों के सूक्ष्मातिसूक्ष्म विश्लेषण भी उपलब्ध हैं जहाँ मगही जन जीवन के अधविश्वास एव रूढ़ियों की अभिव्यक्ति मिली है वहाँ उनकी धार्मिक आस्थाओं का भी चित्रण हुआ है, जहाँ उनके शोक एव विषाद मुखरित हैं, वहाँ उनके जीवन का मन रजन पक्ष भी चित्रित हुआ है।

मगही लोकगाथाओं एव लोककथाओं म मगह के सामन्ती जीवन के कटु-मधुर अनुभव सुरक्षित है। जीवन का व्यापक अनुभव इसकी कहावतों एव मुहावरों म भी सुरक्षित है। लोकनाट्यगीतों एव बुझौवलों का मुख्य सबध मगह जीवन के मनोरजन पक्ष से ही है, यद्यपि लोकनाट्यगीतों म पारिवारिक जीवनानुभव की समृद्ध थाती सुरक्षित है।

मगही लोकसाहित्य मे मनोवैज्ञानिक तत्त्व

लोकसाहित्य 'सामान्य लोक' का 'साहित्य' है, अत इसकी कोई भी अभिव्यक्ति तबतक लोकोन्मुख नहीं हो सकती, जब तक उसमें लोक व्यापिनी 'सामान्यता' न हो। इस लोकव्यापिनी सामान्यता का आधार मनोवैज्ञानिक होता है अत लोकसाहित्य म मनोवैज्ञानिक तत्त्व अनिवार्य रूप से वर्तमान होते हैं। मगही लोकसाहित्य म इस मनोवैज्ञानिकता के दो रूप मिलते हैं—(क) व्यक्तिनिष्ठ मनोवैज्ञानिकता एव (ख) समष्टिनिष्ठ मनोवैज्ञानिकता।

व्यक्तिनिष्ठ मनोवैज्ञानिकता के तीन स्तर मिलते हैं। (क) प्रथम स्तर—यह वह स्तर है जिसे हम आदिम मानव के 'मानस' का 'अवशेष' कह सकते हैं। इस स्तर से सम्पन्न मगही लोकसाहित्य म हमें एक ऐसी लोकचेतना के दर्शन होते हैं जिसमें कार्य कारण-सबध से रहित विश्वास परम्परा का प्रभुत्व है। इस विश्वास रखने के परिणामस्वरूप ही वह अपने चतुर्दिक विभिन्न उपादानों म ऐसी 'शक्तियों' के दर्शन करता है, जो रुष्ट हो जाने पर उसे ('लोक' या 'सामान्य जन' को) अपार हानि पहुचा सकती हैं और प्रसन्न हो जाने पर मनोकामनाएँ भी पूरी कर सकती हैं। लोकमानस इन शक्तियों को हमेशा प्रसन्न रखना चाहता है और इसके लिए विभिन्न लोकगीतों में विभिन्न 'अनुष्ठानों' के

विधानात्मक संकेत उसने प्रस्तुत किए हैं। किसी वस्तु के स्पर्श करने या खाने से अथवा किसी के वरदान से सन्तान का होना या किसी के स्पर्श से अथवा रक्त की बूंदों से पीड़ित के प्राणों की प्रतिष्ठा आदि से संबंधित विश्वास ऐसे ही हैं।

(ख) द्वितीय स्तर—यह वह स्तर है, जिसमें "प्रथम बौद्धिक उन्मेष" की झांकी मिलती है। कार्य-कारण- संबंध के तार्किक ज्ञान का इसमें भी सर्वथा अभाव है, पर कल्पना का आश्रय लेकर उसकी पूर्ति का प्रयास स्पष्ट है। यही कारण है कि प्रथम स्तर के लोकसाहित्य में जहां अंधविश्वासों एवं भ्रममूलक रूढ़ियों से परिपूर्ण नीरस पुनरुक्तियों की प्रधानता होती है वहां इस द्वितीय स्तर के लोकसाहित्य में अद्भुत वार्ताओं, असंभव संघटनाओं एवं विस्मय परिणामों की।

(ग) तृतीय स्तर—यह स्तर "भावमयी अभिव्यक्ति" का है। इसमें मनोवेगों की प्रधानता होती है, जिनके मूल में हर्ष या विषाद का उद्रेक होता है। सामान्य चित्रण इन्हीं की पृष्ठभूमि के रूप में आते हैं। इस स्तर के लोकसाहित्य में रागात्मक चित्रण की प्रधानता स्पष्ट दीख पड़ती है।

समष्टिनिष्ठ मनोवैज्ञानिकता—'व्यष्टि' से 'समष्टि' का निर्माण होता है। दोनों में आधाराधेय संबंध है। एक के अभाव में दूसरे की सत्ता शेष नहीं रह जाती। अतः लोक-साहित्य में प्रतिफलित "व्यक्तिनिष्ठ मनोवैज्ञानिकता" एवं "समष्टिनिष्ठ मनोवैज्ञानिकता" में कोई तात्त्विक अन्विति ही न हो, ऐसी बात नहीं। फिर भी 'सामूहिक मानस' व्यक्ति-मानस से किंचित् भिन्न होता है। व्यक्ति एकाकी रूप में जिन बातों की अभिव्यक्ति में —वह अभिव्यक्ति 'वाचिक' हो या 'कायिक'—लज्जा या मर्यादाहीनता का अनुभव करता है, उन्हें ही सामूहिक स्तर पर निर्भीकता के साथ व्यक्त करता हुआ आनन्द का अनुभव करता है। यथा—होली या विवाह के अवसर पर की जानेवाली अनेक अश्लील अभिव्यक्तियों को देखा जा सकता है। यह उदाहरण 'व्यक्ति-मानस' एवं "सामूहिक मानस' के अन्तर को स्पष्ट करने भर के लिए प्रस्तुत किया गया है, वैसे इसका यह तात्पर्य नहीं कि प्रत्येक सामूहिक अभिव्यक्ति अश्लील ही होती है।

सामान्यतया कोई अभिव्यक्ति निम्नांकित परिस्थितियों में सामूहिक अभिव्यक्ति का स्वरूप ग्रहण करती है—

(क) कोई गीत अपनी लय के कारण सामूहिक अभिव्यक्ति का स्वरूप ग्रहण कर लेता है।

(ख) कोई गीत अपनी उदात्त भावनाओं के कारण सामूहिक अभिव्यक्ति में परिणत हो जाता है।

(ग) कोई गीत अपनी उद्दीपक शृंगार भावना के कारण "सामूहिक अभिव्यक्ति" की श्रेणी में चला आता है। सामूहिक गीतों में 'वस्तु' की दृष्टि से कोई कथा भाग भी स्वीकार कर लिया जाता है।

मगही लोकसाहित्य में आदर्श स्थापन की प्रवृत्ति

आदर्श-स्थापन की प्रवृत्ति यद्यपि शिष्ट साहित्य में सचेष्ट भाव के साथ मिलती है, तथापि लोकसाहित्य में भी उसका सर्वथा अभाव नहीं होता। लोकसाहित्य का स्रष्टा भी एक

"सामाजिक प्राणी" होना है और अपने सामाजिक परिवेश में जीवन की गरिमा का मूल्यांकन करने वाले प्रतिमानों से अनायास भाव से परिचित होना है। अपने "चरित्रों" को वह जहाँ अधिक से अधिक लोकोन्मुख रूप में प्रस्तुत करता है, वहाँ उनमें लोक सामान्य के धरातल पर मान्य "आदर्शों के स्थापना की नैसर्गिक प्रवृत्ति भी स्पष्ट झलकती रहती है। इस आदर्श-स्थापन के लिये अवसर घटना प्रसंग या कथा योजना से प्राप्त होते हैं। इस दृष्टि से स्त्री चरित्रों में सतीत्व, कुलमर्यादा, प्रेमपर बलि होने की भावना, भाई के लिए त्याग, वात्सल्य आदि के आदर्शों की स्थापना का सहज स्वरूप दीखता है इसी तरह पुरुष चरित्रों में पितृभक्ति, मित्र प्रेम, पर दुःखकातरता, उपकार भावना साहस, आपत्ति में धैर्य, प्रत्युत्पन्नमतित्व, स्वामिभक्ति आदि के आदर्श का शील रूप में स्थापन मिलता है। इससे जहाँ चरित्रों में विविधता के दर्शन होते हैं, वहां वे अधिक सूक्ष्म गंभीर एवं प्रभावशाली भी हो जाते हैं।

मगही लोकसाहित्य में 'प्रकृति'

मनुष्य का 'प्रकृति' के साथ अविच्छिन्न और सनातन संबंध है। जन्म लेते ही वह प्रकृति के दर्शन करता है और इसी के दर्शन करते हुए वह आँखें भी मूँदता है। उसकी 'मनन शीलता' का विकास भी इसी प्रकृति के साहचर्य से होता है। साधन रूप से हर्ष और विषाद होते हैं। प्रकृति के कतिपय व्यापारों को हेरा कर वह आनन्दोल्लास से भर-भर उठता है। पर ऐसे दृश्य भी आते हैं, जो उसे 'भय' और 'विषाद' से परिपूर्ण कर देते हैं। 'प्रकृति' के संदर्भ में उसकी यह स्थिति द्रष्टा' और 'भोक्ता' की होती है। इस स्थिति में प्रकृति चेतना विभूषित सजीव प्राणी के रूप में उपस्थित होती है। मनुष्य इस प्रकृति को अपने 'हर्ष' में हर्षित और 'विषाद' में 'खिन्न' होते पाता है। साहित्य में इन दोनों रूपों में प्रकृति के दर्शन होते हैं। पर 'शिष्ट साहित्य' एवं 'लोकसाहित्य' में प्रकृति चित्रण में कुछ अन्तर है।। यह अन्तर वही है, जो दोनों के निर्माताओं में है। शिष्ट साहित्य का साधक जहाँ 'संस्कार' की कृत्रिमता से आच्छन्न होने के कारण 'प्रकृति' का किंचित् तटस्थ भाव से साक्षात्कार कर पाता है वहाँ लोकसाहित्य का सर्जक सहज नैसर्गिक होने के कारण स्वयं 'प्रकृति' के अत्यन्त समीप होता है। लोकसाहित्य में प्रकृति का 'आलम्बन' एवं 'उद्दीपन' विभावों के रूप में चित्रण मिलता है, पर इसमें जो मर्मस्पर्शिता मिलती है, वह शिष्ट साहित्य में अपवादतः ही मिल पाती है। मगही लोक-साहित्य के प्रकृति चित्रण में भी यह मर्मस्पर्शिता पर्याप्त मात्रा में वर्तमान है।

मगही लोकसाहित्य में प्रकृति चित्रण का वह रूप, जिसमें उसके सर्जक की स्थिति तटस्थ 'द्रष्टा' एवं भोक्ता' की है, अत्यन्त विस्तृत एवं वैविध्यपूर्ण है। प्रकृति के विभिन्न उपादानों का विभिन्न प्रसंगों में बड़ी तन्मयता के साथ वर्णन किया गया है। प्रकृति के चेतन स्वरूप का चित्रण भी मगही लोक साहित्य में पर्याप्त मात्रा में हुआ है। मागधी जनता के लिए 'गंगा' एक सामान्य नदी नहीं, एक 'देवी' है जिसमें दुःखों को दूर कर सुख लाने की पूरी क्षमता है। उसका रूपांकन भी एक नारी के रूप में होता है, जो माथ में टिकुली साटती है, ओढ़नी ओढ़ती है और नाक में नथिया पहनती है। अन्यत्र 'सूर्य' को भी एक ऐसे देवता के रूप में चित्रित किया गया है, जो सोने की खड़ाऊँ पहनते हैं और हाथ में सोने की छड़ी रखते हैं। भक्तजन उन्हें

उपहार देकर मनोवांछित फल पाते हैं। 'छठ' के अवसर पर गाये जाने वाले गीतों में 'सूर्य' के इस स्वरूप की मर्मस्पर्शी झांकी मिलती है। पशु-पक्षी भी 'प्रकृति' के अन्तर्गत ही आते हैं। मगही लोकसाहित्य में ये दो रूपों में चित्रित मिलते हैं—(क) सामान्य रूप में, जहां इनका उल्लेख प्रसगवशात् अपेक्षानुसार होता है एवं (ख) असामान्य रूप में, जहां इनमें मानवीय चेतना के पूर्ण दर्शन होते हैं और ये तदनुकूल सक्रियता दिखलाते हैं।

मगही लोकसाहित्य में रस-परिपाक

'रस' का स्वरूप हृदय से है। सहृदय सामाजिक के हृदय में जो रत्यादि स्थायिभाव संस्कारों के रूप में चिरसंचित होते हैं, वे ही विभाव, अनुभाव एवं संचारिभावों के संयोग से रस-रूप में परिणत हो जाते हैं।[1] लोक-साहित्य में हृदयपक्ष एवं भाव संवेगों की प्रधानता होती है, बुद्धि-पक्ष या तो अत्यन्त गौण होता है अथवा पूर्णतः शून्य। बौद्धिक चमत्कार वहाँ भले न मिले, पर हृदय से सबद्ध रस परिपाक की जो रचना उसके सर्जक में मिलती है उसका लोक-साहित्य के सर्जक में अभाव सा होता है। फिर भी लोकसाहित्य में विभाव अनुभाव एवं सचारीभावों का अन्वेषण सभव है।[2] लोकसाहित्य की यह सामान्य विशेषता मगही लोकसाहित्य में भी वर्त्तमान है।

मगही लोकसाहित्य में लोककथा, लोकगीत बाल-गीत, लोकनाट्यगीत एवं लोकगाथा-ये सभी सम्मिलित हैं। मगही लोककथाओं में प्राय शृंगार करुण शांत एवं हास्य रसों का परिपाक मिलता है। उदाहरणार्थ क्रमश राजा मदन 'अमला', 'विरवास व भाग्य' एवं 'कबीर सब' शीर्षक लोककथाओं को देखा जा सकता है। रस परिपाक विशेषत मगही लोकगीतों में मिलता है।' रौद्र 'एवं वीभत्स' को छोड़ कर प्राय सभी रसों का परिपाक दीख पड़ता है। इनमें भी शृंगार एव करुण रसों की प्रधानता स्पष्ट है। यहा विस्तृत विवेचन का अवकाश नहीं है, अत शृंगारादि रसो के दो तीन प्रतिनिधि उदाहरण भर दिये जा रहे हैं—

क. फूल लोढे गेली ससुर फुलवरिया,
  वगिया में पियवा अगोरल हमार।
एक खोंइछा लोढली, दूसरे खोंइछा लोढली,
  वगिया में फुलवा देलन छितराय॥

—(शृंगार रस)

---

१. विभावानुभावेन व्यक्त सचारिणा तथा।
रसतामेति रत्यादि स्थायिभाव सचेतसाम्॥

२ इस विषय में डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय का कथन है—"लोकसाहित्य में रस की प्राप्ति ही नहीं होती, प्रत्युत वह रस से ओतप्रोत होता है। परन्तु 'रस' की सृष्टि के लिए जिन विभाव अनुभाव और सचारियों की आवश्यकता होती है, उनका इसमें अभाव होता है।' (लोकसाहित्य की भूमिका, पृ० १६०) हम इस कथन से सहमत नहीं हैं। कारण लोकसाहित्य में भी शृंगारादि रसों के प्रसग में नायक

(ख) जहिया से पियवा मोरा गैल ऽ तूँ बिदेसवा,

वलमुआ हो गोरा निन अखियो न नाद ।

बलमुआ हो करलौं न सरहों सिंगार ।।

काहया न सनौली हम फुलवा सेजरिया,

बलमुआ हो सपना मे गेल मोर नींद ।।

(विप्रलम्भ शृंगार)

(ग) सन्नमा क दिनना धरायल

गउना नगिचायल हे ।

सब रखी सरधिन चतुरइया ।

बाबू के फटल करेजवा,

रे नसे भादो कँहर ।

मइया क टरे नयना लार

र नसे भादो आरो धुए ।।

(करुण)

(घ) पोइबइ मैं सता चुड़िया

फाड़बइ हम चालिया

धरबइ नागिनिया ँ सस ।।

(करुण विप्रलम्भ)

(ट) ये ही समधा के मुँहवा कसन लगऽ हइ ?

जैसन बानर के मुँहवा आयसन लगऽ हइ ।

जैसन नगर के मुँहवा अयमन लगऽ हई ।

मे ही समधी के दढ़िया कैसन लगऽ हई ?

नैसन फेदवा के झोटवा ओयसन लगऽ हई ।

(हास्य)

नायिका, रमणीय प्रकृति, हर्ष विषाद, अश्रुपात, चिन्तादि की चर्चा होती है। और इनके सद्भाव में लोकसाहित्य म भ 'विभाव' (आलम्बन —नायक नायिका, उद्दीपन प्रकृति के रमणीय दृश्य), अनुभाव (अश्रुपातादि) एवं सचारि भावों (चिन्तादि) का अभाव बतलाना अनुचित है। यह सहज सभव अवश्य है कि लोकसाहित्य के अन्तर्गत रस परिपाक में ये सभी रसाग सर्वत्र परिपुष्ट रूप म न हो।

(च) साधो लोक मे पराइ, गुन गाइ गाइ बहुरी न आवइ एना।

ककरे बले विरिया में, लम्गइ पेमल मनमा,
कउन जे टुलनावे, उत्तिम जोडी में परनमा,
ककरे बले अँकुरइ कठ मे बचनमा,
कउन देव देलक मोरा कान अउ नयनमा।
मनमों के रान साधो मनमों के मनमा।
बचनों के वाक से, उ परनमों के परनमा।
अँखियो के अँख, भिन्न भिन्न रूप धारी।
ओकरे प्रतापे ओही में रहे सनचारी।
साधो, ओकरे दरस ओट टारी जीवन मुकुती पवाइ एना॥

(शान्त)



मगही लोकगीतों में शृंगार रस के प्रसंग मुख्य रूप से विवाह, कोहबर एवं ऋतु सम्बंधी गीतों में मिलते हैं। विवाह एवं कोहबर सम्बंधी गीतों में संयोग शृंगार के चित्रों की प्रधानता होती है एवं ऋतु गीतों में विप्रलम्भ शृंगार के चित्रों की। 'कोहबर' के गीतों में प्रायः नवविवाहित दम्पति के हास परिहास का चित्रण मिलता है। नवेली वधू के मनोभावों का वर्णन बड़े मनोयोग से किया गया दृष्टिगोचर होता है।

मगही लोकगीतों में वर वधू के जो शृंगार चित्र मिलते हैं उनमें गार्हस्थ्य जीवन को पृष्ठाधार बनाया गया है। रीतिकालीन कवियों की तरह उत्तरदायित्व विहीन शृंगार चित्रण यहाँ शायद ही कहीं मिले। इनमें आये सभी चित्र लोकोन्मुख एवं उद्देश्य की दृष्टि से गार्हस्थ्य जीवन की पूर्णता के साधक हैं।

शिष्ट साहित्य के काव्य में नायिका भेदों के निरूपण में जैसी गहरी अभिरुचि के दर्शन होते हैं, उसका लोककाव्य में सर्वथा अभाव है, जो स्वाभाविक ही है। नायक-नायिका के मूल अवान्तर भेदों की तो कथा ही वृथा है। पर नायक नायिका-भेद निरूपण का आधार भी 'सामान्य सामाजिक जीवन' ही है, जिससे लोककवि भी सम्बद्ध होता है। मगही का लोककवि भी 'मगह क्षेत्र' के 'सामान्य जन जीवन' के सहज सम्पर्क से वंचित नहीं है अतः मगही लोकगीतों में यत्र तत्र स्थूल रूपेण नायिका-भेदों के दर्शन भी हो जाते हैं। यथा—'स्वकीया एवं परकीया' दोनों ही के चित्र मगही लोकगीतों में उपलब्ध हैं। 'स्वकीया' में भी 'मुग्धा[1] मध्या' एवं 'प्रगल्भा' इन तीनों

१ "पहिल पहर राती बीतल, हलती मिनती करथिन हे।
लेहु बहुए सोने के सिन्होरवा, तो उलटि पुलटि सेचउ हे।"
""अपन सिन्होरवा परभु जी बहिनी के दीहऽ हे।
पच्छिम मुँह उगते जो चाम, तइयो न उलटि सोयबो हे।"
मुग्धा लज्जा के आधिक्य के कारण प्रथम रात्रि में पति की ओर मुख करके सोने को तत्पर नहीं होती।

के चित्र अस्त व्यस्त रूप में प्राप्त होते हैं। इसी प्रकार नायिका भेद में भी विभिन्न नायिका भेदों के दर्शन मगही लोकगीत में होते हैं। यथा—'खण्डिता'[1] प्रोषितभर्तृका[2], 'विरहोत्कंठिता' एवं कलहान्तरिता[3] आदि के सरस चित्र बाहुल्य के साथ वर्तमान हैं।

मगही में शृंगार रस के पश्चात् सर्वाधिक व्यापक एवं गंभीर परिपाक करुण रस का ही दृष्टिगोचर होता है। *मगही लोकगीतों में करुण-रस परिपाक के सुपरिचित प्रसंग हैं—*

(क) कन्या की विदाई

(ख) वन्ध्या की पीर

(ग) वैधव्य का शोकोद्गार

(घ) अंध विश्वासों के परिणाम स्वरूप
संभव हुए कारुणिक प्रसंग

(ङ) सामन्तशाही से प्राप्त उत्पीडन आदि।

इन सभी में कन्या की विदाई का प्रसंग बड़ा ही मार्मिक होता है। बेटे की तरह बेटी का भी जन्म होता है पालन पोषण होता है, पर एक दिन वह पराई हो जाती है। बिछुड़ते समय उसके परिजनों की जो दशा होती है, वह किसी भी सहृदय को रुला दे सकती है। अन्य प्रसंग भी करुण रस से आप्लावित करने वाले ही हैं। करुण के साथ 'करुणविप्रलंभ' का परिपाक भी मगही लोकगीतों में दृष्टिगोचर होता है। हास्य रस के प्रसंग विभिन्न सामाजिक संबंधों के परिवेश में अवकाश पाते हैं। ये सामाजिक संबंध हैं— पति पत्नी, देवर भाभी, भाभी-ननद, साला-बहनोई, सरहज नन्दोइ समधी समधिन, आदि में। 'वीर रस' का परिपाक मगही लोकगीतों में अपेक्षाकृत कम मिलता है। वस्तुत इसकी प्रधानता मगही लोकगाथाओं में मिलती है। 'शांत रस' का परिपाक मगही के देवविषयक एवं निर्गुण-सबधी लोकगीतों में मिलते हैं।

---

१ गंगा असननिया चललन दुलरइता दुलहा हे।
बास लेलन बदमियाँ तरे हे।
सूत गेलन मलिनिया कोरे हे।
पान के पनवठा ले ले धनि ठाढ भेलन हे।
लेहु परभु पान के बिरवा हे।
देहि के मलिनिया कोरे नइहरवा चललन हे।

२. अहिया से पिया मोरा गलऽ तूँ विदेसवा।
बलमुआ हो, तोरा बिनु अँखियो न नींद।
बलमुआ हो, रुची न मोरहो सिंगार॥

३. "भोर भेलइ हे पिया भिनसरवा भेलइ हे,
उठू न पलंगिया से कोइलिया बोलइ ना।"
"कोइलिया बोलइ गे धनी कोइलिया बोलइ ना।"
देहिं ना पगड़िया हम कलऊनवा जेंवइ ना॥"
"कलऊनवा जेंवइ हो पिया, कलऊनवा जेंवऽ ना,
बाबा के बोला के हम नइहरवा जेंवइ ना॥

मगही लोकसाहित्य में अलंकार-योजना

सौंदर्य-भावना एक शाश्वत एवं सार्वजनीन भावना है। परिस्थिति के परिणाम स्वरूप उसके स्वरूप दृष्टिकोण में अन्तर दृष्टिगोचर हो सकता है, पर तात्विक दृष्टि से लोकसाहित्य एवं शिष्ट-साहित्य की अभिव्यक्ति में झलकनेवाला सौंदर्य एक ही होता है। इस 'सौंदर्य' के परिणाम स्वरूप ही कोई काव्य ग्राह्य हो पाता है।[1] यह सौंदर्य ही अलंकार है।[2] अलंकार मूलक इस 'सौंदर्य' का अन्वेषण लोकसाहित्य में भी सहज सम्भव है। मगही लोकसाहित्य में यह 'सौंदर्य' स्पृहणीय मात्रा में वर्तमान है।

उदाहरणार्थ मगही लोककथाएं आदि देखी जा सकती हैं। लोककथाएं गद्य-प्रधान होती हैं और गद्य का प्रधान लक्षण वर्णनात्मक एवं विचारात्मक होना है, भावात्मक होना कम। पर लोककथाओं का मन हृदय पक्ष प्रधान लोककवियों की अभिव्यक्ति का माध्यम होने के कारण साथ साथ भावात्मक भी होता है। बीच बीच में आने वाले पद्यात्मक संवादों से भी यही सिद्ध होता है। मगही लोककथाओं में भावात्मकता प्रचुर मात्रा में है, जिसके परिणाम-स्वरूप उनका गद्य आलंकारिक हो गया है। पर अलंकारों के प्रयोग वैविध्य का वहाँ अभाव है, जो सचेष्टता के अभाव में स्वाभाविक है। जिन अलंकारों का प्रचुर प्रयोग हुआ है, वे हैं—अनुप्रास, वक्रोक्ति, उपमा, रूपक, एवं तुल्ययोगिता। यथा—

(क) सहल गुले देहवा कटर-मटर बोलऽ हइ,
पटर-पटर बोलऽ हइ।

(वृत्यनुप्रास)

(ख) जब तों मरमे करमऽ, तब हम बच के रहम की ?

(काकुवक्रोक्ति)

(ग) नोकरवा ऊसे है तो सूरज के जोत नियन कननरऽो।

(उपमा)

(घ) कथा में पंडित जी कहलथिन कि राम के नाम
लेवे वाला भौसागर से तर जाहे।

(रूपक)

(ङ) हम जाही एणो नऽ्री, एणो दुप आऽर एणो छुनी।

(तुल्ययोगिता)

मगही लोककाव्य में शास्त्रीय अलंकारों के प्रायोगिक रूप प्रचुर मात्रा में वर्तमान हैं। इनमें प्रमुख अलंकार हैं—उपमा, मालोपमा, रूपक, सांगरूपक, उत्प्रेक्षा, दीपक, प्रतिवस्तूपमा,

---

१. काव्यं ग्राह्यमलङ्कारात्—काव्यालं सू० वृ० १। १। १

२. सौन्दर्यमलंकार —काव्यालं सू० वृ० १। १। २

पर्यायोक्ति एवं लोकोक्ति आदि। मगही लोककाव्य में सर्वाधिक पाया जाने वाला अलंकार 'उपमा' ही है और विशेषकर मगही लोकगीतों में उसके बड़े ही मार्मिक उदाहरण मिलते हैं।[1] मालोपमा के सुन्दर प्रयोग लोकगीतों के शृंगारिक वर्णनों में मिलते हैं विशेषकर संभोग शृंगार के प्रसंगों में किसी तरुणी के नवयौवन के वर्णन में।[2] रूपक अलंकार का प्रयोग प्रायः उन्हीं प्रसंगों में मिलता है, जिन प्रसंगों में उपमा का।[3] पारिवारिक प्रसंगों में यत्र-तत्र 'सांगरूपक' के बड़े ही सशक्त प्रयोग मिलते हैं—

सास ससुर हथी गंगाजलिया
साला सरहज कमलफूल ह।

अर्थात् सास-ससुर गंगा की जल राशि के समान हैं और साला सरहज उसमें विकसित कमल-फूलों के समान

कितना सुन्दर और मारगर्भित चित्र है। एक सुभग सारप्रवाह का दृश्य नयनों के सम्मुख साकार हो उठता है। गंगा जल उपमान का प्रयोग साभिप्राय है अतः यहाँ 'परिकर' अलंकार भी है। उपर्युक्त दोनों अलंकारों का क्षीर-नीर न्याय सवलित परस्पर मिश्रित स्थिति के कारण यह 'संकर' अलंकार का उदाहरण भी माना जा सकता है।

'दीपक' अलंकार का प्रयोग सामाजिक वर्णनों के क्रम में प्राय: दीख पड़ता है। 'दीपक' का संबंध 'दीपन' से है और जहाँ इसका लक्षण घटित होता है वहाँ स्वभावतः उल्लास प्रसंग चित्रित होता है। यथा—

जलवा में चमकइ चिल्हवा मछलिया,
रैनिया चमकइ तरवार।
सभवा में चमकइ सामी के पगड़िया,
हुलसइ हइ जियरा हमार॥

यहाँ प्रस्तुत (स्वामी की पगड़ी) एवं अप्रस्तुतों (चिल्हवा मछली तथा विद्युत्) का संबंध एक ही धर्म 'चमकना' में स्थापित किया गया है, अतः 'दीपक' अलंकार है। 'तरवार' या 'तलवार'

---

१ बाबू के फटलइ करेजवा,
रे जैसे भादो कॉकर।
मइया के ढरे नयना-लोर,
रे जैसे भादो ओरी चुए॥

२ जैसे चिकना पीपर के पतवा,
ओयसने चिकना घीऊ।
ओएसने चिकना गोरी के जोबना,
पिया के ललचइ जीऊ॥

३, अँखिया दुलहिन के आमि के फँकवा।
नकवा सुगवा के नाक हे।

विद्युत् का अप्रस्तुत पद है और मात्र अप्रस्तुत के कथन से 'अतिशयोक्ति' अलंकार की भी योजना हो गई है। ये दोनों अलंकार उपर्युक्त छन्द में तिलतण्डुल न्याय से स्थित हैं, अतः संसृष्टि अलंकार भी है।

'देहलीदीपक'[1] 'अतिशयोक्ति'[2] 'उत्प्रेक्षा'[3] अप्रस्तुत प्रशंसा[4] (सारूप्यनिबंधना)[5] प्रतिवस्तूपमा[6] लोकोक्ति[7], पर्यायोक्ति[8] आदि के भी बड़े ही सरस प्रयोग मगही लोककाव्य में मिलते हैं। मगही के विशुद्ध लोककाव्य की कौन कहे, इसकी कहावतें[9], मुहावरे[10] और पहेलियाँ[11] तक आलंकारिक सौन्दर्य से समन्वित हैं।

---

१ बाबा के हद रे धानी फुलवरिया
  जुहिया फुलल कचनार।
घोड़वा चढ़ल आवह दुलरइता दुलहा,
  जुहिया लेवइ रचनार॥

२ बगिया में ऐलन दुलरइता मरवा हे।
  इलायची के दरवा भारा बाँधि देलन हे॥
  सोरहन सखिया सरवा मारी देलन हे॥

३ का हथी सोना है सुरुज के जोतिया,
  का हथी चान के जोत हे॥

४ मालिन के अँगना चमइलिया के गछिया
  रने वने पसरल डार हे।
  घर के बाहर भेलन दुलरइता दुलहा,
  तोड़ऽ हइ चमइलिया के डार हे॥

५. 'सारूप्यनिबन्धना' अप्रस्तुत प्रशंसा को ही 'अन्योक्ति' अलंकार भी कहते हैं।

६ पीपर के पतवा फुलगिया डोले,
  अब जिया डोले रे ननदो,
  तोहर भइया रे बिनु॥

७ टिकवा भेलइ अपना,
  से सुगवा भेलई सपना,
  पिया भेलइ डुमरी के फूल॥

८ चिड़ियाँ बियाए चिरमुनियाँ,
  गया मइया तो बियाये रेत
  उरहुर के फुलवा चढ़ँवइ देवी मइया,
  बाँझि के अँचरवा देव॥

९ (क) मइया के जीऊ गइया ऐसन
  पूता के जीऊ कसइया ऐसन। (उपमा)
(ख) जेने सुरुज उगे हे, तेन्हीं आदमी गोड़ लागे हे।
  (अप्रस्तुत प्रशंसा)

(ग) ऊ बड़ा गरल गरई हे। (अतिशयोक्ति) आदि

१० (क) औरी थौरी करना। (उत्यनुप्रास)
  (ख) मोती मरना। (अतिशयोक्ति) आदि

११. (क) जब मारइ तो जी उठे,
  बिन मरले मर जाय। (विरोधाभास)

(ख) करिया ही हम करिया ही,
  करिया वन में रहऽ ही।
  लवसा पानी पीअऽ ही। (मानवीकरण)

अन्य शास्त्रीय तत्त्व

अन्य शास्त्रीय तत्त्व रीति और गुण हैं। शास्त्रीय दृष्टि से 'रीतियाँ' तीन हैं—वैदर्भी, गौडी एवं पांचाली। वैदर्भी समासहीन, सरल एवं प्रवाहयुक्त होती है; गौडी ठीक उसके विपरीत अत्यन्त जटिल, लम्बे समासों वाली तथा पांचाली दोनों के मध्यस्थित। 'रीति' की दृष्टि से सम्पूर्ण मगही लोकसाहित्य वदर्भी रीति में ही माना जायेगा। कारण सामान्य है। लोकसाहित्य में क्या गद्य और क्या पद्य–दोनों से समास योजना काफी दूर होती है किन्तु दोनों सहज और सरल प्रवाहयुक्त होती है।

शास्त्रीय दृष्टि से गुण तीन हैं—माधुर्य, ओज और प्रसाद। माधुर्य गुण संयोग शृंगार, करुण रस, विप्रलम्भ शृंगार एवं शान्त रस में क्रमश अधिक होता है। इसमें कोमल वर्णों की प्रधानता होती है एवं समास का अभाव होता है। ओज गुण वीर रस, वीभत्स रस एवं रौद्र रस में क्रमश अधिक होता है। इसमें कठोर वर्णों की प्रधानता होती है, लम्बे समासों की योजना होती है एवं रचना औद्धत्यपूर्ण होती है। प्रसाद गुण सभी रचनाओं एवं रसों में वर्तमान हो सकता है। इस गुण के व्यंजक वे शब्द हैं, जो श्रवणान्तर ही अर्थ का बोध करा दें।

उपर्युक्त दृष्टि से विचार करने पर मगही लोकसाहित्य में तीनों गुणों का सद्भाव दीखता है। 'ओज गुण' की स्थिति गुणात्मक रूप से ही है, रूपात्मक नहीं। 'रूपात्मक स्थिति' से तात्पर्य उसके बाह्य लक्षणों से है। यानी जहाँ 'ओजगुण' वर्तमान भी है वहाँ कठोर वर्णों के प्रयोग, लम्बे समासों की योजना एवं औद्धत्यपूर्ण रचना का पूर्णत अभाव दृष्टिगोचर होता है। 'माधुर्य' एवं प्रसाद' मगही लोक काव्य में गुणात्मक रूप से तो मिलते ही हैं, उनके बाह्य लक्षण भी घटित होते पाये जाते हैं। नीचे इनके कतिपय उदाहरण प्रस्तुत किए जाते हैं—

(क) जैसे चिक्कना पीपर के पतवा
ओयसने चिक्कना घीऊ।
ओयसने चिक्कना गोरी के जोबना
पिया के ललचइ जीऊ। (माधुर्य)

(ख) ओही घड़ी बैलवा बेलइ अघोरी के सभे जवान हो राम।
सुनऽ हलिअइ कि गउरा म बड़ा-बड़ा बीर हइ पहलवान हो राम।
एतना जे बोलिया सुनऽ हइ लोरिकवा मनियार हो राम।
मरवा में बैठले मारऽ हइ गरजवा लोरिक हो राम।
सुनऽ हि न सुन अघोरिया के बडा बडा बीर जमान हो राम।
(ओज)

(ग) नदी किनारे गूलर के गछिया,
छैला तोड़े गोरी खाय,
छैला जे पूछे दिल के बतिया
गोरी के जिउआ लजाय॥
(प्रसाद)

मगही लोक-साहित्य में छन्द-योजना

लोकसाहित्य में छन्द तत्त्व का अन्वेषण सहसा विरोधाभास-सा प्रतीत होता है, क्योंकि लोक-कवि न तो छन्द शास्त्र का अध्ययन ही सम्पन्न किए होता है और न छन्द निर्वाह की उसे विशेष चिन्ता ही होती है। लोककाव्य तो हर्ष विषाद के क्षणों में उसके कण्ठ का फूटा स्वाभाविक उद्‌गार होता है।

पर छन्द का प्राण 'लय' है और 'लय' एवं 'तुक' मिल कर एक अर्थ में 'छन्द' की सृष्टि करते हैं। पर 'तुक' छन्द का अनिवार्य तत्त्व नहीं है। अतः छन्दों का अन्वेषण लोक साहित्य में भी संभव है। मनुष्य स्वभाव से ही रागात्मक वृत्ति वाला होता है और राग का ही मुखर रूप 'लय' है। चूँकि यह छन्द-स्पन्दन समग्र सृष्टि में व्याप्त है,[१] अतः अशिक्षित मानव की अनगढ़ उक्तियों में भी वह स्वाभाविक ढंग से अवतरित हो जाता है।

छन्द की परिभाषा देते हुए डॉ० पुत्तूलाल शुक्ल ने कहा है—'छन्द वह वैखरी ध्वनि है, जो प्रत्यक्षीकृत निरन्तर तरंग भंगिमा से आह्लाद के साथ भाव और अर्थ की अभिव्यंजना कर सके।'[२] इस कसौटी पर मगही लोकगीतों लोकनाट्य गीतों, लोकगाथाओं को कसने पर हम पाते हैं कि उनमें छन्द-तत्त्व वर्त्तमान हैं।

विशेषतः मगही लोकगीत आकार-प्रकार की दृष्टि से विभिन्न रूपों में मिलते हैं। यथा-सोहर, बिरहा, जंतसारी, ऋतुगीत, देवगीत झूमर, कजरी, गोदना, लचारी, लोरी, मनोरंजन गीत आदि। अपने अपने आकार-प्रकार के साथ इनकी छन्द-योजना का अपरिहार्य सम्बन्ध है।

नीचे उपर्युक्त में एक दो छन्दों का किंचित् विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत कर विवेच्य प्रसंग को समाप्त किया जाता है। 'सोहर' शब्द संस्कृत पद 'शोकहर' से व्युत्पन्न माना जाता है—शोकहर→सोअहर→सोहर। अतः इसका व्युत्पत्तिगत अर्थ हुआ—वे गीत, जो शोक हर लें। इसकी व्युत्पत्ति के मूल में 'शुभ' धातु है जिससे 'शोभन', 'शोभा' आदि तत्सम एवं 'सोहना', 'सुहावना' आदि तद्भव रूप निःसृत हुए हैं।

'सोहर' छन्द एक विशेष राग में गाये जाते हैं। 'सोहर' का साहित्यिक प्रयोग महाकवि तुलसीदास जी के 'रामललानहछू' में मिलता है। इसके प्रत्येक चरण में २२-२२ मात्राएँ होती हैं। पर लोकगीतों में मात्रा-प्रयोग के इस नियम के पालन का अभाव दीखता है, जो स्वाभाविक है, क्योंकि लोकगीत तो लोककवि के नैसर्गिक भावोच्छ्वास ही हैं।[३] 'भावोच्छ्वास' कभी तो दीर्घ होता है और कभी स्वल्प भी। इसी तरह इन 'सोहर' छन्दों में कभी तो मात्राएं २२ से

---

१. दिनकर—हिन्दी कविता और छन्द पारिजात (फरवरी १९४९)

२. आधुनिक हिन्दी काव्य में छन्द योजना, पृ० २१।

३. 'लोकगीत' जंगल के फूल की तरह वातावरण में उत्पन्न होते हैं और उसी वातावरण में इनका विकास भी होता है। वे छन्दविधान के बंधनों से परे होते हैं।
डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय लो० सा० की भूमिका,—पृ० २१३

बहुत अधिक होती हैं और कभी उसी के आसपास रह जाती है। दूसरे 'सोहर' के विभिन्न चरणों में दृष्टिगोचर होने वाली मात्रा सम्बन्धी इस कमी का गायन के समय ह्रस्व दीर्घ-उच्चारण-पद्धति¹ का आश्रय लेकर समान कर लिया जाता है। कारण उनमें लयात्मक एकता सभी चरणों में एकरस एवं अक्षुण्ण होती है। डॉ० विश्वनाथ प्रसाद ने इसीलिए 'सोहर' को 'तालवृत्त' माना है।² जिसमें लयबद्ध बलाघात पूर्ण इकाइयाँ ही महत्त्वपूर्ण होती हैं। उदाहरणार्थ—

पल/ग/ बइठल हथ/महा/देव/मांच या ग/उरा/दइ/हि
हमरा पुनिर या कैसा/र पुतर/कइसे/पा/यब/हे।

उपर्युक्त उदाहरण में 'सोहर' की दो पंक्तियों को ११ तालखण्डों में नियोजित किया गया है। मात्रा गणना की दृष्टि से ये तालखंड विभिन्न मात्राओं वाले हैं पर प्रत्येक ताल खंड के गायन में ली जाने वाली काल मात्रा समान है। रुचिभेद के अनुसार उपर्युक्त पंक्तियों को अन्यान्य तालखण्डों में भी नियोजित किया जा सकता है, पर प्रत्येक स्थिति में लयात्मक संगीत विद्यमान रहेगा।

'सोहर' नाम से जो मगही लोकगीत मिलते हैं, उनमें पर्याप्त छन्दोवैविध्य दीख पड़ता है। 'तालखण्डों' अथवा मात्राओं के नियोजन की दृष्टि से न केवल उनके चरण वैविध्यपूर्ण हैं, बल्कि उनके चरणों का कलात्मक आयोजन भी परस्पर स्वतन्त्र है।

'बिरहा' डॉ ग्रियर्सन के अनुसार वर्णिक छन्द है। इसके प्रथम एवं तृतीय चरणों में १६-१५ (६ + ४ + ४ + २) एवं द्वितीय तथा चतुर्थ चरणों में क्रमशः ११ (४ + ४ + ३) एवं १२(४ + ४ + ४) वर्ण होते हैं। पर डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय द्वारा इसके विभिन्न चरणों में वर्णों का संख्यात्मक विधान किंचित भिन्न है। उनके अनुसार इसके प्रथम एवं तृतीय चरणों में १६-१६ वर्ण होते हैं और द्वितीय तथा चतुर्थ चरणों में १०-१० वर्ण।³

'बिरहा' के विषय में डॉ० ग्रियर्सन का यह वक्तव्य ध्यातव्य है—"पढ़ते समय ये बिरहे शायद ही छन्द के नियमों के अनुसार मिलें, जब तक हम यह याद न रखें कि बहुत से दीर्घ स्वर पढ़ते समय लघु कर दिए जाते हैं। इनमें कभी-कभी कुछ ऐसे भी व्यर्थ के शब्द होते हैं, जो छन्द के अंगभूत नहीं होते।" नीचे एक-दो उदाहरण दिए जाते हैं—

---

१. "ह्रस्व दीर्घ उच्चारण पद्धति" से तात्पर्य लोकगीतों के गायन में सहज भाव से परिलक्षित होनेवाली वह पद्धति है, जिसके सहारे काल-मात्रा की पूर्ति के लिए ह्रस्व मात्रा का दीर्घ या दीर्घ मात्रा का ह्रस्व सा उच्चारण किया जाता है।

२. वस्तुतः 'सोहर' एक तालवृत्त है, जिसका माप-दण्ड पृथक्-पृथक् मात्राएँ और वर्ण नहीं, वरन् लयबद्ध बलाघात पूर्ण इकाइयाँ ही हो सकती हैं। इन्हीं इकाइयों की आवृत्ति से 'राग' की सृष्टि होती है। प्रत्येक आवर्तक बलाघात पर ताल पड़ता जाता है। ये ताल समान रागात्मक मात्राओं द्वारा नियन्त्रित रहते हैं, जिससे प्रत्येक इकाई की उच्चरित अवस्थिति समतोलक बनी रहती है।—डॉ० विश्वनाथ प्रसाद मगही संस्कारगीत, पृ० ५१-५२।

३. लोकसाहित्य की भूमिका, पृ० २१५।

(क) नन्हेंपन से भौं/जी लगलइ पिरितिया—१६ वर्ण

टूट के बो/लल तो न/हिं जाये—११ वर्ण

हमरा ता/हरा छुट/तइ पिरि/तिया कवी(भोजी)— १८ वर्ण

(कि) दुइ मे ए/क तो मार/जाये—१०वर्ण

(ख) पिया पिया रटि के पि/यर भेलइ देहिया—१८ वर्ण

लोगवा क/हइ कि पा/डु रोग—११ वर्ण

गाँमा के लोगवा मऽ/अरमियो न जानइ—१९ वर्ण

भेलइ न/गओनमा/मोर—१० वर्ण

इसी तरह अन्य छन्दों का भी विश्लेषण प्रस्तुत किया जा सकता है।

प्रथम अध्याय

मगही की लोक कथाएँ

प्रथम अध्याय

मगही की लोक-कथाएँ

नालंदा[1]

अभला

एगो राजा हला आ एगो डोम के बेटा हला। दुनो सिकार खेले लगलन। राजा के बेटा कहलका कि जे हारे से, अप्पन बहिन के दे। राजा के बेटा हार गेल। डोम के बेटा जीत गेल। डोम माँगे लगल, राजा के बेटा के बहिन। राजा के बेटा माय से कहलका—'गे माय हम जाही सिकार खेले। अभला बहिन दिया[2] खाये भेजा दीहे।'

राजा गेला। बहिनी खउया लेके गेला। डोम के बेटा पानी में[3] डुबकी मरले बैठल हलइ। ओकर हाँथ में कमल के फूल हलइ। फूल उप्पर मुँह हलइ, अपने छप्पल[4] हलइ। अभला माँगलक—'भइया, हमरा कमल के फूल दS।' भाई कहलथिन—'जरी सन[5] पानी है, अपने ले आवS।' बहिन पानी में हेलसखिन फूल लावे ला।

बहिनी कहलखिन—सुपती पनिया लगलो जी भइया,
तइयो न पैलूँ कमल के फूल।

भाई कहलन— आउ जो बहिनी, आउ जो।

अभला कहलक— ठेहुना पनिया लगलो जी भइया,
तइयो न पैलूँ कमल के फूल।

भाई— आउ जो बहिनी, आउ जो।

अभला— कम्मर पनिया लगलो जी भइया,
तइयो न पैलूँ कमल के फूल।

भाई— आउ जो बहिनी, आउ जो।

अभला— छाती पनिया लगलो जी भइया,
तइयो न पैलूँ कमल के फूल।

भाई— आउ जो बहिनी, आउ जो।

अभला— मुँह कौर पनिया लगलो जी भइया,
तइयो न पैलूँ कमल के फूल।

भाई— आउ जो बहिनी, आउ जो।

---

१ पटना जिला के अन्तर्गत। २ द्वारा। ३ में। ४ छिपा हुआ। ५ थोड़ा-सा।

अफ़ला— सिरा के सेनुरा धोवैलइ जी भइया,
तइयो न पैलूँ कमल के फूल।

भाई— आउ जो वहिनी आउ जो।

डोमा अफ़ला के लेके पनिये में वैठ रहलइ।

तब ओकर माय बाप खोज करे लगलइ। भाई गेलइ घर घुर[1] के, तो माय बाप खोज करथिन। अज्फा एगो सुग्गा पोसलक हल। ऊ सुगवा गेलइ उहके पोखरिया पर। ऊ कहे लगलइ—

अफ़ला गे, तोरा माय कानऽ हउ,
तोरा बाप कानऽ हउ,
तोरा पढ़ल सुगवा सेउ कानऽ हउ,
तोरा गुरु परोहित सब कानऽ हउ,
तोरा टोला पड़ोसिन सब कानऽ हउ।

अफ़ला बोलल—

सुगवा रे, गोड़ा बाँधल हउ,
हथा[2] छानल हउ,
भइया हारल हउ,
डोमा जीतल हउ।

सुगवा जाके कहलकई कि अज्फा हहो पोखरिया में।
मइया-बप्पा गेलइ सवारी पर। सुगवा फिनु बोललइ—
अफ़ला गे, तोरा मइया कानऽ हउ……।

अफ़ला कहलक—

गोड़ा बाधल हउ,
हथा छानल हउ,
भइया हारल हउ,
डोमा जीतल हउ,
छतिया पर पाथर परल।

अफ़ला के निकाले ला, जन-जन लगाके पनिया उपछावल गेलइ। सोना के मचिया पर बैठल हलइ अफ़ला। माय-बाप ओकरा लेके चल गेलइ।

राजगृह[3]

राजा के बेटी कुम्हार घर

एक ठो राजा हला। ऊ सात गो बिआह कैलका। सातो माउग के बालबच्चा नइँ होवऽ हलइन। राजा दुखित होके बाहर चल गेला। जाते-जाते पहुँचला एगो आम के बगइचा में।

---

१ लौट (कर)। २. हाथ। ३. पटना जिला के अन्तर्गत।

पेड़वा तर बैठ के तपे लगला। एगो बरहामन ऐलखिन। उ पुछलथिन—काहे एँतना तपस्या कैले हऽ। राजा कहलथिन—'हम सात गो मेहरारू कर चुकलूँ हँऽ। सातो के बालबचा नइँ होवऽ हे।' बरहामन कहलथिन—'हिएँ के ठेना लीजिए। पेड़वा में मारिए। सात गो आम गिरेगा। सातो औरत के खिला दीजिये।'

सात गो आम गिरलइ। त उ सातो अम्मों[1] सातो मौगी के देलकइ। त उ छग्गो[2] तो खैलकइ बकि छोटकी के देलकइ तो कहलकइ कि हम ठौर[3] करऽ ही। कोठिया-कनहवा धर दऽ। धर देलथी राजा। एगो सौतिनिया ओकर हिस्सा अम्मा चोरा के खा गेलइ, आ अँठिया ओकरे पर धर देलकइ। चौकरा देके, हाँथ-मुँह धो के छोटकी गेल खाय। देखे तो अँठिया हे। 'क खा गेल हमर अम्मों?' 'हम को जाने गेलियो कि के खैनको।'

बेचारी की करो? अँठिए चाट गेल। ओकर गरभ रह गेलइ। आउर केकरो न रहलइ।

दिनवाँ ओकर आवल जा हलइ। राजा जाय लगलथी अपना काम पर। त छोटकी कहलकइ कि तूँ तऽ चलल जा हऽ। ऐसन-ऐसन हिआँ के हाल हे। के काम देत? राजा कहलथी कि घंटी टंगवा दे हियो। बालक होय के घरी ऐगो, घंटी बजा दीहऽ। सुन के आ जैबो।

सौतिनियाँ झुट्ठो-मुट्ठो घंटिया बजा दइ। राजा आथी, घुर जाथी। जब दुखवा होय लगलइ, तब राजा ऐबे न करखिन। सौतिनियाँ के पूछे हे कि हमरा दुख होवै हे, कइसे बैठ के बिआई? सौतिनियाँ कह देलकइ कि कोठिया में मुरिया[4] समा दे, आ एन्ने देहिया रख। एन्ने बुतरुआ गिरतउ। बेचारी के लड़की भेलइ। सौतिनिया ले भागलइ, आउ हुआँ ईंटा-खपड़ा धर देलकइ। ओकर मुरी असली कोठिए में हे।

एक पेटी में माल-जाल देलकइ, एक पेटी में बुतरुआ के बन्द कलकइ, कुम्हरा के आँवा में फेंक अइलइ। तब रानी के मुरिया निकालकइ। आ कहलकइ—'देखे ने खपड़ा चिपड़ा भेलउ हे।'

कुम्हरा गेल आँवाँ तरे काम करे। बुतरुआ पेटिया में कनलइ। त कुम्हरा कहऽ हइ, कुम्हैनियाँ के—देखहिँ, उ काँची तो पेटिया में कानऽ हइ। कुम्हरा देखे हे—तो बड़ा सुन्दर लड़की! आ एक पेटी में माल-माल। कुम्हैनियाँ से कहकइ कि चल एकरा पोसम। मालो-जाल मिल गेलउ।

ओकरा पोसलक। लड़किया हो गेलइ सरेख[5] दस बारह बरिस के। राजा भेजका कुम्हैनियाँ हीं नफरवा के कि बासन[6] मगले आओ। गेनइ माँगे। कुम्हैनियाँ कहकइ—गे बेटी, राजा के आज फेन लेवेला ऐलइ बसना। काढ़ के दे देहीँ। राजा के बेटी काढ़ के देवे ऐलखिन। नफरवा बसना नइँ उठैलकइ। लड़किए देख के मिजाज होस[7] आ गेलइ। नफरवा राजा के कहलकइ कि—एक ठो कुम्हरा के कंचन कुँआरी लियन लड़की हइ। हम बसना नइँ लेलियो। खाली कह ऐलियो।

राजा के पाप आ गेलइन मन में कि लड़किया से सदिये कर लीं। राजा कहलखिन कि जो, ओकरा पकड़ के लाव तो! कुम्हरा गेल। राजा कहलथिन—तोरा हीं लड़की कहाँ से हउ, ऐसन सुथ्थर[8]! कहाँ से लौले है? कुम्हरा कहलकइ—सरकार, लड़की अपने घर में पैदा लेलक हे, कहाँ से लाम! राजा कहलन जरी हमरा ला के देखा दे। कुम्हरा कहलक—सरकार मार दऽ, चाहे

---

१ आम। २ छः। ३ नोपना। ४ सिर। ५ बड़ी। ६ बर्तन। ७ आश्चर्य चकित (हो गया)। ८ सुन्दर।

काट दऽ। हमरा घर चल के देख लऽ। हम नइँ लेवो हियाँ। राजा गेलथी देखे। राजा कहलखिन–ए कुम्हार, हम लड़किया से सादी करबउ।

राजा घर में जाके मरवा छप्पर कर लेलका। बरहामन बिध बेओहार करे लगला। लड़कियो के ले गेलइ कुम्हरा। जब चुटकी [१] उठवे लगऽ हथ, तो लड़किया बोलऽ हइ,—

विलसिन मिसिर तोहें पंडित जी
बाप बिआह न करिए जी।

बप्पा पूछऽ हइ–लड़किया की बोले हे ? फेन चुटकिया उठैलथिन। लड़किया ओहि बतवा बोलइ।

तब लड़किया कपड़ा लत्ता सब फेंक देलक। उ कहलक—तूँ बाप, हम बेटी। बिआह कैसे हमरा से ररऽ हऽ ? सब खिस्सा कह देलक कि छओ माय हमरा इ हाल कैलक हे। राजा कानऽ हथ। लड़की देखऽ हथ आ पछतावऽ हथ। फेन लड़किया के गोदी में बैठा लेलन।

राजा छओ माउग के काट के तरहरा भर [२] देलका। ओही मौगी, राजा आ बेटी राज-पाठ करे लगला।

वेगमपुर [३]

धरम के जय

एगो राजा हलन आ एगो सौदागर। ऊ चले लगलन सौदागरी करे लगि। उनका चार गो बेटा हलइन आ चार गो पुतोह। चारो से पुछलन–तूँ सब ला काका लैमोअँ ? बड़की कहलकइन–हमरा ला कुछ पढ़ही पुरहा सनस लेल्ह अइहऽ। मझली बोललइन—हमरा ला गलवा के जड़ऊआ हरवा लेल्हे अइहऽ। सझली कहलन—हमरा लागि लाह के लगनी अउर पितर के कगनो लेल्हे अइहऽ। छोटकी मगावे हे कान के कनतरकी।

त ऊ बानिज करे गेलन। तीनों ला सब कुछ ले भुलन, बाकि छोटकी ला न लेलन। जब नाओ पर चढ़लन, त इयाद पड़लइ। त फिनु घुर के गेलन। लच्छ रुपया में कनतरका खरीदलन। घर घुरलन तो सब के चीज दे देलन। छोटकी के देलन कनतरका।

अब तीनों गोतिनियाँ गोचर करे अपना—हाय, हमनी मुरुख हली जे कनतरका न मगैली। सबसे चतुर हे छोटकी। एता रुपेया के एत्ता बढ़ियाँ हीरा के गहना मगा लेलक। सझली बोलल—एकरा हमनी गगा नहाय ले चलम। अपने कनतरका भोरा जैतइ।

चारो मिल के गगा जी में खूबे छौंपा छौंपी खेललक। कनतरकी गगा जी में गिर गेल। घर आयल तो देखे, कनतरकी न हे। ऊ अन्न-पानी तेयाग के कोठरी में पड़ गेल।

एगो राजा के नौकर घोड़ा नहावे गेल गगा में। घोड़वा पानी में चकचम देख के आगु बढ़वे न करे। नौकरवा दखे हे, तो सूरुज के जोत नियर कनतरकी। उठा के कम्मर में खोंस लेलक।

---

१ सिन्दुर। २ काट कर गड्ढे में डाल (दिया)। ३ पटना सिटी (पटना जिला)।

फिनु राजा के दे देलक आ सब हाल कह देलक। राजा सोचलक—जेकर कनतरकी सूरूज के जोत ऐसन है, ऊ अपने कैसन होइन। कइसे मिलूँ एकरा से। राजा एगो कुटनी बुढ़िया के बोलौलक। एगो चगेरी में अनमोल चूड़ी भरवा देलक आ कहलक—तूँ घरे घर पेन्हाबैं जो। आ पता लगा के लाओ। बुढ़िया महल्ले-महल्ले पुकारे—बेटी पतोह! चूड़ी पहिनऽ, चूड़ी!

तीनों पुतोह पहेनलक, छोटकी ऐसे न करलक। बड़की बोलल—छोटकी के कनतरका भुला गेलउ है, ऊ न पेहेनतउ। तूँ मना के पेहनैमें, तो पेन्हाओ। बुढ़िया बूझ गेल। उ कहलक—बउआ, कनिआँ कहाँ सुतल हथुन? हम मना के पेहना देम। बुढ़िया छोटकी के मनावे हे—उठऽ कनियाँ! चूड़ी पेन्ह। हम कनतरका तोरा दिला देम, एगो राजा पैलकवऽ हे। उ खुशी खुशी चूड़ी पेहेन लेलक। बुढ़िया सब बात राजा के कहलक। राजा ओकरा बोलावे ला भेजलक। छोटकी बोले हे—हम भितरिया आदमी ही। कइसे जाम कनतरकी लावे। बुढ़िया से राजा सम्वाद भेजलक—हम अपना महल से उनका कोठरी तलक, तल्ले तल्ले सुरंग खोदाम आउर दुन्नों तरफ दीआ जलायम। छोटकी आवे ला राजी हो गेल।

सुरंग बन गेल। छोटकी हीरा मोती से सिंगार-पटार करके चलल मिले ला। पहुँचलक तो देखे हे राजा के हाँथ में अप्पन कनतरका। ऊ झपाक से ले लेलक। झौंका-झौंकी में ओकर मोती-मूँगा टूट के फैल गेलइ। राजा सोचलक—रानी के सिंगार टूट गेल, उ गोस्सा हो जैतन। डरे ऊ बटोरे लगल आ बटोरे में भुला गेल। छोटकी धीरा धीरी करते आउ दीया बुझाते अप्पन कोठरी में पहुँचल। राजा के मुँह ठिसुआ गेलक।

राजा पुलिस भेज के सौदागर के बोलौलक। आउ बुझउअल बुझौलक कि जे न बुझावऽ, तो हम भक्सी झोंका देमोअ। जे बूझ देवऽ, तो तूँ हमरा भक्सी झोंका दीहऽ। राजा बुझावे हे—

तल्ले तल्ले सुरूंग खोदैली
राहे राहे दीप जलैनी,
दरस चदन न पैली।

सौदागर कइसे बूझे। भक्सी झोंके के तइयारी हो गेल। सौदागर कहलक—अब तो राजा जी हमरा मरना हइए हे। एक दफे लड़कन फड़कन के देखे के हुकुम मिल जाए। हुकुम मिल गेल।

सौदागर घर आयल, तो अन्न जल न खाये। सब खिस्सा घर में कहलक। छोटकी पुतोहिया पुछलक—कौन बुझउअल है बाबू जी? सौदागर सुनैलक। छोटकी पुतोहिया जवाब सिखैलक—

तल्ले-तल्ले सुरूंग खोदैली,
राहे-राहे दीप जलैली,
मोती-चुनते अकिल गँवैली,
दरस-चदन न पैली।

सौदागर जाके राजा के बुझउअल बूझ देलकइ। राजा के आँख खुल गेलइ कि न हम मोती चुनती हल, न उ भागत हल। राजा कहलकइ—हम हार गेली। हमरा भक्सी झोंकवा दऽ।

त ऊ लड़की सोचे हे कि ई तो हमरो से बदमास हे। बाप रे। ई तो एतना गो बात पर चर्करिए के सुआ देलक आ सुप्पे[1] के टॉय-टॉय कयला लागि कुटी-कुटी कर देलक। ऐसन ■ कि हमरो काट देबे।

ओही दिन ऊ लड़की अपना दिल में सब सोंच के सुधर गेल। फिरू उनका भाइ बोलाबे गेलइन। त कहलन पहुन जी[2] जाय दऽ। ■ कहलन कि अच्छा लिया जा। जब जरूरत होइ, त हम लिआ आम। तब ऊ नइहर आयल। आ सब हीं घुम-घुम के बाय लगऊ। ऊ सब से बोले-बतियाये लगल। त ऊ गाँव के लोग कहे लगल कि कमुनियाँ के छउँरी बिहुनी[3] सुधर गेलइ सहुरार जाय से। बापरे कयसन बढ़ियाँ से बतिआवे हे। देखऽ नऽ, पहिले भुनसारी में जा हली, त सबसे लड़ जा हलइ। अब कैमन सुधर गेलई। इर ऐसने चीज हे। बिगड़लो आदमी बन जा हे।

खुसरूपुर नवादा[4]

जितिया के महातम[5]

एगो हलन चूल्हो अउर एगो हलन सियारो। दुनो हलन बहिन। चुल्हो करऽ हलन जितिया। चुल्हो के सात बेटा हलइन। अउ सियारो के एको गो ना। सियारो कहलन—दीदी, हमहू जीतिया बरत करम, तो हमरो लड़कन फड़कन होई। चूल्हो कहलन कि करऽ। चूल्हो भी सहलन सियारो भी सहलन। सियारो भोर में उर्दा-मुर्दा, अरी-मरी लाके, आ केमारी बन करके कटर मटर खा रहलन हे। तो चूल्हो कहलन—कौची कटर मटर खाहीं सियारो? सियारो बोललन—सहल पुने देहवा कटर-मटर बोलऽ हइ, पटर पटर बोलऽ हइ। देखऽ हथन चूल्हो केमारी खोल के, तो कटर-मटर मुर्दा खा रहलन हें। अब तो इ होइए गेल।

सियारो कहलन कि हमरा बहिन के सात बेटा हे आ हमरा एको न। हम सबके मार देम। तो सात गो लड्डू जहर के बना के लैलन, आउ सातो के दे देलन। जहर के लड्डू खा-खा के कहलन— सलाम मौसी, सलाम मौसी। सियारो सोचलन—जहर के लड्डू देली, तइयो न मरन। फेन सातो बेटा उनकर सुतल हलन। सातो बेटा के एक तरफे से मूरी काट देलन। आ सातो मूरी उठा के ले गेलन। तो कहलन— ले गे बहिन, सातो बउआ लागी, सात गो केदा देबे ऐली हे।

उधर से बिध आ बिधाता आ रहलन हल। बिध कहलन — जेकर एगो बेटा मरे हैं, तो कैसन दुखा है, आ जेकर सातो पड़ल है, ओकरा कैसन दुखात। उ बिधाता से कहलन कि सातो के उठा दऽ। बिधाता कहलन— चलऽ। यही कहे है कि औरत जात के नाक न रहे, तो गंदा चीज खाये। बिध कहलन— ना, जब तलक तूँ ना उठा के जैबऽ, तब ले हम न जाम। बिधाता कनगुरिया चीर के चनाइमरित दे देलन आउ राम-राम कहलन। तो सातो उठ के खड़ा हो गेलन।

---

१. सर की ही। २ दमाद के लिये प्रयुक्त। ३ एक गाली। ४ पटना जिला के अन्तर्गत। ५. पुत्र की कल्याण कामना के लिए किया जाने वाला एक व्रत।

फेनु सातो अपन माय के कहे गेलन कि माय बडी भूख लगल है। माय कहलन — मौसी सतफेदा दे गेलउ है, से सातो भाई लेलऽ। तो ऊ सा-उ के फिन कहलन— सलाम मौसी। तब सियारो कहलन— कि अब का करूँ ? जहर के लड्डू देली, तब न मरल। आ मूरी काट देली, तब न मरल। अब का करूँ।

तब सुन के दुनियाँ ससार के आदमी कहलन — हे भगमान, जैसन उनकर दिन फिरल, ओयसने दुनियाँ ससार के दिन फिरे।

सेवदह [1]

डरपोक बनिया

बनिया सब सुभाव के कमजोर होवा हइ[2]। जरी जरी सा बात में डेरा जा हइ। पुराना जमाना में ऐसने एगो बनिया रहऽ हलइ। तहिया न रेल हलइ न तार। ओकरा एगो दोसर सहर में जाय के हलइ। सहरवा के रसतवा जंगल में हो के जा हलइ। उ बेचारा डेराल[3] करऽ हलइ कि राह घाट में कोई चोर-डाकू मिल जात, त धनमो छिन लेत अउ जानो मार देत। बाकि लालच बुरा बलाय होवऽ हे। कोई रोजगार के काम से बेचारा जा रहल हल। रुक्कत हल कइसे! से गुने[4] बेचारा चललक[5]।

रस्तवा में जा रहल हल बाकि चोरवा के डर ओकर जी में घुसल हल। जरीक्को[6] सा पत्ता खड़खड़ा हलइ कि बेचारा बनिमा के जी सूख जा हलइ। ऐसने आदमी के कहल जा हेय कि—डरपोक जे होवऽ हे, से मउअत के पहिलऽ ही मर जाहे। सजोग से सोझे[7] से दु गो घोड़सवार देखाइ पड़लइ। बनिमा समझलक कि अब जान गेल। अब तो डाँकू मिलल। जब घोड़-सवरवन जरी नगीच अलइ, त बनिमा झुक के सलाम कैलकइ, आउ डेराल पुछलकइ—"हे सरकार, तूँ किध्धीर[8] जैबऽ ?" घोड़सवरवन ओहे जगह के नाम बतैलकइ, जहाँ बनिमा के जाए के हलइ। फेन उ पुछलकइ—तोंहनी सब काहेला जा रहलऽ हऽ। घोड़सवरवन कहलकइ— हमनी सब राजा के सिपाही ही। अब बनिमा के ढाढस होलइ। कहलकइ—हे हजूर, हमरो अपना साथे लेले चलऽ। रसता खतरनाक हे। चोर डकैत के बड़ी डर हे। हम्मर जाने सुकराल जा हे। घोड़सवरवन कहलकइ—"हमनहीं सबके साथ की डर हउ। चल।

---

१ ग्राम-सेवदह; सबडिवीजन-बाढ; थाना बख्तियारपुर; जिला—पटना। २ 'इ' की ध्वनि 'य' के निकट सुनाई पड़ती है। ३ भयभीत होता। ४ इस कारण से। ५ चला। ६ ज़रा भी। ७ सामने। ८. किस ओर।

एँम्ने ओम्ने घोड़सवरवन चलऽ हलइ, अउ बिचरा में सहुकरवा। थोड़े दूर पार करे के बाद सोमे से तीन गो असवार[1] ऐते देखाइ पड़लइ। बनिमा थरथरा के कहे लगलइ—अब डकुअन आ गेलइ। अब जान नऽ बचत। एगो घोड़सवरवा कहलकइ—'अरे एंतना काहे ला डेरा हँ। हमनहीं सब के पास हथियार हउ। एगो के खतम कैले बिना न छोड़बइ। दोसर सिपहिया कहलकइ—त एगो के मउअत हमरा हाँथ से समझ। सहुकरवा कहलकइ—तोहँनहीं सब तो दू गो के मार देबऽ, बाकि तेसरका हमरा मार देत।

गाँव—नेहुसा[2]

गोधन* के महातम

एगो भाँट हललइ आउ एगो भाँटिन। भँटवा के इयार हलइ जुलहवा। दुन्हुं गोहूं उपजावऽ हलइ। जोलहवा के पुतिया साफ होवइ आउ भँटवा के मैला। भँटिनियाँ अप्पन मेदवा[3] के पुतिया अप्पन साँप इयार के खिलावऽ हल। भँटवा आउ जुलहवा बतियाये कि—दुन्हुं आदमी के पुतिया दू रकम होवऽ हे, से की बात हकइ। भँटवा सब्भे बतिया भँटिनियाँ से कहलकइ। भँटिनियाँ कहलक अप्पन सँप्पा इयरवा से कि—हम्मर मरद सवका गेहुँआ खोजऽ हको। से तों ओकरा काटम्हो कि मर जाये? सँप्पा कहलकइ कि—हाँ।

भोर पहर भँटवा काम पर गेलइ। हुँओं जुनवा उतार के रख देलकइ। सँप्पा जुनवे में समा गेलइ। दुपहरिया के पेन्हे घड़ी जुनवा झड़लकइ, तो सँप्पा गिर गेलइ। ओकरा मार के ऊ कनेलिया के पेंड़वा में टाँग देलकइ। घुर के घर चल एइलइ। अप्पन मउगी से बोललइ कि—देखलऽ, आज हम बड़ी भाग से बच गेलियो हऽ। सब्भे खिस्सा कह देलक। मेहरूआ के हदँपट्ठी समा गेलइ। चललइ पानी के बहाने कनेलिया तर। देखलकइ मरल—टंगल। ऊ ओकरा घर लाके, सात खुरडी[4] करके ठौरे-ठौरे छिपा देलकइ। रात खनी मरदवा से बुझौलक बुझोअल। आउ कहलक—जे नइँ बूझे उ तरहरा गड़ाय। बुझौलकइ—

पी के पी मारे, कनैल गाछ टागे
सात गुड़िया, कुछ जूड़ा,
कुछ कोंची, कुछ पिड़खोरी,
कुछ पिंघोरा, कुछ पौआ,
कुछ दीया, जरे सारी राति॥

---

1 घोड़सवार। 2 पो० आ०—चेरो, सबडिवीजन—बाढ़, जिला—पटना। 3 मैदा। 4 गुड़िया, टुकड़ा। * भाई दूज का पर्व, जो कार्तिक शुक्ल द्वितीया को मनाया जाता है।

मरदवा बूझ नईं सकनइ। अप्पन भौगी से कहलकइ—आज गोधन के दिन हकउ। हम्मर दइया[1] टीका काढले होतउ। घुर के ऐबउ, तो, तों मार दीहें। बहिनी घर गेलइ, तो ऊ टीका काढलइ[2]। फिनु ऊ सब्भे खिस्सा कह देलकइ। बहिनी बोललकइ—जब तों मरमें करमऽ, तब हम बर्च के रहम की! तोरा साथे चलबउ। मारे के होतइ, तो दुन्हुं के मार देतइ।

चलते-चलते रात मे गेलइ। दुन्हु कुरखेत में डेरा डाल देलक। भयवा सूत गेलइ। बहिनी के फिकिर से नींद नईं अइलइ। कुरखेतवा मे सुप्पा, बढनियाँ, चौकी, बेलना, सिलौटी लोढा सब्भे अप्पन मलकिनियों के खिस्सा बतिया हलइ। एगो कहलकइ—हम्मर मलकिनियों बड़ सुघड़िन हकइ। काम-ऊम करके हमरा अप्पन मन्ना से रक्ख दे हकइ। भँटिनियाँ के सुप्पा-चलनियाँ कहऽहइ—हम्मर मलकिनियों बड़ सैतान हककइ। हमरा से काम ले के बीग दे हइ। ओकर चालो-चलन खराब हकइ। सॅप्पा से फँसल हलइ। अब धोखा से अप्पन मरदवा के मारे के उपाय कैलके हऽ। चलिनियाँ बोलऽहइ कि—हम्मर मलकिनमा वइया हीं गोधन टीका लेवे गेले हऽ। जब बहिनी हीं से अइतइ, तब मार करके तरहरवा में गड़ देतइ। सब्भे खिस्सा बहिनी सुन लेलकइ।

बहिनी पूछऽ हककइ भौजइया से कि—की बुझौता हकउ? हमरो से बुझा ले। बुझबउ तो नहीं एँ। मारना तो तोरा हइए हउ। दुन्हुं भयवा-बहिनी के संघे मार दीहें। भउजइया बुझौलकइ। नन्दिया ओकर केसिया पकड़ के एगो सुतड़ी निकाल देलकइ। फिनु सब्भे ठइयाँ से निकाल के जमा कर देलकइ। भँटिनियाँ हार गेलइ। ओकरा तरहरा खना के गाड़ देलकइ। फिनु ओही भाइ, ओही बहिन। दुन्हुं सुख से रहे लगलइ।

ग्राम-दौलतपुर[3]

करनी के फल

एगो कुइयाँ में एक ठो बाघ गिरल हलइ। एक ठो पंडित जी के पियास लगलइ। तब ऊ ओही कुइयाँ पर गेलथीन। कुइयाँ मे बाघ गिरल देख के घबड़ा गेलन। बघवा पंडित जी से कहलकइन कि—हमरा निकाल देवऽ, तो हम तोरा बहुत धन देम। ऊ ओंकरा निकाल देलन। जब बघवा ऊपर आयल, तब पंडित जी से कहलक कि—हमरा बड़ी भूख लगल हे। हम तीन-चार दिन से न खइली हे। से हम तोरा खा जाम। पंडित जी कहलन कि—देख भाइ, हम तोरा निकाललो हे, तूँ हमरे उल्टे खायल चाहऽ हें। चल इंसाफ करावे।

दुन्हों इंसाफ करावे चललन। चलते-चलते एक ठो सियार मिलल। ऊ कहलक—पंडित जी तूँ कहाँ जा रहलऽ हे। पंडित जी कहलन कि—हे भाइ, इनका हम कुइयाँ में से निकललो हे

[1] बहिन। २. गोधन के बाद भाई को टीका लगा कर मिठाई, बजरी, फल आदि खिलाने की क्रिया।

३. डाकखाना—मसौढी, जिला—पटना। ग्राम दौलतपुर मसौढी से चार मील पश्चिम है।

आउर इ हमरा खायल चाहऽ हऽ । तूँ इंसाफ कर दे । सियार कहलक कि हम कुछ न समझइत हीओ । कैसे बाघ कुइयाँ गिरल हलन आउर कइसे तूँ उनका निकल लऽ । इ चल के देखावऽ । तब न इंसाफ करबो ।

बघवा सुन के कुइयाँ में कूद गेल । पंडित जी फिनु निकाले लगलन । तब सियरवा कहलक कि—पंडित जी अबऽहियो तो भागऽ । तब पंडित जी जान बचाके भाग गेलन । बघवा के अप्पन करनी के फल मिलल ।

गया[1]

सेठ आउ कुँजड़ा

कहीं पर एगो सेठ हल । उनके पड़ोस में एगो कुँजड़ा हल । दुनों अप्पन-अप्पन रोजगार करऽ हलन । रोज दिन कुँजड़िनियाँ सेठाइन से बतियावे कि आज हमरा दू रुपिया के साग-सुरइ से चार रुपेया तरल । तोरा सेठ जी केतना कमलथुन[2] ? सेठाइन कहलन—उ तो पइसा-अधेला के नफा बतलावऽहथ ।

ऐसहीं रोज दिन साँझ के साँझ चले लगल । कुँजड़िन रोज दूना नफा बतावे, आउ सेठाइन अधेला पइसा । एक दिन सेठाइन, सेठ से कहलन—तूँ रोज दिन अधेला पइसा नफा बतावऽ हऽ । आउ कुँजड़िनियाँ दुगुना बतावे हे । ई पर सेठ जी कहलन कि तू का जाने गेलऽ । जे अधेला पइसा बचत, तो हजार रुपिया के पूँजी में केतना बच गेल । का उ तोरा से जादा कमा [illegible] । ठीके कहलक हे—

सौ के सवाइ भल, बाकि गजबा के दूना न भल ।

जहानाबाद[3]

लाला जी के धुरतइ

एगो लाला जी हलन । उ बड़ा गरीब हलन । उन कर पड़ोसे में एगो राजा हलन । एक दिन ललाइन जी कहलन—इ तरह से कत तलुक काम चलत । कभी भरपेट खाय पीयला भी न होय । इ पर लाला जी कहलन—"सुन हमरा अगर दू रुपैया के भी नौकरी मिल जाये, तो तोरा हम पाँच सौ के साड़ी बिहाने होके पेन्हायब । रानी अपन कोठा से लाला जी के बात सुनइत हलन । उ राजा से कहके बिहाने लाला जी के दू रुपैया के नौकरी दिला देलन । लाला जी के हुकुम मिलल कि तूँ रात के लहरेगन गिनिहऽ । देवान जी के चौरस्ता पर पियादा लेके बैठे के हुकुम मिलल्हन ।

---

१. गया जिला । २. कमाया । ३. जिला गया के अन्तर्गत ।

लाला जी चौरस्ता पर बैठ गेलन पियादा संगे। जउन मकान से तरेगन न जनाय, ओकर मालिक के पेयादा से बोलावथ। ओकरा ऐला पर कहथ—भाइ, तोरा मकान से तरेगन न जनाये। मकान तोड़ दS। इ पर मकान मालिक सब घबड़ाय। लाला जी के घुंसखोरी चले लगल। उ माले-माल भे गेलन। बिहाने मेन अपना औरत के पाँच सौ रुपैया के साड़ी पेन्हौलन। रानी इ बात राजा से कहलन। राजा लाला जी के काम बदल देलन। राजा कहलन—देवान जी, तूँ समुन्दर के हलका[१] गिनिहS।

लाला जी पियादा संग समुन्दर के किनार पर गेलन। उहाँ डेरा-डंडा पड़ गेल। अब कोई जहाज आवे, तो लाला जी पियादा भेजवा के रोकवावथ। सौदागर के बोला के कहथ-राजा के हुकुम से सुआर गिनाइत हे। जहाज के आवे से हलका खराब हो जायत। से तूँ जहाज रोक दS सौदागर घाटा के डर से घूँस देवे लगलन। लाला जी मालेमाल हो गेलन। लाला जी के झोपड़ी के जगह कोठा सोफा बन गेल। राजा जी के मालूम भेल, तो लाला जी के फिनु काम बदललन। उनका घोड़ा के लीद जाँचे के काम मिलल।

लाला जी रोज बिहने घोड़ा के लीद अस्तबल जाके जोखावत। जे दिन कोई घोड़ा जादे लीद दे, तो लाला कहथ—भाइ, तूँ घोड़ा के जादा दाना काहे दे हे। जउन घोड़ा कम लीद दे, ओकर बदे कहथ—भाई, घोड़ा के दाना कम काहे दे हे। इ तरह से लाला जी के घूसखोरी चले लगल। लाला जी आउ मालेमाल हो गेलन। राजा के खबर भेल। उ तंग भे गेलन। लाला जी से उ सच बात पुछलन। लाल जी सारा खिस्सा कह देलन।

कउआकोल[२]

बाघ के मउअत

एगो जंगल में एगो बाघ रहS हलै। बहैं पर से कुछ दूर हट के एगो गाँव हलै। ऊ बसतिया पर गोवार[३] बहुत रहS हलै। गोबरखन सब बकरी बहुत पालS हलै। बघवा ओकर बकरिया के बघवा के रोज मार-मार के ले भागS हलै। इकरा से गोवरखन सभी दुख में रहS हलै।

एकदिन सब मिल के बघवा के मारे लेल सोचलकै। सब अप्पन हाथ में एक-एक गो तलवार ले लेलकै। आउ जंगलवा के तरफ चले लगलै। जहाँ पर बघवा रहS हलै, हुआँ पर पहुंच गेलै। सब देखS है कि बघवा सुतल हे। बघवा के बिजुन केकरो जाय के साहस नै पड़लै। तब ओकरा सब ढेला से मारे लगलै। तइयो नै बघवा उठै। तब सब बूझ गेलै, कि बघवा के कोई मार देलकै हे। तब सब हुआँ पर पहुँच लै, तो देखै है कि बघवा पहिले मर गेलै।

---

१. जहर।

२ कउआकोल ग्राम, नवादा सब डिवीजन (जिला—गया) का एक थाना है। यह स्थान नवादा से ७ मील पूर्व है।

३ ग्वाला।

मिसिरविगहा[1]

धोखा के फल

एक टो नउआ हले। उ अपना घरे के रोजे[2] रोसकद्दी[3] करा के लावऽ हले, आ उ भाग जा हले। एक दिन जब लावे गेल त औरतिया कहलक कि हम खीर तीन साफ खैबो, तो जैबो, न तो न जैबो। नउआ कहलक—से चल भाइ, तीनों साफ खैइहें। मौगी के माय कहे—से अब न जाय देबो। महिना से हम्मर लड़की तोरा किहाँ[4] गेल हे। आज तक खीर न खैलक हे। नउआ बोलल—खीर ला रूसल हे। चले घरे, खूब खीर खात।

अप्पन घरे आयल। ओकर बाद में कोई कुम्हार किहाँ से दूगो, तीन गो हँड़िया आन लौलक। कोई जजमान किहाँ बेतारी के कल चलैत हल। हुआँ से तीन बसना रस ले लौलक। केकरो किहाँ से दू तीन सेर चाऊर[5] माँग के ले लौलक। कोई जजमान किहाँ से जरामन[6] माग के ले लौलक। औरत के जिम्मा लगा देलक कि खूब खीर बना के खो। तीन हँड़िया में तसमई बन गेल। वो ही गाँव में ओकर साव् के नेओता देवेला हल। साहू नेओता पा के आ गेल। नउनिआँ न[7] कहलक अप्पन मरदाना से कि सत्तू-फुटहा खिला देहूँ। उ चल जैतथीन। माउग-मरद राय कैलन कि लाओ दू चार थप्पड़ मारिअउ। मरद मारलके। से नउनियाँ नरहनी काँख तर चाँत के कोई जजमान के नहो[8] टूँगे ला चल गेल। अपना साव् से नउआ बतियाय लगल—देखऽ नऽ भाइ, रसोइ बनावे ला कहली, से नोंक-भोंक करे लगले। से दू-चार थप्पड़ मारली, तो कन्ने तो देखऽ नऽ रूस के चल गेल। जरा ओकरा खोज के आवऽ ही।

साव् जी उजीने[9] बैठल रह गेलन। ओकर झोल्ला में फुटहा-फन्ही हले। से निकाल के उ खाय लगल। ओकरा पियास लग गेल। से ऊ न कहलक कि—कोई घर पर नऽ हथन। अपने से जरा पानी ढार के पी लूँ। घिरसिढी पर घैला हल। पानी ढारे गेल। उ सोंचलक—ऐलूँ हें पानी ढारे। घर में देखऽ ही हुलक के कि का हे! देखे तो तीन हँड़िया खीर। साहू न तीनों हँड़िया के खीर तीन थरिया में उझल लेलन। लोटा में पानी ढार के लेलन। दू थरिया के खीर न साव् खा गेलन। तेसर थरिया के खाय लगलन तो साव्-सउआइन दुनों पहुँचलन। नउआ पूछे हे नउनियाँ से कि दरोजवा में का साव् जी बैठल हथुन? नउवा आउ नउनियाँ दुनों दरोजा में आयल। ओकर बाद अगनमा में देखलक। नउवा कहे हे नउनियाँ से कि तोर मारलिअउ हे मे बड़ा अफसोस लग रहल हे। मौगी कहलक—मारलऽ हे से जरिको हम फानलियो हे तो ■? साव् जी घर में से बोलऽ हथन—से ऐं साव् जी, ई तो कहऽ, हम कहिनों अइलियो हे?

नउआ कोठी तर से डंटा निकाल के नउनिआँ के खूब हँगावे लगल कि आज इज्जत-फ्वीस्टा[10] सब चल गेल।

---

१. गया जिला के अन्तर्गत। २. नित्य। ३ विदाई। ४ के यहाँ। ५. चावल। ६. जलावन। ७ 'न' का प्रयोग निरर्थक है। कथन पर जोर देने केलिये इसका व्यवहार होता है। ८. नाखून। ९. वहीं पर। १० इज्जत प्रतिष्ठा।

वड़हिया[1]

इपोरसंख

कोय अदमी एगो देओता[2] के तपस्या करके, एगो अइसन संख पेंइलकइ कि ओंकरा से जो माँगऽ हलइ, उ मिलऽ हलइ। केकरो एकर पता चल गेलइ। उ ओकर लेवे के फेराक में चौबीसो घंटा लगल रहऽ हलइ। मौका पाके एक दिन उ संखा चोरा लेलकइ। संखावाला के जब मालूम होलइ, तब उ फेर संख देओता विजुन[3] पहुँचलइ, अउ उनका से अप्पन दुःखवा कहलकइ। देओता कहलखिन कि हम फेर तोरा एगो दोसर संख देवउ। बकि इ इपोरसंख हउ। मागम्ही सौ, त कहतउ ले दू सौ। बकि देतउ कुच्छो नइँ।

त उ अदमीओं कहलकइ कि हम अइसन संख के लेके की करम? एकरा पर संख देओता कहलखिन—कि तों एकरा अपना संखा चोर विजुन ले जाके जते मन हो तउ ओते माँगिहें, इ ओकर दोगना देवे के कहतउ। त उ अदमीओं तोर इ संखा ले लेलउ, अउ ओकर जगहवा पर तोर पहिलका संखवा रख देतउ। तों उ संखा ले के तुरते अपना घरा चल अइहे। आउ आगे एँकरा नीमन से रखिहें। उ चोरवा के आगू ओयरहीं[4] करलकइ। आउ चोरवो एकर नजरिया बचा के इपोरसंखा ले लेलकइ, अउ ओकर जगहवा पहिलका संखवा धर देलकइ। संखा वाला तो अइसने चाहने करऽ हल, उ अपन संखा ले के अपन घर चल गेलइ।

दोसर दिन जखनी चोरवा इपोर संखा से कहलकइ कि दे दू सौ, त उ कहलकइ कि ले चार सौ। कहे के तो उ कह देलकइ बकि ओंकरा पास हलइ कि से देवे हल। फिर चोरवा कहलकइ कि दे दू सौ, त इपोरसंखा कहलकइ—"अहं इपोर शंखोस्मि, वदामि च ददामि न"। एकर माने कि हम इपोर संख ही। कहऽ ही बहुत, बकि दऽ ही कुच्छो नइँ। अही से कहऽ हइ कि जे सब बड़-बड़ के बात करऽ हइ, उ कुच्छो करऽ हइ नइँ। ऐसने के लोगवा इपोरसख कहऽ हथिन।

जमुइ[5]

टुअर-टापर

'माय-चाची ढेर देखलूँ हँ, मुदा एकरा जैसन नैं। धिग् एकर जीवन काठ पत्थल के चाची। जाने, कौन भगवान एकरा कैसे गढल के हल? कौन नछत्तर में इ जन्मी जनमल हल।'

---

१ ग्राम—वदहिया, सबडिवीजन—जमुई, जिला—मुंगेर। २ देवता। ३ पास। ४ वैसे ही।
५. मुंगेर जिला के अन्तर्गत।

अँगनमे में मचिया पर बैठ के, केस खुल्ले, माथा उघारे, भोंटा उधियाल, कसिया चक्का (*कासीचक*) वाली उत्तर मुँह दूधा पिलावऽ हले। आउ लछमिनियाँ खडे-खडे जाने रखने से बोल रहले हल। हम ढेउडिया में ठमक गेलियै, जरी सुनियै तो की बोलऽ है।

नेरिया लुक्-लुक्, आधा खड़ा पर दिन। हक मोइठा ले के आग लावै ले, जैसे कसिया चकावाली घर दुकलियो कि लछमिनियाँ—(जे ऊ पछियारी टोलवा में गोद टुट्टा हो नै, जेकरा सब मुखिया जी, मुखिया जी कहऽ हैं—ओकरे सभिली बहिनी हइ—) दक्खिन मुँह कह रहले हल। कसियाचका वाली कहलकै—'की हले हे ?'

लछमिनियाँ बोल्ल लै—हल्ले चाचो ? ई छौंड़ी सिंघनमों वाली हो नै, ओहे ऊ तीन गौ छौंकरिन के साथे बैठ के बाबू बेसोसिंघ के दुआरी पर अन्दर मी[1] रहले हल। एने से ऊ गोरसा मे तम-तम इन इनेरे पहुँन के, जुआन गो छोकड़िया के ऍडे-मुक्के कँचकमों देल कै। आ कहलकै—ऍ तों ही एगो अजनास के सीये परै वाली जनम ले ले हें ? ले हमर कुरता। कानते-कानते अधमरू हो गेल। एकरा बुट्टी-कसीदा सुमते हइ। जायँ नै, हुआँ बनारसी मिलतौं। लेइयो तो नै जा हो। मुँह चमका के, ओकरा धकियेले ले ल चल गेले। छोकड़िया हुड़ जो बोले। एकदम काठ। कहलकै—काहे ले मारऽहऽ, चलऽ हियो। सब छौंकड़ियन ठकुआ के रह गेले। आउ टुक-टुक ओकर मुँह देखे लग लै। देखो तो, नै इ अहर कैलक, नै पहर। अभी तुरन्त जरल मरल सब के खिला-पिला के, बरतन-बासन धो माँज के रख के, तब इ दू कौर खैलक। अउर खाके बैठमे कैलके हे, अउर अभी दसो टोप सरिया के नै देल होत, तैसे इ मिछनाही मैयो पहुँच के एकरा मारे लग लै। हम्मर मन तो पित-पित्ता के रह गेलो। सच कहऽ हियो ह, भगमान मानथुन चाची, हम्मर जो ओयसन चाची रहले तो हम बदली नै छोवतियै हल।

कसियचका वाली कहलकै—ऍ हे, तो छौंड़िया के ससुराल में सास ससुर अउर भरद कैसन है ले नै जाये। ई गन्जन काहे लै करावऽ है। अप्पन घर में जे साग-सत्तू, धूध-हव जुरतै हल, से एाके दिवस गमैते हल। भला ई किसिम गन्जन बिहत। लछमिनियाँ कहलकै—लेइयो गेलै चाची। तोहरा न मालूम हो ? कसियाचकावाली बोलले—नै हम जानवो नै करियै। कहिया ले गलै ? लछमिनियाँ—ररुने। कहिनै मारत के तहिनै सफा के अपने ससुर नेयार ले के आ गेलथिन। सास पानी पावै वाली हथिन। घर में कोई संभारैवाली नै है। तो देखलथिन कि पुतोहिये के ले आवूँ।

कासया०—ऍ हे, तो अब बुढ़िया के बालबच्चा की होत ? हत, कोई भुट्ठे बात बना देलको।

लछ०—नै चाची, ओकरा अप्पन सास नै है। ई सतेली है। अप्पन के तो एक एकरे पहुनमों होवे कैलथिन कि बेचारी मरिये गेलइ। पहुँनमा के फूफू पोसलथिन हैं।

कसिया०—ऍ, ऐसन ? तब तो बेचारी के नै नैहरा सुख नै ससुरा सुख।

लछमि०—नै चाची, सतेलो रहला से की होने। सुनऽ हियै, बड़ी सुघड, बडी सपून जनी है। साज भर भी, जैसन चाहो, अपनो से बद के मेजलके हल।

---

१ सिलाइ (कर रही थी)।

कसिया०—भगवान करथिन ऐसनै होवै। अप्पन माय तो दूधो नै पिता सकलै। बेचारी के ऐसन साँप काटलकै कि मरलै विहान गेलै। पहुनो ओयसनै मिल गेलै। आ भगवान, दुअर-टापर पर तोंहीँ खेयाल करि हो महाराज !

लछुमि०—हाँ चाची, भगवान के खेयाल अच्छे है। दइवो करलकै कि सोनमन्तिया भगा में हेल के साथ मगलक हे। बड़ी मानऽ हथिन। ओतना अप्पन सास की मानतै। ऊ अखनै माय से भी बढ़ कै मान रहले हऽ।

हमरा पहुँचतै लछुमिनियाँ चुप हो गेलौ। हम भी आग ले के ठहरे नै लगलियौ।

मैथिली मिश्रित मगही

दक्षिण मुंगेर[1] और बाढ़[2]

के नमूने

बैरी से धोखा[3]

एँक दिन हुडाड़ सब भेँड़ी सब सऽ कहाय भेजलकै कि, आवें, हम्में आरो तों आपुस में मेल करि लौं, किथि लाय आपुस में लड़ाँ, आरो एँक दोसरा के लहू के पिआसल रहों। पाजी कुत्ता सब समुच्चे लड़ाय कें जड़ छिकै। एँहिना सदइ भूँकि भूँकि कऽ हमरा भड़काबै छै आरो हमरा तोरा सऽ लड़ाबैछऽ। इनका हमरा पास भेजि दऽ, फनू की झगड़ा छिकै। हमरा तोरा में सदइ पियार आरो मिलाप रहितऽ, तऽ तोहर बाल ढेंवा नै होतौन्ह। गँवार भेँड़ी है नटखट हुडाड़ कें बात मानि लेलकै, आरो कुत्ता कऽ हुडाड़ कें पास भेजि देलकै। पहिले तऽ हुडाड़ कुत्ता कऽ खा गेलै, फनू भेँड़ी के पाछे गोड़ हाथ तोड़ कऽ पड़लै, थोंड़िये दिन में सब भेँड़ी कऽ खा गेलै। सच्चे छिकै, कि बैरी सदइ धोखा दे छै। ऊ बड़ी गँवार छिकै, जे बैरी कऽ सखा समझे।

सीख[3]

एँक चिड़ैया कोय किसान कें बगीचा में जाय कऽ कच्चा पकल फल सब कें सब काटि आय करै छेँलै। किसान सदइ ओकर खोज में रहै छेँलै। एँक दिन अँगूर कें टट्टी पर जाल लगाय कऽ ओंकरा पकड़ कऽ मारऽ चाहऽलै। चिड़ैया किसान से कहलकै कि, जे तों हमरा छोड़ि दे, तेऽ हम्में ई भलाई कें बदला में तोरा कैक त बात बताय देबौ, कि जेंकरा में तोरा बड़ फैदा

---

१ मुंगेर जिला। २ पटना जिला।

३ Seven grammars of the dialects and subdialects of the Bihari languages, Part VI—South Maithil Magadhi dialect of south Munger and the Barh subdivision of Patna

हो तौ। किसान कहलकै कि तों पहले बताय दे, तऽ हम्में तोरा छोड़ि देबौ। चिड़ैया ओकरा तीन बात कहलकै। ऍक तऽ ई कि, बैरी जे अपना बसऽ में आबऽ, तऽ छोड़ऽ के नै चाही। दोसर, जे बात मन में नै समाबऽ ओकरा नै मानऽ के चाही। तेसर, गेल चीज कें खातिर सोचऽ कै नै चाही। आरो चौठा ऍक बात आरो छऽ, कि जब तों हमरा छोड़ि देबऽ, तब कहबौ। किसान ई बात सुनि कऽ जैसन कहलऽ छेलै, तैसने करकै, आरो ऊ चिड़ैया कऽ छोड़ि देलकै। तऽ चिड़ैया भीत पर बैठि कऽ कहलकै कि, हमरा पेट में मुर्गी कें अण्डा सऽ ओ बड़के ठो ऍक मोती छेलऽ। जे तों हमरा नै छोड़तिअ आरो मारि डालतिअ, तऽ ऊ मोती तोरा हाथ लगतिऔ। किसान पछताबऽ लगलै, ऊ कहलकै, गमार, तों हम्मर तीनों बात ऍखनिये भूलि गेले। कहिनऽ कि हम्में तोर बैरी छेलिऔ, जेखनी पकड़ि पैल छेलॅ, तऽ छोड़लऽ कहिने। आरो मुर्गी कें अंडा कें बराबर तऽ हम्में अपने नै छी। कहिया मन में आय सकै छै, कि मुर्गी कें अंडा सऽ बड़ि कऽ मोती हमरा पेट में होय। मगर तों ई बात पर भरोसा करले, आरो अब जे हम्में तोरा हाथ सें निकलि गेलियौ, तऽ पछताय कऽ की होतौ। ऍकरा सऽ ई फल निकल छै, कि पहले सऽ सब काम कऽ सोचि बिचारि कऽ करऽ के चाही। आरो जे कोय काम बिगड़ि जाय, तऽ फनू पछताबऽ के नै चाही।

पलामू[1]

झुट्ठा डर

हे भाई हम का कहियो। झूठ डर कें मारे अइसन डरइत हली कि जेकर हाल हम न कह सकियो। का भेल कि कल्ह जब हम सब पहार कें किनारे-किनारे बजार से अवइत हली तब पहाड़ कें उपरे बाघ बहुत जोर से गरजइल हल। हमनी सब ढेर आदमी हली, कुछ डर न लगल। लेकिन आज ओही रास्ता से हम अपन मामा कें गाँव में ठीक दूपहर कें बेर अकेले गेली हल, जब पहार के जरी तर नदी आरा पहुँचली हेअ, तब एकदम बड़ा खड़खड़ाहट बन में नदी तरफ सुन ली हेअ जेह से मेंजाज हमर सुध में न रहल। हम बुझली कि बाघ आएॅल और हमरा के धएॅलक। हमर हाथ में तरवार हल लेकिन अवसर न मिलल कि मेआन से बाहर निकाली। करेजा धरथराएँ लगल, डर कें मारे हम कठुआ गेली। बाघ के बिना देखले बघचेंढी लग गेल। लेकिन थोरे देर के बाद जब हम ओनें देखली, तो का देखली कि एक बूढ़ा सौताल नदी कें पानी जे पहार कें उपर से गिरइत हल मथरी मारे के बन्दइत हलै। उहाँ से जे पथर

1. लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया, ग्रियर्सन—जिल्द ५, खंड २, पृष्ठ १२७.

नीचे बिगड़त हले, सेई बीसो हाथ नीचे खड़बड़ाइते अवइत हलइ। अब ई टें खली, तब जीव में साहस भेल। हम अपने से ई बात खेंयाल करकें अपन साहस पर हसइत ही।

लतेहार[1]

धोखा के बदला

एक ठो ऊँट हलक, एक ठो सियार हलइ। दुनो इयार लगैलन। उँटवा कहइत है कि ए इयार नदी किनारे बड़ी खरबूजा[2] फरल हे। ते चलथऽ खाये? दुनो खरबूजा खाये गेलन। अब उँटवा कहइत हे कि ए इयार तूँ पहरा दऽ, हम खाइत हियो। तो उँटवा के पेट भरबो न कैलक हल कि सियरवा कहइत है कि ए इयार, हमरा भुकभुकी[3] लगल हे, से हम भुकबो। सियरवा हलक से भुकके लगलक। खरबूजा के अगोरिया मारे ला दौड़लक। दौड़ले-दौड़ते उँटवा पकड़ा गेलक। उँटवा बड़ी मार खैलक।

ओकरा बाद फिर आगे चललक। रस्ता में एगो नदी मिललइ। नदिया में बाढ़ आगल हलक, आ नदी के उ पार बड़ी मकई फरल हलक। सियरवा कहइत हे कि ए इयार चलथऽ खाय? ऊँटवा कहलक—चलथ। सियरवा कहलक—तूँ तऽ, बड़ा हऽ, हम छोटा ही, से डूब जायब। उँटवा कहलकई—हमर पिठवा पर बैठ जा। सियरवा उँटवा के पीठ पर चढ़के चलल। ठीक बीचे-बीच नदी जब पहुँचलक, तो उँटवा कहइत हे कि ए इयार, हमरा तो लोटलोटी[4] लगल हो, से हम लोटबो। ऊँट बैठ गेलई। सियार राम डूब गेलन आ ऊँट राम निकल गेलन। खिस्सा गेलन वन में, सोचऽ अपन मन में।

लतेहार[1]

राजा भोलन

एक राजा हलक। सेकरा बाल-बच्चा नई होवऽ हलक। इसतर[5] एगो जोगिया धुई लगा देलक हल। राजा हुँओं गेलक आ कहलक—काहे ला रजवाअ के रस्ता टेकले[6] ही। जहाँ जाय ला है, तहाँ चल जाईं। जोगी कहलन—भई बचा, हमसे जो मागना है, माँगो। राजा लड़का मागलक। जोगी कहलन कि हम तोरा लड़का देवउ। बकी १२ बरस के लड़का होलउ, त तूँ मर जैबे।

जब ओकर लड़का १२ बरिस के भेलई, तो बप्पाई मर गेलइ। तब उ चललक बपइ के काम किरिया करके सैंड़ घुरे[7]। रस्ता में एगो पनेरी[8] हलक से कहलक कि बाबू अपने कें बपइ रहथ, त एक खिल्ली पान खा लेवऽ हलन। रजवा के लड़कवा पान नई खैलक त पनेरिन छींटे

---

१ जिला पलामू। २ खरबूजा। ३ भूकने की इच्छा। ४ लोटने की इच्छा। ५ वृक्ष के नीचे। ६ रोके हुए। ७ गस्ती देने। ८ पान वाला।

देलक पान । उ ठट्ठा करे चाहइत रहे, बकि करे ना पारलक । फिनु ओकर माय भीरी[1] ऐलक पनेरिन आ कहलक—राउर बेटा पान नईं खैलन, बकि छींट देलन । पनेरिन घर घुर के ऐलक । मइया, पुछलइ बेटवा से—एँ बाबू, तू पनमाँ खैलऽ से खैलऽ, गरीब दुखिया के काहे छींट देलऽ । बेटवा—कहलक—

हाँ गे अम्मा, सुन गे बचन हमार ।
अपन बिरवा अपने छिंटैलक, हमरा काहे बदलाम ।

तब फिर लड़का गेलक । हलुआइन बोललक—ए बाबू, राउर बाबू आवऽ हलन त एको गो लड्डू खा हलन जरूर । अपने नईं खाईं । लड़का लड्डू नईं खैलक ■ उ लड्डुइया छींट देलक । ओकरो नीयत खराब रहे । हलुआइन फिर ऐलक ओकर माय भिरी—देखऽ रानी, खा हथ से खा हथ आ सब छींट देवऽ हथ । हम गरीब दुखिया ही । माय पुछलक तो लड़का कहलक—

हाँ गे अम्मा, सुन गे बचन हमार ।
अप्पन लड्डुआ अपने छिंटैलक, हमरा काहे बदलाम ।

फिर लड़कवा कहलक—अब हमर बाप मर गेल, हमरा बसती में नईं रहे दीहन सब । फिनु माय से कहलक—माय गे, एक लोटा पानी दे पिये ला । माय लोटा लेकर के चललक बालटी में से ढारे । लड़का कहलक—माय गे, हम अब पियउ त कुईंयाँ के पानी । माय गेलक पानी ला । लड़का बोलइत हे—सन के बाबू जी हमर कुइयाँ खन देले होइहन, त अपने से अपने चौंटा[2] लग जाये । आ माय हमर पानी भरते रह जाये । जब हम कुछ दूर चल जाईं, तब कुइयाँ भर जाए । आ माय पानी ले के घर आवे ।

माय आके कहलक—कने गेलऽ बेटा, पानी लान[3] देले हियौ । सगरे खोजइत है बेटा के, त कँहऊँ नईं । तब लोटा म पानी लेके चलल बाहर । गोरखिया चरावइत रहे गाय । माय पूछलक—

हाँ रे गोरखिया, तू भूलन बाइत देखलें ?
मोरा बारहे बरिस के भूलन बेटा, पियासल जाये ।
कनमाँ में रहइ कुंडल सोना, हथवा में रहइ बेड़ा ।
आउरो हइ सोबरन के सटिया, अजब पियासल जाये ।

फिर रास्ता में बकरी के गोरखिया, भैंस के गोरखिया मिलल, आ सबसे ओही बतवा पुछलक । हरिन चरइत रहे बिजुवन में । हरिन कहइत है कि गते-गते[4] ओ, न तो लड़का जानतउ, तो नईं पकड़े पारबे ।

तब हुआँ से गते-गते माय गेल, तो हाथ लड़का के पकड़लक । लड़का कहलक—हे कदम के गाछ, फाट जा, आ हमर माय के जिम्मा कर लऽ । जे दिन खोजब, से दिन हमर माय के दे दीहऽ । तब हुँआँ से लड़का चललक ।

एक ठो बुढ़िया भीरी गेलक । बुढ़िया कहलक—जा बेटा तूँ हिआँ का करे ऐले । हिआँ कतने अवदिन[5] के मुरी कनन हो गेलक । लड़का कहलक—ए मौसी, एक मुठा हमरा खिचड़ी

---

१ पास । २. पानी सटकना । ३ ला । ४. धीरे धीरे । ५. आदमी ।

गला दऽ। बुढिया गलावे लगल। लड़का बुढिया से कहलक—ए मौसी, लावऽ फुलवा गाँथ दिऔ। बुढिया कहलक—नईं बेटा, बगव जैतउ। रानी साहब के बात है, हम्मर मूड़ी तो कटैवे करी, तोरो मुड़ी कटा जैतउ। लड़का न मानलक आ उम्दा—गाथलक। ओही फूल बुढ़िया ले गेलक।

रानी के बहुत धमकैला पर बुढ़िया उम्दा माला के हाल बता देलक। रानी लड़का के बोलवैलक। लड़का गेल। रानी लड़का से एगो बुझौनियाँ बुझौलक आ कहलस कि याद नईं बुझवऽ तो कतल हो जैवऽ

बुझोनिया हलक—१ "सफेद में कौन चीज हे" ?

लड़का कहलक—"तीन चीज हे—एक दूध, दूसरे बकुला आ तीसरे रानी के दाँत, जेकरा देख के हम पागल ही।"

२ 'काला मे कौन ची हे?"

"एक कोयल, दोसर कोयला, तेसर रानी के बार[१] जे हमरा करेजा पर लोटइत हे।"

३—"हरा रंग में कौन ची हे?"

"एक रंग, दोसर सुआ, तेसर रानी के चोलीवन्द; जे हमरा लोभावइत हे।"

४. "लाल रंग में कौन ची हे?"

"एक रंग हे, दोसर खून हे, तेसर रानी के मुँह के पान हे, जे हमर करेजा मसकावइत हे।"

५. "लोटन मे कौन ची हे।

"एक लोटन नाग हे, दोसर लोटन कबुत्तर हे आ तेसरा लोटन में हम ही, जे लोटइत ही रौरे परेम मे।

लड़का जीत गेलइ। रानी हार गेलइ। दुनो के वियाह हो गेलइ। राजा, रानी आ धन दौलत ले के चलल जहाँ ह रन-हल। दुओ कदम बीर अपन माय के साथ लेलक। माये आ रानी के पालकी पर बैठैलक आ अपने गेल घोड़ा पर। जैसन ओकर दिन फिरल, ओइसन सबके फिरे।

धनवाद

मेल के महिमा

एगो सियार रहऽ हलइ। सियरवा के तीन गो बच्चा हलइ। तो दुनो जनी-मरद लड़ाइ कर ले। मरदा कहइ कि दूगो दे, आ तों एगो ले। तो कहे कि चल पंचाहित करवइ। जैसन पाँच लोग कहतइ, तहाँ पंचाहित करवइ। तो जैते-जैते एगो जंगल राहे चल गेल। तो हुँदे से एगो बाघ चलल आवऽ हइ। तो बघवा के कहऽ हइ जनिया, कि ए भैसुर एगो पंचाहित करि दे। हमरा तीन गो हे लड़का। दू गो मरदा माँगऽ हइ। बघवा कहलकइ कि अच्छा हम पंचाहित करि देवो। चल हमरा घर लइ के[२]। लेइ गेलइ ओकरा, घर। बघवा कहऽ हइ कि निकालो गीदर-गुला[३]।

---

१. बाल। २ लेकर। ३ बच्चों को (गुला—बहुवचन बोधक प्रत्यय)

सियरवा ढुक गेलइ आ सियरनियो ढुक गेलइ। ढुक के कहऽ ■■ सियरनियाँ कि ए भैंसुर हमरा घरे झगड़ मिट गेलइ। तब की करतइ बघवा। उ चलि गेलइ। सियरवा के कहऽ हइ सियरनियाँ जे पाँचो अदमी क हमर जान बाँच गेलइ आर झगड़ा नईं करबो। मेल मेल से रहि गेलियौ।

हजारीबाग—कुमारटोली

चोरवा के खिस्सा

एगो गो पांडे हलक से पूजा करो हलथ। से पांडे जी पूजा खातिल[1] चार गो पैड़ा रखलन हल चढ़ावे ले। चार गो चोर आ हलन चोरी करे। से अधार में हलन। औ पांडे हल इगोरवा में। पाड़े गेलन एने औने। बस ओने सो राम लखुमन चाइर भाई अयलन। बस चारो पेड़वा खा गेलन। पांडे जी पेड़वा खोजे लगलन। बस खोजते-खोजते चोरवन पर नजर पड़लन। चोरवन से पांडे पुछलन कि तोहीन कौन काम करोहा। तो स सब कहला कि हमनी चोरी करोही। पांडे कलहन कि चल हमहुँ सगे चलबो।

पांड़ साथे जाय लगलन। चलते चलते जाके एगो आदमी क इहाँ गेलन चोरी करे। चोरवन कहला कि हम सिंध फोरो ही, तू माटी टारा। मटिया टारते टारते जब पांडे के हथवा दुखा गेलन तो झगी महतो क हियाँ गेलन कोड़ी[2] मांगे। कहलथी कि अहो महतो हमरा क कोड़िया दे। बड़वा क हियाँ चोरी करोही। से सिंधवा के मटिया टारवय। झगी महतो उनरा पकर लेलकन और कहलक कि अरे फलना घर चोरी करो हथा, से गोहार काट। गोहार काटे से पांडे पकरा गेला औ उनका पकर के थाना ले गेलथ। थानेदरवा पुछलक कि तोरा काहे पकलैया[3]। पांडे कहलन कि हम चोरी करे गेल हली आर सिंध के माटी टारे खातिल कोड़ी मागली बस पकड़ा गेली। थानेदरवा पांडे जी के कुछ कथा-कौड़ी[4] दे के कहला कि आब जाऊँ आब चोरी मत करिहा।

बिहान होला पर चोरवन पांडे जी के चललथ खोजले मारे खातिल। काहि के उ सब के चोरी भी नय करे देलन आर पकड़ा देलन। जब चोरवन भेंटलन तब थानेदरवा जे रुपिया-पैसा देलन हल से सब चोरवन के पांडे दे देलन। तब पाड़े फिनो कहलन कि अब हम गोहार नय काटबो, से साथे ले ले चलऽ। एकर बाद सोमरा घर ढुकला सब चोरी करे। सबो चोर चोरी करो लगला। आब पाँड़े खोजे लगलन कि बावसा का करब, थरिया का करब, लोटा का करब। एतने में उनका पांड़े जी के मिल गेलन घीव-खोजते-खोजते, आब धूप मिल गेलन। मनमा में कहलथी कि पुजवा कर लेब तब चोरी करब काहे कि घीवा मिल गेल धुपवो मिल गेल। सोमरा घर सब सुतल हयल अधरतिया। बकि पाँड़े जी का कयलन कि पुजवा करकय संखवा बजयवला। बस ओकरा घर के सब लोगन संखवा सुन के उठ गेलन। पाँड़ जी गेलन पकरा और फिनो गेलन थाना पर। थानदरवा बेचारा फिनो पाँड जी के रुपिया पैसा दे के बिदा कर देलक।[1]

---

१ के लिये। २ कुदाल। ३ पकड़ लाया। ४ पैसा।

चोरवन कहलन कि अब बिना पाँड़े के मारले छोड़बन नय, काहे कि जहाँ जाही तहाँ पकरा दे हथा। पाँड़े जी के चोरवन ले गेलथी नला दने[1] उनका मारे ले। चोरवन पाँड़े के कहलथी तू हमनी के बेर-बेर पकड़ावा हय। हमनी तोरा जान से मार देवो। पाँड़े तब कहली कि हमरा ठिना रुपिया ढेर से हो, से तोहीन ले ना, हमरा काहे जान से मारवा। चल अबरी साथे जयबो, पूजा नय करबो। चलल-चलल गेलन बुधना के घर। उहाँ चोर सब लगलन चोरी करे और पाँड़े जी लगलन खोजे। खोजते ढूँढ़ते उनका कुछ नय मिलल। मिलो गेल दूध। तब कहलन कि दूधो मिलल, तनी अरवा चौर मिले। खोजला पर चौरवो मिल गेला बस आग जोर देलन और खीर बनवे लगलन। ओही घरवा में सुतल हलन एक गो बूढ़ी और बूढ़ा। दुनहो मुँय फार के घोंघर पीटो[2] हलन। पाँड़े जी आत और घूर फिर के देखत। उ कहला कि इ सब कौरा लग के मरल जा हथ। से अच्छा रहा हमरा भोग लगावे दा। उ ततले[3] तत्तले खीर एक कलछुल दुनहों के फरला मुँह में दे देलन। उ सब हहुवा के उठलन औ लगलन पाँड़े के मारे-डेढ़ावे। जब मारे-फारे लगलन तब बोही फोरी से भगवान निकललन। निकल के बस पाँड़े जी के हथवा छोड़ा के जीते-जीव बैकुंठ ले गेलथो।

हजारीवाग-राजाडेरा

सतनारायन भगवान के पूजा

राघो एक गाँव के रहनिहार हे। ओकरा तीन गो लड़की हे। से एक दिन राघो अपन तीनों बेटियन से बोलले कि—देखा गे बेटिन सब, कल्ह पुरनमासी के दिन है, से तोहिन के खातिर हम पूजा गछलूँ हल, से तोहिन बड़ी भारी बेमार हलें। सतनारायन भगवान के सहाय से तोहनी तीनों अच्छा भेले हैं। तोहनी तीनों बहिन, कल्ह अन-जल कुछ मत करिहों। उपास रहे परतो, जब तक पुजवा नै हो तौ, तब तक पानी-पहवा, कुछ मत पिहौ आउर घरवा के सब काम-धाम अन्धरे से करिहौं। तब बड़की बेटिया बप्पा से कहलकै कि बप्पा हो, घरवा में का का करबै। राघो तीनों के काम करैले बतैलकै। बड़की बेटिया के नाम हलैइ कुन्ती, दुसरकी के नाम हलैइ पुन्ती, तिसरकी के नाम हलैइ गुन्ती। राघो कुन्ती के कहलकै कि तू, अहरा जाके थारी बासन चिकन से धो-माँज के ले ऑनिहो। और पुन्ती सब घर-दुवार अँगना लिप-बाढ़ के चिकन सुथर करिहो। और गुन्ती घर के कपड़ा-लता, धर-बिछौना, सब सोडा में, सिफा के अहरवा से फिच-काँच के ले आनिहो। राघो एतना बेटियन से कह के अपन औरतिया हियें गेल, फिर अपन जनियों से कहलकै कि हम सब काम करे ले तीनों छौड़ियन के कह देलियौ। अब तूँ जा के घरे-घर कह दे कि हमरा हींय कल्ह सन्झिया के सतनरायन भगवान के पूजा हो तौ, से तोहिन वाले बचे चल ऐइहा, और उन्ही से नौवा और पड़ैवा के भी कहले ऐहौं। हम पूजा के परेजाम ल वे ले बजरिया जा हिऔ।

तब कुन्ती थरिया बासन ले के अहरा गेल। अहरा पर ओर लड़की सबसे भेंट होलै, तब उ सब लड़कियन पूछो लगलै के आज तू अहरा पर बरतन माजे ले ऐलेहें, काहे। तब कुन्ती कहलकै

---

१. तरफ। २. खर्राटा भरते (थे)। ३ गर्म-गर्म। ४ रामगढ़ स्टेट के पास।

कि हमरा घर कल्ह साँझ के पूजा हो तौं, से हे गुने हमर बपा कहलक कि सब बरतन बासन अहरा पर से धो-माँज के ले आँन। से हे गुन हम अहरवा पर ऐलिओ। तोहनि भी, हमरा घर पूजा देखे ले ऐहा। कुन्ती मान घो के, घर चल आल। फिन गुन्ती कपड़ा लत्ता सोआ में सिफा के अहरा से धो फीच के घर चल आन। पुन्ती घर दुआर अँगना निप पोत के फुरसत मे गेल। राधो के चनियाँ भी घरे-घर कह क और नौवा पाडे के कहके घर आल। राधो भी बजार से सब पूजा के सर-समान ले क घर आइन। बिहान होते साँझ क पूजा शुरु हो गेन। गाँव के सब औरत मरद जमा भेना और बड़ी खुशी स पूजा-पाठ सुनलका और देखलका। हँसी खुशी से परसादी लेलका और भगवान के गोड़ लगते अपन अपन घर गेला।

राँची

एक मुरुख सिपाही केर कहनी

एक टो मुरुख सिपाही रहे। उ एक थाना केर सिपाही रहे। उके काम करते करते बीस बरीस होइ जाय रहे अउर उकर उमेर पैंतालीस बरीस कर होइ जाय रहे। उ जउ भी बीस बरीस तक काम कइर रहे, उके एगो-नलन नइ बढ़ल रहे। सुरु मे उकर बहाली चालीस रुपैया में होइ रहे और बीस बरीस के बाद भी उके चालीसे रुपैया मिलत रहे। उ बराबर अपन से ऊपर केर अफसर के कहत रहे कि हमर तलब बढ़ाय देउ, लेकिन तलब बढ़ाबे कर अधिकार उकर हाथ में नइ रहे, एहे ले उ सिपाही के बराबर कह देत रहे कि पुलिस साहेब जब आबी, तब तोर तलब बढ़ाबे कर सवाल हम उकर ठीन उठाबब।

एक महीनाँ बाद पुलिस साहेब थाना देखे खातीर आलक। उ दिन जमादार, उ सिपाही के सिखाय पढ़ाय के तैयार करलक। उ सिपाही के बतालक, 'देख भाई, साहेब तोके तीन ठो सवाल पूछी। आगे पूछी, 'तुम्हारी उम्र कितनी है?' तो तोंय बोलबे कि "४५ बरीस।" फिन दूसर सवाल उ पूछी कि 'तुम कितने दिन से काम कर रहे हो?' तो तोंय बोलबे कि "२० बरीस से।" फिन उ पूछी कि "तुम तलब बढ़वाना चाहते हो या भत्ता या दुनों?" तो तोंय बोलबे कि "दुनो।" इ नीयर कई मरतबे सिखाय पढ़ाय के जमादार साहेब, सिपाही के पुलिस साहेब ठीन लेगलक और साहेब से कहलक कि हजुर ए सिपाही केर एक बिनती हैं। इ बहुत दिन से काम करत हे लेकिन एखो दफे इकर तलब नइ बढ़लक हे। साहेब सिपाही के देइख के पूछे लगलक, 'तुम कितने दिन से काम करते हो?' पहिले हे से उ सिपाही पहिला सवाल केर जवाब रट्ट के राखले रहे कि ४५ बरीस। से ले उ तुरत बोइल उठलक कि "४५ वर्ष"। जवाब सुइन के साहेब उके ऊपरे नीचे देखे लागलक। फिन साहेब दूसर सवाल पूछलक 'तुम्हारी उम्र कितनी है?' सिपाही तुरत बोइल उठलक '२० बरीस से'। सवाल केर जवाब सुइन के साहेब बड़ा खीसालक आउर कहे—लागलक, "तुम भारी मूर्ख मालूम होते हो"। सिपाही समझक कि साहेब तीसर सवाल पूछत हे से ले उ तुरन्त बइह उठलक—कि 'दोनों'। सिपाही केर बात सुइन के साहेब समझक कि हम

इके मुरुख कहत ही और इ सिपाही हमकोटों मुरुख कहत हे। अब तो साहेब ब्रिगेड के आइग होइ गेलक अउर सिपाही केर तलब का बढ़ावी उके ५० रुपैया जइरबाना करलक और जमादार के भी ५० रुपैया जइरबाना ठोकलक। जब साहेब चइल गेलक तो जमादार सिपाही पर बिगड़े लागलक अउर कहे लागलक कि 'तुम महामूर्ख हो'। लेकिन सिपाही केर समझ में एखनोंहों तक नइ आय रहे कि उ साहेब केर सवाल केर जबाब ठीक से नइ दे रहे। पाछे जब एक दूसर सिपाही उके ठीक से समझालक तब उकर समझ में आलक कि उकर जबाब गलत रहे।

सिंहभूम [1]

अकारथ काम

एँगो सूम अपन सब धन-सम्पत् बेच कें सोना किनलइ, अवर ओंकरा ऊ गला कें ईंटा नियर बना के धरती में गाड़ कें रोज ओकर पहरा दे हलइ। ओकर कोई पड़ोसिया ई भेद अटकर से बूझें पइलइ, अवर ओकर घर सुन्ना पा कें गइल सोंनवा निकाल लेंलइ। केंतना रोज पीछे ऊ सूम ऊ ठाँव कोंड़लइ। अवर खाली देख कें रोएँ लगलइ। ओकर रोआई सुन-कें ओकर दोस्त मोहीम अइलथीन। अवर ओंकरा बुझा कें कहें लगलथीन, ए भाई, तू काहें खातिर सोचऽ हें। जब लग सोंनवा तोर पास हलउ, तब लग तू ओकर पहरादार छोड़ अवर कुछ तो नइ हले। एइ सें तू ऊ गड़हा-ठो में एँगो पथर रख ले अवर ओंकरे भुलाएँल सोंनवा बुझ लेहीं।

जे अदमी अपन धन के केंकरों दुख बिपद में नइ लगावऽ हइ, अवर न अपन जीव में खा हइ, ओकर धन अकारथ हइ, अवर ऊ धन अइसने उड़ जा हइ।



१. लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया-ग्रियर्सन, जिल्द ५, खंड २, पृष्ठ १४३।

पूर्वी मगही+

खुड्माली ठार

मानभूमि जिला

फौजदारी कचहरी में अपराधी का बयान

हजुर, मॅय दरान बॅसी रॅ मिठाइ बेचें हेंलश्रा । चार टा बाबु श्राइ कें मिठाइ षेर रॅतेंक दर शुधाश्रॅलाक[1] । मॅय कॅहलश्रों, 'सब जिनिसेंक टा एॅक दर नेखेंख[2] । श्रहे बाबु गुलाय[3] शुनयॅ नॅहलाक, 'सभें दरिब मिलाय पे, एॅक सेर हामरा के देंहाक ।' मॅय एॅक सेर मिठाइ देलॅइ श्रार श्राठ श्राना दाम खुश्रलश्रों । तखन बाबु गुलाँइ फेहलाय जे, 'हामरा रर सॅगे पयसा नेखत । श्रहे लदि[4] ला[5] श्रादेंक । उँहा जाइ फॅ वाभ वेंबॅइ । मॅय भदरान मानुश देखि वें मॅय फन्ह[6] निहि फेंहलश्रों । ढेर खेंन हेनि पयसा निहि दॅलान देखि कें मॅय लदि तक गेर रहुं, जाइ फें देखलश्रों ला टा[7] से ठिन नेखेइ । ढेर धुर ले यानाँइ यानाँइ पेंखलश्रों ला-टा ढेर धुर गेल श्राहेंक । नेंखने मॅय पेंछाँइ पेंछाँइ दौडे लागलश्रों । घडि टेंक[8] बादे[9] मॅय ला-टा फे श्राँटाश्रों लाइन[10] । श्रॅटाइ कें[11] लाहेंक[12] माँझिटा-के बाबुगुलाक काथा शुधाश्रोलाइन । ला माँझि[13] कन्ह निहि फेंहलाक । मॅय तखन पानी नाभि कें[14] ला टा रॅ टेंकलश्रों[15] । नखन बाबु गुलॉय लाहेंक भितर-ले बाहराय-कें मकेइ चर[16] केंरि कॅ गुल केंरलाक, श्रार दुइ-टा बाबु, इॅ फॉडि पार ले एॅक टा सिपाहि डाका काराइ कें श्रानलाक । मॅय सिपाहि के सब काथा कुलि फें कहि देंलॅइ । सिपाहि मर काथा नेंहि शुनि फें गिरिपटान केंरि रें[17] श्रान ले श्राहे । दा हाइ, धरमा श्रतार, मॅय निहि चरि केडले श्राहें । मय बढि गरिब लक[18] । मर केउ नेंखत बाबा, सत बिचार करि दे, मर कन्ह दश[19] नेखे ।

पूर्वी मगही+

सद्री कोल

बामरा

लालच के फल

एॅक गाउँ मे बुढा-बुढी दुइ कन[20] रहलेंन । बहुँत श्रादमी पर देस जाइ के कमाइ खन[21] लानत हेंन[22] । से खने बुढिया के हिंसा[23] लागलाक । तोब-ले बुढीं कहलाक, 'ए

---

१ पूछा । २ नहीं है । ३ बाबू लोग । ४ नदी । ५ नाव । ६ कुछ । ७ नाव । ८ २० मिनट । ९ बाद । १० पहुँचा । ११ पहुँचके । १२ नाव के पास । १३ नाविक । १४ कूदके । १५ रोका । १६ चोर । १७ कैद करके । १८ मनुष्य । १९ दोष । २० आदमी । २१ कमा कर । २२ लाते हैं । २३ द्वेष ।

+ लिं० स०, ग्रि०—जि० ५, खंड २, पृ० १५५ ।

+ लिं० स०, ग्रि०—जि० ५, ख० २, पृ० १६० ।

बुढा, सबे तो कमाइ खन लानत हे ॅन, हामरे-मन[1] जाब[2]।' कान्वे[3] सब दिन सरग केर ॅएॅक हाती[5] धान खात रहे, जे बुढा ओ ॅगारलाक[6]। हाती आलाक। हाती खात रहे। धान खाइ खन[7] जात-रहे सरगपुर[8]। तोब ले बुढा पूॅछ मे धरलाक[9]। हाती बुढा के ले गे ॅलाक सरगपुर। उहाँ बुढा बहुँत कमाइ[10] खालाक[11]। तोब ले ओ हाती केर पूॅछ के धरलाक, आउ निचे आलाक, आउर बुढिया के कहलाक, 'बुढिया, देख एॅतरा कमाइ खन लाइन हन।' तोब-ले बुढिया देखलाक और ओ कर जिउ बहुँत आनन्द होलाक। बुढिया कहलाक, 'मो, हों[12] जावों।' तोब-ले दोनो झन गेलाइन, हातिर पूॅछ धइर खन सरग पुर। ओ माने[13] उॅहाँ खोब कमाइलाइन[14] खालाइन[15]। तोब-ले बुढा बिचार करलाक। बुढिया के कहलाक। तोब फेर बुढा हाति केर पूॅछ के धर केर गाऊॅ केर आदमी के लेगेक[16] लागिन[17] आलाक। तोब गाऊॅ केर आदमी के पूॅछलाक, 'काहे, इॅहों भूके[18] मरत हान[19]। चला, सरगपुर मे बहुँत धान चाउल मिलत हे। उॅहा केर टाम्बि[20] बहुँत बड़ा हाइ।' तोब-ले सब गाऊॅ केर आदमी बिचार करलाइन, आउर बुढा के 'चला, भाइ, जाब,' कहलाइन[21]। तोब गे[22] आउर ओ हाति के ओ ॅगारलाइन,[23] आउर ओ हाति केर पूॅछ मे बुढा धरलाक। फेर बुढा केर पिठ मे आउर एक झन पोटारलाक[24]। फेर आउर एक झन पोटारलाक। आइसन[25] गाऊॅ-केर सब आदमी पो ॅटरा पोटरी[26] हलाइन[27]। तोब-ले हाति उपर-के चललाक। सरगपुर-केर आधा बाट हाइ-खन[28], एक झन पाछे-केर[29] आदमी पुछलाक, 'हइ-हो, बुढा, एतरा[30] घूर[31] ले-जात-ही[32], जे उॅहा केतना बड़ टाम्बि आहे?' तोब-ले बुढा एक हात मे हाति-केर पूॅछ के धइर खन एक हात मे टाम्बि के बतालाक, 'एतना बड़ टाम्बि आहे।' तब ले फेर एक आदमी पुछलाक, 'नाइ सुनली हो, केतना बड़ टाम्बि आहे-जे?' तब-ले बुढा दोनो हात-के छोड़-कर, 'एतना बड़ टाम्बि आहे,' बोललाक। तोब ले हाती सरगपुर चलइ गेलक, आदमी सब पइठ कर[33] मर गेलाइन[34]।

पूर्वी मगही+

हजारीबाग की तथाकथित बंगाली — हजारीबाग जिला

बाप के ममता

एक लोकेर[35] दु बेटा छिला। तकर मे छोट बेटा आपन बाप से कहलई, 'ए बाब, निज के ॅजे बखरा हाम पाएॅब, से हामरा देई दे।' ताकर मे से निज भाग कर दे ॅले ॅन। थोरना[36] दिन मे छोट बेटा समस्त एक सग कर के ॅदूर देश चलि गेला, आर से जगन मे

---

१ हमलोग। २ जायेंगे। ३ जहाँ। ४ का। ५ हाथी। ६ निगरानी की। ७ खाकर। ८ स्वर्ग। ९ पकड़ा। १० कमा के। ११ खाया। १२ भी। १३ वे लोग। १४ कमाया। १५ खाया। १६ लाने। १७ के लिये। १८ भूखे। १९ मरते हो। २० सेर। २१ कहा। २२ तब। २३ देखा। २४ देह पकड कर लटक गया। २५ इस प्रकार। २६ एक दूसरे की देह पकड़ कर चेन की तरह (लटक गये)। २७ हो गये। २८ होकर। २९ पीछे के। ३० इतना। ३१ दूर। ३२ ले जा रहे हो (हमलोगों को)। ३३ गिर कर। ३४ मर गये। ३५ आदमी के। ३६ थोड़े।

+ लिं० स०, भि०-जि०५, खं०२, पृ० १६३

नाहक खरच कर-के सब चिज आपन खोये देलक से सब चिज खरच करने बाद से मुलुक-मे भारी अकाल भेल, ओ से दुख मे पड़े लागला। तब से जाय के से देशेर[१] एक लोकेर आश्रय लेलक। से लोक तकरा आपन खेते[२] सुअर चरने पठाइ देलेन। पारे[३] सुअर जे भुसहा खाइतल्‌ थी सेइ देइ से पेट भरते साएस[४] करलेक, किन्तु केँउ तकरा दिलेक ना। पारे होस[५] भेले, से बाज कालक[६], 'हामार बाप के कते माहिनावाला नकर खा हत आ बाँचा ओ हत[७] आर हाम इहाँ भुखे मर हि। हाम उठ के आपन बाप इहाँ जाएर। तकरा कहबन, "बाप, हाम भगवान इहाँ पाप कारले हि, ओ तोहार हुजूर-मे[८]। हम ताहार बेटा जोग्य न हि[९], हामरा एगो नकर बराबर राख।" तब उठ के आपन बाप के ननीक गेल। किन्तु दूर से तकरा बाप देखे पाओलक, आर माया कर केँ दौड़ केँ घेचा मे[१०] धर केँ, चुमा लेलक। बेटा तकरा कहलक, 'ए बाप, हाम भगवान इहाँ पाप करले हि, ओ तोहार हुजुर मे। हाम तो हार बेटा जोग्य न हि।' मगर बाप आपन नकर लोक के कहलाक, 'जलदी सब से बेश लुगा आन केँ एत को पिनहन[११], एँ स का हात मे आँगटी[१२] ओ गोड़ मे जुता पिन्हाय-देंहन आर हामरिन[१३] खाय ओ आनन्द रहि। कारन हामार ए बेटा मर गेल-रहे, बाँचल हे[१४] हेरायल गेल-रहे, मिलल है।" पारे से-सब आनन्द करे लागल।

आर तकर बड़ा बेटा खेत मे होलक। से आय के-धर के नजिक, नाच ओ बाजना शुने पायलक। तखन से एक नकर के बोलाय के पुछलक, 'ए सब कि?' से तकरा कहलक, 'तोहर भाइ आयल हो आर तोहर बाप भोज तैयार कर-ले है, काहेना[१५] से तकरा निरोग देही मे पाओलक।' किन्तु से खिसिआइला[१६], भितर जाय खुजला ना[१७]। तकर-बाद मे ओकर बाप बाहर आय केँ परबोध[१८] करे लागलथिन, मगर से जवाब कर के, आपन बाप के कहकइ, देख, एतना बच्छर[१९] धर के हाम तोहार सेवा करले ही, तोहार कोना[२०] बात कखनी लघन ना करली, तकर से तोँ एँ कखन[२१] हामरा एगो छागरी के बाच्छा नेहि देलक जे हामार दोस्त लोक के स गे आनन्द करि। मगर तोहर ए बेटा जे पातुरिया के[२२] सग तोहर सम्पत बरबाद करलेक, से जखन ऐलक, तखन तकर लाग के बड़ा भोज तैयार करलेक।' मगर से तकरा कहलक, "बेटा, तुँइ सब दिन हामार सग है, आर हामार जे कुछ है, से सब तोहर। मगर खुसी ओ आनन्द करना उचित, कारन तोहर इ भाइ मर गेल-रहे, बाँचल है, हेरायल गेल-रहे, मिलल है।"

---

१ देश का। २ खेत में। ३ बाद में। ४ इच्छा। ५. होश। ६ बोला। ७ बचता है। ८ निकट। ९ योग्य नहीं हूँ। १० गर्दन में। ११ पहिनाओ। १२ अगूठी। १३ हमलोग। १४ बचा है। १५. क्योंकि। १६ गुस्सा हो गया। १७ (भीतर) गया नहीं। १८ समझाने। १९ वर्ष। २० कोइ। २१ कभी। २२ वेश्या के।

पूर्वी मगही+

पंच परगनिया या तमरिया **राँची जिला**

बाप के ममता

कोनों एक आदमी केर दुइ टा छुआ[१] रोहे। तेकर माँहने[२] छोट छुआ टा आपन बाप के कोहलक, 'बाप, मएँ[३] धन केर जे हिसा पामुँ[४] से मो के देउ।' तेकर माँहने ओकर बाप से धन हिसा कइर देलक। बहुत दिन ना होत, केइ छोट छुआ टा सउब धन जामा कोइर लेलक, आर धुर[५] गाँव के चहल गेलक। आर से धन के ताँहाँ कुकाम माँहने उड़ाय देलक। आर जखन से सउब खरच कइर चुकलक, गाँवें[६] खूब आकाल होलक। आर से बहुत कस्ट पाएँ लागलक। तखन से सेइ गाँव केर रहइयत[७] आदमी केर पासे रहलक। आर से आदमी ते-के आपन टाँइँडे[८] सुअइर चाराए के पेठाय देलक। तेकर बाद से आदमी सुअइर जे घाँस खात रहे, 'सेहे घाँस खाय कहन[९] पेट भरामुँ,' इच्छा करलक। आर केउ ते के देतों ए[१०] नाही। तेकर बाद जेबी सुझे पारलक,[११] से कहलक, 'मोर बाप केर कोतना तलप-लेबइया[१२] चाकर जतना खाय केर दरकार तेकर लेक बेशी पाए ला आर मोएँ इहाँ भुखे मोरोतो हों। मोएँ उइठ-कोहन इहाँ लेक मोर बाप-केर पास जामुँ, आर ते-के कहमुँ,[१३] 'बाप, मएँ भोगवान-केर पासे आर राउर-केर पासे-ऊ पाप कइर-आहों[१४] आर मयँ राउर छुआ[१५] होकों[१६] कोई-कोहन[१७] कहल[१८] बेस ना लागे। मो-के राउर-केर तलप-लबइया चाकर रकम राखू।" तेकर से उइठ-कहन[१९] आपन बाप-केर पास गेलक। किन्तु से फाराके[२०] रहत[२१] केइ ते-कर बाप ते-के देखे-पाए-कहने[२२] कुइद-जाय-कहन[२३] टोटाय[२४] धइर-कहन[२५] चूम-खालक। आर छुआ ते-के कहलक—'बाप मएँ भगवान-केर पासे आर तोर पासे-ऊ पाप कइर आहों, आर मोएँ राउर-केर छुआ हेकों कोई कहन काहल बेस ना लागे।' किन्तु बाप आपन चाकर-गुला-के[२६] कहलक जे, 'सउब लेक बेस लुगा[२७] लाइन-कहन[२८] ए-के पिन्धावा,[२९] आर इकर हाथे अँगठी आर गोडे जूता पिन्धाय-देवा, आर खाय-कहन[३०] हामरे खुसी होई, कारन मोर एहे छुआ-टा मोइर-जाय-रहे[३१] से आउर बाँइच घुड़लक[३२], हेजाय[३३] जाय-रहे[३४] पावलक।' आर से सउब कोइ खुसी होय लागलक।

से खन तेकर बड़ बेटा टाँइँडे[३५] रहे। से आय-कहन[३६] घर-केर पास पहुँचलक, आर नाच आर बाजना सुने-के पालक[३७]। की एक जन चाकर-के डाइक कहन[३८] पुछलक, 'इ सउब का?' से ते-के कहलक, 'तोर माई आय-आहे, आर तोर बाप बहुत आदमी-केर

---

१ बेटा। २ मध्य। ३ मैं। ४ पाऊँ। ५ दूर। ६ गाँव में। ७ रहनेवाले। ८ मैदान में। ९ खाकर। १० देता। ११ होश हो सका। १२ तलब लेनेवाले। १३ कहूँगा। १४ किया है। १५ बेटा। १६ हूँ। १७ कोई कहने योग्य। १८ कहना। १९ उठ के। २० दूर। २१ था। २२. देख कर। २३ दौड़ कर। २४ गर्दन। २५ पकड़ के। २६ सेवकों के। २७ कपड़े। २८ लाकर। २९ पेन्हाओ। ३० खाकर। ३१ मर गया था। ३२ बच के लौट आया। ३३ खो। ३४ गया था। ३५ मैदान में। ३६ आकर। ३७ पाया। ३८ पुकार के।

+ लिं० स०, ग्रि०—जि० ५, स० २, पृ० १६८

खाय-नेर चीज जामा-कइर-आहे[१] कारन ते-के बेसे[२] पालक। किन्तु से खिसालक[३], भीतर जाय-के नाहीं मानलक। से तेहें तेकर बाप बाहिरे आय-कहन ते-के बुझाय के लागलक। से जबाब दे-कहन आपन बाप-के कहलक, 'देखिन, एतिक बछर-लेक मोएँ तोर सेवा कारोतो हों। तोर हुकुम कोखनो नाइ काइट-रोहों। तहाऊँ राउर छीगिर-नेर[४] छुआ-ऊ नाइ देलीं, जे मोर आपुस-के ले-कहन खुमी करी। किन्तु तोर एहे छुआ-टा आय-आहे, जे छुआ-टा कस बी-केर सगे तोर सउब धन खाय गुचाय-आहे, तखन रउरे तेकर लागिन बहुत आदमी-केर खाए-केर चीज जामा-कइर- आहि।' किन्तु से ते-के कहलक, 'बेटा, तईं सउब दिने-इ मोर सगे आहिस, आर मार जे आहे से सउब तोर। किन्तु रीझे करें-के उचित, आर खुसी होई, कारन तोर एहे भाई मोइर-जाय-रहे, फेइर औंइच-आहे, हेजाय जाय-रहे, पावलक।'

——

पूर्वी मगही+

कुड़माली-उप बोली

मयूरभज स्टेट

अपराधी के बयान

सओयाल[५] कुराडिआ[६] प[७]। पएड़ुपाल[८] गाव एक जेनासिंह[९] पॅख्यान[१०] काहा[११] आहे[१२] ?

जवाब—उ पख्यान मरि गेला हे।

सवाल—कैसन[१३] मरि पे मरला ?

जवाब—कुराडिआ परगना आसकन्द गाव एक बुद्धु राम सिंह जेना सिंह के मरावले[१४] आहेक[१५] अकर ठेंगाय[१६] करि ने।

सवाल—केनेक[१७] ठेंगाय[१८] मारलेक, ओ कन ठिने[१९] ठेंगाय मारी मारलेक ?

जवाब—जेनासिंह एक[२०] देहिना[२१] धारी क[२२] कान जड़िइं[२३] एक ठेंगा मारइते ह। अहे माइरे ह[२४] अहे-ठिने[२५] झड़ि-खसला[२६]।

सवाल—अ-के[२७] मारि-हेल-एक[२८] खयने[२९] टॅय[३०] आइखे[३१] देखले आहस[३२] कि निहिं ?

जवाब—हँ, देखले आहें।

---

१ जमा किया है। २ अच्छा। ३ नाराज हो गया। ४ बकरी का। ५ सवाल। ६ कुराडिहा। ७ परगना। ८ पएड़ुपाल। ९ जेनासिंह। १० अश्व। ११ कहाँ। १२ है। १३ कैसे। १४ मारा। १५ है। १६ लाठी से। १७ कितनी बार। १८ लाठी से। १९ किस स्थान पर। २० के। २१ दाहिना। २२ भाग का। २३ जड़ में। २४ केवल उस चोट से। २५ उस स्थान पर। २६ वह गिर गया। २७ उसके। २८ मार खाते। २९ उस समय। ३० तुम। ३१ आँखें। ३२ देखा है।

+ लि० स० प्रि०—जि० ५, ख—२, पृ० १७३

सवाल—ई घटना कवे हेलेक, श्रो कटि-ख्यने[१] ?

जवाब—राइत एक-घड़ी-क समयें श्रति-ख्यने आ-धार। आ ए घटना गेल-एक रवि-बार छाड़ि-के तेकर श्रागु-क रवि-बार राइत।

सवाल—जेनासिंह के बुधु-रामे किना लाय[२] मारलेक ?

जवाब—जेनासिंह-एक[३] बेटी-के मॅय गेल-एक बछरे[४] बिहा करे-लाय सिन्दुर देले-रहएइ। श्रो जेनासिंह-एक बेटा मगला सिंह मर[५] बनि गुनि-क[६] मुडा[७] सिन्दुर दे-रहेक। किन्तु, जेनासिंह-एक बेटी-के मर सगे[८] बिहा निहि देइते, पनॅचाइत हेलेक[९]। तेकर पेछाइँ, जेना सिंह श्रकर बेटी बिदेइ-के मिश्रापुर बाटे[१०] बिहा देल-एइ-ख्यने मर गुगु-क[११] बेटा-भाइ बुधु-राम सिंह, जेनासिंह-कें मारलेक।

सवाल—जेनासिंह-के जे मारि-हेलेक, उला[१२] कन-ठिने[१३]

जवाब—जेनासिंह मिनापुर-ले श्रवेइ हेला, ऐसन समये बुढा-बलग नदी पार-हेइ-कें, बुधु-रामसिंह एक सरिसा-बाड़ी[१४] हेइ-न[१५] जे बाट रहलेक, श्रहे बाट हेइ-ने श्राव-एक[१६] ख्यने सरिशा बाड़ी पार-हेइ के, श्रार एक बुधिया सिंह-एक खेत-के पहँचइते मारलेक।

सवाल—तइँ श्रति-ख्यने किना[१७] करेइ-हेलिम[१८] ?

ज्वाब—मॅय श्रति-ख्यने कुहिहँ ठायडाइ रहँ[१९]।

सवाल—श्रार उठिने केउ रहला कि निहिँ ?

जवाब—श्रहे-ठिने ऐहे हाजिरा श्रासामि (१) नछमन सिह (२) रुहिया सिह (३) बानु सिह (४) पाण्डु सिंह एहे सब रहला। किन्तु खुशालि माभी उठिने निहि रहला। हमर ठिकले, दुइ कुडि, दस हात, धूरी श्रासामि बुधिया सिंह-एक सरिश[२०] बाडिहँ[२१] रहला।

सवाल—तइँ कि श्रार केउ जेनासिंह-के मारले श्राछि निहि।

जवाब—मॅय कि श्रार हाजिरा श्रासा मिरइँ[२२] केहा इ[२३] निहिँ मारले-श्राछेक।

सवाल—एहे (का) चिहने-देल[२४] ठेंगा काकर[२५] ?

जवाब—एहे (का) चिन्हे-देल ठेंगा बुधु-राम सिंह-एक। एहे-ठेंगाइ मारले रहेक।

सवाल—एहे मरल मुण्डा[२६] श्रो मठा[२७] चादर श्रो माला काकर हेकेक ?

जवाब—एहे सब जेनासिंह-एक[२८] हेकेक[२९]।

---

१ किस समय। २ किसलिये। ३ के। ४ वर्ष। ५ मेरी। ६ गुनि के। ७ सिर। ८ मेरे साथ। ९ हुआ। १० मार्ग। ११ चाचा। १२ वह। १३ किस स्थान पर। १४ सरसों का खेत। १५ मध्य से। १६ आ करके। १७ क्या। १८ करता था। १९ खड़ा था। २० सरसों के। २१ बाग में। २२ अपराधी लोग। २३ कोई भी। २४ चिह्न दिया हुआ। २५ किसका। २६ सिर। २७ मोटा। २८ का। २९ हैं।

पूर्वी मगही+

खोरटाइ-उपबोली

मालदा जिला के पश्चिम

धरमसंकट

एक बदरागी[1] गिरहस्त बड़ा मास[2] पियार करनियई[3] । एक दिन पाँठा के[4] मास किनि[5] आनि के आप्पन बहु के आइ मास राँधने कहि के बाहर गेलई । बहु ओकर बात मानि के, मास राधि के भान्सा घर मे कोइ बासन मे करि के धाँपि के रखकइ । लक्नि दहवि से[6] एक कुत्ता भान्सा घर जा कर, ओइ बासन के मास खा गेलइ थोरा सा रहलई । बहु ओइ जानि के हारबा कि कुत्ता के तो हाँका देलकई । लक्नि पुरुष आ कर कि कहतई, एइ डर-मे कापने लगलई । आर कोइ उपाय ना देख कर निठुर पुरुष के हात-से बाँचने-के वास्ते, ओकरा कुत्ता क जुठा मास हि खावे देलकई । पुरुस मास काहे थोरा होलई जब एक बात पुछकइ, तो बहु जवाब देलकइ, 'बाँकि मास लड़का-वाला खा गेलई ।' लड़का-वाला खा-गेलई सुनि के गिरहस्त आर भाला बुरा कुछ नहि कहलकई ।

लकिन ओइ घर-मे एक चालाक बेटी लड़का हालाइ । उ सुरू से सब बात जानति-याह । मा-बाप के बोलि चालि सुनि के, उ मने मने इ सोचते लगलाइ, 'आब कि करियाइ ! कुत्ता मास खा-लेलकई । इ बात कहना मुसकिल, ना कहला-भि वे मोनासिब । बोलले से मा मार खातयाइ, न कहले से बाप जुठा खातयई ।'



---

१ कोधी । २ मांस । ३. पसन्द करता था । ४ बकरी के बच्चे का । ५ खरीद के । ६ भाग्य से ।

+ लिं० स०, भि०—जि० ५, स० २, पृ० १८४



द्वितीय अध्याय

मगही के लोकगान

द्वितीय अध्याय

मगही के लोक-गान

लोकगीत

१. सोहर

[१]

सन्दर्भ—दोहदवती की भाव-व्यंजना

कौने दिन बाबा मोरा बिआहलन, कौने दिन गौना कैलन हे।
ललना हे कौने दिन स्वामी चरन छुअली, कि देहिया मोरा भारी[1] भेलइ हे ॥१॥
अगहन मासे बाबा मोरा बिआहलन, माघ मासे बिदा कयलन हे।
ललना हे सावन मासे स्वामी चरन छुअली, देहिया मोरा भारी भेलइ हे ॥२॥
रहरी के दाल नहि निमन लगे, भतवा से हूल मारे[2] हे।
ललना हे अब ना बनायब रसोइयाँ, पिया ननदो बोलाइ देहु हे ॥३॥

टिप्पणी—अगहन का वह कैसा मंगलमय दिन था, जब गौरा प्रियतम के प्रणय-पाश में आबद्ध हुई थी! श्रावण की वह कौन सी शुभ घड़ी थी, जब प्रिय मिलन गर्भ के रूप में फलीभूत हो गया था! गर्भ के भार से गौरा अवनत हो गई है! तन मन में अद्भुत परिवर्तन का अनुभव कर रही है! अब न उसे भोजन भाता है, न घर का काम सुहाता है! ऐसे समय में उसका स्वामी, ननद को बुला दे, तो कितना सुखद हो!

सोहर[3]

[२]

सन्दर्भ—पुत्र-जन्म होने पर वधू के प्रति सास के हृदय में आशंका

पारहि ऊपर कसैलिया एक बोयली।
हे गोरी के लाल, फुलवा फूले हे कचनार ॥१॥
फूल लोढ़े गेलन छोटी अलबेलिया।
हे गोरी के लाल, फुलवे गरम रहि जाय ॥२॥

---

१. मुझे गर्भ स्थापित (हुआ)। २ मिचली आती है।
३. यह नृत्यगीत है। पुत्र-जन्म के अवसर पर इस गीत के साथ नृत्य होता है।

तब सभी ऐलन सासु जी नहैतिन।
हे गोरी के लाल, तीन सुरवा[1] देख के कुम्हाय[2] ॥३॥
के ही दिन ऐलऽ बेटा, के ही दिन रहलऽ।
हे गोरी के लाल, गोदी में देखिला नन्दलाल ॥४॥
एक दिन गयली मइया, दुइ दिन रहली।
हे गोरी के लाल, तिसरे में होयलइ नन्दलाल ॥५॥

टिप्पणी—कचनार के फूल से लदे उपवन में अलबेली गोरी फूल लोढ़ने चली गई! उसे क्या पता था कि प्रियतम भ्रमर बन कर फूलों में छिपा है! रसलोभी प्रियतम ने उसे गर्भ का भार दे दिया! आज सास गौरा को विदा कराने आई है। पुत्र को कभी वधू के पास जाते नहीं देखा था। फिर भी वधू की गोद में फूल से कोमल नन्दलाल को देख कर वह कुम्हला जाती है। छिप कर अनुराग करने वाले अपने प्रिय पुत्र की सफाई सुन कर वह हर्षोल्लास से भर जाती है।

२. जनेऊ

[१]

सन्दर्भ—बालक के यज्ञोपवीत-संस्कार के समय परिजनों की स्नेह-व्यंजना

चदन काठ के रे पिढ़िया, से अइपने निपायल,
ताहि चढ़ि बैठलन, दुलरौता बरूआ[3] ॥१॥
देबो बाबू नौ गुन[4] जनेऊ, बाबा बोलल,
दादी कहरायल[5]—देबो, बाबू नौ गुन जनेऊ ॥२॥
देबो बाबू नौ गुन जनेऊ—अम्मा कहरायल,
दुलरैता भइया परबोधे[6]—देबो भइया नौ गुन जनेऊ ॥३॥

इसी प्रकार सभी सम्बन्धियों के नाम जोड़ कर, इस गीत की पुनरावृत्ति की जाती है।

टिप्पणी—ऐपन से नीपे हुए चदन की पिढ़िया पर बैठ कर प्यारा बालक जनेऊ धरा रहा है। हर्ष पुलकित माता-पिता ही 'नौ गुन' जनेऊ देने का आश्वासन नहीं देते। सभी परिजन इस शुभ कर्म में सम्मिलित होकर बालक को आश्वासित करके आनन्द-वर्द्धन करते हैं।

---

१. पुत्र, वधू और नवजात शिशु। २. शोक से कुम्हला जाती है।
३. वह बालक, जिसका यज्ञोपवीत होने जा रहा हो। ४. जनेऊ में तीन प्रधान गुण (सत्र) होते हैं, जो क्रमशः माता-पिता एवं गुरु के ऋणभार को प्रकट करने के लिये सन्नद्ध होते हैं। इनमें प्रत्येक गुण का निर्माण तीन सूत्रों से होता है। इसीलिए जनेऊ को 'नौ गुन' (नौ सूत्रों वाला) कहा जाता है। ५. आनन्द-पुलकित स्वर में बोली। ६. प्रेमपूर्वक आश्वासन देता है।

[४]

सन्दर्भ—पुत्र के जनेऊ के सम्बन्ध में माता की जिज्ञासा

पुछथी कौसिल्या दसरथ से एक बतिया,
कइसे देलऽ श्री राम के जनेउआ ॥१॥

पहिले देलूँ मृगछाला, हाथ सोबरन सँटिया,[1]
अरे सोना के खड़उआँ, राजा राम के जनेउआ ॥२॥

राजा दशरथ की तीनों पत्नियो एव चारो पुत्रों के नाम लेकर, इस गीत को गाया जाता है।

टिप्पणी—मा ने पिता से पूछा कि मेरे लाल के जनेऊ का विधान तो ठीक हुआ? पिता ने कहा—मैंने विधिवत् जनेऊ कराया है। पहले मृगछाला दी, फिर हाथ में सोने की छड़ी। तब सोने का खड़ाऊँ पहनाया तथा अन्य विधान किये। तब कहीं मेरे लाल के जनेऊ का उत्सव सम्पन्न हुआ।

३. विवाह

[५]

सन्दर्भ—दुल्हा द्वारा कुँआरी कन्या का पाणिग्रहण

केकर नदिया में झिलमिल पनिया,
केकर नदिया में चेल्हवा[2] मछरिया,
कौन दुल्हा फेंके महाजाल[3] हे ॥१॥

एक जाल नवले बुलरुआ, दुइ जाल नवले
तीसरा में बझ गेलऊ घोंघवा सेवार,
से बझ गेलऊ कनियाँ कुँआर ॥२॥

केकरा भरोसे जलवा जे नवले दुलरुआ,
ओही जधिया भरोसे[4] जलवा जे नवली
से बझ गेलई कनियाँ कुँआर ॥३॥

टिप्पणी—नदी के झिलमिल जल में तैरती हुई चेल्हवा मछली मलाह के महाजाल में पड़ जाती है। इसी प्रकार पितृगृह के स्वच्छंद वातावरण म विलसती हुई कुँआरी कन्या दुल्हा के स्नेह-महाजाल में आ जाती है। पुरुष, नारी पर शाश्वत अधिकार अपने प्रेम और सामर्थ्य के बल पर करता रहा है।

---

१ छड़ी। २ मत्स्य विशेष। ३ प्रेमबन्धन। ४ सामर्थ्य के बल पर।

[६]

सन्दर्भ—कन्या-प्रदान कर दुल्हा को मनोवांछित हर्ष देना

कहवाँ ही उपजल नरियल गे माई,
कहवाँ ही जनमल अनजानु दुल्हा।
हाथ मे बहेरी सोभे, छतिया चनन[1] सोभे
तिलका लिलार, सिर मौरी भुइयाँ लोटे ॥१॥

कुरखेत जनमल नरियल गे माई
मइया कोखे जनमल अनजानु दुल्हा।
हाथ मे बहेरी सोभे, छतिया चनन सोभे,
तिलक लिलार, सिर मौरी भुइयाँ लोटे ॥२॥

कहवें उतारव नरियल गे माई,
माइ हे कहवें उतारव अनजानु दुल्हा।
हाथ मे बहेरी सोभे, छतिया चनन सोभे,
तिलका लिलार, सिर मौरी भुइयाँ लोटे ॥३॥

मडवे उतारव नरियल गे माई,
माई हे अँचरे उतारव अनजानु दुल्हा ॥ हाथ में०···लोटे ॥४॥
किय-किय खायत नरियल गे माई,
किय किय खायत अनजानु दुल्हा ॥ हाथ में० ॥५॥

दाल भात खायत नरियल गे माई,
खडे दूध पीयत अनजानु दुल्हा ॥ हाथ में० ॥६॥
किया दे समोधवई[2] नरियल गे माई,
किया दे समोधवइ अनजानु दुल्हा ॥ हाथ में० ॥७॥

दान दहेज देइ समोधवई नरियल गे माई,
माई हे धिया देइ समोधवई अनजानु दुल्हा ॥ हाथ में० ॥८॥
हँसइत जाई नरियल गे माई,
विहँसइत जाई अनजानु दुल्हा ॥ हाथ में० ॥१०॥

टिप्पणी—हाथ में बहेरी, छाती पर चन्दन, ललाट पर तिलक और सिर पर भू-लोटी मोतियों की लड़ियों वाला सिर मौर धारण किये, अनजान दुल्हा जब प्रथम बार ससुराल की देहरी पर आता है, तब भाव पुलकित सास उसे स्नेहाँचल में उतारती है। विवाह में मगल के प्रतीक नारियल को तो दान दहेज देकर सतुष्ट किया जाता है। पर प्रेम पिपासु वर को दान दहेज से तोष कहाँ ! उसे तो चाहिये प्राण-प्रिया ! सास अपनी कन्या देकर उसे इच्छित हर्ष प्रदान करती है। वधू लेकर, विहँसता हुआ वर अपने घर जाता है।

---

1 चन्दन।

2 सम्यक् बोधन करूँगी, मनोवांछित सन्तोष प्रदान करूँगी।

[७]

सन्दर्भ—कन्या की विदाई से माता-पिता में करुणा की लहर

गउनमा के दिनमा घरायल,
गउना नगिचायल[1] हे ॥१॥
सखिया सलेहर करथिन चतुरइया,
गौरा के मनमा हेरायल हे ॥२॥
बाबू के फटलइ करेजवा,
रे जैसे भादो काँकड़ ॥३॥
मइया के ढरे नयना लोर,
रे जैसे भादो ओरी[2] चुए ॥४॥

टिप्पणी—गौने का दिन समीप चला आया है। चतुर सखियाँ विदा की तैयारी में लगी हैं। गौरा का तो मन ही खो गया है। सारा वातावरण शोक सागर में निमज्जित हो रहा है। बाबू की छाती फट चली है, वैसे ही जैसे भादो में काँकड़। माँ की आँखें बरस रही हैं झर झर-झर झर, जैसे बरसात में ओलती।

[८]

सन्दर्भ—वधू के हृदय में चिर सुहागरात की अभिलाषा

आज सुहाग के रात, चंदा तूँहूँ उगिहऽ।
चंदा तूँहूँ उगिहऽ, सुरुज मति उगिहऽ॥
करिहऽ बड़ी दुहूँ रात, मुरुग जनि बोलिहऽ।
आज सुहाग के रात, पिया मत् जइहऽ॥

टिप्पणी—आज सुहागिन की सुहागरात है! चंदा चिरकाल तक सुधा बरसाता रहे! मुर्गे बोल कर प्रभात की सूचना न दे दें! सूर्य उग कर उसके प्राण प्रिय को जाने को विवश न कर दे! सुहागिन की चिर सुहागरात की यह कल्पना उसके प्रेम पिपासु हृदय की कितनी मधुर व्यंजना करती है!

[९]

सन्दर्भ—प्रिय की प्रतिज्ञा से प्रिया को उल्लास

जलवा में चमकई चिल्हवा मछलिया,
रैनिया चमकई तरवार ॥१॥
समवा में चमकइ साभी के पगड़िया,
हुलसऽ[3] हइ जियरा हमार ॥२॥

---

१ निकट आ गया है। २ ओलती। ३. उल्लसित (होता है)।

टिप्पणी—जल में तैरती हुई चिल्हवा मछली चमकती है। रात्रि की कालिमा में तलवार की रुपहली धार कौंधती है। इसी भाँति सभा में बैठे स्वामी की पगड़ी चमकती है। पति के सम्मान से प्रिया का हृदय गद् गद् हो रहा है। उसका उल्लास उसके हार्दिक प्रेम की व्यंजना करता है।

[१०]

सन्दर्भ—ननद भावज का हास परिहास

कौने रंग मुंगवा, से कौने रंग मोतिया।
से कौने रंग ननदो तोरा भइया॥ १॥
लाल रंग मुंगवा, सबुज रंग मोतिया।
से सामर रंग भउजो मोरा भइया॥ २॥
टूटि गेलइ मुंगवा, छितराइ गेलइ मोतिया।
से रूसि गेलइ भउजो, मोरा भइया॥ ३॥
चुनी लेबइ मुंगवा, बटोर लेबइ मोतिया।
से मनाइ लेबइ ननदो तोरा भइया॥ ४॥
से केन्ने सोभइ मुंगवा, से केन्ने सोभइ मोतिया।
केन्ने सोभइ ननदो तोरा भइया॥ ५॥
गल्ले सोभइ मुंगवा, मंगिया रे सोभइ मोतिया।
सेजरिया सोभइ भउजो, मोरा भइया॥ ६॥

टिप्पणी—मोती-मूंगा नारी के रूप-शृंगार के प्रसाधन हैं। पति के संयोग में मोती मूंगे की माला टूट कर बिखर जाती है, तो उल्टे पति को ही रोष होता है। पर रूठे पति को मनाना क्या कामिनी के लिये कोई कठिन बात है। हार की शोभा गले में है, मोती की शोभा मांग में। पति की शोभा सेज पर है, फिर वह रूठेगा तो कितनी देर।

[११]

सन्दर्भ—नायक नायिका का प्रकृति प्रांगण में स्वच्छन्द विलास

नदी किनारे गूलर क गछिया,
छैला तोड़ें, गोरी खाय॥१॥
छैला ने पूछे दिल क बतिया,
गोरी क जिउआ लजाय॥२॥
जैसने चिक्कना पीपर क पतवा,
आयसने चिक्कना घीऊ॥३॥
ओयसने चिकना गोरी के जोबना,
पिया के ललचई जीऊ॥४॥

टिप्पणी—नदी के किनारे गूलर की गाछी है! साजन तोड़ता है, गोरी खाती है! उन्माद का वातावरण है! नायक नेत्र-संकेत से गोरी के हृदय का हाल पूछता है! गोरी के हृदय में कम्पन के साथ लज्जा होती है! नायिका का यौवन भी तो अनोखा है! उसमें वैसी ही चिकनाहट है, जैसी पीपर के पत्ते में और घी में! फिर नायक लुब्ध क्यों न हो!

४ जँतसार

(१०)

सन्दर्भ—विरहिणी नायिका की प्रेम-परीक्षा

बाबा गेलन परदेसवा, सदा रे सुख दे के गेलन।
दुअरे चननभा के गाछ हिंडोलवा लगा के गेलन ॥१॥
पिया गेलन परदेसवा सदा रे दुख देके गेलन।
छतिया रे बजड़ा केवड़िया, जँजीरिया लगा के गेलन ॥२॥
अमवा महुवा घनी बाग, तेही रे बीचे राह लगल।
तेही रे बीचे सुन्नर ठाढ़ा, नैनमा दुनो लोर ढरे ॥३॥
बाट रे पूछे बटोहिया सुन्नर[1] काहे ला रोवे।
पिय तोरा नैहर दूर, किया रे घरवा सासु लड़े ॥४॥
नाहीं मोरा नैहर दूर, नाहीं रे घरवा सासु लड़े,
तोहरे ऐसन पिया पातर, सेहो मोरा विदेस बसे ॥४॥
लेहु हे सुन्नर डाल भर[2] सोनमा, मोतियन माँग भरऽ,
छोड़ी देहु बिअहुआ के आस, सगहुआ सग साथ चलऽ ॥५॥
आगि लगउ डालभर सोनमा, मोतियन बजवा पड़ऊ।
हमरो सामी लौटत बनिजिया[3], घरवा लूटी लउतऊ ॥६॥

टिप्पणी—परदेश बाबा गये थे, तो द्वार पर चन्दन के गाछ में सुखद हिंडोला लगा कर! प्रियतम परदेश गया है, तो सदा के लिये दुःख वारिधि में डुबो कर! वह छाती में वज्र किवाड़ लगा गया है और उस पर भी साँकल चढ़ा गया है! आम और महुआ के घने बाग में विरहिणी सुन्दरी खड़ी है! उसके सुकोमल कपोलों पर अश्रु की बूँदें ढुलक रही हैं! द्रवित-बटोही ने पूछा—सुन्दरी, तुम्हारी आँखियाँ मोती क्यों बरसा रही हैं! अश्रुसिक्त सुन्दरी ने कहा—तुम्हारे ही जैसा कृशांग मेरा कान्त है। उसने परदेश जाकर मुझे बिसरा दिया है। पथिक की आँखें चमक उठीं। उसने कहा—अपने बिअहुता (पति) की आशा छोड़ दो। लो डाला भर सोना! मोतियों से शृंगार करो! सतवन्ती गौरा ने कहा—तुम्हारे सोने में आग लग जाये। मोतियों पर वज्र गिरे। अपने प्रियतम की प्रतीक्षा मैं अनन्त काल तक करूँगी। मेरा जी कहता है कि वह व्यापार से लौटेगा और सोने से हमारा और घर का शृंगार करेगा!

---

१. सुन्दर। २. डाला भर कर। ३. व्यापार।

[१३]

सन्दर्भ—प्रोषितपतिका नायिका की चिर-प्रतीक्षा

कउने उमरिया सासु निमिया लगौलन।
कउनी उमरिया गेलन बिदेसवा हो राम ॥१॥

खेलते-कूदते बाबू निमिया लगौलक।
रेघिया भिंजइते[1] गेल बिदेसवा हो राम ॥२॥

फरि गेलइ निमिया, लहसि गेलइ डरिया।
तइयो न आयल, मोर विदेशिया हो राम ॥३॥

टिप्पणी—विरहिणी की भर भर बरसती आँखें प्रियतम का पथ हेरते-हेरते थक गईं, पर वह नहीं आया। बचपन में ही उसने नीम का गाछ लगाया था। उसकी डाल-डाल लहस रही है। पत्ते-पत्ते फल से लद गये हैं। पर इस लम्बी अवधि के बाद भी नहीं आया वह।

[१४]

सन्दर्भ—प्रोषितपतिका नायिका का प्रिय को संदेश भेजना

"कथिए फारि फारि कोरा कगदवा[2] पिया,
कथिए मेरा मसिहान[3] हे ॥१॥

कथिए चीरि चीरि कलमा बनाई पिया,
कथिए लिखिअइ दुइ बात हे" ॥२॥

"आँचर फारि फारि कोरा कगदवा गोरी,
नयने कजरवा मसिहान हे ॥३॥

अँगुरी चीरि चीरि कलमा बनाइ गोरी,
लिखि नऽ देहु दुइ बात हे ॥४॥

टिप्पणी—प्रतीक्षा की घड़ियाँ अब नायिका के लिये असह्य हो रही हैं। प्रिय ने संदेशा तक नहीं भेजा। रह-रह कर उसका जी अदेसे के दोले में झूलने लगता है। वह स्वयं संदेशा भेजना चाहती है। पर कैसे भेजे। क्या फाड़ कर कागज बनाये! कहाँ से स्याही लाये। क्या चीर कर कलम बनाये। कैसे दो टूक बात लिखे। सखी ने उपाय बताया। आँचल फाड़ कर कागज बना ले। नयनों में लगे काजल की स्याही घोल ले। अँगुली चीर कर कलम कर ले। फिर जी की सारी बातें लिख ले।

---

१. प्रथम बार मूँछ निकलते। २ कागज। ३ स्याही।

[१५]

सन्दर्भ—विरहिणी नायिका का सात्विक प्रेम

जहिया से पिया मोरा गैलऽ तू बिदेसवा,
बलमुआ हो ! तोरा बिनु अँखियो न नींद ॥१॥
जहिया से पिया मोरा गैलऽ तू बिदेसवा,
बलमुआ हो ! कइली न मोरहो सिंगार ॥२॥
कहियो सजौली न फुलवा सेजरिया,
बलमुआ हो ! सपना भयल मोरा नींद ॥३॥
लिखि लिखि पतिआ भेजौली रगुनमा,
बलमुआ हो ! बजर बनौलऽ तूँ करेज ॥४॥

टिप्पणी—प्रियतम परदेश गया, तो आँखों की नींद भी ले गया ! आज युग बीत गये, विरहिणी ने सोरहो शृंगार नहीं किया। फूलों से सेज को नहीं सजाया ! आँखों की नींद स्वप्न हो गई ! अपनी विरह-दशा लिख-लिख कर भेजी उसने ! पर वह पत्थर दिल नहीं आया ! नहीं आया !

[१६]

सन्दर्भ—विरह विदग्धा नायिका की विषम-वेदना।

जे हम जनती पिया,
जैबऽ तूँ बिदेसवा,
बाधती हम रेसम के डोर ॥१॥
रेसम बधनमा पिया,
टूटिए फाटिए जयतइ,
बाधती हम अँचरा के कोर ॥२॥

टिप्पणी—विरहिणी के हृदय में विचित्र आलोडन हो रहा है। उसके प्राणों में रह-रह कर कसक उठ रही है। आह ! वह जानती कि प्रिय परदेश चला जायेगा, तो रेशम की डोर में बाँध रखती। पर रेशम के कोमल तन्तु का बन्धन शिथिल होता है। वह टूट जा सकता है। वह तो उसे स्नेहांचल के कोर में बाँध रखती !

[१७]

सन्दर्भ—विरह कातर पत्नी को भौतिक सुख के साधनों से प्रसन्न करने का पति-द्वारा असफल प्रयास

टिकवा मेलई अपना, से सुग्वा मेलई सपना,
पिया मेलई डुमरी के फूल[१] ॥१॥

१ गूलर का फूल, डुम्मरि (सं० उदुम्बर)

होवे देहु, होवे देहु डुमरी के फूल,
जहरवा घोरि पिवई नैहरवा ॥२॥
काहे लागि अहे धानी जहरवा घोरि पीवऽ,
तलनिया हम भेजबो रे नैहरवा ॥३॥
काहे लागि अहो साधु तलनिया हुर्हु भेजबऽ,
सुरतिया कहाँ पयबो रे नैहरवा ॥४॥

टिप्पणी—विरहिणी का प्रियतम गूलर का फूल हो गया है। आभूषण-देकर विरहाग्नि शान्त करना चाहता है। वह यह नहीं जानता कि उसके बिना सुख स्वप्न हो गया है। जाने दो, हो प्रियतम गूलर का फूल! यह मायके जाकर माहुर (जहर) पी लेगी। प्राणों की तड़पन सदा के लिये शान्त कर लेगी। स्वामी सन्देशा भेजता है, 'प्रिय क्यों माहुर दोगी? नैहर में रुपये भेज दूँगा।' भला, कितना भोला प्रियतम है! नैहर में रुपये तो भेज देगा, पर वहाँ सूरत कहाँ पायेगी! प्राणों में शीतलता प्रिय-दर्शन से आयेगी, धन से नहीं!

[१८]

सन्दर्भ—बाल-विधवा कन्या का करुण विलाप

बेटी—बारह बरिस गे मैया, बितलइ उमरिया रामा हो।
हमहुँ जे मैना रहली कुऑरिए रे कि ॥१॥
सबके बिआहले गे मैया लरिका अबोधवा,
हमहुँ जे मैना रहली कुऑरिए रे कि ॥२॥
माँ—तोहरा बिआहली गे मैना बाले जब पनमा[1] रामा हो,
तोहरो बिअहुआ मरियो गेलऊ रे कि ॥३॥
बेटी—हमरा बिअहुआ गे मइया मरिए जब गेलन,
उनकर चैतियो[2] देहि बतलाय रे कि ॥४॥
माँ—सामन भदउआ के मैना, अलउ बूढ़ी धधिया रामा हो,
ओहि में उनकर चैतिया दहिए गेलउ रे कि ॥५॥
रोइए-रोइए गे मैना मैया से बोलइ रामा हो,
अगे चैतिया बहि गेलइ धरतिया न कि ॥६॥
ओहि ठइयाँ[3] जैबइ मइया, बनबइ सतवन्तिया,
हुए हमर चितवा दीहें रचइए रे कि ॥७॥

टिप्पणी—मैना ने माँ से पूछा—तुमने सबकी शादी कर दी, पर मेरी कब करोगी? मा ने सकरुण कहा—बेटी, जब तू अबोध थी तभी तेरी शादी कर दी थी। तेरा स्वामी मर गया। मैना की आँखों में सावन की बरसात उमड़ आई। उसने कहा-मां, मेरे स्वामी तो

१ बचपन में। २. चिता। ३ स्थान।

मर ही गये। पर, उनकी चिता कहाँ सजी थी, सो तो बता दे। मा ने कहा—सावन भादो में भयंकर बाढ़ आई थी, उसमें उनकी चिता बह गई। मैना को लगा, उसकी छाती फट जायेगी। हाय! उसने स्वामी के दर्शन तक न किये, सामीप्य तो दूर रहा। अंत में जब सती का कर्म निभाना चाहा, तब वहाँ भी निराशा मिली। पर उसने हिम्मत न छोड़ी। रोते-रोते वह बोली—प्यारी मा, चिता तो बह ही गई, पर वह धरती तो नहीं बह गई, जिस पर चिता सजी थी! वहीं मेरी चिता भी सजा देना।

[१६]

सन्दर्भ—पति-पत्नी का प्रेम कलह वर्णन

बहे के तो पुरवा रामा, बहि गेनइ पछिया रामा।
बहि गेलइ ना उजे, अजबी बेयरिया रामा।
ताहि तले ना, प्रभु सेजिया डमोले रामा ॥१॥
निनिया के भरमल प्रभु, बहियाँ छोलखौलन।
टूटि गेलइ ना उजे, अजबी हरउआ रामा।
टूटि गेलइ ना उजे, गजमोती के हरउआ रामा ॥२॥
लट धुनि रोवे रामा, सँमरो तिरियवा रामा।
से टूटि गेलइ ना उजे अजबी हरउआ रामा ॥३॥
चुप होहु, चुप होहु, समरो तिरियवा रामा।
हम लाइ देबो ना उजे, अजबी हरउआ रामा ॥४॥
कहाँ गेलऽ, किय मेलऽ, साँमरो तिरियवा रामा।
से लेइ लेहु ना, सँवरो अजबी हरउआ रामा ॥५॥
छोटी ननदिया रामा, बड़ि ए रिजुलिया रामा।
लोकी लेलन ना उजे, गज मोती के हरउआ रामा ॥६॥

टिप्पणी—पुरवइया पवन बहना चाहिये था, पर बह गया पछिया पवन। इससे वातावरण में विचित्र उन्माद भर गया। पछिया हवा में पलग डाल कर स्वामी सो गये, तो उनकी बाँहें नींद के भ्रम में मेरे हार से उलझ गई। मेरे गले का गजमोती का हार टूट गया। प्रियतम ने फिर नया हार लाने का आश्वासन दिया। पर छोटी ननद बिजली सी चचल है। अब गज-मोती का अजीब हार आया भी, तो उसने *बीच में ही लोक लिया !*

[२०]

सन्दर्भ—नायिका द्वारा ससुराल का कष्ट-वर्णन

सासु देलन गेहुमाँ, ननद देलन चगेरिया[1]।
गोतनी बैरिनियाँ भेजे जतसरिया।
रगड़ि-रगड़ि गेहुमाँ पिसलूँ रे दइया ॥१॥

---

1 टोकरी।

सासु माँगे रोटिया, ननद माँगे टिकरी,
एक सेर मडुआ रगड़ि-रगड़ि पिसलूँ,
ओहु बौना देलक उदवसवा रे दइया ॥२॥
सासु माँगे रोटिया, ननद माँगे टिकरी।
ओहु बौना माँगे परसनमा रे दइया ॥३॥
बौना के जलमल टेंगरा[1] से पोठिया,[2] +
ओहु दे हइ बड़ी उदवसवा रे दइया ॥४॥

टिप्पणी—निष्ठुर सास ने गेहूँ पीसने को दिया, निर्मम ननद ने चंगेरी दी। बैरिन गोतनी का क्या कहना! उसने तो लाकर जाँता ही पकड़ा दिया। महीन कर-कर के गेहूँ पीसने में आधे प्राण तो चले गये। यह काम अभी समाप्त भी नहीं हुआ। सास ने रोटी माँग दी, और ननद ने टिकरी माँग दी। उसपर से फिर एक सेर मडुआ रगड़-रगड़ कर पीसा, तो बौना पति उदवास दे रहा है। उसे परसन पर परसन चाहिए। बौना के बाल-बच्चे कैसे होंगे—टेंगरा और पोठिया जैसे तुच्छ। वे भी अनेक रूपों में कष्ट देते हैं। अब पूरे प्राण जाने पर हैं।

५. ऋतुगीत

होली

[२१]

सन्दर्भ—फागुन का शृङ्गार: रंग-गुलाल

फागुन महिनमाँ, आयल सुदिनमाँ
देवरवा भिंगावइ चुनरिया ॥१॥
पटना सहरवा से आवइ रंगरेजवा,
रंगवा डुबावइ जोबनमा ॥२॥
टिकवा गढ़ावे सैंया, झुमना गढ़ावे,
देवरवा गढ़ावइ बेसरिया[3] ॥३॥
बजुवा गढ़ावे सैंया, झनिया गढ़ावे,
देवरवा गढ़ावइ मिझरिया ॥४॥

---

१. एक प्रकार की मछली, जिसके शरीर में तीन काँटे होते हैं; यहाँ शिशु के अर्थ में प्रयुक्त है। २ छोटे आकार की मछली विशेष; यहाँ शिशु से अभिप्राय है। ३. नथ।

+ हास्यात्मक व्यंग्य की योजना की गई है। खीझ भरे शब्दों में भुक्तभोगिनी, अपनी व्यथा खोल कर रख देती है, पर उसके क्षोभ-प्रकाशन का ढंग कुछ ऐसा है कि बरबस हँसी आ ही जाती है।

कंगना गढ़ावे पिया, पहुँची गढ़ावे
देवरवा गढ़ावइ करधनियाँ ॥५॥
रंग नहीं डारै देवरा, अबीर नहीं डारै,
भींजी गेलइ सजली[1] जगनियाँ[2] ॥६॥

टिप्पणी—फागुन का मधुर मास ! देवर हृदय का उल्लास छिपाये तो कैसे ? भावज की चुनरी रंग में बोरकर अपने मन की रंगीनी दिखा रहा है। पटने का अलबेला रंगरेज जो ठहरा ! नायिका पर अनुराग की वर्षा हो रही है। एक ओर तो उसका प्राणप्रिय टीका-झुमका आदि गढ़ा रहा है, दूसरी ओर देवर बेसर और सिकरी देकर मन चुरा रहा है। चुलबुलुस नायिका के मन की रस भरी उलझन को कौन समझे ?

होली

[२२]

सन्दर्भ—कन्हैया और गोरी का गुलाल विलास

कन्हैया न माने, नयनमा में डारे गुलाल ॥टेक॥
मतु डारऽ रंग कान्हा, अँखिया पिराये[3]।
हो गेल सारी चुनरिया लाल ॥१॥
कन्हैया न माने, नयनमा में डारे गुलाल ॥
जाय कहम हमहु जसोदा अगनमा।
देखऽ अप्पन कन्हैया के चाल ॥२॥
कन्हैया न माने, नयनमा में डारे गुलाल ॥

टिप्पणी—रसलोभी कन्हैया ने गोरी की आँखों में गुलाल डाल दिया। भला उसे क्या मालूम उसकी आँखों के डोरे लाल हो रहे हैं ! प्रेम की पीर सता रही है उसे ! उसने तो उसकी चुनरी भी लाल कर दी। वह अवश्य यशोदा के आगन में जाएगी और कन्हैया की रंग-रेली का भेद खोल देगी।

होली

[२३]

सन्दर्भ—रस-लोलुप पंछी

नकबेसर[4] कागा ले भागा।
सइयाँ अभागा ना जागा ॥
नकबेसर कागा ले भागा।
उड़ि-उड़ि कागा कदम पर बैठल ॥
जोबना के रस ले भागा।

---

१. रसपूर्ण। २. यौवन। ३. पीड़ा होती। ४. नथ।

टिप्पणी—कौआ उसका नकबेसर ले उड़ा, पर उसके प्रियतम की नींद न टूटी! अनुराग से दिया गया नकबेसर गया तो गया, यह पक्षी तो उसके यौवन का रस भी ले उड़ा। और प्रियतम को अभी भी खबर न हुई!

होली

[२४]

सन्दर्भ—परकीया की मान रक्षा।

चले के तो रहिया, चललीं गुजरिया,
से गड़ि गेलइ ना,
केओड़वा[1] के कँटवा, से गड़ि गेलइ ना ॥१॥
के मोरा कँटवा निकालतइ ननदिया,
से केहि मोरा ना,
से हरतइ दरदिया, से केहि मोरा ना ॥२॥
देवरा मोरा काँटा निकालतइ ननदिया,
से पिया मोरा ना,
से हरतइ दरदिया, से पिया मोरा ना ॥३॥

टिप्पणी—बेराह चलने से गोरी काँटों में जा उलझी। उसके पैर में केतकी का काँटा आ चुभा। अब उस काँटे को निकाले तो कौन? फिर पीड़ा कौन हरे? उसका प्यारा देवर उसे कष्ट में देख ही कैसे सकता है? वह काँटा तो निकालकर ही छोड़ेगा। फिर प्रियतम अपने कोमल परस से उसकी पीर हर लेगा।

चैती

[२५]

सन्दर्भ—कुसुम लोढ़नेवाली मुग्धा की आकांक्षा।

कुसुमी लोढ़न हम जायब हो रामा!
राजा केर बगिया!
मोर चुनरिया सैंया तोर पगड़िया
एकहि रंग रंगायब हो रामा!

टिप्पणी—गौरा राजा के बाग में कुसुम लोढ़ने जाएगी। एक अभिलाषा उसके मन में चिरकाल से पलती आ रही है—वह और उसका प्रियतम एक रूप एक प्राण हो जाएँ! अतः वह इतने फूल लोढ़कर लाएगी कि उसकी साड़ी और प्रियतम की पगड़ी एक कुसुमी रंग में रंग जाएगी।

[1]. केतकी।

चैती

[२६]

सन्दर्भ—कैकेयी को खीझ भरा उपालम्भ।

राम जी के बनमा पेठौलऽ हो रामा!
कठिन तोर जियरा ॥१॥
बसिहें न अवधा नगरिया हो रामा!
जैहें जहाँ राम के बसेरवा ॥२॥
मरियो न गेलइ केकइया निरदइया
जारे मुरज कठिन बचनमा ॥३॥
राम लखन बिनु सुन्ना हो रामा!
नागिन लोट हइ भवनमा ॥४॥

टिप्पणी—पापाणी कैकेयी का हृदय विदीर्ण क्यों नहीं हो गया? कैसे उसने उन प्राणप्रिय राम को वन भेज दिया। भला राम के बिना इस नगरी में कौन रहेगा! धन्य है वह वन जहाँ राम का बसेरा है! अयोध्या का विशाल राजभवन आज सूना है। वहाँ नागिन लोट रही है। उस भयप्रद स्थान में कोई रह ही कैसे सकता है? उनकी कामना तो राम के चरणों की सुखद छाया में रहने की ही है।

बरसाती

[२७]

सन्दर्भ—कोयरिन का पति-प्रेम।

सिरवा पर ले ले कोयरिन साग बैगनमा,
चलि गेलइ राजा के दुआर हे ॥१॥
घर से बाहर भेलऽ राजा के बेटवा,
परि गेल कोयरिन पर डीठ[1] हे ॥२॥
आहि आहि कोयरिन हमरो महलिया,
हम लेबउ सगवा तोहार हे ॥३॥
एक हाथे अहो राजा सगवा बोसौलक,
दूसर हाथे अंचरवा बिलमाय[2] हे ॥४॥
छोड़ छोड़ अहो राजा हमरा अँचरवा,
सैया जोहत होइहें बाट हे ॥५॥
हम नहीं छोड़बउ तोहरो अँचरवा,
तोहरो सुरतिया अनमोल हे ॥६॥

---

१ नजर। २ पकड़कर ठहरा लिया।

तोहरो सुरति देखि नींद न आवे,
सूरति देखि मुरछाय हे ॥७॥
छोड़ छोड़ अहो राजा हमरो अँचरवा,
गोदी के बालक जोहिहें बाट हे ॥८॥
तोहरो से आला[1] राजा हमरो बिअहुआ,
जोहत होइहें कोयरिन के बाट हे ॥९॥
किय तोरा अगे कोयरिन संचवा के ढारल,
किय तोरा सुरति बहुत हे ॥१०॥
तोहरो सुरनिया मोरा हिरदा समायल,
अपनों सुरति मोहिं देहु हे ॥११॥
नहीं मोरा अहो राजा सँचवा के ढारल
नहीं मोरा सूरति बहुत हे ॥१२॥
माय जे बाबा फेर कोखिया जलमली,
सूरति देलक भगवान हे ॥१३॥

टिप्पणी—कोयरिन राजद्वार पर साग-भाजी बेचने पहुँची। विलासी राजा ने एक हाथ से सब्जी ली और दूसरे से आंचल थाम लिया। कामुक राजा ने कहा—प्यारी कोयरिन ऐसा बेसुध करने वाला रूप तुमने कहाँ पाया? क्या विधाता ने तुम्हें साँचे में ढाल कर बनाया है? तेरे अनमोल रूप ने मेरी नींद हर ली है। तू मेरी हो जा! सती कोयरिन बोली—ओ रस-लोलुप राजा! छोड़ मेरा आँचल! मेरा स्वामी तुमसे आला है। मेरा नन्हा-सा लाल बड़ा प्यारा है। वे मेरी व्याकुल प्रतीक्षा करते होंगे। भला मैं साँचे में ढली क्या हूँ! माँ-बाप ने मुझे जन्म दिया। ब्रह्मा ने मेरा रूप सिरजा है। तेरी प्रशंसा मुझे भरमा नहीं सकती।

छौमासा

[२८]

सन्दर्भ—कन्या की विदा वेला में परिजनों की भाव-व्यंजना

हवा बहे पुरवइया हे सजनी,
चिपरिनी[2] सुलगे आग हे ॥१॥
तिमिया के तेलवा राभा मथवा बंधौली,
केसिया गेलइ लटिआइ[3] हे ॥२॥
मथवा मइसे[4] गेली बाबा के पोखरवा,
सामी लिऔले लेले जाए हे ॥३॥
केइ रोवे गंगा दही[5] उमड़े,
केकर भींजतइ पटोर[6] हे ॥४॥

१. श्रेष्ठ। २. गोयठे पर। ३. केश में जटा पड़ना गया। ४. मल-मल कर साफ करने के लिए। गंगा में बाढ़। ६. वस्त्र।

केकर रोवे चरन धोती भीने,
ककरो नयनमा न लोर हे ॥५॥
बाबा के रोवे से गंगा दही उमडे,
अम्मा के भींजलइ पटार हे ॥६॥
भइया के रोवे से चरन धोती भीजे,
भउजी नयनमों न लोर हे ॥७॥
पइ कहइ रामा नित उठ अइहऽ,
पेइ कहे छौमास हे ॥८॥
पेइ जे वह रामा काज परोजन,
वइ कहे दूर जाओ हे ॥६॥
अम्मा जे कहइ बेटी नित उठ अइहऽ,
बाबा कह छौमास हे ॥१०॥
भइया जे कहइ बहिनी काज पराजन,
भउजी कहइ दूर जाओ हे ॥११॥
किय तोरा भउजी तुनमा चोरौली,
किय तेल देलूँ ढरकाय हे ॥१२॥
किय तोरा भउजी रसोइया पइसी[1] भँस्लूँ,
काहे कहलऽ दूर जाओ हे ॥१३॥
नहीं मोरा ननदी तुनमा चारौलऽ,
नहीं तेल देलऽ ढुलकाय हे ॥१४॥
नाहीं मोरा ननदी रसोइया पइसी भँस्लऽ,
बतिया करेजवा में साले हे ॥१५॥

टिप्पणी—पुरवैया हवा बह रही थी। चिपरी पर आग सुलग रही थी। उसके लम्बे केश तीसी के तेल से लटिया गए थे। वह बाबा के पोखरे पर नहाने गयी। इसी बीच विदा कराने के लिए उसका स्वामी आ पहुँचा। भला विदा की वला क्या ऐसी सहज है! कन्या की विदाई में माता पिता का हृदय विदीर्ण होने लगता है। उसके पिता के रोने से गंगा में बाढ आ गई है। आँसुओं से माँ के वस्त्र भीज गए हैं। भाई के अश्रु से चरण की धोती भींग गई है। समस्त परिजनों में एक भाभी ही है, जिसकी आँखों में एक बूँद आँसू नहीं। उलटे वह उसे जाने का सकेत दे रही है। गौरा ने पूछा—भौजी! तुम्हारी गृहस्थी में मैंने क्या बाधा डाली है? तुम मुझे घर से भेजने को आतुर क्यों हो? क्यों तुम्हारा हृदय आर्द्र नहीं होता? भाभी बोली—तुम मेरे घर की बाधा नहीं हो पर तुम्हारे वचन इतने कठोर कर्कश रहे हैं, जो मेरे हृदय में शूल की नाईं चुभ जाते रहे हैं। तुम्हारे जाने से मेरे हृदय को शांति मिलेगी।

---

१ प्रवेश कर।

बारहमासा

[२६]

सन्दर्भ—वर्षान्त में पिय-मिलन

प्रथम मास असाढ़ हे सखी साजी चलल जलधार हे।
एही पीरीति कारन सेत बधौलन, सिय उदेस सिरी राम हे ॥१॥
सावन हे सखी, सबद सोहावन रिमझिम बरसई बूंद हे।
सब के बलमुआ रामा घर-घर होइहे, हमरो बलमु परदेस हे ॥२॥
भादो हे सखी रैन भयावन, दूजे अन्हरिया के रात हे।
ठनका जे ठनकइ रामा, बिजुली जे चमकइ, से ही देखी जियरा डेराय हे ॥३॥
आसिन हे सखी, आस लगौली, आस न पूरल हमार हे।
आस जे पुरइ रामा, कुबरी सौतिनिया के, जे कत रखलक लोभाय हे ॥४॥
कातिक हे सखी, पुन महीना, सब सखी करइ गंगा असनान हे।
सब कोई पहिनइ रामा, पाट पितम्बर, हम धनी गुदरी पुरान हे ॥५॥
अगहन हे सखी हरित सोहावन, चारो दिसा उपजइ धान हे।
चकवा चकइया रामा केलि करत हैं, सेइ देखि जियरा लोभाय हे ॥६॥
पूस हे सखी, श्रोस पड़िए गेल, भींजी गेलइ लामी लामी केस हे।
जाड़ा जे छेदइ, सुई निअर राम, थर थर काँपइ करेज हे ॥७॥
माघ हे सखी बसन्ती महीना, बीती गेलइ जाड़ा के दिन हे।
पियवा मोरा सखी अबहु न आवे, कइसे कटइ दिन रात हे ॥८॥
फागुन हे सखी रंग सोहावन, सब सखी खेलइ गुलाल हे।
ओहि जे देखि देखि जियरा जे तरसइ, का पर डारूँ रंग हे ॥९॥
चैत हे सखी सब बन फुलइ, फुलइ गुलाब के फूल हे।
सखी सब फुलइ रामा पियवा के संग, हमरो फुलवा मलीन हे ॥१०॥
बैसाख हे सखी, पिया नहीं आयल, बिरहे कुहुकइ मोरा जीउ हे।
दिनमा जे बीतइ रामा रोवत-रोवत, कुहुकत बीतइ सारा रात हे ॥११॥
जेठ हे सखी आयल बलमुआ, पुरल मनमा के आस हे।
सारा दिना गमा मगल गैली, रैनि गमौली[१] पिया संग हे ॥१२॥

टिप्पणी—आषाढ़ का प्रथम दिवस। काले काले बादलों की उमड़ घुमड़! विरहिणी विकल है। हाय! ऐसे समय में उसका प्रियतम दूर है। ऐसे काल में सीता के निकट पहुँचने के लिए राम ने समुद्र में भी बाँध बाँधा था। उसका परदेशी बड़ा निष्ठुर है। दिवस पर दिवस, मास पर मास कटते जाते हैं पर वह नहीं आता। सावन की रिमझिम आकर चली गई। भादो की भयावनी रात डरपा गई। आश्विन का शरत्सौन्दर्य मन को लुभाता चला गया। कातिक का पुनीत मास भी हृदय को पावन करता चला गया पर वह नहीं

१ बिताया।

आया। अगहन में सारी सृष्टि हरियाली से भर गई। अनाजों से खेत सुनहले हो उठे। पूस के हिमकण दाँत कटकटा गए। माघ की वसन्ती हवा शरीर कण्टकित कर गई। फागुन के रंग-गुलाल ने तन मन को रससिक्त कर दिया। चैत में फूलों की भीनी मुसकान ने मन में उदासी भर दी पर वह निर्मोही नहीं आया। अन्य रूपसियों का सौभाग्य-भृङ्गार, उल्लास विलास, हास-परिहास देखकर वह तरसती रह गई पर उसका परदेशी नहीं आया। अब तो वैशाख की चिलचिलाती धूप तनमन को झुलसा रही है। बिरहिणी के प्राणों की कुहुक प्रिय नहीं सुनता।

पर धन्य है जेठ मास। गौरी के मन की साध पूरी हुई। आज उसका परदेशी घर आया है। वह मगल गीत गा रही है। दिन और रात का उल्लास उसे आनन्द सागर में निमज्जित कर रहा है।

६. देव-गीत

[३०]

सन्दर्भ—गौरी का स्वप्न-दर्शन !

पुरइन पता[१] पर सुतलन गौर देई, सपना देखलन अजगूत[२] हे।
ढोला परोसिन तोहिं मोरा गोतिन, सपना के करू न बिचार हे।।
मोरग देस बजन एक बाजे, सिवकर होवऽ हई बिआह हे।
तोहूँ गौरा देई इन्द्रानी से सियानी[३], तोहूँ पतिवता के धिया[४] हे।।
मोरग देस बजन एक बाजे, सिवजी के होवहई बिआह हे।
कि महादेव चांरनी से चटनी, कि हम मुसली[५] भडार हे।।
- कि हम सेवा में चुक्ली, काहे कैल दुसरो बिआह हे।
नाहीं गौर देई चोरनी से चटनी, नाही तू ही मुसलऽ भडार हे।।
नाहीं गौर देई सेवा में चुक्लऽ, भावी[६] कैलक दुसरो विआह हे।
पेन्ह गौर देई इयरी से पियरी, करिलेहु सोरहो सिंगार हे।।
पेन्ह गौर देई इयरी से पियरी, सौतिन परिछि[७] घर लाहू हे।
बेटवा रहैतई पतोहिया परिछिति, सौतिन परिछलो न जाय हे।।
देवरा रहैतइ, गोतिनिया परिछिति, सौतिन परिछलो न जाय हे।
खोंलियो में देहु गौरा फटलि गुदरिया, पेन्हिलेहु लहरा पटोर[८] हे।।
करियो में लेहु गौरा सोलहो सिगार, सौतिन परिछि घर लाहू हे।
लेइयो में लेलन गौरा टूटल कोलसुपवा, औ लेलन नाकट दीया हे।।
डड़िया[९] उघारि देखलन गौर देई, जैसे लगे बहिनि संका हमार हे।

१. कमल का पत्ता। २ अजीब। ३ बुद्धिमती। ४ बेटी। ५ हड़पार। ६ होनी। ७ परिछन (एक वैवाहिक विधि) कर। ८ परिधान। ९. डोली।

चौदह भुवन तूहूँ खोजल है बहिनि, वरो नहि मिललो तोहार है ॥
देस पैस बहिनि वर नहि मिललो, होवे ऐलऽ सौतिन हमार है।
चारो परगना बहिनि वर खोज ऐलूँ, कहूँ न मिले सिव-राम है ॥
ऐसन असीस जब दीह गे बहिनि, जनम जनम अहिवात[1] है।
तोहरा बलकवा खेलैवा गे बहिनी, होई जैवो दासी तोहार है ॥
देस पइसी बहिनी गोबर कढवो करवो रसोइयाँ बेहवार है।
मगिया जूड़े-जुड़े[2] रहिय्र गे बहिनी कोखिया से रहिअ बिहून[3] है ॥
हमरो बलकवा खेलइह गे बहिनी, होई जैह दासी हमार है।
देस पइस बहिनी गोबर कढीह, करिह रसोइयाँ बेहवार है ॥
सिवजी के पास मत् जइह गे बहिनी, सिवजी से रहिहऽ बिछोह[4] है ॥

टिप्पणी—गौरी ने देखा—मोरग देश में बाजा बज रहा है और धूमधाम से किसी की शादी हो रही है। पर किसकी? मन का कौतूहल नाच उठा। जाकर पड़ोसिनों से पूछा—प्यारी बहनो! जरा विचारो तो, मैंने ऐसा सपना क्यों देखा? पड़ोसिनों ने कहा—भला तुम ठहरी पंडित की बेटी! तुम्हें यदि सपने का अर्थ नहीं सूझा तो हमें क्या सूझेगा? गौरी ने कहा—मैंने देखा कि मोरग देश में बाजा बज रहा है और शिवजी ने दूसरी शादी कर ली है। मैंने पूछा उनसे—आखिर मैंने कौन-सी भूल की? मैं चटनी हूँ! चोरनी हूँ! भंडार लुटा दिया है? कभी सेवा में चूकी हूँ? फिर आपने दूसरी शादी क्यों कर ली? शिवजी बोले—प्यारी! न तुम चोरनी हो न चटनी, और न तुम सेवा में ही चूकी। पर भावी को कौन रोक सकता है? जाओ, वस्त्राभूषण पहन लो और सौत को परिछ कर अन्दर ले आओ। गौरी परिछने पहुँची पर मन डूबा-डूबा था। पतोहू को परिछना होता या गोतनी को, तो जी में हुलास होता पर सौत को परिछना! धैर्य की कितनी कठिन परीक्षा थी? पास पहुँची तो उसने साश्चर्य देखा—सौत बनकर अपनी सगी बहन संध्या आयी थी। साश्रुनयन पूछा—बहन! क्या चौदहों भुवन में तुम्हें और कोई वर नहीं मिला जो मेरी ही सौत बनकर आयी? लज्जा कातर सन्ध्या बोली—बहन! मैंने कहाँ न ढूँढा पर शिवराम तो एक ही हैं। उन्हें और कहाँ पाती! विश्वास करो बहन! मैं तुम्हारे बच्चे खेलाऊँगी, चेरी होकर रहूँगी, गोबर काढूँगी और रसोई पकाऊँगी पर मेरा सौभाग्य मुझ से न छीनो। यही आशीर्वाद दो कि मेरी माँग जनम जनम तक भरी रहे। गौरी ने विह्वल हो कहा—बहन! मैंने सब सुना, सब स्वीकार किया। आशीर्वाद भी देती हूँ—तुम्हारी माँग जनम-जनम तक भरी रहे पर कोख सूनी रहे।

[३१]

सन्दर्भ—गार्हस्थ्य धर्म-पालन का माहात्म्य

पुरवा से ऐलइ आधी से पानी,
भींजि लगलइ उजे सिव के चदरिया।

---

१. सौभाग्यवती। २. माँग भरी (रहे)। ३. बाँझ (वन्ध्या)। ४. उपेक्षिता।

सिवा के भीजलइ झोली से पोथी,
गौरा सुन्दर पड़लइ एको नहि बुन्दवा ॥१॥
कउनी तपस्या तूहूँ कईलऽ हे गौरा,
से तोरो पीठे पड़लो एको नहि बुन्दवा।
सासु नीपल[1] आँगन नहीं धांगली[2],
ननदी के कहली नहीं कछु बतिया ॥२॥

टिप्पणी—शिव पार्वती बाहर निकले ही थे कि पूरब से झंझानिल का प्रकोप छाने लगा। बड़ी-बड़ी बूँदो की तड़तड़ बौछार पड़ने लगी। शिवजी की चादर भींग चली, झोली पोथी भी पानी में फूल गई पर आश्चर्य कि गौरा को एक बूँद भी न छू सकी। शिवजी ने साश्चर्य पूछा—उमे! कौन सी तपस्या की थी तू ने कि तुम्हें पानी की एक बूँद भी न छू सकी। विहँसकर गौरी बोली—सास ने जिस आँगन को बड़े यत्न से लीपा-पोता था, मैंने उसे कभी नहीं धांगा, न तीखे वचनों से ननद का ही हृदय दुखाया।

[३८]

सन्दर्भ—शिव-पार्वती की अनबन

अहो अहो गौरा देइ, सुनऽ नऽ वचन मोरा हे।
अहो गौरा हम करबो दोसरो बिआह,
तूँ बलैये से नऽ धिरजा धधवऽ हे ॥१॥
अजी अजी महादेव, सुनऽ नऽ वचन मोरा हे।
अहो सिव तूँहूँ जब करबऽ दुसरो बिआह,
हम केकरा देखि धिरजा धरबइ हे ॥२॥
फेकरो कहलिया[3] सिव नहि मनलन,
ओहु जे चललन दुसरो बिआह करे,
सहानी मौरी[4] लइ दूले[5] हे ॥३॥
आरे आरे कारा बदरा, तोरो देवउ लाल चदरा,
मोरा सिव चललन दुसरो बिआह करे,
आंधी पानी घेरि आवऽ हे ॥४॥
आंधी के अवकाज ऐलइ, पानी के झमझार[6] ऐलइ
सिव जी जे ठारे[7], मौरी धुरूमी[8] ऐलइन,
ओहारी तरे खड़ा भेलन हे ॥५॥
अहो अहो गौरा देइ, सुनऽ न वचन मोरा हे।
खोलऽ न गौरा सोवरन केमड़िया,
सहानी मौरी भींजी गेलइ हे ॥६॥

---

१ लीपा-पोता। २ पैरों की छाप से असुन्दर किया। ३ कथन। ४ सिर मौर। ५ झूले। ६. झमाझम (वर्षा)। ७ खड़ा। ८ भींग कर विरूप (हो गए)।

नहिं सिव दिअइँ हइ दियवा से बाती,
तूँहूँ खींचि लावऽ ओरी तर के खरह,[1]
ओही पर सूति रहऽ हे ॥७॥
एक ता गरीव धियवा, दोसर कंगाल धियवा हे।
निसरे में बाबा तोहर, हम्में हाथे बेची देलथु,
ठनगन[2] कतेक करवऽ हे ॥८॥
एक तो गरीब धियवा, दोसरे कंगाल धियवा हे,
निसरे में हम हि सतभइया केरा बहिनी,
तो ठनगन बहुत करबो हे ॥९॥

टिप्पणी—शिवजी ने कहा—गौरा! मैं तो दूसरी शादी करके रहूँगा। बलैये से तुमसे धीरज रखा जाय या नहीं रखा जाए। रुआँसी हो गौरा ने कहा—आप दूसरी शादी कर लेंगे तो मेरा क्या होगा? कैसे जी सकूँगी मैं? पर शिव जी ने किसी की बात नहीं मानी। वे ब्याह करने के लिये चल पड़े। सर पर रखी गौरी की लम्बी-लम्बी झालरें काँप रही थीं। गौरी से न रहा गया। उसने आकाश की ओर हेरकर प्रार्थना की—'ओ काले बादल! आओ और झूम झूम कर बरसो! मैं तुम्हें लाल चादर दूँगी। देखो न, शिव जी दूसरी शादी करने चले हैं!' काले बादलों ने उनकी प्रार्थना सुन ली और झूम झूम कर बरसने लगे। शिवजी जो पूरी तरह भींगे तो भागे भागे अपने घरकी ओलती तल आ खड़े हुए। उन्होंने किवाड़ खटखटायी—प्यारी गौरा, द्वार खोलो। गौरी वगैरह सब भींग गई। क्या दूसरी शादी करूँगा! भीतर से ही गौरा ने कहा—'प्यारे शिवजी! कैसे खोलूँ? न दीया है, न बाती और घना अंधेरा है। ओलती की बगल में ही छूछी खाट पड़ी है, खींचकर सो रहिए।' शिवजी को बड़ा गुस्सा आया—ओह! इतना मान! एक तो तू गरीब की बेटी है और वह भी गरीब की क्या, कंगाल की। फिर तुम्हारे पिता जी ने तुम्हें मेरे हाथों बेच दिया और इसपर भी इतना गुमान! गौरी कुनमुनायी—ठीक है, मैं गरीब ही नहीं, कंगाल की बेटी हूँ पर हूँ तो सात-सात भाइयों की प्यारी इकलौती बहन। फिर गुमान क्यों न करूँ?

[३३]

सन्दर्भ—नैहर में अपमानित सती की रक्षा

डँड़िया[3] चढ़ल ऐलन गौरादेइ, बसहर[4] महादेव हे।
ए मिनती[5] स बोललन गौरा देइ, सुनऽ नऽ महादेव हे।
सिर केरर नैहरवा विआह, बजन एक बाजे हे ॥१॥
मिनती से बोलथा महादेव, सुनहुँ गौर देइ हे।
साहरो नैहरवा भइया क बिआह, बजन एक बाजे हे ॥२॥
मिनती से बोलथी गौरा देइ, सुनऽ न महादेव हे।
अनी हम्मर भइया के बिआह, नैहर हम जायम हे ॥३॥

१ छूछी खाट (खरहरा)। २ गुमान। ३ पालकी। ४ बसहा बैल (नन्दी) ५. विनती।

मिनती से बोलथी महादेव, सुनऽ नऽ गौरा देइ हे।
गौरा बिन रे अदरवा के नैहर, सेहु नैहर कैसन हे ॥४॥
केकरो कहलिया गौरा नहिं मनलन, नैहर चलि गेलन हे।
अरे न रे चीन्हे मइया से बाप, नहीं रे चीन्हे भइया भौजी हे ॥५॥
न रे चीन्हे कुल परिवार, नहीं रे चीन्हे नर लोग हे।
एक चीन्हलन गंगा बहिनी, गौरिया बहिनी ठाढ़ हइ हे ॥६॥
ए दरप[1] से उठलन माय, गौरिया जुलवा नासल हे।
अरे जहाँ घिउआ के कुंड जरे, गौरिया जरि छुइया[2] हो जो ॥७॥
धजवा[3] चढ़ल ठारा महादेव, गौरा के जे छानी[4] लेलन हे।
बेरहिं बेर तोरा बरजों[5]हे गौरा, बिन रे अदरवा के सेहु, नुइ कैलन नैहर ॥८॥

टिप्पणी—पालकी पर चढ़ी सती अपने नैहर के पास से गुजरने लगी, तो बधावों की आवाज सुन चौंक पड़ीं। साथ में ही शिवजी थे। बड़े प्रेम से पूछा—प्यारे शिवजी, यह बाजा कहाँ बज रहा है? शिवजी बोले—तुम्हारे नैहर में भाई की शादी है। सुनकर सती का मन मचलने लगा। सविनय बोलीं—नैहर में मेरे भाई की शादी है। मैं जाना चाहती हूँ। पर शिव जी ने राय न दी। भला बिना निमंत्रण के नैहर जाना कैसा! सती ने एक न मानी। वे चली ही गईं। फिर तो अजीब दृश्य सामने आया। न माँ ने पहचाना न पिता ने, न भाई ने, न भौजाई ने, यहाँ तक कि घर में किसी ने नहीं! सिर्फ गंगा ने पहचाना। वह बोली—माँ! दीदी खड़ी हैं। इसपर तिनक कर माँ बरस पड़ी—छि। इसने तो कुल को मिट्टी में मिला दिया। अरी! खड़ी क्यों हो? जाओ न, घी की कड़ाही खौल रही है, उसी में कूद मरो। सती से अपमान न सहा गया और वे कूद पड़ीं। पर ध्वजा की नोक पर बैठे महादेव यह सब तमाशा देख रहे थे। गिरने के पहले ही उन्होंने सती को लोक लिया। वे बोले—कहा था न? बिन बुलाये नैहर जाना कैसा?

[३४]

सन्दर्भ—श्री राम द्वारा सीता का पाणिग्रहण

झिलीमिली कपड़ा पहिरि राजा जनक।
लिलि घोड़िया होलन असवार हे ॥१॥
हाथ में लेले राजा सोबरना के साट।
चलि भेलन राजा दरबार हे ॥२॥
एक कोस गेलन राजा दुई कोस गेलन।
तेसर कोस राजा दरबार हे ॥३॥
घोड़वा जे बाँधे राजा चनन केर गाछ।
बैठि गेलन चनन जुड़ि छाँह हे ॥४॥

१. अभिमान। २. राख। ३ ध्वजा। ४ छान (लिया)। ५ रोका।

अँगना बहरैते तोहूँ सलखो गे चेरिया।
राजा घर देहूँ न हँकार हे ॥५॥
ताही घर अगे चेरिया राम जी कुँआर।
मोरा घर सीता कुँआर हे ॥६॥
एक हाथ लेले चेरिया गगरा तम्हेडिया।
दोसर हाथे सिंहासन पीढा हे ॥७॥
पैर पखार ऽ राजा सिंहासन चढि बैठऽ।
कहऽ राजा कुल बेवहार हे ॥८॥
मोरा घर अगे चेरिया सीता कुँआर।
तोहीं घर राम जी कुँआर हे ॥९॥
बोलावऽ बराहमन दिनमा सोचावऽ।
राम सीता करहूँ बिआह हे ॥१०॥
अगहन दिन राजा दिनमा, कुदिनमा।
आवे देहो जेठवा बैसाख हे ॥११॥
बराहमन बोलायब, लगन सोचायब।
राम सीता होयतो बिआह हे ॥१२॥
गाय केर गोबर राम जी, अगना नीपायब।
गज मोती चौक पुरायब हे ॥१३॥
चनन केरिय राम जी पिढिया बनायब।
राम सीता होयतइ बिआह हे ॥१४॥
होयलइ बिआह, रामजी कोहबर गेलन।
सीता लेलन अगुरी लगाय हे ॥१५॥
तिरिया जलम जब देलऽ हो नारायण।
कोखिया बढन्तु मोरा दीहऽ हे ॥१६॥
सासुरा में दीह राम जी अनधन लछमी।
नैहर सहोदर भाई हे।
जुग-जुग दीह ऽ अहिवात हे ॥१७॥

टिप्पणी—महाराज जनक ने मलमल कपडे पहने, हाथ में सोने की छड़ी ली। वे ठुमक-ठुमक कर चलनेवाली घोड़ी पर सवार हो महाराज दशरथ की राजसभा में पहुँचे। जनक जी ने सलखो दाई को पुकार कर कहा—जरा जाकर महल में कह दो कि जनक जी आए हैं। तुम्हारे भवन के यदि कुआँरे श्रीराम हैं तो मेरी भी कुआरी बेटी सीता है। दाई गागर में पानी और ऊँचा पीढा लेकर बाहर आ खड़ी हुई। पैर पखारकर उसने जनक जी को बैठने के लिये कहा और कुशल मगल पूछा। जनकजी ने कहा—चेरी! ब्राहाण ... दिन रखवा लिया जाए फिर राम-सीता की शादी कर दी जाए! वह बोली—... शादी के दिन नहीं। जेठ-बैशाख आने दीजिए। फिर तो गोबर से आँगन लीपूँगी ... से सजाऊँगी। चन्दन के पीढ़े पर श्रीराम को बैठाऊँगी और सीता के

के साथ ब्याह रचाऊँगी। बाद ऐसा ही हुआ। शादी के बाद सीता के साथ श्रीराम ने कोहबर में प्रवेश किया। सीता ने नारायण से विनती की—हे देव! ससुराल में अन्न धन की वर्षा हो और नैहर में सहोदर भाई जनम ले। मेरा सौभाग्य हमेशा बना रहे। जब नारी रूप में जनम दिया है, तब सन्तान दे मेरी कोख की लाज भी रखना।

[३५]

सन्दर्भ—रावण द्वारा सीता का हरण

नदिया किनारे र दुइ रे बिरिछिया, एक महुआ एक आम है।
ओहि तर उतरल दुइ रे मनुसवा, एक लछन एक राम है ॥१॥

राम जी के खेलत बन के अहेरिया, सीता मड़ैया[1] बैठल द्वार है।
रवनवा जे आयल जोगी भेस धरके, जोगिया के भिच्छा देबे जा है ॥२॥

अगना बहारत सलगो गे चेरिया, जोगिया के भिच्छा देइ आव है।
चेरिया के हथवा से ओरो चेरिआइन, जेहि बियाये सेइ भिच्छा देइ है ॥३॥

सर ले ले सोनमा ऊपर तिलचाउर, जोगिया के भिच्छा देबे जाये है।
एक गोर पहुरी, दोसर गोर देहरी, सीता रवनवा हर ले जाय है ॥४॥

घरहीं घरिल पर राम जी जे अयतन, सीता मड़ैया देखा सून है।
ना देखूँ दियवा हो, ना देखूँ बाती, सीता मड़ैया देखा सून है ॥५॥

मैं तो के पुछिलउ चकवा चकइया, एहि बाटे सीता देखले जाइत है।
न देखां सीता है न देखा सीता, हमरा जे पंखवा में चिन्ता है ॥६॥

ऐसन असीसवा तोरा देबउ रे चकवा, दिन भर जोड़ी रात के बिछोह है।
ऐसन असीसवा तोरा देबउ रे चकवा, तड़पि तड़पि जीउ जाऊ रे ॥७॥

धोबिया जे धोवले गंगा रे जमुनमा, सुग्गे चननमा केर गाछ है।
मैं तो जे पुछिलउ धोबिया हो भइया, एहि बाटे सीता देखले जाइत है ॥८॥

देखलौं मैं देखलौं मैं हाथीपुर हथिया, सीता रवनवां ले ले जाये है।
ऐसन असीस तोरा देबउ रे धोबिया, फटलो गुदरिया नाहिं भुलाये है ॥९॥

टिप्पणी—नदी के किनारे आम और महुआ के दो वृक्ष। उनकी सघन छाया में दो महामानव उतरे—एक राम, दूसरे लक्ष्मण। राम गये अहेर खेलने। सीता घेरे से घिरी कुटिया के अन्दर थीं। प्रपंची रावण भिक्षा माँगने आया। सीता ने कहा—सलगो चेरिन! योगी को दान दे आ। रावण ने कहा—चेरी से भिक्षा नहीं लेना। दिलानेवाली खुद दे! भोली सीता स्वर्णथाल में तिल चावल लेकर भिक्षा देने चली। रावण सीता को हर कर ले गया।

---

१. घेरा। कुटिया।

बारह साल बाद ! राम अहेर से लौटे। देखा—कुटिया सूनी थी। व्याकुल हो चकवाक के जोड़े से पूछा—क्या तुमने मेरी प्रिया को इस राह जाते देखा है ? चकवे ने कहा—मुझे पेट की चिन्ता है। भला मैं क्या जानूँ तुम्हारी सीता मीता ! लुब्ध-हृदय राम ने अभिशाप दिया—दिनभर युगल जोड़ी साथ रहेगी पर रात में बिछोह हो जायगा। गंगा-यमुना के किनारे चंदन की डाल पर कपड़ा सुखाते धोबियोंने सीता का पता दे दिया। राम ने आशीर्वाद दिया। प्यारे भाई ! तुम्हें वर देता हूँ कि फटी गुदड़ी की बात भी तुम न भूलो!

[३६]

सन्दर्भ—शबरी की श्रीराम में प्रीति

सेवरी वरऽ नऽ रे सगुनमा, आज गिरही राम जी अइहें ना ॥ टेक ॥

लमी-लमी केसिया सेवरी सडक बहारऽ हथी,

एहि घटिये अइहन भगवान सेवरी के अगना ॥१॥

कुस के चटइया सेवरी झाड़ि झूड़ि बिछौलन,

एहि पर बैठिहन भगवान सेवरी के अगना ॥२॥

काठ के कठोलवा सेवरी, गंगा जल पनिया भैलन,

चरन पखरिहन[1] भगवान सेवरि के अगना ॥३॥

सेवरी के अगना में बैरिया के गछिया हे,

चीखी-चीखी खोनवा[2] लगावे सेवरि अगना ॥४॥

कच्चे कच्चे अहे सेवरि चीखी चीखी बीगी[3] देलन,

पकल-पकल खोनमा लगावे सेवरि अगना ॥५॥

सेहि गलिय अइहन भगवान सेवरि के अगना,

भोग लगइह भगवान सेवरि के अगना ॥६॥

टिप्पणी—

भावविभोर शबरी सोच रही है—आज जरूर श्रीराम आएँगे। यह अपने लम्बे केशों से पथ को बुहार साफ कर दे रही है। प्रेम से उसने चटाई बिछा दी है। आने पर श्रीराम उसी पर बैठेंगे। फिर वह काठ की कठोली में गंगा जी का पानी ले आयी है। आने पर श्रीराम उसी से पैर धोएँगे। आगन में बेर का पेड़ लहरा रहा है। वह बेर झाड़ रही है। कच्चे बेरों को वह फेक दे रही है एवं चख-चख कर मीठे बेर एक ओर रख रही है। भगवान श्रीराम जब आएँगे, तब उन्हीं का भोग लगाएगे।

---

१ धोयेंगे। २. दोना। ३ फेंक (दिया)।

[३७]

सन्दर्भ—श्री कृष्ण की रसिकता से तंग गोपी का उपालंभ

जब हि गोश्रारिन मटुका उठावे, बामे परि गेलइ छींक हे ।
अजी मचिया बैठल तुहूँ सासुजी, छीँक के करूँ न विचार हे ॥१॥

छीँक ओठन बहु छीक पेन्हन, छीँक है सतार हे ।
अजी बीचे कदम तरे कान्हा जी सेटिहें, ओरि रचिहें धमार हे ॥२॥

जब हि गोश्रारिन कदम बीचे गेलन, कान्हा बसीया बजावे हे ।
खाइ लेबउ गोश्रारिन मीठ दहिया, फोड़ि देबउ सिर मटुक हे ॥३॥

जोबन लेइ गेंद खेलब, जैसे तिरिया हमार हे ।
खाइ लेटु किसनऽ मीठ दहिया, जनु तोड़ऽ सिर मटुक हे ॥४॥

सुन जे पइहें नन्द बाबा, तोहरो मारी दीहें हे ।
मारे के बेरी ग्वारिन बालक होयबो, नन्द लीहें उठाय हे ॥५॥

खाइ लेलन किसना मीठ दहिया, तोड़ि देलन सिर मटुक हे ।
जोबना लेइ किसना गेंद खेलइ, जैसे उनकर तिरिया हे ॥६॥

ओरहन देवे गेलन ग्वालिन बिटिया, सुनहु दसोदा[1] माता हे ।
तोहर किसना जे रचलन धमार, तोड़ि देलन सिर मटुक हे ।
खाइ लेलथुन मीठ दहिया, फोड़ि देलन सिर मटुक हे ॥७॥

हमरो जे किसना गोश्रारिन लड़का अबोधवा, झूलत हथि पलग हे ।
अजी घरे जे हथुन माता लड़का अबोधवा, बाहर छैला जुश्रान हे ॥८॥

टिप्पणी—गोश्रारिन ने मटुका उठाया था ही कि छींक आ गई । उसने सभीत हो सास से पूछा—सास जी ! क्या आयी छींक ? जरा विचार तो कीजिये । उसने कहा—आज राह मे कान्हा छेड़छाड़ करेगा तुमसे । गोपी कदम्ब के वृक्ष के नीचे पहुँची कि कान्हा की वंशी सुनाई पड़ी । कृष्ण ने कहा—अरी ग्वालिन, तेरा मीठा दही खा लूँगा, मटकी फोड़ दूँगा और छेड़ छाड़ भी करूँगा । गोपी ने समझाया—कान्हा दही खा लो ! मटकी मत फोड़ो । नन्दबाबा तुम्हें दण्ड देंगे । श्री कृष्ण के होठो पर मुस्कान खेल गई—अजी ओ ! जब वे मारने आयेंगे तो मैं बालक बन जाऊँगा । फिर तो वे मुझे गोद में उठा कर प्यार करेंगे ! कान्हा ने दही खाया ! मटकी फोड़ी । गोपियो से छेड़खानी की । गोपी यशोदा को उलाहना देने गई—माँ ! कान्हा ने हमें बहुत तंग किया । भोली माँ यशोदा ने कहा—कहाँ मेरा नन्हा कान्हा ! कहाँ तुम ग्वालिना की बातें । मेरा बच्चा तो पालने मे झूल रहा है अभी ! चिढकर गोपी ने कहा—घर में बालक हैं पर बाहर छैला जवान !

---

१ यशोदा ।

[३८]

सन्दर्भ—शीतला देवी का प्रशस्ति-गीत

नीमियाँ के डलिया मइया लगलो हिन्डोरवा,
झुनी-झुनी मइया गावल गीत कि झुली-झुली ॥१॥
मिलुआ झुलइत मइया लगलो पियसवा,
से चली भेलन मइया मलिया केर बगिया ॥२॥

सुतल है कि जागल है मालिन केर बेटिया,
मोरा एक चुलु पनिया पिलाहूँ ॥३॥
कैसे में मइया पनिया पिलइयो कि,
मोरा गोदी मइया तोहरो बलकबा ॥४॥

बलका सुताहु मालिन सोनें के खटोलवा,
आ सोने के मचोलवा, एक चुलु पनिया पिलाहूँ ॥५॥
बलका सुतौलन मालिन सोने के खटोलवा,
से सोने के मचोलवा, एक चुलू पनिया पिलउलन ॥६॥

जैसे गे मालिन हमरा जुड़उले, से,
तोरा बलकवा जुड़ाऊ, तोर पतोहिया जुड़ाऊ ॥७॥

टिप्पणी—नीम की हरी-भरी डाल पर झूला टागा गया है। माँ शीतला मन्द स्वरों में गीत गाती झूला झूल रही है। झूला झूलते-झूलते माँ को प्यास लग गई और वह मालिन के बगीचे में पानी पीने चली गई। उन्होंने अन्दर आते ही पुकार की—ओ मालिन की बेटी! सोयी हो कि जागी! एक चुल्लू पानी तो पिलाना! मालिन की बेटी बोली—ओ शीतला मैया। कैसे पानी पिलाऊँ? मेरी गोद में तो तुम्हारा ही बालक सो रहा है। शीतला बोलीं—मालिन! बच्चे को सोने के खटोले में सुला दो और मुझे एक चुल्लू पानी पिला दो। मालिन ने बालक को खटोले में सुला दिया और एक चुल्लू पानी पिला दिया। पानी पीकर शीतला माँ तृप्त हो गईं। उन्होंने आशीर्वाद दिया—मालिन! पानी पिलाकर जैसे तुमने मेरी छाती जुड़ायी, वैसे ही यह बालक तुम्हारी छाती जुड़ाए और तुम्हारी पतोहू तुम्हें तृप्त करे।

[३९]

सन्दर्भ—कुपित शीतला देवी से माँ की विनती

काहे के रे कंगिया सीतल मइया, काहे के रे काँप।
मचिया बैठल सातों बहिनी झारे लामी केस ॥१॥
सोने केर कंगिया सीतल मइया, रुपे के रे काँप।
मचिया बैठल सातों बहिनी झारे लामी केस ॥२॥

टूटी गेलइ कंघिया सीतल मइया, टूटि गेलइ काँप।
कउने हाथे गढ़ले रे सोनरा समगिया[1] लगऊ रे घून[2] ॥३॥

हाथ जोड़ी खड़ा भेलई सोनरवा के रे माई,
अबरी कसुरवा बकसु हे हमार सीतल मइया,
गढ़बइ सीतल मइआ सोने के रे काँप ॥४॥

टिप्पणी—माँ शीतला अपनी सातो बहनों के साथ मचिया पर बैठी हैं। रुपहली काँप युक्त सुनहरी कंगही से लम्बे-लम्बे केश झाड़ रही हैं। कंगही इतनी कमजोर बनी है कि बीच में ही टूट जाती है। माँ शीतला क्रोध में सोनार को अभिशाप दे बैठती हैं।

भयकातर स्वर्णकार की माता शीतला देवी से बिनती करती है—शीतला मैया! इस बार मेरे पुत्र को क्षमा कर दो। उसके प्राण बकस दो। मैं विश्वास दिलाती हूँ कि अब सोने की कंगही में रुपहली नहीं, सुनहरी काँप गढ़ूँगी।

[४०]

सन्दर्भ—शीतला माँ के मंदिर का छवि-वर्णन

अरे किधिर हइ बाँस बँसवरिया,
किधिर हइ केदली बनमा हे ॥१॥

किधिर हइन मइया के मदिलवा,
देखन हम जायम हे ॥२॥

पुरुब हइन बास बँसवरिया,
पच्छिम हइन केदली बनमा मे ॥३॥

दखिन हइन सीतल के मदिलवा,
देखन हम जायम हे ॥४॥

कैसन हइन बाँस बँसवरिया,
कैसन हइन केदली बनमा हे ॥५॥

कैसन हइन मइया के मदिलवा,
देखन हम जायम हे ॥६॥

हरियर हइन बाँस बँसवरिया,
सीतल हइन केदली बनमा हे ॥७॥

बड़ा सुन्दर मइया के मदिलवा,
देखन हम जायम हे ॥८॥

---

१ शरीर। २ कीड़ा विशेष।

[३८]

सन्दर्भ—शीतला देवी का प्रशस्ति-गीत

नीमियाँ के डलिया मइया लगलो हिन्डोरवा,
झुमी-झुमी मइया गावल गीत कि झुली-झुली ॥१॥

मिलुआ झुलइत मइया लगलो पियसवा,
से चली मेलन मइया मलिया केर बगिया ॥२॥

सुतल हे कि जागल हे मालिन केर बेटिया,
मोरा एक चुलु पनिया पिलाहूँ ॥३॥

कैसे में मइया पनिया पिलइयो कि,
मोरा गोदी मइया तोहरो बलकवा ॥४॥

बलका सुताहु मालिन सोने के खटोलवा,
आ सोने के मचोलवा, एक चुलु पनिया पिलाहूँ ॥५॥

बलका सुतौलन मालिन सोने के खटोलवा,
से सोने के मचोलवा, एक चुलु पनिया पिलउलन ॥६॥

जैसे गे मालिन हमरा जुड़उले, से,
तोरा बलकवा जुड़ाऊ, तोर पतोहिया जुड़ाऊ ॥७॥

टिप्पणी—नीम की हरी-भरी डाल पर झूला डाला गया है। माँ शीतला मन्द स्वरों में गीत गाती झूला झूल रही है। झूला झूलते-झूलते माँ को प्यास लग गई और वह मालिन के बगीचे में पानी पीने चली गई। उन्होंने अन्दर आते ही पुकार की—ओ मालिन की बेटी! सोयी हो कि जागी? एक चुल्लू पानी तो पिलाना? मालिन की बेटी बोली—ओ शीतला मैया। कैसे पानी पिलाऊँ? मेरी गोद में तो तुम्हारा ही बालक सो रहा है। शीतला बोलीं—मालिन? बच्चे को सोने के खटोले में सुला दो और मुझे एक चुल्लू पानी पिला दो। मालिन ने बालक को खटोले में सुला दिया और एक चुल्लू पानी पिला दिया। पानी पीकर शीतला माँ तृप्त हो गईं। उन्होंने आशीर्वाद दिया—मालिन! पानी पिलाकर जैसे तुमने मेरी छाती जुड़ायी, वैसे-ही यह बालक तुम्हारी छाती जुड़ाए और तुम्हारी पतोहू तुम्हें तृप्त करे।

[३९]

सन्दर्भ—कुपित शीतला देवी से माँ की विनती

काहे के रे बंगिया सीतल मइया, काहे के रे काँप।
मचिया बैठल सातों बहिनी मारे लामी केस ॥१॥

सोने केर बंगिया सीतल मइया, रुपे के रे काँप।
मचिया बैठल सातों बहिनी मारे लामी केस ॥२॥

टूटी गैलइ् कचिया सीतल मइया, टूटि गैलइ् काँप।
कउने हाथे गढले रे सोनरा समगिया[1] लगऊ रे घून[2] ॥३॥

हाथ जोडी खड़ा भेलई सोनरवा के रे माई,
अबरी कसुरवा बकसु हे हमार शीतल मइया,
गढवइ् सीतल मइआ सोने के रे काप ॥४॥

टिप्पणी—माँ शीतला अपनी सातों बहनों के साथ मचिया पर बैठी हैं। रुपहली काँप युक्त सुनहरी कगही से लम्बे लम्बे केश झाड़ रही हैं। कगही इतनी कमजोर बनी है कि बीच में ही टूट जाती है। माँ शीतला क्रोध में सोनार को अभिशाप दे बैठती हैं।

भयकातर स्वर्णकार की माता शीतला देवी से विनती करती है—शीतला मैया! इस बार मेरे पुत्र को क्षमा कर दो। उसके प्राण बकश दो। मैं विश्वास दिलाती हूँ कि अब सोने की कगही में रुपहली नहीं, सुनहरी काप गढ़ूँगी!

[४०]

सन्दर्भ—शीतला माँ के मंदिर का छवि-वर्णन

अहे किधिर हइ् बाँस बँसवरिया,
किधिर हइ् केदली बनमा हे ॥१॥
किधिर हइन मइया के मंदिलवा,
देखन हम जायम हे ॥२॥
पुरुब हइन बाँस बँसवरिया,
पच्छिम हइन केदली बनमा म ॥३॥
दखिन हइन सीतल के मंदिलवा,
देखन हम जायम हे ॥४॥
कैसन हइन बाँस बँसवरिया,
कैसन हइन केदली बनमा हे ॥५॥
कैसन हइन मइया के मंदिलवा,
देखन हम जायम हे ॥६॥
हरियर हइन बाँस बँसवरिया,
सीतल हइन केदली बनमा हे ॥७॥
बड़ा सुन्दर मइया के मंदिलवा,
देखन हम जायम हे ॥८॥

१ शरीर। २ कीड़ा विशेष।

टिप्पणी—पूरब की बाँसवारी और पश्चिम के केदली वन से हटकर दक्षिण में माँ शीतला का सुन्दर भव्य मन्दिर है। बाँसों की हरियाली और केदली वन की शीतलता में मंदिर की शोभा अभिवृद्ध हो रही है। मैं उसे देखकर चिर सुख प्राप्त करूँगी।

[४१]

सन्दर्भ—पुत्र विहीना का गंगा जी से करुण निवेदन

गंगा मइया के ऊँची अररिया[१], तिवैया[२] एक रोवल हे ॥ टेक ॥

चुप चुप तिवइ, पटोरवे[३] लोर[४] पोछहु हे।
किए तोरा सासुर दुख, किय तोरा नैहर दुख,
किए तोरा कंत बिदेस हे ॥१॥

नहिं मोरा सासुर दुख, नहिं मोरा नैहर दुख,
नाहि मोरा कंत बिदेस, कोखिए[५] दुख रोविला हे।
सात बलक गंगा मइया देलन, सातों हरि लेलन।
आठवें गरभ तेकरो भरोसा ना हे ॥२॥

चुप चुप तिवइ[६], पटोरवे लोर पोछऽ हे।
अपना के मारब, तोहरो जिलायब हे ॥३॥
नोनमा तेलवा पाई गंगा मइया,
गोदी के बलकवा कैसे पायब हे ॥४॥

टिप्पणी—माँ गंगा के ऊँचे किनारे पर बैठी एक रमणी सिसक सिसक कर रो रही है और अपने छलकते आँसुओं को आँचल की कोर से पोंछती जा रही है। गंगा ने पूछा—प्यारी बहन! चुप रहो, चुप रहो! आँसुओं को पोंछ लो। क्या दुःख है तुम्हें? क्या ससुराल में कुछ दुःख मिला? क्या नैहर में कुछ दुःख मिला? क्या तुम्हारा प्रियतम परदेश गया हुआ है?

रमणी बोली—मुझे ऐसा कोई दुःख नहीं। यदि कोई दुःख है तो यही कि अब तक कोख सूनी है। गंगा मैया ने सात बच्चे दिये और फिर सातों को अपनी गोद में ले लिया। आठवाँ बच्चा मेरे गर्भ में पल रहा है। पर उसका भी क्या भरोसा?

गंगा बोलीं—प्यारी बहन! चुप रहो। आँसुओं को आँचल की कोर से पोंछ लो। मैं अपने बेटे की बलि देकर भी तुम्हारे बच्चे को जिला रक्खूँगी।

रमणी बोली—क्या यह सम्भव है? यदि नून-तेल होता तो वह सहज ही प्राप्य था पर गोद के लाल को खोकर पाना—उफ! कितना कठिन है!

१ अरार। २ स्त्री। ३ कपड़ा। ४ आँसू। ५. सन्तान। ६ स्त्री।

[४२]

सन्दर्भ—गंगा का गांभीर्य

ताबु भीजे ताबु डोर भींजे, मइया भीजै नौ सै लोग,
गगा गहरी भरी ॥१॥

जगतारनी लहर नेवार[1],
गगा गहरी भरी ॥२॥

दइया ठार अनजानु साभू अरज करे, बहुआरो देई[2] लागे पाँव,
गगा गहरी भरी ॥३॥

टिप्पणी—ओ माँ गगे ! तू कितनी गहरी है, कितनी लहरी ? तुममें चचल तरगे उठ रही हैं। वे भव-सागर पार करानेवाली हैं। देवि ! स्वामी तुम्हारे तट पर खड़े तुम्हारी वन्दना कर रहे हैं। मेरा भी प्रणाम लो !

[४३]

सन्दर्भ—गंगा मैया की छवि-महिमा

माथे गगा जी के टिकवा सोभे,
बचवा अजब विराजे गगा मइया,
खेलती चौघटिया[3] ॥१॥

खेलती चौघटिया ओढती ओढनियाँ
पेन्हती पियरिया गगा मइया,
खेलती चोघटिया ॥२॥

नाकी गगा जी के नथिया सोभे,
झुलनी अजब विराजे गगा मइया,
पेन्हती पियरिया ॥३॥

गलो[4] गगा जी के हँसुली सोभे,
सिकरी अजब विराजे गगा मइया,
खेलती चौघटिया ॥४॥

बाँहों गगा जी के बजुआ सोभे,
भविया अजब विराजे गगा मइया।
खेलती चौघटिया ॥५॥

---

१. मेटने वाली। २. बहू। ३. चारों घाट में। ४. गल्ले में।

आँगो[1] गंगा जी के पीरी[2] सोभे,
छपवा अजब बिरगी गगा मइया,
ओढती ओढनिया ॥६॥

इसी प्रकार सभी आभूषणों और अगों के नाम के साथ पंक्तियों की आवृत्ति की जाती है।

टिप्पणी—गगा मैया की माँग पर मंगटीका कितना सुन्दर लगता है! उसमें जड़ी गोटी भी शोभ रही है। वे घाट घाट कलोल करती फिरती हैं। उन्होंने सुन्दर ओढ़नी ओढ़ी है। उन्होंने पीली साड़ी पहनी है। उनकी नाक में नथ बहुत सुन्दर लगती है। उनकी झुलनी की शोभा निराली है। बाँहों पर उन्होंने बाजूबन्द बाँध रखा है। उनका सुन्दर रूप विश्वमगल का सन्देश दे रहा है।

[४४]

सन्दर्भ—देव मन्दिर का माहात्म्य

देवुली[3] के आगे पाछे, नरियर गाछे,
उजे जाफर[4] लागि गेलो, डटहर[5] पान है।
देकुलिया बड़ा सुन्दर ॥१॥

सेही पनमा खाथी कौन देवा
से ही पनमा खाथी परमेसरी देवा,
भींगी गेलइ बतीसो रग दाँत,
देकुलिया बड़ा सुन्दर ॥२॥

से ही मिठिया खाथी कौन बेटी
से ही मिठिया खाथी अनजानु बेटी,
जनमो जनमों अहिवात,
देकुलिया बड़ा सुन्दर ॥३॥

सभी देवताओं के नाम जोड़कर इस गीत की पुनरावृत्ति की जाती है।

टिप्पणी—देव मन्दिर का अद्भुत सौंदर्य है। उसके चतुर्दिक देव-पूजन में व्यवहृत उपादान लगे हैं। कहीं नारियल शोभा पा रहा है, कहीं जाफर! कहीं डंटल युक्त पान-पत्र लहस रहा है। सभी देवगण प्रसन्न चित्त पान खाते हैं। उनकी जूठन भक्त ग्रहण करते हैं। इससे उनके सुप्त सौभाग्य की वृद्धि होती है। धन्य है देव! तुम्हारे मन्दिर की शोभा!

---

१. अंगों में। २. पीत परिधान। ३. देव गृह। ४. एक फल, जो पान के साथ खाया जाता है। ५. डंटल युक्त।

[४५]

सन्दर्भ—भक्तों का देव पूजन

माइ, गंगा जमुनमा केर चिकन मटिया,
ओहि मटिए निपलों रामठाकुर देव के पिढ़िया ॥१॥

ओहि मटिए निपलो बन्दीदेइ के चौरिया।
माइ, नीप लैलो पोत लैलो, परोर लैलो मिनिया।
माइ, जिरवा छन्ने लागल हे सोबरना केमड़िया ॥२॥

माइ, ओहे मटिए निपलों हनुमान जी के चौरा।
माइ, ओहे मटिए निपलों गोरैया देइ क पिढ़िया।
माइ, ओहे मटिए निपलों मनुख देइ के पिढ़िया ॥३॥

माइ नीप लैलों, पोत लैलो, परोर लैलों मिनिया।
माइ, जिरवा छन्ने लागल हे सोबरना केमड़िया ॥४॥

माइ ओहि मटिए निपलों पाँचो देइ के चौरिया।
माइ ओहि मटिए निपलों सब देव के पिढ़िया ॥५॥

माइ नीप लैलों, पोत लैलों, परोर लैला मिनिया।
माइ, जिरवा छन्ने लागल हे सोबरना केमड़िया ॥६॥

टिप्पणी—भक्तों की वृत्ति देव पूजन में है। गंगा यमुना की पवित्र चिकनी मिट्टी से देवस्थान को साज सवार कर भक्त आन्तरिक सुख उपलब्ध करते हैं। आखिर हृदय की अगाध भक्ति का देवार्पण हो कैसे।

[४६]

सन्दर्भ—भक्तों द्वारा सम्पत्ति के लिए देवार्चन

सोने के खड़उआ चढ़ि अयलन बन्दी देव,
हाथ सोबरन केरा साट हे ॥१॥

ओहि साटे मारम भगता, अनजानु भगता,
हमरा पहुरवा[1] देले जाहु हे ॥२॥

आपना पहुरवा देवा हुलसिय लेहु,
हमरा असीसवा देले जाहु हे ॥३॥

सम्पत्ति बाढ़ हे, सम्पत्ति बाढ़ हे,
बाढ़ हे कुल परिवार हे ॥४॥

---

१ समर्पण, भेंट।

गौरैया देव, मानुस देव, छोखा देव और रामठाकुर देव के नाम जोड़ कर इस गीत की पंक्तियाँ दुहराई जाती हैं।

टिप्पणी—भगवान को भक्त से समर्पण चाहिए। प्रेमार्पण चाहिए। भक्त को भगवान से आशीर्वाद चाहिए। सम्पत्ति की वृद्धि हो, कुल परिवार समुन्नत हो—यही भक्त की अशेष कामना है। भगवान् और भक्त दोनों का प्रेम बंधन शाश्वत है।

सझा

[४७]

सन्दर्भ—संध्या पूजन

सझा जे बोलथिन माइ हे, केकरा घरे आयब[1] ॥टेक॥
बोलथिन अनजाने बानू, हमरा घरे आयब[2]।
बहुआरो[3] देई सझा मनौतन ॥१॥
साँझ देतन समौत[4], पराते देतन बाढन[5]।
माइ हे हम अप्पन घरे सझा मनायब ॥२॥

टिप्पणी—संध्या देवी ने पूछा—भला मैं किसके घर जाऊँ? गृहस्वामी ने कहा—मेरे घर। यहाँ बहू आपका आत्मभगत करेगी, उत्सव मनाएगी।

संध्या देवी हमें प्रकाश देंगी। प्रभात की ज्योति हमें वृद्धि प्रदान करेगी। ओ माँ! मेरे घर ही संध्या देवी का उत्सव मनाया जाएगा।

कर्मा-धर्मा[6]

[४८]

सन्दर्भ—बहन द्वारा भाई के कल्याण के लिये व्रत

तोहरा नगर भइया केलवा सहत भेलबऽ।
ले ले अइहऽ हो भइया केलवा सनेसवा ॥१॥
हमरा नगर बहिनो केलवा महग भेलो।
छोड़ि देहु गे बहिनो करमा बरतवा ॥२॥
करमा बरत भइया छोड़लो न जाये।
न छोड़ब हो भइया करमा बरतवा ॥३॥

सभी फलों एवं वस्त्रों के नाम जोड़ कर इस गीत की आवृत्ति की जाती है।

---

१ आऊँगी। २ आइयेगा। ३ बहू। ४. प्रकाश। ५. वृद्धि। ६ यह पर्व भादो महीने में मनाया जाता है।

टिप्पणी—बहन—प्यारे भाई ! तुम्हारे शहर में केला खूब सस्ता मिलता है, लेते आना । वही सदेश होगा मेरे लिए !

भाई—बहन ! मेरे शहर में केला बहुत महगा मिलता है । यह कर्मा-धर्मा छोड़ो !

बहन—प्यारे भाई ! कर्मा धर्मा करना कैसे छोड़ दूँ ? तुम सदेशा दो, न दो बहन चिरकाल तक तुम्हारी कल्याण-कामना तो करती रहेगी !

जितिया[1]

[४९]

सन्दर्भ—गगा का भाई पर स्नेहाधिक्य

कँहवें से आवले लउहर कुमहर देओरा[2] हे गगाजल बहिनी ।
कँहवें से आवले निरधन भाई हे गगाजल बहिनी ॥१॥
पुरुबे से आवले लउहर कुमहर देओरा हे गगाजल बहिनी ।
पछिमें से आवले निरधन भाई हे गगाजल बहिना ॥२॥
कहमें बैठायब लउहर कुमहर देओरा हे गगाजल बहिनी ।
कहमें बैठायब निरधन भाई हे गगाजल बहिना ॥३॥
अगने बैठायब लउहर कुमहर देओरा हे गगाजल बहिनी ।
अँचरे बैठायब निरधन भाई हे गगाजल बहिनी ॥४॥
का ले खिलायब लउहर कुमहर देओरा हे गगाजल बहिनी ।
का ले खिलायब निरधन भाई, हे गगाजल बहिनी ॥५॥
दाल भात खिलैबइ लउहर कुमहर देओरा हे गगाजल बहिनी ।
दूधे साढे पिये निरधन भाई हे गगाजल बहिनी ॥६॥
कँहवाँ सुतैबो लउहर कुमहर देओरा हे गगाजल बहिनी ।
कँहवाँ सुतायब निरधन भाइ हे गगाजल बहिनी ॥७॥
अँगने सुतैबो लउहर कुमहर देओरा हे गगाजल बहिनी ।
अँचरे सुतैबो निरधन भाई हे गगाजल बहिनी ॥८॥
का ले समोधबो लउहर कुमहर देओरा हे गगाजल बहिनी ।
का ले समोधबो निरधन भाई हे गगाजल बहिना ॥९॥
टका ले समोधबो लउहर कुमहर देओरा हे गगाजल बहिना ।
छोटकी ननदिया ले समोधबो निरधन भाई हे गगाजल बहिनी ॥१०॥

---

१ जितिया-व्रत आश्विन में कृष्ण पक्ष अष्टमी को किया जाता है । इस व्रत को पुत्र के मगल के लिए महिलाएँ करती हैं ।

२ देवर ।

घुरी-फिरी तान्ल लउड़र कुसहर देश्रोरा हे गगाजल बहिनों।
घुरियो न ताके निरधन भाई हे गगाजल बहिनों ॥११॥
रोवइत जैतो लउड़र कुसहर देश्रोरा हे गगाजल बहिनों।
हँसइत जैतो निरधन भाई हे गगाजल बहिनों ॥१२॥

टिप्पणी—गगा बहिन ने देवर और भाई के स्वागत में कितनी भी भिन्नता की। पर विवाहित कन्या के लिये नैहर से अधिक ससुराल ही अपना होता है। आदर-सत्कार पाकर भी भाई पलट कर नहीं देखता। पर भाभी से निरादर पाकर भी देवर भाभी की रक्षा अपना पुनीत कर्त्तव्य समझता है।

छठ

[४०]

सन्दर्भ—सूर्यदेव के आगमन की आकुल प्रतीक्षा

आन दिन उटलऽ सुरुज देव भोर भिनुसरवा।
आजु काहे लगौलऽ, सुरुज देव बड़ी देर हे ॥१॥
सगरो बरती ठाढ़ भेलन, लेहु न अरगिया।
सगरो बरती घाट अगोरलन, लेहु न अरघिया।
उगहु सुरुज देव, लेहु न अरघिया ॥२॥

टिप्पणी—सूर्यदेव! और दिन तो आप बड़े सबेरे उठ जाते थे पर आज जागने में इतनी देर क्यों लगा रहे हैं? सारे व्रतधारी एकटक खड़े हो निहार रहे हैं। आकर अर्घ्यांजलि स्वीकार कीजिए। हे सूर्यदेव! शीघ्र दर्शन दीजिए।

छठ

[४१]

सन्दर्भ—जगतारण नाव की अर्चना

काहे केर नैया रे मलहा, कथिए करुवार[1]।
कथिए भरल रे मलहा, नैया केर माँग ॥१॥
सोने के नैया रे मलहा, रूपे करुवार।
इगुर[2] भरल रे मलहा नैया केर माँग ॥२॥
कथिए बोमल रे मलहा, नैया गमस्त रे जाय।
केलये बोमल रे मलहा, नैया गमस्त रे जाय ॥३॥

---

१ नाव के पाद का पिछला हिस्सा। २ सिन्दुर।

मुपवे बोझाय रे मलहा, नैया गमकत रे जाय।
काहे केर नैया

सभी फलो का नाम लेकर इस गीत को गाया जाता है।

टिप्पणी—ओ नाविक! तुम्हारी नाव किस चीज की बनी है और उसकी करुवार किस चीज की? फिर नाव में कौन सी चीज भरी है? ओ पूछनेवाले! नाव सोने की है और करुवार रूपा की। नाव में सिन्दूर भरा है। उस पर केला लादा हुआ है। वह सुवास फैला रहा है और नाव मन्द मन्द तिर रही है।

[४२]

सन्दर्भ—ब्रह्म स्वरूप की जिज्ञासा

साधो लोक से पराइ, गुन गाइ गाइ बहुरी न आयर एना।

कपरे बले विषया में, लग्गइ पेमल मनमा,
कउन जे डुलकावे, उत्तम जेड़ी में परनामा।

ककरे बले अकुरइ, कठ में बचनमा,
कउन देव देलक मोरा कान अउ नयनमा।

कनमों के कान, साधो, मनमो के मनमा,
बचनों के बाक से, उ परनमों के परनमा।

अँखियो के आँख, भिन्न भिन्न रूप धारी,
ओकरे प्रतापे ओही मे रहे सनचारी।

साधो, ओकरे दरश ओट टारी जीवन, मुकुती पवाइ एना॥

टिप्पणी—साधो! लोक से परे जो एक अनिर्वचनीय सत्ता वर्तमान है, उसका बार-बार गुणगान करो ताकि घूमफिर कर इस लोक में न आना पड़े। अहा! कौन है वह, जो विषय-सभोग में मन को उत्प्रेरित करता है? कौन है वह, जो दम्पति युगल मे गुणों का सचार करता है? किसके बल से कठ से बोली फूटा करती है? किसने हम सब को सुनने को कान और देखने को आँखें दी हैं? कौन वाणी की भी वाणी है? कौन प्राणों को भी धारण करनेवाला प्राणरूप है? कौन इन नयनों को ज्योति प्रदान करनेवाला नयनस्वरूप है? कौन इन भिन्न-भिन्न कोटिरूपों में दृश्यमान हो रहा है? किसका प्रताप इस सृष्टि के रूप में विकास पाकर फिर उसी म सिमट जा रहा है? साधो! वह एक ही है बस एक! उसीका ज्ञान चक्षुओं से दर्शन पाकर इस भौतिक जीवन से—आवागमन के बधन से—छुटकारा पाया जा सकता है?

[४३]

सन्दर्भ—विश्व प्रांगण में प्रेयसी जीवात्मा और प्रियतम ब्रह्म का सद्भाव

सतगुरु पियवा हो, हमर सुन्नर वर गंगा जमुनवा के धार हे।
अरे सुरत के डोरिया गगन बीचे लागल, लागल पिया से सनेह हे।
अरे मन मोर रसलन पिया रंगरसिया हे पूरब जनमिया के नेह हे।
एक सखि पूछ हइ पिया के सनेहिया हे दोसर रे पूछई सतभाव हे।
कउन रंग हयुन तोहर पियवा हे सखिया सचेसच देहु न बताइ हे।
जे सखी रमलइ से ही बतलावे दोसर जानइ न भेद हे।
अनरूप हइ सखि का पिया के मनरुप हइ पिया के रंग हे।
हम आउर पिया रहली लाली पलंगिया पुरूब जनम के नेह हे।
जब जब अरे सखी आलस आवइ तब पिया देथीन जगाइ हे।

टिप्पणी—सत्यरूप यह विश्वगुरु ही मेरा प्रियतम है। वह गंगा यमुना की धार की नाईं पावन एवं स्नेह-भरा है। उसके सौन्दर्य की किरणें रेशमी डोरों की नाईं आकाश की छाया में भूल रही हैं और मुझ (जीवात्मा) को उनके साथ एक बधन में बाँधे हैं। वह मुझे बहुत मानता है। उससे मेरा जनम-जनम का नाता है। वह मुझे कभी नहीं भूलता। मेरे मान की सदा रक्षा करता है। मेरी सखियाँ (अन्य जीवात्माएँ) उसके बारे में जानना चाहती हैं। एक सखी पूछती है—आली! तुम्हारा प्रियतम तुमसे स्नेह करता है या नहीं! दूसरी सखी पूछती है—आली! वह कैसे विचार रखता है? कैसा है उसका रूप-रंग? देखो सच-सच बताना। पर मैं क्या बताऊँ? कैसे बताऊँ? अरे, उसके बारे में तो वही बता सकती है, जिसने उसके साथ खूब घुलमिलकर संयोग किया हो। भला, दूसरे को क्या पता? हे सखी! मेरे प्रियतम का स्वरूप अनिर्वचनीय है और उसका वर्ण! वह तो अपने मन में जैसा सोच लो फिर वैसा ही नजर आता है। मैं अपने प्रियतम के साथ लाल रंग के पलंग (अनुराग और मोहमयी सृष्टि पर कहा गया रूपक) पर रास करती रही। आखिर हमारा जनम जनम का नाता जो ठहरा। सखी जब-जब मैं अलसा जाती हूँ (माया के पाश में बँध जाती हूँ) तब-तब मेरा प्रियतम मुझे जगा दिया करता है (अन्तःकरण से प्रबोध करता है)।

७. विविध गीत

झूमर

(४४)

सन्दर्भ—विरहिणी की विषम वेदना

पोखर के पका पुरइनिया डोले, अब पिया डोले रे मनवाँ,
तोहर भइया रे बिनु ॥१॥

माँगो के टिकवा सेहु भला तेजम, पिया नहिं तेजम हे ननदो,
तोहर भइया रे बिनु ॥
पीपर के पतवा फुलुगिया डोले, अब जिया डोले रे ननदो,
तोहर भइया रे बिनु ॥२॥
नाको के नथिया सेहु भला तेजम, पिया नहिं तेजम रे ननदो,
तोहर भइया रे बिनु ॥
पीपर के पतवा फुलुगिया डोले, अब जिया डोले रे ननदो,
तोहर भइया रे बिनु ॥३॥

टिप्पणी—विरहिणी के प्राण पीपल के पत्ते की नाईं काँप रहे हैं। भला प्रिय के सम्मुख तुच्छ आभूषणों का क्या मोल ! वह मगटीका तज सकती है। नाक का आभूषण भी त्याग सकती है। पर प्रियतम को कैसे तजे ! प्रिय के बिना तो अब विरहिणी के दिन भी नहीं कट रहे हैं।

झूमर पूर्वी

(५५)

सन्दर्भ—आभूषण खोने पर गोरी की आशंका

तिसिया के तेलवा में मथवा बथौली राम,
लटियाइए गेलइ ना।
हम्मर लाबी लाबी केसिया, लटियाइए गेलइ ना ॥१॥
माथा मैंजे गेलि राभा, बाबा के पोखरिया,
भुलाइए गेलइ ना।
हमरा नाक के बेसरिया, भुलाइए गेलइ ना ॥२॥
गोड़ लागी, पैंया पड़ूँ, मैया हो मलहवा,
से खोजिए देहु ना।
हमरा नाक के बेसरिया, से खोजिए देहु ना ॥३॥
हमरा खोजिये नाहिं लैबऽ मलहा,
से रिसियाइए जइहें ना।
हम्मर ननदो के भइया, रिसियाइए जइहें ना ॥४॥

टिप्पणी—नायिका अपने लम्बे-लटियाये केशों को धोने बाबा के पोखरे पर गई क्या कि सौभाग्य चिह्न नकबेसर ही खो बैठी। फिर प्रिय प्रेम के भरोसे दिन काटने वाली वह शंकाकुल क्यों न हो ! पारिवारिक जीवन में सोना खोना—यों ही अशुभ है, उस पर भी नकबेसर का खोना—जो सौन्दर्य और सौभाग्य का प्रतीक है ! वह सब सह सकती है, पर प्रिय की रीस नहीं। मामी नकबेसर खोज कर उसे आशंका-मुक्त कर दे, तो कितना उपकार हो !

झूमर

[४६]

सन्दर्भ—परदेश जाते पति द्वारा पत्नी का मनुहार

भोर भेलइ हे पिया मिनसरवा भेलइ हे,
उठु न पलगिया से कोइलिया बोलइ ना ॥१॥

कोइलिया बोलइ ने धनिया कोइलिया बोलइ ना,
देहि ना पगड़िया हम कलकतवा जैबइ ना ॥२॥

कलकतवा जैबऽ हो पिया, कलकतवा जैबऽ ना,
बाबा के बोला के हम नैहरवा जैबइ ना ॥३॥

नैहरवा जैबऽ हे धनिया नैहरवा जैबऽ ना,
हमरा लग्गल हइ रुपइया, चुका के जैहऽ ना ॥४॥

चुकाइ देबइ हो पिया, चुकाइये देबइ ना,
जैसन बाबा घर के हलिअइ ओयसन बनाइ देहु ना ॥५॥

बनाय देबउ गे धनिया बनाइए देबउ ना,
मोतीचुर के लड्डुआ खिलाइए देबउ ना ॥६॥

हम नहिए बनबइ हो पिया, हम नहिए बनबइ हो,
जैसन बाबा घर के हलिअइ, ओयसन नहिंए बनबइ ना ॥७॥

टिप्पणी—भोर-मिनसार की मनोहर वेला ! उस पर कोयल की मीठी सुरीली रागिनी ! ऐसे मधुर काल में निष्ठुर प्रिय की विदेश-यात्रा प्रिया को रुष्ट कर दे, तो अचरज क्या ! पति परदेश जायेगा, तो मानिनी नैहर जायेगी । रूठी पत्नी को चिढ़ाते हुए पति ने कहा—नैहर जानी हो सही, पर अपने पर खर्च किये हुए रुपये लौटाती जाना । मानिनी ने चुकता जवाब दिया—हाँ, हाँ चुका कर जाऊँगी, पर तुम्हें भी मेरा कौमार्य लौटा देना होगा । निरुत्तर पति ने मनुहार किया—हाँ, लौटा दूँगा और मोतीचूर के लड्डू खिला कर तुम्हें मना भी लूँगा । प्रिया ने कहा—यह सब ठीक है पर नैहर से जैसी आई थी, वैसी कभी न बना सकोगे, प्रिय !

झूमर

[४७]

सन्दर्भ—नन्दोसी की उपेक्षा पर भावज की आकुलता

सोने के झाड़ी, गंगा जल पानी, गोड़वा न धोवे ननदोइया,
बलमु अगनइया में सो रहल जी ।
आवे लहर जमुना के बलमु अगनइया में सो रहल जी ॥१॥

सोने के थाली मे मेवा-मखाना, जेवना न जेमें ननदोइया,
बलमु अगनइया में सो रहल जी।
आवे लहर जमुना के बलमु अगनइया में सो रहल जी ॥२॥
लौंग इलायची के बिरवा लगाया, बिरवा न चाभे ननदोइया,
बलमु अगनइया मे सो रहल जी।
आवे लहर जमुना के बलमु अगनइया मे सो रहल जी ॥३॥
फूल नेवार सुख सेज बनाया, सेजिया न सोवे ननदोइया,
बलमु अगनइया मे सो रहल जी ॥४॥

टिप्पणी—चिन्तातुर सरहज अपने पति की गहरी नींद से खुब्ध हो रही है। उसका नन्दोई बड़ा मानी है। उसने सोने की झारी में गंगा जल दिया, पर वह पैर नहीं धोता। *स्वर्ण थाल मे मेवा मिष्टान परोसा, पर खाता नहीं। लौंग इलायची का बीड़ा लगाया,* पर वह पान नहीं चबाता। इतना ही नहीं फूल नेवार की सुख सेज लगायी, पर वह सोता तक नहीं। उस पर उसका पति सुख नींद में पड़ा है।

झूमर

[५८]

सन्दर्भ—देवर-भाभी का हास-परिहास

नैनों में भाभी भनवा बेनिया डोलाय लाल,
गुलों मे मुनहर[1] भरवा बेढ़वा लगाय लाल ॥१॥
नैनो मे पातल पनमा, बिरवा लगाय लाल,
दाँत मोमे हीरा मोती देवरा लोभाय लाल ॥२॥
खिरकी के ओते[2] देओरा मारे निसान लाल,
बाबा कचहरिया हम तो देवे बधाय लाल ॥३॥
जब तोहि एहे भौजो देवऽ बधाय लाल,
गोमल[3] पैंमवा हम देवो लुटाय लाल ॥४॥

टिप्पणी—*भावज ने भोजन कर पान का बीड़ा मुँह में रखा।* वह घर में सोने चली गई। पान की लाली में उसके सफेद दाँत हीरा मोती से चमक रहे थे। उसका देवर ललचायी नजरों से उसकी शोभा निरखने लगा। भाभी ने कहा—ओ देवर! यों न देखो, बाबा की कचहरी मे मुजरिम बना कर खड़ा कर दूँगी। शोख देवर ने कहा—तो मैं छिपा धन लुटा कर बच लूँगा। चिन्ता न करो मेरी सुन्दर भाभी!

---

१. बड़ा। २ ओट। ३ छिपा हुआ।

झूमर

[५६]

सन्दर्भ—वधू की लालसा

सइयाँ न भेजे तरकारी, हमार मन कटहर पर ॥टेक॥
कहते सुनते सइयाँ भजे तरकारी, सासु न काटे तरकारी,
हमार मन कटहर पर ॥ १ ॥
कहते सुनते सासु काटे तरकारी, गोतिनी न छौंक तरकारी,
हमार मन कटहर पर ॥ २ ॥
कहते सुनते गोतिनी छौंके तरकारी, ननदी न पीसे मसाला,
हमार मन कटहर पर ॥ ३ ॥
कहते सुनते ननदी पीसे मसाला, गोतिनी के जारे तरकारी,
हमार मन कटहर पर ॥ ४ ॥
देबो गंगा मइया इयरी पियरिया, सासु के ले जा दहाइ,
हमार मन कटहर पर ॥ ५ ॥
देबो गंगा मइया ठेकुआ कसरवा, गोतिनी से कर दऽ जुदाई,
हमार मन कटहर पर ॥ ६ ॥
देबउ रे चोरवा दुनो कान सोनमा, ननदी के ले जो चोराई,
हमार मन कटहर पर ॥ ७ ॥

टिप्पणी—वधू ससुराल में अपनी लालसा कैसे व्यक्त करे। कब से उसका मन कटहल पर अँटका है, पर उसका स्वामी लाता नहीं। बहुत प्रार्थना करने पर वह लाया भी, तो सास काटती नहीं, गोतिनी छौंकती नहीं, ननद मसाला पीसती नहीं। प्रार्थना करने पर जब यह सब हुआ, तो गोतिनी तरकारी ही जला बैठी। अब तो उसका गंगा मैया से निवेदन है कि सास को अपनी गोद में समेट लें और गोतिनी से जुदाई करा दें। ननद को यदि चोर ले जाये, तो दहेज में वह सोना भी दे दे।

विरहा

[६०]

सन्दर्भ—नववधू की अन्तर्व्यथा

पिया पिया रटि के पियर भेलइ देहिया,
लोगवा कहइ कि पाडु रोग।
गौंवा के लोगवा मरमियों न जानइ,
भेलइ न गवनोंमा मोर ॥

टिप्पणी—हिंदर की भाँति पीर्ज रट कर नववधू पीली पड़ गई, तो लोग पांडु रोग कहते हैं। क्यों नहीं वे उसकी मर्म व्यथा समझते कि वह प्रिय मिलन के लिए आतुर है।

विरहा

[६१]

सन्दर्भ—नैसर्गिक प्रेम

नन्हेंपन से भौजी लगलइ पिरितिया,
टूट के बोलल तो नहिं जाये।
हमरा तोहरा छुटवइ पिरितिया कब भौजी,
कि दुइ में एक तो मरि जाये ॥

टिप्पणी—बालपन की प्रीत टूटे तो कैसे ! मुख से कठोर वचन निकले तो किस प्रकार ! इस नैसर्गिक प्रेम को तो केवल काल ही विच्छिन्न कर सकता है, जगत् नहीं !

बिरहा

[६२]

सन्दर्भ—परिवर्तन

आज पवनसुत अगना न बहारलन,
इन्दर जल न भरे जाये।
लछमी सरसती धान न कूटे,
रानी मदोदर रोये ॥

टिप्पणी—आज रावण का प्रताप न रहा, तो रानी मदोदरी को कौन पूछे ! अब न पवनसुत आँगन बहारते हैं, न इन्द्र पानी भरते हैं और न लक्ष्मी-सरस्वती धान कूटती हैं ! इस दुर्दिन पर रानी मंदोदरी रो रही है।

बिरहा

[६३]

सन्दर्भ—प्रभात-पूजन

भोरवा पहर हइ धरम के बेलवा,
सखी सब करइ गंगा असनान।
मिसिया से जल महादे पर चढ़ौलन,
सखियन सब माँगे बरदान ॥

टिप्पणी—प्रभात की मंगल वेला में सब सखियाँ गंगा स्नान कर धर्म कमा रही हैं। कल्याणमूर्ति शिव पर जल चढ़ा कर वे वरदान माँग रही हैं।

बिरहा

[६४]

सन्दर्भ—मांझी का दुर्भाग्य

उमड़ते आवे बूढ़ी तो गंगा मइया,
कटते में आवइ कछार।
रोवते में आवइ मलहवा के छोकड़ा,
नैया डूबल बीचे धार॥

टिप्पणी—गंगा में बाढ़ क्या आई कि मांझी-पुत्र का भाग्य ही लुट गया। उसकी एकमात्र पूँजी नाव गंगा के गर्भ में समा गई। अपने दुर्भाग्य पर वह आँसू बरसा रहा है।

बिरहा

[६५]

सन्दर्भ—सत्य पालन का माहात्म्य

मिट्टी पुजला से भाई देवता न मिलिहैं,
पत्थल पुजला से न भगवान।
मक्का जाइ खोदा नहिं मिलिहैं,
पक्का रखउ ईमान॥

टिप्पणी—मिट्टी पूजने से देवता नहीं मिलते और न पत्थर पूजने से भगवान मिलते हैं। मक्का जाने से खुदा भी नहीं मिल सकते। ईमान पक्का रखने से सारी सिद्धियाँ मिलती हैं।

बिरहा

[६६]

सन्दर्भ—कार्य कारण के संबंध की अनिवार्यता

बिन बदरा के भाइ बरखा न बरसइ,
बिना सुरुज के न उगइ घाम।
बिन पुरुषा के लरिका मेलइ,
देखेला मागइ तो भगवान॥

टिप्पणी—बिना बादल के वर्षा नहीं और बिना सूर्य के धूप नहीं। यदि बिना पुरुष के बालक उत्पन्न हो तो इसके सत्यासत्य का निर्णय तो भगवान ही कर सकते हैं।

बिरहा

[६७]

सन्दर्भ—वन्ध्या की सन्तान कामना

चिडियाँ बिआए चिरमुनियाँ,
गंगा मइया तो बिआये रेत।
उरहुर के फुलवा चढ़ैवइ देवी मइया
बाँझि के अँचरवा देव॥

टिप्पणी—सृष्टि में प्रजनन की आकांक्षा स्वाभाविक है। चिड़िया बच्चे उत्पन्न करके चहकती है। गंगा रेत उत्पन्न करके हर्ष अनुभव करती है। फिर इस बंध्या को ही अभिशाप क्यों? यदि उसकी भी गोद भर जाये, तो वह उरहुर के फूल देवी मइया पर चढ़ा कर कृतज्ञता व्यक्त करेगी।

कजरी

[६८]

सन्दर्भ—प्रोषित पतिका को आश्वासन

हिंडोलवा लागल हइ कदमवाँ भौजो चलहु झूले ना।
पियवा सावन में बिदेसवा ननदो हिंडोलवा भावे ना॥१॥
आवइ पानी के छिटकवा, भौजो जियरा हुलसे ना।
मनमा कुहुँके है ननदिया, सैंया पतिया भेजे ना॥२॥
लागइ सावन के कुहरवा भौजो, पपीहा बोलइ ना।
बुंदवा लागइ मोरा तनमा, जिया मोरा झुलसइ ना॥३॥
अगहन के महिनमा भौजो मोर भइया अइहें ना।
फिरी फिरी बहऽ हइ रे पवनमा भौजो चलहु—झूले ना॥४॥

टिप्पणी—ननद हिंडोले पर झूल रही है और भावज चिन्ता के दोले पर! फिर फिर बहती हवा और सावन की सुखद फुहारें ननद के हृदय में उल्लास भर रही हैं और भावज के हृदय में सिहरन! विरहिणी भावज को ननद रह-रह कर आश्वासन दे रही है।

कजरी

[६९]

सन्दर्भ—विरहणी की मनोवेदना

रामा गरजइ कारा बदरा, झर झर मेहा बरसइ ना।
रामा बन में बोलइ कोइलिया, मोरा मनवा तरसइ ना॥१॥

रामा पापी पपीहा बोलई, मोरा जियरा डोलइ ना।
रामा भींजइ मोर चुंदरिया, बदरा झमझम बरसइ ना ॥२॥
रामा चमचम चमकइ बिजुलिया, मेरा मनवा डरपइ ना।
रामा सनसन चलइ पवनमा, मोरा तनमा काँपइ ना ॥३॥

टिप्पणी—विरहिणी, काले बादलों का गरजना और मेहा की झम झम वर्षा से काँप काँप उठती है। कोयल अपने पञ्चम स्वर से उसके मन में कामना जगा रही है। पपीहा की 'पी—कहाँ!' का रट उसके हृदय को विकल कर रही है। बिजली की चमक उसे डरपा रही है। सनसन बहता पवन उसके तन में सिरहन पैदा कर रहा है।

गोदना

[७०]

सन्दर्भ—सौभाग्यवती का श्रृंगार गोदना

पटना सहरिया से चललइ गोदहारिन,
कोइ सामर गोदना रे गोदाय ॥१॥
गलिये रे गलिये रेविया अलापै,
कौनि सावर गोदना रे गोदाय ॥२॥
अप्पन महलिया से निकलइ सुन्दरिया,
हम सामर गोदना रे गोदाम ॥३॥
अपना महलिया से ऐलन तिरियवा,
बिहँसि सासु बोले, पुतहु गोदना रे गोदाय ॥४॥
नहिं हम सासु गोदना रे गोदाम,
छोटकी ननदिया ओलखन दीहैं रे जान ॥५॥
नहिरा गादेवइ सासु, बनवइ सोहागिन,
तोरे रे घरवा बालक खेलैवइ रे जान ॥६॥

टिप्पणी—पटने की प्रसिद्ध गोदने वाली गली-गली राग अलाप रही है। सास की आकांक्षा है कि वधू गोदना गोदा ले। पर वधू गोदाय तो कैसे! छोटी ननद पीछे जो लगी है! अतः वह मायके में गोदना गोदा कर सोहागिन बनेगी, क्योंकि वहाँ ननद के उलाहने का भय न होगा।

लहचारी[1]

[७१]

सन्दर्भ— भावज का देवर से अनुराग

छोटी-मोटी कुइयाँ, पताल बसे पनियाँ।
मोर देवरवा हो, जरी डोरिया टऽ बढ़ाय ॥१॥

---
१ नृत्यगीत।

पनियाँ के भरल हम गगरिया जे रखली।
मोर देवरबा हो, सिर पर गगरिया दऽ उठाय ॥२॥
सिरवा पर ले ली हम, पानी के गगरिया।
मोर देवरबा हो, हाथ में डोरिया दऽ थमाय ॥३॥
हथवा में ले ली हम उबहन डोलबा।
मोर देवरबा हो, गोग घरवा दऽ पहुँचाय ॥४॥
घरवा पर गेलन मोरा लहुरा देवरबा।
मोर देवरबा हो, तनि गगरिया दऽ उतार ॥५॥

टिप्पणी—अनुरक्त भाभी ने कहा—'प्रिय देवर पानी भरना है, रस्सी ला दो। अब घड़ा भर गया, जरा सिर पर उठा देना। फिर मैं राह में अकेले कैसे जाऊँगी, घर पहुँचा दो।' प्यारा देवर घर पहुँचाने गया तो भाभी उससे घड़ा उतारने का आग्रह करती है। इस तरह वह देवर के प्रति अनुराग व्यंजित कर रही है।

८. बालगीत

लोरी

[७२]

चान[1] मामू, चान मामू हँसुआ दऽ।
से हँसुआ काहे ला? खरइ कटावे ला॥
से खरइ काहे ला? बगना छवावे ला।
से बगना काहे ला? गोरुआ दुरावे ला॥
से गोरुआ काहे ला? चोतवा पुरावे ला।
से चोतवा काहे ला? अगना निपावे ला॥
से अगना काहे ला? गेहुमाँ सुखावे ला।
से गेहुमा काहे ला? मैदा पिसावे ला॥
से मैदा काहे ला? पुरिया पकावे ला।
से पुरिया काहे ला? भउजी के खाये ला॥
से भउजी काहे ला? बटवा बियाये ला।
से बेटवा काहे ला? गुल्ली टार खेले ला॥
गुल्ली टार टूट गेल, बउआ रूस गेल॥

टिप्पणी—यह लोरी है। छेड़ियाये (रोते) बालक को सुलाने की चेष्टा के साथ माताएँ इस गीत को गाती हैं। शिशु को सुलाने के लिये उसे कंधे पर लेकर माँ आँगन और दालान में घूमती जाती है और माथे तथा पीठ पर दुलार-भरी थपकियाँ देती जाती

[1] चंदा।

है। समस्त क्रिया के साथ माँ मधुर स्वर में गीत की पंक्तियाँ गाती जाती है। चंदा मामा से हँसुआ माँगने के बहाने बालक जीवन की अनेक वस्तुओं के नाम और उनके उपयोग सीख लेता है।

[७३]

बउरा रे तूँ कत्थी के? बँसरी के दुसुआ[1] के।
चोआ चनन के पुरिया के, भइया हउ लवगिया[2] के,
बाबू जी जफरवा[3] के, फुआ हउ इलइचिया के,
आजी आजी अम्मर के, पितिया पितम्मर के,
पत पितिअइनिया तम्मा[4] के, हम खेलौनिया सोना के॥

टिप्पणी—शिशु की प्यारी परिचारिका इस प्यार गीत से अपने नन्हे मुन्ने में अपने प्रति आस्था ही नहीं भर लेता, बल्कि उसे सुला भी देती है। उसकी मधुर थपकियाँ, कोमल कंठ और प्यारी गोद शिशु को आनन्द निमग्न कर देती है। क्रमशः बालक की पलकें झपने लगती हैं, और फिर वह पूर्णतया निद्रा देवी की गोद में चला जाता है।

[७४]

आरे आवऽ, बारे आवऽ, नदिया किछारे आवऽ।
सोना के कटोरी में, दुधा भत्ता ले ले आवऽ।
बउआ खाये दुध भतवा, चिरइयाँ चाटे पतवा॥

टिप्पणी—यह बच्चों को खेलाने और सुलाने की प्यारी लोरी है।

[७५]

एक तरेगन, दू तरेगन, तरेगना मामू हो॥
अपने लैलऽमँगा मछरिया, हमरा देलऽकाँट।
अब ना जैबो तोहरा दुहरिया, टप टप झरतो लोर।
एक तरेगन, दू तरेगन तरेगना मामू हो॥

टिप्पणी—चाँद-तारों से मामा का नाता जोड़ कर शिशु फूला नहीं समाता। माँ, शिशु के इस प्रेम भाव का उपयोग कर सदा उसे ठगती रही है। तरेगना मामू से मीठी कलह करते-करते वह सुन्दर स्वप्न-लोक में चला जाता है।

[७६]

आओ गे सुदतुदा चिरइयाँ, अडा पार-पार जो।
तोरे अडे आग लगउ, बउआ सुतौले जो॥
आधा रोटी रोज देबउ टिक्री महिन्ना॥
आओ गे सुदतुदी चिरइयाँ अडा पार-पार जो॥

टिप्पणी—शिशु प्रकृति के जीव जन्तुओं से प्रेम और सेवा लेना माना अपना अधिकार ही समझता है। इसीसे सुदतुदी चिड़िया की प्यारी चाकरी उसे बड़ी मीठी नींद से भर देती है।

मनोरंजन गीत

[७७]

अटकन मटकन दही चटाकन
बड़ फूले बरैला फूले, सावन मास करैला फूले,
बाबा जी के बारी है, फूले के फुलवारी है,
हे बेटी तूँ गंगे जाव, गंगे से कसैली लाव,
पके पके हम खाऊँ, कचे कचे नेउर, †
नेउर गेल चोरी, बसुला कटोरी,
घर खान ममोरी।

टिप्पणी—इस गीत को बच्चे खेलते हुए गाते हैं। प्राय पाँच छ बच्चे वृत्ताकार बैठ जाते हैं और अपनी हथेलियाँ जमीन पर पट करके बिछाते हैं। उनमें से एक खिलाड़ी तर्जनी से अपनी हथेली का स्पर्श करते हुए इस गीत को प्रारम्भ करता है और प्रत्येक शब्द के उच्चारण के साथ शेष खेलाड़ियों में से हरएक को हथेली छूता चला जाता है। जिस लड़के की हथेली पर गीत का अन्तिम शब्द समाप्त होता है, उसे खेल से पृथक कर दिया जाता है। खेल के अन्त में जो खेलाड़ी बच जाता है, वही विजेता होता है।

[७८]

तार काटे, तरकुन काटे, काटे रे, बरखाजा
हाथी पर के घुघरू चमक चले राजा॥
राजा के रसइया है, मइया के दोलइया,
हींच मारो, खींच मारो, मुसरि छुपइहा॥

टिप्पणी—बालक अपने एक खेल विशेष में इस गीत को गाते हैं। इस खेल में पाँच,-छ बालक खुली जगह में बैठ जाते हैं। उनमें मोर (प्रधान) खिलाड़ी अपनी टाँग पसार कर अँगूठों को सीधा खड़ा करता है। इसके बाद अन्य बालक, उसके अँगूठे पर हाथ की मुट्ठियों को अँगूठा ऊँचा करके रखते जाते हैं। जब कई बालक इस प्रकार मुट्ठी रख लेते हैं, तब अन्त में मोर खिलाड़ी अपनी मुट्ठी बाँध कर सबसे ऊपर रखता है। फिर अपने दूसरे हाथ की हथेली को तलवार बनाता है। वह इस गीत की पंक्तियों को गाता जाता है और हथेली की तलवार की धार से सभी खेलाड़ियों को रखी हुई मुट्ठी पर एक के बाद एक में मार कर काटता जाता है।

---

† कहीं-कहीं निम्नांकित पाठ भी मिलता है—

पके-पके हम खाऊँ, कच्चे कच्चे तूँ खा,
उठ बेटी कटोरिया।

[७६]

घुघुआ मनेरिया, अरवा चाउ के ढेरिया,
बउआ खाये दुध-मलवा, बिलइया चाटे पतवा,
पतवा उडियाल जाये, बिलइया रगेदले जाये,
नया भित्ति उढल जाये, पुरान भित्ति टहल जाये,
देख गे बुढिया माई, बरतन जल्दी से हटाओ।
तेल में गिरबऽ कि घीउ में?
फूल मे गिरबऽ कि काँटा में?

टिप्पणी—बच्चों को मन बहलाने के लिये बड़े इस गीत को गाते हैं। पहले वे चित्त लेट जाते हैं। फिर अपने पैरों को वे घुटने-मुड़े बैठने की दशा में मोड़ लेते हैं और अपने दोनों मुड़े पंजों पर बच्चे को बैठने का इशारा करते हैं। बच्चे के बैठने के साथ ही वे गीत शुरू करते हैं और गीत की प्रत्येक अर्धाली (जैसे 'घुघुया मनेरिया') के साथ ही एक पेंग पूरा हो जाता है। गीत की अंतिम पंक्ति प्रश्नवाचक होती है। प्रश्न करने के पहले वह बालक को बता देता है कि इस ओर तेल है, उस ओर घी या इस ओर काँटा है, उस ओर फूल। बालक घी और फूल की दिशा में गिरने की इच्छा प्रकट कर अपनी विजय मानता है। और उस दिशा में गिरने पर खुशी से फूल उठता है।

पहाड़ा गीत

[८०]

गन फकीरा राम, तो रामजी के नाम।
गन फकीरा दू, तो दूजे के चाद।
" " तीन, " तीनों तिरलोक।
" " चार, " चारो पहर।
" " पाँच, " पाँचो पाडव।
" " छओ, " छओ के छट्ठी।
" " सात, " सातो दीप।
" " आठ, " आठो भुजा।
" " नओ, " नवो नौरतन।
" " दस, " दसो दिशा।
" " इगारह, " इगारहो एकादसी।
" " बारह, " बारहो बरगी।

टिप्पणी--गिनती प्रारंभ करने वाले बच्चों को सिखाने के लिये यह एक सुन्दर साधन है। एक ओर इसके माध्यम से बच्चे जहाँ गिनती सीखते हैं, वहीं राम, पाडव, त्रिलोक आदि शब्दों से भी परिचित होते जाते हैं। कहने की अपेक्षा नहीं कि ये शब्द बच्चों में सांस्कृतिक संस्कार जगाने में पूरा योगदान करते हैं।

[८१]

आविला आविला, तबला बजाविला।
तबला में पैसा, लाल बगइचा।
लाल बगइचा, लाल बगइचा ॥

टिप्पणी-- कबड्डी के खेल में एक दल का खिलाड़ी डुंडे (Post line) को पार कर, विरोधी दल में इन पंक्तियों को बिना साँस तोड़े ध्वनित करता हुआ घुस जाता है और उसके खेलाड़ियों को स्पर्श करने का प्रयत्न करता है। इस प्रकार यदि बिना पकड़ाये हुए वह अपने किले में लौट आता है, तो वह विजयी होता है। विरोधी दल में वह जिस-जिस का स्पर्श कर लेता है, वह स्पर्शागत खिलाड़ी मरा हुआ समझा जाता है। यदि वह खुद विरोधी दल में पकड़ा जाता है और उसकी साँस टूट जाती है, तो वह खुद ही मर जाता है।

चकचन्दा[1] के गीत

[८२]

सोने के कटोरी में लड्डू भरल भाई लड्डू भरल ॥
उठS गनेस जी भोजन करS
भोजन करके दीहS असीस,
'जियो रे चटिया लाख बरीस ॥' १ ॥

---

१ भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को 'गणेश-चतुर्थी' की संज्ञा दी जाती है, क्योंकि इसी दिन गणेशजी का जन्म हुआ था। गणेश जी देवताओं के नायक माने जाते हैं, इसलिए सभी मांगलिक कार्यों के आरंभ में गणेश-पूजा की जाती है। गणेश चतुर्थी के दिन अभी भी पाठशालाओं में धूमधाम से गणेशजी की पूजा होती है। पूजोपरान्त पाठशाला के छात्रगण विशिष्ट गान के साथ 'गुल्ली डंटा' का खेल खेलते हैं। ये खेलते हुए, गुरु जी के साथ प्रत्येक छात्र के घर जा जाकर गुरु-दक्षिणा में भिन्न भिन्न वस्तु उपलब्ध करते हैं। इस उत्सव को लोकभाषा में 'चकचन्दा' और उस अवसर पर गाये जाने वाले गीत को 'चकचन्दा के गीत' कहते हैं।

'गुल्ली डंडा' एक खेल भी होता है, पर यहाँ उससे तात्पर्य नहीं। इस उत्सव में वस्तुतः दो छोटे एवं रंग-बिरंगे डंडे होते हैं, गुल्ली नहीं। गुरु के साथ चकचन्दा में निकले शिष्य अपने दोनों डंडों को इस प्रकार टकराते चलते हैं कि समरसता के कारण एक मधुर संगीत की सृष्टि हो जाती है।

लाय लूप दू टाट मगौली,
दिल्ली से गजमोट मगौली,
तूँ रे दिलिया आली कोस
मार बहादुर पटेला चोट ॥ २ ॥
पटेला चोट के आदम सौं
आदम सौं चलावे तीर,
नौ से डटा छौ से तीर ॥३॥
एक तीर हम माँग ले ली
सिरी गनेस जी के नाम ले ली ॥४॥

टिप्पणी—चकचन्दा के नायक गणेशजी की प्रशस्ति से यह गीत आरंभ होता है। बालक इसी से इस दिन 'गुल्ली डण्डा' का खेल आरंभ करते हैं।

[८३]

भादो चौथ गनेश जी आये, घर लइकन के डंट पुजाये।
डटा है सिरमौला, माय बाप के ओला।
माय बाप है दियो अशीश, जियो रे बटिया लाख बरीस।
लाय लूप दू टाट मगौली, दिल्ली से गजमोट मगौली।[1]

टिप्पणी—यह गीत भी गणेश-प्रशस्ति से ही प्रारंभ होता है।

[८४]

सिरी सरसती[2] सिरी सरसती,
माथे सोमे बेल के पत्ती ॥
सुनऽ सुनऽ लड़ुआ के माय,
तोर द्वार पर गुरु जी आये ॥
सगे साथे चेलियन[3] आये,
गुरु जी उनसे डंट पुजाय ॥
डटा है सिर मौला,
माय बाप के ओला[4]॥

टिप्पणी—इस गीत में सरस्वती का भी स्मरण किया जाता है।

---

1 इस गीत का शेषांश गीत संख्या ८१, की पाँचवीं पंक्ति से लेकर अंतिम पंक्ति तक चलने वाले गीतांश के समान है। 2 सरस्वती। 3 शिष्य। 4 इस गीत का शेषांश गीत संख्या की दूसरी पंक्ति से लेकर अंतिम पंक्ति तक चलने वाले गीतांश के समान है।

[८५]

खेलते खुलते लोहा पैली। से लोहा लोहार के देली॥
लोहार बनैलक पाँच हँसुआ। मीर[1] लेलक मीर हँसुआ।
इयार लेलक तीन हँसुआ। हम ले ली पसुलिये[2] ॥१॥
चलऽ इयारो घास गढ़े। मीर गढ़लन मीर बोझा।
यार गढ़लन तीन बोझा। हम गढ़ली अधबोझिये ॥२॥
चलऽ इयारो घास बेचे। मीर बेचलन मीर रुपैया।
यार बेचलन तीन रुपैया। हम बेचली अठनिये ॥३॥
चलऽ इयारो घोड़ा खरीदे। मोर खरीदलन मीर घोड़ा।
यार खरीदलन तीन घोड़ा। हम खरीदली बछड़िये ॥४॥
चलऽ इयारो घोड़ा दौड़ावे। मीर दौड़ैलन मीर कोस।
यार दौड़ैलन तीन कोस। हम दौड़ैली अधकोसिये ॥५॥
चल यारो पानी पिआवे। मीर पिऔलन मीर घाट।
यार पिऔलन तीन घाट। हम पिऔली अधघटिये ॥६॥
चलऽ इयारो खूँटा गाड़े। मीर गड़लन मीर खूँटा।
इयार गड़लन तीन खूँटा। हम गाड़ली अधखुँटिये ॥७॥
चलऽ इयारो घोड़ा बाँधे। मीर बाँधलन मीर घोड़ा।
इयार बाँधलन तीन घोड़ा। हम बाँधली बछड़िये ॥८॥
चल इयारो आम खाये। मीर खैलन मीर आम।
इयार खैलन तीन आम। हम खैली गुठलिये ॥९॥
मीर के मारलन मीर लाठी। इयार के मारलन तीन लाठी।
हमरा मारलन छकुनिये। गिर पड़ली पेटकुनिये।
भागली ठेहुनिये। लुक गेली चुल्हनिये ॥१०॥

टिप्पणी :—यह चकचन्दा के अत्यन्त लोक-प्रिय गीतों में एक है। भावों की तारतम्य हीनता चकचन्दा माँगने के लिये जुटे लड़कों के उल्लास को व्यंजित करती है। गीत के अन्दर आनेवाली तुकान्त योजना देखने लायक है।

[८६]

एक टका के गेहूँ मगैली, चुनवे कि न गे?
मोर गोदी में बालक रोवे, चुनलो न जाय रे।

१. प्रधान। २ छोटा हँसुआ, जिससे घास खर छेवते हैं।

चुन चान के आगू देली, धोवबे कि न गे?
मोर गोदी म बालक रोवे, धोवलो न जाय रे।
धो धाके आगू देली, सुखैबे कि न गे?
मोर गोदी में बालक रोवे सुखवलो न जाय रे।
सुखा उसा के आगे देली, पिसबे कि न गे?
मोर गोदी में बालक रोवे, पिसलो न जाय रे।
पीस पास के आगू देली, पकैबे कि न गे?
मोर गोदी में बालक रोवे, पकवलो न जाय रे।
पका उका के आगू देली, खैबे कि न गे?
मोर गोदी म बालक रोवे, खैलो न जाय रे।
ऊपर से मारली पाँच सटकी, गुदुर-गुदुर खाय रे॥

टिप्पणी —चकचन्दा के अवसर पर यह गीत गाया जाता है, यद्यपि इस गीत में वर्णित भावों का इस अवसर से सम्बन्ध नहीं दीखता।

[८७]

खेलते खेलते कौड़ा पैली, से कौड़ा गगा दहैली [1]।
गगा मइया बालू देलन, से बालू कनुनिया देली।
कनुनिया बेचारी कुम्हा [2] देलन, से कुम्हा घसगढ़वा देली।
घसगढ़वा बेचारा घास देलक, से घास के गइया देली।
गइया बेचारा दूध देलक, से दूध के बिल्ली पीलक।
बिल्ली हमरा चूहा देलक, से चूहा के चील्ह लेलक।
चील्ह बेचारा पत्त देलक, से पत्त के राजा लेलक।
राजा हमरा घोड़ा देलक, से घोड़ा पर मियाँ दुलार।
मियाँ दुलार के लंबी छूरी, थर थर काँपे जमुना पुरी।

टिप्पणी —चकचन्दा के अवसर पर बड़े प्रेम से बालक इस गीत को गाते हैं।

[८८]

बउआ आँग सुनाना माई। बिनु दस बीस खोलल न जाये।
बउआ डाँकर मैना लेवो। बरस बीस पर छिन न ऐबो।
गुरु जी के देहुँ जाड़ा धोती। गुरु जी के देहुँ लाख रुपैया।

---

१ बहाया। २. भूजा।

गुरु जी के देहुँ जोड़ा जूता। गुरु जी के देहु जोड़ा कुरता।
एता कठोर काहे मेलही गे मइया, सब लइकन मिल दुसनउ मइया।
बऊआ रोवे मइया मइया। तोरा जिउ में आबउ न मया।
बउआ रोवे बाजी[1] बाजी। गली क खिटकी चुनैलई मइया।
सब लइकन मिलि दुसनउ मइया। सब लइकन मिलि हँसतउ मइया।

× × ×

बउआ चढे घोड़ा, रुपैया निरले जोड़ा।
बउआ चढे टमटम, रुपैया निरले उनउन।
बउआ चढे हाथी, रुपैया निरले पचासी।
बउआ चढे ऊँट, रुपैया निरले फूट।

टिप्पणी—शिष्य विशेष के घर पर गाये जाने वाले गीतों में यह अन्तिम गीत है। इस गीत को प्रारंभ करने के पहले एक दूसरा शिष्य शिष्य विशेष (जिसके घर पर चकचन्दा गीत गाया जा रहा है।) की आँखें अपनी हथेलियों से मूँद लेता है। और वह दान माँगने के लिये अँगुली बाँध लेता है। इसी रूप में उसे परिवार के प्रधान व्यक्तियों के सामने लाया जाता है और इसके साथ ही गीत भी चलता रहता है। गीत के प्रथम खंड में दान माँगने का उपक्रम किया गया है एवं दूसरे खंड में दान प्राप्ति के उपरान्त आशीर्वाद देने का।

लोककथा गीत

१. चौहट+

[८६]

सन्दर्भ—सामन्तशाही के प्रतीक राजा की लावण्य लिप्सा से सतीत्व रक्षा के लिए चंपिया का प्राणोत्सर्ग

मिलहु सखिया सलेहर हे चंपिया,
अहे मिली जुली सैरो[2] निहैबइ हे न।

---

१ बाबू जी। २ सरोवर।

+ भादो मास में, वर्षा को आमंत्रित करने के लिए महिलाएँ चौहट गाती हैं। इस गान को वे झूमर की पद्धति से झूम झूम कर गाती हैं। खुले मैदान में महिलाओं का दो दल परस्पर एक दूसरे के सामने खड़ा होता है। चौहट गाता हुआ दोनों दल मैदान के मध्य में आकर एक दूसरे से मिलता है और फिर बिना पीठ फेरे हो उलटे कदम से अपनी जगह पर लौट जाता है। यही क्रिया बार-बार दुहराई जाती है।

सब सखिया मिली घर चलि ऐलइ,
अरे असगर[1] चपिया झाड़इ लामी केसिया हे न।
झर रे झरोखा चढ़ि राजा निरेखई,
अरे केकर तिरियवा झारे लामी केसिया हे न।
तुहूँ न जानहूँ राजा नरायण सिंह,
अरे गंगाराम बहिनिया झारे लामी केसिया हे न।
केने गेले किया मेले गामा चौकिदरवा,
गंगाराम के पकड़ी ले आवऽ हे न।
केने गेले किया मेले गंगाराम,
अरे राजा घरवा पड़लो हँकरिया[2] हे न।
बरहीं धरिल राजा नगरिया बसौलन,
से कबहूँ न पड़लइ हँकरिया हे न।
किय राजा बान्धत, किय राजा मारत,
किय राजा नगरा छोड़ैतन हे न।
नहीं मारत राजा, नहीं राजा बान्धत,
अरे नहीं राजा नगरा छोड़ैतन हे न।
हथवा में लेलऽ गंगाराम रेड़ के छकुनिया,
अरे कंधे पर रहलइ चदरिया हे न।
जिउआ गंगाराम सोचइत चललन,
अहे चलि भेलन राजा के नगरिया हे न।
एक डेउढ़ी गेलन गंगाराम, दुई डेओढ़ी गेलन,
अरे पड़ी गेलइ राजा पर नजरिया हे न।
पहुँची गंगाराम राजा के नगरिया,
अहे झुकी झुकी करऽइइ सलमिया हे न।
आहु गंगाराम बैठु सतरंजिया,
अहे चपिया बहिनिया हमरा देहू हे न।
लेहुक गंगाराम गामा से मुलुकिया,
अहे चपिया बहिनिया हमरा देहु हे न।
गाँमा से मुलुकिया राजा तोरे घर बढ़उ,
से मोरे बसे चपिया न भेलउ हे न।

---

१. अकेली। २. लम्बी। ३. पुकार, बुलाहट।

केने गेले सिय भेले गाँमा चौकिदरवा,
अरे गगाराम के मुसुका चढ़ाहु[1] हे न।
भर रे झरोखा चढ़ी भउजी निरेखइ,
अरे चपिया करनमें पिया मोरे बान्धल हे न।
आगी लगउ चपिया तोरे लामी केसिया,
अहे बजड़ा पड़उ तोरे सुरतिया हे न।
लेहुक भउजी हे गोदी के बलकवा,
से हम जइबइ भइया छोड़ावन हे न।
पैन्हियो मे लेलक चपिया लहरा पटोरवा,
अरे करियो मे लेलक सोरहो सिगरवा हे न।
एक कोस गेलइ चपिया, दुइ कोस गेलइ,
अरे पड़ी गेलइ राजा पर नजरिया हे न।
केने गेले किय भेले गामा चौकिदरवा,
अरे गगाराम के खोलू न मुसुकवा हे न।
सोरहो सिगरवा कैले अपने से चपिया,
अहे चलल आवइ मोरा नगरिया हे न।
जब तुहूँ राजा हे हमरो लोभैले,
अरे भइया जोगे पाँचो टुक जोड़वा[2] हे न।
जब तुहूँ राजा हे हमरो लोभैले,
हमरा जोगे पटुरा[3] बेसहिया[4] हे न।
हँसी हँसी राजा हे पटुरा बेसहलन,
अरे रोई रोई चपिया पटुरा पेहनइ हे न।
जब तुहूँ राजा हे हमरो लोभैले,
से हमरा जोगे बतीसो गहनवा हे न।
हँसी हँसी राजा हे गहना बेसहलन,
अरे रोई-रोई चपिया गहना पेन्हइ हे न।
जब तुहूँ राजा हे हमरो लोभैले,
से हमरे जागे पुरबी सेन्दुरा हे न।
हँसी हँसी राजा हे सेनुरा बेसहलन,
अरे रोई रोई चपिया सेन्दुरा पेहनइ हे न।
जब तोहीं राजा हे हमरो लोभैले,
से हमरा जोगे डोलिया फनहिया[5] हे न।

---

१. बाँध कर बंदी बना लो। २ वस्त्र। ३ लहगादि वस्त्र। ४ खरीदना। ५. चढाना।

हँसी हँसी राजा हे डोलिया फनौलन,
अरे रोई रोई चपिया डोलिया चढ़इ हे न।

एक कोस गेलें चपिया दुई कोस गेले,
अरे लगी गेलऊ मधुरी पियसवा हे न।

गोड़ तोरा पड़ियो अगला कहरवा,
अरे बाबा के पोखरवा डोली बिलमइहऽ[1] हे न।

चलूँ चलूँ चपिया रानी हमरो महलिया,
अरे सोने के गेरुवा पनिया पिबऽ हे न।

सोने के गेरुआ राजा जनमो सनेहिया,
अरे बाबा पोखरवा जुलुम[2] होतइ हे न।

एक चुलू पीलक चपिया दुइ चुलू पीलक,
अरे तिसरे में खिललइ पतलिया हे न।

मर रे झरोखा चढ़ी मउजी निरेखइ,
अरे मोरो चपिया छुनो फुलवा रखलक हे न।

बाबा कुल रखले चपिया भइया कुल रखले,
अरे राखी ले ले सामी के पगड़िया हे न।

हम तो जनइतियो चपिया एता बुध[3] रखबे,
अरे पदुरा पेन्हाई जतिया[4] लेतिअउ हे न।

टिप्पणी —सुन्दरी चपिया (चपा या चपिया) राजा नारायण सिंह के गाँव के जेठ रैयत गंगाराम की बहिन थी। एक दिन झरोखे पर अकेली बैठी चपिया अपने लंबे बालों को सवार रही थी कि राजा की आँखें उस पर अटक गईं। चपिया के अनुपम लावण्य पर वह दौलत न्योछावर कर सकता था। उसने गंगाराम से साग्रह चपिया को माँगा। पर वह अपनी कुल की मर्यादा बहिन को अर्पित कैसे करता। गंगाराम बंदी बना लिया गया।

झरोखे ■ अपने बंदी पति को देखकर चपिया की भौजी ने उसे प्रताड़ित किया—तेरी सूरत में आग लग जाये। तेरे रूप ने ही मेरे स्वामी को बंदी बनवाया है। स्वाभिमानभरी चंपा ने अपना कर्त्तव्य मन में स्थिर कर लिया। सोलहो शृंगार करके वह अनुपम सुन्दरी राजा के पास पहुँची। उसने कहा—राजा, मैं तुम्हारी होकर रहूँगी। मेरे भाई को ससम्मान विदा करो। गंगाराम मुक्त कर दिये गये।

राजा के उल्लास की सीमा न थी। उसने हँस हँस कर चंपा का शृंगार किया और रो रो कर चंपा ने उसे धारण किया। डोली में चढ़कर वह राजा के महल चली। पथ में उसके बाबा का पोखरा था। उसने अगले कहार से प्रार्थना की—मुझे बड़ी प्यास लगी है। क्षण भर के लिये डोली

१. ठहराना। २ दुर्लभ। ३ चतुराई। ४ जातीत्व।

बिलमाना। राजा ने कहा—चपा रानी, महल चलो। वहाँ सोने के मराए में पानी पीना। कातर चपा ने कहा—वह तो जीवन में स्नेह बन कर सदा उपलब्ध होगा। पर बाबा का पोखरा दुर्लभ हो जायगा। चपा पोखरा के तट पर थी। पर क्या उसे जल की प्यास थी? उसके बदी प्राण मुक्ति पाने के लिए विकल थे। उसका नारीत्व पाशविकता से मुक्ति पाने को आतुर था। एक चुल्लू। दो चुल्लू। तीसरे चुल्लू में तो उसके प्राण उस लोक में जा पहुँचे जहाँ किसी लोलुप की दृष्टि नहीं पहुँचती।

सतीत्व की रक्षा के लिए प्राणों का उत्सर्ग करनेवाली चपिया भारतीय आदर्शों की पुजारिनों के लिये सदा वदनीया रहेगी।

चौहट

[६०]

सन्दर्भ—पिता के अन्धविश्वास के आवर्त्त में पुत्री का अवसान

एक ही राजा हे पोखरा खनौलन[1] हो राम,
अहो रामा पोखरा ही मागे दउलत बेटी हो राम।
केने गेले किय भेले गामा चौकीदरवा हो राम
अहो रामा बरहमन बरवा देहुँ न हँकरिया हो राम।
केने गेलऽ किया भेलऽ बरहमन हो राम,
अहो रामा राजा घर पड़लो हँकरिया हो राम।
किय राजा मारत किय राजा बान्धत हो राम,
अहो रामा किय नगरा छोड़उतन हो राम।
हथवा में लेलऽ बरहमन रेड़ के छेकुनिया हो राम,
अहो रामा कधवा पर पटली चदरिया, काँखा पोथिया हो राम।
एक डेउढ़ी गेलऽ बरहमन, दुइ डेउढी गेलऽ हो राम,
अहो रामा पड़ी गेलइ राजा पर नजरिया हो राम।
राजा के डेहुड़िया[2] बराहमन पहुँचिय गेलन हो राम,
झुकी झुकी कर हइ सलमिया हो राम।
आव हूँ बरहमन से बैठऽ तूँ सतरजिया हो राम,
अहो रामा पोखरा के करहू न विचरवा हो राम।
नया पोथी खोलइ बरहमन पुराना पोथी हो राम,
अहो रामा पोखरा ही मागे दउलत बेटी हो राम।

---

१ खनाया। २ द्वार।

केने गेले किया भेले गामा चौकीदरवा हो राम,
अहो रामा दउलत घरवा देहूँ न हकरिया हो राम।

झर रे झरोखा चढ़ी दऊलत देखइ हो राम,
अहो जैसे लगइ बाबा हजमा आवइ हो राम।

आबहूँ का हजमा बैठहूँ सतरजिया हो राम,
अहो रामा कहूँ न नैहरवा के रे कुसलिया हो राम।

तोहरो नैहरवा दउलत बेस तरी[१] हो राम,
अहो रामा छोटका भइया केर गवनमा हो राम।

अबरी नेअरवा दउलत फेरी देहूँ हो राम,
अहो रामा बड़ी रे समलिय जिया तोहर जइतो हो राम।

सेजिया सुनले तोहूँ प्रभु जी हो राम,
अहो रामा छोटका जे भइया के रे गवनमा हो राम।

अबरी नेअरवा दउलत फेरी देहूँ हो राम,
अहो रामा बड़ी रे समलिय जिया तोहर जइतो हो राम।

सबके कहनमा दउलत छोड़ि देलन हो राम,
अहो रामा अपने से डोलिया चढ़ी भेलन हो राम।

झर रे झरोखा चढ़ी भइया निरेखइ हो राम,
अहो जैसे लगइ दउलत डोलिया चढल आवइ हो राम।

हथवा में लेहुँ दउलत सेन्धुरा सिनोरवा हो राम,
अहो रामा पोखरा पूजीय घरवा आवहु हो राम।

भरी घुट्ठी पनिया में दौलत हेलल[२] हो राम,
अहो रामा छतियो न फटइ मोरा दादा जी के हो राम।

हम का करियो दउलत पोती हो राम,
अहो रामा बाप हउ तोहर अधमा चण्डलवा हो राम।

भर ठेहुन पनिया मे गेलूँ हो राम,
अहो रामा छतियो न फटइ मोरा चाचा जी के हो राम।

हम का करियो दौलत बेटी हो राम,
अहो रामा बाप हउ तोरा अधमा चण्डलवा हो राम।

भर जाघ पनिया में गेलूँ हो राम,
अहो रामा छतियो न फटऽहइ मोरा भइया जी के हो राम।

हम का करियो दउलत बहिनी हो राम,
अहो रामा बाप हउ तोरा अधम चण्डलवा हो राम।

---

१. अच्छी तरह। २. पानी में तैरी।

भर कमर पनिया मे गेलूँ हो राम,
अहो रामा छतियो न फटऽ हइ मोरा दादी के हो राम।
हम का करियो दउलत पोती हो राम,
बाप तोरा अधमा चडलवा हो राम।
भर गरदन पनिया मे गेलू हो राम,
अहो रामा छतियो न फटइ मोरा मइया के हो राम।
हम का करियो दउलत बेटी हो राम,
अहो रामा बाप इउ तोहर अधम चडलवा हो राम।
भरमुख पनिया में गेलूँ हो राम,
अहो रामा छतियो न फटइ मोरा भउजी के हो राम।
लिलरा के टिकुली दहाइये गेलइ हो राम
अहो रामा छतियो न फटइ मोरा फुआ जी के हो राम।
हम का करियो दउलत भतीजी हो राम,
अहो रामा बाप तोरा अधम चडलवा हो राम।
मगिया के सिन्दुरा धोआइ गेलइ हो राम,
अहो रामा छतियो न फटइ मोरा बहिनी के हो राम।
हम का करियो दउलत बहिनी हो राम,
अहो रामा बाप तोरा अधम चडलवा हो राम।
जे हम जनिति दउलत तोर बाप अधम चडलवा,
अहो रामा कहियो न करती विदागिया[१] हो राम।

टिप्पणी—एक राजा था। उसने पोखरा खनाया। पर उसमे जल न आया। पडितो ने पत्रा देख कर कहा—पोखरे को आपकी पुत्री दौलत के बलिदान की अपेक्षा है।

हजाम दौलत के ससुराल पहुँचा। उसने कहा—तुम्हारे भाई का विवाह है तुम्हे चलना होगा। भोली दौलत ने सास और पति से आग्रह नेहर आने की अनुमति माँगी। सब ने मना किया पर वह न मानी। अपने से डोली पर चढकर नैहर पहुँची। द्वार पर माँ ने कहा—बेटी हाथ मैं सिन्दूर लो। पहले पोखरे को पूजा कर लो फिर घर में प्रवेश करो। पूजने के लिये वह पोखरा के बीच मे पहुँची। क्रमश जल भरन लगा। घुट्ठी, ठेहुना छाती और कठ छूता हुआ पानी सिर तक पहुँच गया, पर डूबती दौलत को किसी ने नहो निकाला। पिता के अन्ध विश्वास की शिकार दौलत डूब गई। रो कर दौलत के पति ने कहा—यदि मैं जानता कि तुम्हारा बाप अधम चाण्डाल है, तो कभी न विदा करता।

यह करुण बलिदान किसे करुणाप्लावित नहीं करेगा।

---

१ विदाई।

१०. जँतसार

[९१]

सन्दर्भ—सास की मान-रक्षा के लिये वधू का निष्ठुर अन्त

सासू जे गेलथिन नैहरवा, रे धरले गेलन,
जिरवा मुननिय[1] हो राम।

सासू के अदलइ भाई रे भतीजवा,
हे फोड़ने करनवे जिरवा खोललूँ हो राम।

बारहो बरिस पर सासु मोरा अइलन,
खोजे लगलन जिरवा रे मुननिया हो राम।

बाबा खउकी मइया खउकी पुतहु बहुरिया,
काहे करनवें जिरवा खोलले हो राम।

मती सासु बाबा खाहु, मती सासु भइया खाहु,
तोहरो भाई भतीजवा करनमें जिरवा खोललूँ हो राम।

एतना बचनिया सासु मोरा सुनलन हे न,
चढ़ि गेलन अपने धरहरा[2] हो राम।

हर जोती अइलन कुदारी फारी हे न,
खोजे लगलन अपना मइया जी के हो राम।

भनसा बैठल तुहूँ धानी[3] हे बहैतिन,
हमरो मइया कहाँ गेलन हो राम।

तोहरो रे मइया प्रभु मानी रे गुमानी,
सुतल होइहें अपनी धरहरा हो राम।

उठु मइया उठु करूँ दतमनिया,
दुख सुख कहूँ समुझाए हो राम।

नहीं बाबू दुख हइ, नहीं बाबू सुख हइ,
मैना के करेजवा पर हम नहैबइ हो राम।

भनसा[4] बैठल तोहीं धानी जी बहैतिन,
तोहरो मइया के चियहवा हो राम।

हमरो नैहरवा प्रभु भइहा के बिग्रहवा,
हजमा न्योतवा न देखली हो राम।

---

१. जीरादि फोड़न। २ कोठा, जहाँ कोप करके पहले गई। ३. पत्नी। ४. रसोई घर।

समना मदोइया के रे अयलइ बूढ़ी घघवा[1],
हजमा न्योतवा घुरि[2] गेलइ हो राम।

हँसी हँसी राजा पटुका बेसाहलन,
रोई-रोई मैना पटुका पेन्हलन हो राम।

हँसी हँसी राजा गहना बेसाहलन,
रोई रोई मैना गहना पेन्हलन हो राम।

हँसी हँसी राजा डोलिया बेसाहलन,
रोई रोई मैना डोलिया चढइ हो राम।

आगे आगे मैना के डोलिया हे न,
पाछे पाछे राजा घोड़ा दौड़ैलन हो राम।

एक कोस गेले मैना, दुइ कोस गेले,
अगला कहरवा डोली बिलमउलन हो राम।

एक हाथे राजा धोतिया सम्हारे,
दूसर हाथे मैना के करेजवा फाड़इ हो राम।

एक हाथ राजा फाढलन करेजवा,
दुसर हाथे बउआ होरिलवा[3] हो राम।

काढ़िये करेजवा राजा बान्हलन मोटरिया,
कंधा पर लेलन बउआ होरिलवा हो राम।

कने गेले त्रिय भेले मइया हतिआरिन,
मैना के करेजवा चढ़ी तू नहाईं हो राम।

जैसे जैसे बउआ होवइ हे सिआनवा,
तैसे तैसे मइया खोजवा करइ हो राम।

मचिया बैठल तुहूँ दादी हे बड़इतिन,
हमरो हे मइया कहाँ गेलन हो राम।

हम न जनियो बाबू, हम नहिं सुनियो,
मे, पुंछ, नेहु आपना, ग्यारू जी, मे, हो, राम।

सभवा बैठल तुहूँ बाबू जी बड़इता,
हमर मइया कहाँ गेलन हो राम।

तोहरो मइया बाबू मरि हरि गेलन,
नइयाँ से मइया तोर हम देबो हो राम।

---

१. बाद। २ फिर गया। ३ बालक।

हमरो मइया बाबू मरि हरि गेलन,
मइया के चिररया[1] बतलाइ देहूँ हो राम ।

समना मदोइ केर अइलइ बूढ़ी घधिया,
तोहरो मइया के चिररिया दही गेलइ हो राम ।

टिप्पणी—सास नैहर थी। उसके पीछे में ही उसके भाई-भतीजे आये। बहू ने सास के रखे जीरे का फोड़न देकर भोजन बनाया और उनका आदर किया। सास लौटी तो उसने जीरा खोजा। पर बिचारी बहू देती कहाँ से। सास ने कोसा और फिर वह कोप भवन में समा गई।

मातृभक्त पुत्र ने खेत से लौट कर माँ को खोजा। उसने माँ का आदर किया और कोप भवन से बाहर निकलने का निवेदन किया। माँ ने कहा—मैं तुम्हारी बहू के कलेजे पर नहाऊँगी और तब कोप भवन से निकलूँगी। पति ने मैना से कहा—तुम्हारे भाई का ब्याह है, चलो नैहर पहुँचा दूँ। मैना संकेत समझ गई। पति ने हँस-हँस कर उसका शृंगार किया और रो-रो कर उसने सब कुछ धारण किया। डोली पर चढ़कर स्वामी के साथ वह मध्य जंगल में पहुँची। निर्मम पति ने उसे मार कर एक हाथ में उसका कलेजा सम्हाला और दूसरे में पुत्र। घर आकर उसने अपनी मानिनी माँ को बहू का कलेजा अर्पित किया, जिस पर नहाकर वह संतुष्ट हुई।

बड़े होकर बालक ने पूछा—बाबा, मेरी माँ कहाँ है? बाप ने कहा—मर गई। पुत्र ने कहा—तो चिता ही बतला दो। उसे देखकर सब करूँगा। बाप ने कहा—बाढ़ में चिता भी बह गई।

अनेक सास के अभिमान और प्रतिहिंसा की बलिवेदी पर न जाने कितनी फूल सी सुकुमार पुत्रवधुओं का बलिदान हुआ है। पता नहीं, कब इस निर्ममता का अन्त होगा।

लोकनाट्य गीत+

११. बगुली

प्रथम दृश्य

[६२]

पात्र—१ बगुली

२—दो अन्य महिलाएँ जो दो भिन्न दिशाओं में बैठती हैं और प्रश्नोत्तर करती हैं।

एक महिला— कहवाँ से रूसल कहाँ जाहऽ हे बगुलो ?
बगुली— ससुरा से रूसल नहिरा जाहि हे दीदिया । टेक[2]
दूसरी महिला—कौने कारनमें नहिरा जाहऽ हे बगुलो ।

---

१. चिता

+ वर्षा ऋतु के बाद शरद् के आगमन से ही पर्वों और उत्सवों का सुखदसमारंभ हो जाता है। जितिया, दशहरा, धनतेरस, दिवाली, भइयादूज, छठ, आदि पर्वों के उत्साह से सबका हृदय आनन्द-मग्न रहता है। इसी ऋतु में लोक-जीवन में अनेक नाटकों की भी योजना होती है। ये नाटक किसी विशिष्ट रंगमंच पर नहीं खेले जाते, बल्कि खुले मैदानों में, खलिहानों में, बाग बगीचों में, धर्मस्थानों में और पर्वों में खेले जाते हैं। पर्वों की खुशी में बहुत से स्वांग भी रचे जाते हैं। बगुली, जाट-जाटिन और सामा-चकवा का नाटक भी इसी अवसर पर खेला जाता है।

२. प्रत्येक कड़ी के प्रारंभ और अन्त में टेक की आवृत्ति होगी।

बगुली— चउरवा छुटइते खुदिया खैलियो हे दीदिया ।
महिला— तुहूँ त हऽ बड छुछुंदर हे बगुलो ॥१॥
म०— कौने कारनमें नहिरा जा हऽ हे बगुलो !
ब०— रोटिया बनौते लोइया खैलियो हे दीदिया ।
म०— तुहूँ तो हऽ बड़ ललचाहिया हे बगुलो ॥२॥
म०— कौने कारनमें नहिरा जा हऽ हे बगुलो ?
ब०— भतवा बनौते मड़वा पिलियो हे दीदिया ।
म०— तुहूँ त हऽ बड जिभगरही[१] हे बगुलो ॥३॥
ब०— एहि करनमें नहिरा जाहि हे दीदिया ।
म०— बगुली के लोलवा तोरा गड़ली हे बगुलो ।
ब०— तुहूँ तो तु मसरी के दतिया बोलऽ हऽहे दीदिया ॥४॥

टिप्पणी—बगुलो नाटक में एक स्त्री बगुली बनती है। वह लंबा घूँघट निकाल लेती है और घूँघट के भीतर हाथ डाल कर मुँह के पास से उसे चोंच की आकृति का बना लेती है। चोंच बराबर हिलता रहता है। दोनों तरफ औरतों का दल बैठा रहता है। बगुलो कभी कूद कर इस दिशा में जाती है और कभी उस दिशा में। जिस ओर मुड़ती है, उसी ओर उसका अन्य महिलाओं से प्रश्नोत्तर चलता है। प्रथम दृश्य में वह औरतों से ही बातें करती है। पुनः उनसे रूठ कर एक ओर चली जाती है।

इस दृश्य में गार्हस्थ्य जीवन में बहू के आचरणों की आलोचना मिलती है।

द्वितीय दृश्य

पात्र—(१) मल्लाह
(२) बगुली

बगुली—हालि[२] आहु, हालि आहु मलहवा रे भइया।
जल्दी से पार उतारऽ हो मलहवा भइया ॥१॥ टेक
मल्लाह—हमरा तूँ दे दे गोरी गल्ला के हँसुलिया।
जल्दी से पार उतरबउ गे बगुली ॥२॥
बगुली—तुहूँ जे माँगे मलहा, गल्ला के हँसुलिया।
ओहु जे हउ ससुरा के देखल रे मलहवा भइया ॥३॥
मल्लाह—हमरा तूँ दे दे गोरी हाथ के कंगनमा।
जल्दी से पार उतरबउ गे बगुली ॥४॥

१. चटोरी। २ जल्दी।

बगुली—मलहा जे माँगऽ हे हाथ के कगनमा।
ओहु जे हउ भैंसुरा के देवल रे मलहवा भइया ॥५॥

मल्लाह—हमरा नूँ दे दे गोरी देह के गहनमा।
जल्दी से नदिया पार उतरबउ गे बगुली ॥६॥

बगुली—तुहूँ जे माँगे मलहा, देह के गहनमा।
ओउ गहनमा सामी क देवल हउ रे मलहा भइया ॥७॥

मल्लाह—हमरा नूँ दे दे गोरी सचली जमनियाँ।
जल्दी से नदिया पार उतारब गे बगुली ॥८॥

बगुली—तुहूँ जे माँगे मलहा, सचली जमनियाँ।
ओहु जे हउ मामी जी के देवल मलहवा भइया ॥९॥

टिप्पणी—इस दृश्य में बगुली नदी तट का संकेत देती है। वहीं वह मल्लाह का आह्वान करती है। दोनों दलों की महिलाएँ मल्लाह रूप में बगुली से भिन्न भिन्न चीजें माँगती हैं। इस प्रकार गान के ही माध्यम से यहाँ भी प्रश्नोत्तर चलता है।

यहाँ नारी की मर्यादापूर्ण प्रकृति की अभिव्यक्ति मिलती है।

१२. जाट-जाटिन

[६२]

पात्र—(१) जाट
(२) जाटिन

जाट—लम के चलिहें गे जाटिन, लम के चलिह।
जैसे बँसवा के छिपवा लमऽइइ, ओयसहीं लम के चलिहें ॥

जाटिन—नहि ए लमबउ रे जटवा, हम तो बाबा के दुलारी।
ऐंठ के चलबउ रे जटवा, हम तो मइया के दुलारी ॥१॥

जाट—लम के चलिहें गे जाटिन, लम के चलिह।
जैसे नदिया पुतादिया लम र चलऽइइ, ओयसहीं लम के चलिहें।

जाटिन—न लमबउ रे जटवा, हम तो मामा के दुलारी।
ऐंठ के चलबउ रे जटवा हम तो मामी के दुलारी।

जाट—लम के चलिहें गे जाटिन, लम के चलिह।

जैसे समना के बलवा लमऽइह, ओयमहीं लम के चलिहें।
जैसे मौनिया के बलवा लमऽइह, ओयमही लम के चलिह ॥
जैसे मनइ के बलवा लमऽइह, ओयमहीं लम के चलिह।
जैसे धनमा क बलबा लमऽइह, ओयमहीं लम के चलिहे।
जैस गोहुमा[१] के बलवा लमऽइह, ओयमही लम मे चलिहे॥

टिप्पणी—एक ओर, एक स्त्री जाट के वेश में अपने दल के साथ खड़ी होती है। दूसरी ओर जाटिन अपने दल के साथ खड़ी होती है। कहीं-कहीं जाट के दल में स्त्रियाँ पुरुषों के कपड़े भी पहन लेती हैं। दोनो दल झूम झूम कर हाथों से सकेत करते जाते है और साथ ही गीत गाते जाते हैं। जाटिन का दल ऐंठ कर चलता है और अभिमान की व्यजना करता है। जाट का दल विविध फलों एव अनाजों से लदे वृक्ष और पौधों को उपमा देकर नमने की मुद्रा बनाता है। इस प्रकार महिलाओं का दल पूरी गतिशीलता से गायन में सलग्न रहता है।

१३. सामा-चकवा[२]

[६३]

सामो खेले गेली, चकवा भइया अगना।
रसहो भौजी लेलन लुलुआय, ननद कहाँ आयल हे ॥१॥
का तुहूँ भौजो लेलऽ लुलुआय, सामो कहाँ आयल हे।
जब ले रहतइ माय बाप के राज, सामो खेले आयब हे ॥२॥
छुटि जैहे माय बाप के राज, तजब तोर अगना हे।
एतना बचनीया सुनलन चकवा भइया हे ॥३॥

---

१ सभी अनाजों से लदे पौधों एव फलों से लदे वृक्षों की उपमा दी जाती है। पूरे गीत मे कडी सख्या (१) की आवृत्ति होती है, केवल उपमान बदल दिये जाते हैं। यह सक्षेप के लिए कुछ उपमाओं को ही एकत्रित कर दिया गया है।

२ यह खेल भाई-बहन का है। इसमें नारी की सन्धि अवस्था की सूचना रहती है। विवाह हो चुका है पर नैहर में माँ बाप का आकर्षण अभी छूटा नहीं है। पतिगृह के जीवन को अभी वह पूर्णत अपना नहीं पायी है। सामा-चकवा का खेल कार्तिक में होता है। इसमें भाई बहन के प्रेम की अभिव्यक्ति होती है।

वस्तुत सामा चकवा का प्रेम सबध गीतों में ही वर्णित होता है। इसे नाट्य गीत मे इसलिये सकलित कर लिया गया है कि गीत में भावों का प्रकाशन दोनों दल नाटकीयता के साथ करते रहते हैं।

मारे लगलन बरछा घुमाय, बहिनियाँ कहाँ पायब।
„ „ तीर झमराय, „ „ „ हे ॥४॥

चरवा भइया के स्थान में, सभी भाइयों के नाम जोड़कर इस गीत को गाया जाता है।

सामा-चकवा

[६४]

चरवा भइया के घन फुलवरिया।
फूल लोढ़े चललन सामा बहिना हे ॥१॥
फुलवा लोढ़ैते बहिनिया मोरा घामल हे।
कि घाभि गेलो सिर के सेनुरवा हे ॥२॥
छतवा लेले जाथिन चरवा भइया।
कि बैठु गे बहिनो कदम जुरि छहियाँ हे ॥३॥
पनिया ले ले दौड़ल जाथिन, कनिया भौजो हे।
कि करहुँ न हे नन्दो सीतल हिरदा हे ॥४॥

उपर्युक्त गीत की भाँति, इस गीत में भी भाइयों के नामों को जोड़ कर महिलाएँ गाती हैं।

टिप्पणी—सामा बहिन का नाम है और चकवा भाई का। दो खिलौने सामा-चकवा के बनाये जाते हैं। उन्हें बीच में रख कर औरतों का दो दल दोनों ओर से गाता है। कार्तिक पूर्णिमा के दिन कुश एवं केले के थंभ का बेड़ा बनाया जाता है। उस पर दोनों मूर्तियाँ रख दी जाती हैं और साथ ही पाँच दीये रख दिये जाते हैं। इसके बाद इन्हें नदी में प्रवाहित कर दिया जाता है।

लोकगाथा

१४. लोरकाइन

[६५]

बिहँसि के बोलिया बोलऽ हइ, खुलनी बुढ़िया हो राम[१]।
सुनहु न सुगऽ सामी कहनियाँ एक हमार हो राम।

[१] प्रत्येक पंक्ति के अन्त में 'हो राम' का व्यवहार 'लोरकाइन' के कुछ गायक करते हैं और कुछ नहीं भी करते हैं।

बबुआ जे भेलन लोरिक ओ सामर जमान हो राम।
एतना जब सुनइ बोलिया बुढ कुब्जा सरदरवा हो राम।
सुनहिं न सुने तिरिया कहलिया एक हमार हो राम।
एकर जे खबरिया लिहें, गुरु मितराजल हो राम।
ओहि जे भेजतन, सादी के सगरो पैगमभा हो राम।
लिखिए पतिया भेजौनन, बूढ कुब्जा सरदरवा हो राम।
लेइए जे लेलक चिठिया खैरना नउआ हो राम।
ओहु जे जूमल[1] गुरु मितराजल के मकनवा हो राम।
बिहँसि बिहँसि के चिठिया बाँचे, गुरु मितराजल हो राम।
चिठिया के पढिए-पढिए तिरिया के सुनावइ हो राम।
पतिया में लिखल हइ करऽ बउआ लोरिक के बिआह हो राम।
इ नहि बेटा हम्मर हइ लोरिक ओ सामर हो राम।
इ दुन्हो बेटवा तोरे हवऽ गुरु मितराजल हो राम।
गाँवे गाँवे घूमइ हो मितवा अगुअवा बरतुइ[2] लेले हो रामा।
हमर घरवा टूटल देखिय कोई न आवइ हो राम।
एहि से गरलइया[3] लगऽ हइ कि किया करिअइ हो राम।
पतिया जे भेजइ खैरना से गुरु मितराजल हो राम।
जतिया के हिअउ हम, बूढ कुब्जा धोबिया हो राम।
देवा के जे पोसल हउ बेटा लोरिकवा मनियार[4] हो राम।
जैसन उनकर मइया हइ बुढिया खुलनी हाय हो राम।
ओयसने जे मइया हइ उनकर देवी मइया हो राम।
आहि देवी करतन भाइ जी. लोरिक के बिआह हो राम।

● ● ●

गाम गामे घूमइ अघोड़ी[5] ने अगुअवा हो राम।
अच्छा अच्छा रस्ता अहीरा के, रजवा देखइ हो राम।
नइयाँ[6] जे सुनतइ हल कि गउरा[7] म हइ लोरिक हो राम।
ओहि जे लोरिक माजर के जोगे हइ हो राम।
आइ ए जे गेलन हे अघोड़ी से नउआ बरहामन[8] हो राम।

---

१ आ पहुँचा। २ विवाह का छेंका। ३ ग्लानि। ४ बहादुर। ५ माजर (लोरिक की भावी पत्नी) का ग्राम जहाँ वह रहती थी। ६ नाम। ७ लोरिक का ग्राम, जहाँ वह रहता था। ८ ब्राह्मण।

देखे ला जे खोजऽ हइ बछुआ लोरिक के हो राम।
दौड़िये के गेलन हो कुम्ना अप्पन गइया बथान[1] हो राम।
सुनहिं न सुनें तिरिया[2] च।लिया एक हमार हो राम।
जल्दी घरवा चलहि अयलइ नउआ आउ पडित हो राम।
हुनका बैठौली है घरे हलइ फटल चटइया हो राम।
जलदी खोजिय पच भइया वन से लावऽ विछामन हो राम।
खुम के मारल गे खुलनी पड़ोसिन के गेलइ मकान हो राम।
हइ कोई बिछामन तो देहु हमरा घरे ऐलन हैं मेहमान हो राम।
एतना सुनिय पड़ोसिन हरखिए[3] बोलइ हो राम।
लेहु हमरा कम्मल बहिन ले जा अप्पन मकान हो राम।
ईसर से मनावऽ ही कि लोरिक के हो जाय बिअहवा हो राम।
लेइए कमलिया खुलनी ऐलइ अप्पन मकान हो राम।
मारिए निछावइ हो बूढ़ कुब्जा कवल आमन हो राम।
बैठहु न बैठहु बरहमा[4] जी गरीब के एहि हइ मकान हो राम।
यहाँ से हम पेयवइ राजा सहदेव ऐमन गढ़वा हो राम।
बाबा जी हमरा धनना हइ बेटा लोरिक और सामर हो राम।
एतना सुनिय बरहामन कुब्जा के समझावइ हो राम।
जलदी देखावऽ अप्पन बेटा लोरिक और सामर हो राम।
बछुआ के बोलावे चलल जा हइ बूढ़ कुब्जा सरदार हो राम।
कुमियो में गेलन कुब्जा गुरुमितराजल के मकान हो राम।
सुनहु न सुनऽ हो मितवा खुमिया के हाम रे बेयार हो राम।
अगुआ आयल हइ घरवा, अघोड़ी के ले ले पैगाम हो राम।
जलदी घरवा चलहु लोरिक के लेइए हाथ हो राम।
गुर्मी-गुमी अखड़वा में गुरु मितराजल बोलइ हो राम।
जलदी में लेहि रे बेटा मटिया देहिया के छोड़ाय हो राम।
तोहरे हम बनवा आ गुना पर करवइ अघोड़ी में बिआह हो राम।
बड़ा बड़ा सिखा बसउ अघोड़िया गाँव हो राम।
तोहरे के भिड़नमा गे मांजर के लैहे बिआह हो राम।
मटिया छोड़ाइए रे सिखा गुरु के करइ परनाम हो राम।

---

१ मवेशखाना। २ पत्नी। ३ हर्षित हो। ४ ब्राह्मण।

पेन्हिय पौसरवा बिरवा होइए गेलइ तैयार हो राम।
आगे आगे चलइ गुरु मितराजल धोबी हो राम।
पाछे पाछे दुनो भइया चलऽ हइ गुरु केरा साथ हो राम।
मारते गरजवा जुमलइ, गौरा-गुजरात हो राम।
ओहि घड़िया जुमिए मितराजल करे लगलन परनाम हो राम।
कहाँ तोहर घर हइ देवता, कहवा कैलऽ पैगाम हो राम।
कौनि परनमा पेलऽ हे गौरा गुजरात हो राम।
बिहँसि बिहँसिए बोलऽ हइ पंडित सुनऽ सरदार हो राम।
हमरो ले घरवा हइ अघोडियापुर गाँव हो राम।
हमरो जजमान के बेटिया के नइयाँ हइ माजर हो राम।
उनके हम खोजे ला ऐलिअइ घर आउ बरवा हो राम।
एतना जो सुनिए मितराजल साजले[1] दे हइ जवाब हो राम।
हमनी तो हिअइ भाई जी गरीब ओ छोटा किसान हो राम।
खुसी जब मन से बोलइ पंडित मुसकाय हो राम।
घर न हम चाहि भाई जी बरवा मिलइ बलमान हो राम।
एतना सुनिय गुरु मितराजल लोरिक के देलन देखाय हो राम।
लोरिक के देखैते पंडित गेलन मुसकाय हो राम।
सुनहि न सुनें रे हजमा कहलिया एक हमार हो राम।
मजरि के जोगे हउ लड़िका लोरिक मनिआर हो राम।
दुनो जब आरवा से खदिया के बतवा होलइ ठीक हो राम।
ओहि घड़िया बेलवा चौकवा अगनमा पड़ल हो राम।
ओहि बैठिय पंडे लगनइ चारू लोरिक के छेरवा बरतूल हो राम।
देइए छेरवा हो पंडित गरजिए बोलइ बात हो राम।
माघ सिरी पचमी के लोरिक के बनउ बिआह हो राम।
नहि तोरा धनमा पर कैलियौ हम मंजरी के बात हो राम।
लोरिक के बिरतइया पर करऽहिऔ, मांजर के बिआह हो राम।
अनमा धनमा देइए दुब्जा पंडित के कैलन बिदाई हो राम।
लेइए बिदइया पंडित अघोडिया गेलन हो राम।

● ● ● ●

---

१ सना हुआ, तैयार।

ग्रब [illegible] दीन्हइ बूढ़ कुबड़ा गुनइ हम्मर बनिया [illegible] राम।
मार [illegible] [illegible] के दिनमा बबुआ के बनल बिग्राह हो राम।
गुनहि न गुनें गुरु मिनराजल हमरो एक छवाल हो राम।
[illegible] उनइया रचबइ लोरिक के हाथ रे मरन्वा हो राम।
[illegible] [illegible] हइ गुरु मिनराजल धनमा हमार हो राम।
[illegible] [illegible] [illegible] लोरिक [illegible] ग्राउ मामर हो राम।
[illegible] [illegible] [illegible] हम्मर हइ धनमा हाथ हो राम।
[illegible] [illegible] [illegible] गुनि गुरु मिनराजल [illegible] देलन जबाब हो राम।
[illegible] [illegible] धनमा देवी मइया [illegible] [illegible] हो राम।
[illegible] जहाँ [illegible] [illegible] जहाँ गाजवइ [illegible] [illegible] हो राम।
[illegible] चलल [illegible] [illegible] [illegible] लेवइ [illegible] हो राम।
[illegible] [illegible] बूढ़ कुबड़ा के, मिनराजल [illegible] [illegible] हो राम।
[illegible] [illegible] बूढ़ कुबड़ा, देवी मइया दीहन पार लगाई हो राम।

० ० ० ०

[illegible] [illegible] [illegible] मइया के जा हइ [illegible] हो राम।
[illegible] [illegible] मइया [illegible] [illegible] के कुबवा [illegible] [illegible][1] हो राम।
[illegible] [illegible] [illegible] के कुबवा लोरिक के देलन [illegible] हो राम।
[illegible] [illegible] मइया के कुबवा के [illegible] देलन [illegible] हो राम।
[illegible] [illegible] कुबवा [illegible] [illegible] [illegible] गुरु मिनराजल [illegible] हो राम।
[illegible] [illegible] [illegible] लोरिक ग्राउ मामर गुरु के [illegible] [illegible] हो राम।
[illegible] [illegible] मइया [illegible], [illegible] के [illegible] [illegible] हो राम।
देवी [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible] के [illegible] हो राम।
[illegible] [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible] हइ [illegible] हो राम।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] देवी मइया, [illegible] [illegible] [illegible] हो राम।
[illegible] [illegible] [illegible] हइ देवी मइया, [illegible] [illegible] [illegible] हो राम।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के [illegible][2] [illegible] [illegible] हो राम।
[illegible] न [illegible] देवी मइया [illegible] [illegible] [illegible] हो राम।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मइया [illegible] के [illegible] हो राम।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हो राम।

---

[1] [illegible] [2] [illegible] [3] [illegible]

जेहु हम्मर सामी मलसौधरा निपटे मउगा निपुसक हो राम।
का हमरे भाग हलइ देवी कि जोड़िया ऐसन देलऽमिलाय हो राम।
अब मोरा नहिं दिन कटतउ देवी मलसौधरा केर पास हो राम।
हमरो जे जोड़िया देवी मइया लोरिक से देहि मिलाय हो राम।
जहिना से देखली बिरवा के दिलवा लेलिअइ बैठाय हो राम।
अब कौनि उपयवा से बिरवा के घरवा लिअइ बोलाय हो राम।
बिरवा के सुरतिया गे देवी मइया दिलवा से न बिसरइ[1] हो राम।
सगवा तो चदवा के बैठल हइ चेरिआ लउड़ी[2] हो राम।
दतवा हसरवा से चदवा के लौंड़िया समुझावइ हो राम।
काहे एतना मनमा चदा मयाँ कयलऽ हाय रे उदास हो राम।
बाधहु धीरजवा चदा रानी लोरिकवा क लीह अगनाय हो राम।
नित नित लोरिकवा आवऽ हइ अप्पन गुरु के मकान हो राम।
एही तो रहिया हइ लोरिक के आव आउ जाय के हो राम।
नित नित बैठिहऽ झरोखवा से बिरवा के लीहऽ बोलाय हो राम।
तोहरो सुरतिया देखि के लोरिकवा जइतो लोभाय हो राम।
जतिया के बेटवा हउ लोरिकवा मनिआर हो राम।

● ● ●

सुनो जब मइया अयलन गुरुवा के पास हो राम।
गुरु मितराजल हो देखिय के पिठिआ देलन ठोक हो राम।
जल्दी बाध रे बेगा लगोटवा आउ कसी ले हो राम।
सुनो जे अखरवा में कुदलइ हो भइया जोधी हो राम।
गुरु मितराजल हो बैठिय अखरवा बिहँसइ हो राम।
तोरा से बढ़के बेटा कोइ बिरवा न गउरा अलमल हो राम।

● ● ●

आइयो में गेलइ माघ सिरी पचमी लगन हो राम।
लोरिक के अब सदिया के बतवा होय लगलइ हो राम।
बुढ कुब्जा मितराजल से कहइ अब लोरिक के साजऽबरात हो राम।
माघ सिरी पचमी के दिनमा लोरिक के बनइ वियाह हो राम।
साज हइ बरतिया लोरिक क बूढकुब्जा हाय हो राम।

---

१ विस्मृत होता है। २ दासी।

नहिं कोई दउरा हइ संगवा न पालकी हइ हो राम।
लोरिक जब बांधिए लेलन केसरिया पगड़िया हो राम।
दस-बीस पंचवा के संगवा में ले ले चललन बारात हो राम।
बहुते गरीब हलइ लोरिक के बाबू मइया हो राम।
कुछो न बरतिया खातिर, बजवा ना पालकी हो राम।
रोइए रोइए गे खुलनी गुरु मितराजल से बोलइ हो राम।
कोइ से कपड़वा गुरु जी पैंचा[1] तुहूँ मागहूँ हो राम।
तुहूँ जवे हहु गुरु जी जतिया के धोबिश्रा हो राम।
कोई धोबी भइया से कपड़वा भाड़ा पर माँगऽ हो राम।
एतना जे सुनी मितराजल गुरु गोसवा भेलन हो राम।
विरवा के धनमा बिरवा के रहिश्रा चलते मिलतइ हो राम।
श्रोहि घड़िया बेलवा गे खुलनी श्रारती ले हइ उतार हो राम।
दस-पाँच पचवा मिलिए बरतिया चलइ हो राम।

● ● ●

संगे बरतिया लेले मितराजल जुमी गेलइ धोबी केर मकान हो राम।
दुश्ररा पर खड़ा होके देखऽ हइ धोबिया कि पंच मितराजल हो राम।
झुकी-झुकी धोबिश्रा मितराजल के करइ परनाम हो राम।
तुहूँ हम्मर पंच हऽ भइया कौने श्रयलऽ हेत[2] हो राम।
गरजी के बोलिया हो बोलइ पंच मितराजल, हो राम।
हमहु चलली रे पंच धोबी भइया लोरिक के करे बिश्राह हो राम।
हमनी बरतिया के एको न हइ कपड़ा देहिया हो राम।
तुहुँ सब कपड़वा धोवऽ हऽ रजवा के हाथ हो राम।
इ कुल कपड़वा दे दे, पेन्हिये हम जइश्रइ हो राम।
लौटवउ बरतिया से कुल कपड़ा तोरा देवउ हो राम।
एतना सुनिये बोलिया मितराजल के धोबिश्रा समुझावइ हो राम।
सुनी जानी पइतन रजवा त चनमा हम्मर देतन मार हो राम।
एतना बोलिया सुनइ मितराजल गोस्सा भेलइ हो राम।
धोबी तोरा जानिए मोबी होके श्रइलिश्रउ तोहर दुश्रार हो राम।
श्रइसन बोलिया बोलल कि मन करे लुटिश्रइ घर-दुश्रार हो राम।

---

१. उधार। २. कारण।

डरवा के मारे हो थर थर काँपे लगलइ धोबिया हो राम।
कुल जे कपड़वा रजवा के धोबी घर से लेलन लूट हो राम।
लोरिक सग बरतिया कपड़ा समे पेन्हि लेलन हो राम।
मारते गरजवा मितराजल अघोरी ले ले जाहे बारात हो राम।
बीचे जे जगलवा में मिललइ महुरिया सजले बारात हो राम।
सोना अउर चाँदी के तमदनवा पर बैठल हइ महुरिया के बेटा हो राम।
सदिआ जे करिके महुरिया लौटल आवऽ हलइ हो राम।
ओकरा जे मगवा में बहुत हलइ दउरा औ महर[१] हो राम।
लोरिकवा के हजमा बुधुआ मुसुकाइए बोलइ हो राम।
सुनहु न सुनऽ न गुरु मितराजल ननले हइ बात हो राम।
बनिया के पूत होके चलल आवइ एतना ले ले सामान हो राम।
बीचे जगलवा में छेकिए माँगहु कि हमरा दे दे कुल समान हो राम।
तब गुरु मितराजल बोलइ सुन लोरिक हम्मर बात हो राम।
बुधुआ हजमवा के बैठा देही बीचे रहिया उ छेकिए[२] सूती जैतइ हो राम।
हमनी सब लुकिए जाहु जगलवा, हुँए से लूटी लेबइ बरात हो राम।
बीचे जे रहिया पर सूती गेलइ बुधुआ हजाम हो राम।
उधर से चलल आवऽ हइ महुरिया सजले बरात हो राम।
बीचे जे रहिया पर कउन तूँ सूतल हऽ हो राम।
छोकि देहि रहिया मोसाफिर हमर जाइत बरात हो राम।
बड़ा मुँहमा बिचकाइए रे बुधुआ हजमा बोलइ हो राम।
कहाँ के राजा हऽ कि रहिया से हमरा देवऽ हटाय हो राम।
बनिया रिसियाइए तमचवा तानलन मारे ला हो राम।
बुधुआ लोरिक के गोहारइ[३] दादा हम्मर जनमा गेल हो राम।
बीचे जे जगलवा से सेरवा[४] निकलइ मारते आवाज हो राम।
मारे डरवा के थर थर काँपइ बनिया देलक कुल सामान हो राम।
अब लोरिक बैठिए गेलइ हो चँदिआ लचका[५] हो राम।
गुरु मितराजल के बैठाइ लेलन पालकी हाथ हो राम।
अपने दुनों मइया बैठि गेलइ सोनमा चादी के लचका हो राम।

---

१ विवाह के समय वर की ओर से वधू को दी जाने वाली सपति। २ रोक कर।
३ पुकारता है। ४ लोरिक। ५ डोली।

महुरिश्रा चे सब सामान ले के अघोरिया जा हइ बरात हो राम।
मारते गरजवा लोरिकवा मनियार जुमि गनइ[1] अघोरियापुर हो राम।
दुअरा पर होव लगलइ लोरिक के परिछनिया[2] हाय हो राम।
सोना के थाली में गइया के घीया के दिअरा में आरती उतारइ हो राम।
ओहि घड़िया बेलवा परछौनी करके देलन मरवा बैठाय हो राम।
बीचे जे मड़वा में बैठलइ लोरिकवा मनियार हो राम।
उनके बगलवा में चन्दादाम करिये मजरी के देलन बैठाय हो राम।
लोरिक के बिग्रहवा पंडित मजरी से करिये देलन हो राम।
ओहि घड़ी बेलवा बोलइ अघोरी के सभे जवान हो राम।
सुनऽ हलिअइ कि गउरा में बड़ा बड़ा यार इउ पहलवान हो राम।
एतना जे बोलिया सुनऽ हइ लोरिकवा मनियार हो राम।
मरवा में बैठले मारऽ हइ गरजवा लोरिक हो राम।
सुनऽ हिं न सुन अघोरिया के बड़ा बड़ा वीर जमान हो राम।
देखियौ कि केकर भुजवा में इउ ताकत हो राम।
एतना बोलिया सुनऽ हइ अघोरिया के चुनल जमान हो राम।
बीचे जे मड़वा में होवे लगलइ लोहवा के भिड़ान हो राम।
खुनमा के धरवा मड़वा से बहि गलइ हो राम।
देखी बिरतइया[3] लोरिक के मजरी गेलइ मुसकाय हो राम।
पिठिया पर लोरिक के भैया सामर हइ हो राम।
दुनु भइया मिलिये अघोरिया वीर से कइलन बीरान हो राम।

● ● ●

अब लोरिक माँगे हो लगलइ सासु से बिदाइ हो राम।
मजरी के आगे हो चलइ लोरिकवा मनियार हो राम।
पाछे से जे डोलिया मजरी के चलल आवइ हो राम।
ओकरा पीछे चलल आवइ सामर भइया हो राम।
ओकरा पीछे बैठल आवइ हो मितराजल बूढ़ कुज्जा हो राम।
ओकरा पीछे चलल आवइ बुधुआ बिहसते हो राम।
मजरी के खोइछा[4] धन इलइ कि जिन्दगी लेतन निबाह हो राम।

---

१ पहुँच गया। २ परिछन (स्वागत)। ३ वीरता। ४ अंचल की छोर को उलट कर व कमर के ऊपर सामने बंधी, तात्कालिक झोली।

अब तो लोरिकवा के फिरलइ मंजरी के दिनमा हो राम।
अब जुमि गेलइ रे बिरवा गउरवा नगरवा हो राम।
दुअरा पर बैठल हलइ खुलनीबूढी मइया हो राम।
सोने के थलियवा में आरती उतारइ हो राम।
दुअरा बाजे लगलइ नअवा धनघोर हो राम।
सउँसे गउरवा के नरनारी अयलइ लोरिक के मकान हो राम।

● ● ●

मजवा के आवाज सुनइ चंदवा हिरिदवा सालइ हो राम।
सुनहिं न सुने चेरिया[1] कहाँ बाजइ अइसन मजवा अनमोल हो राम।
ओहि घडिया गे चेरिया सउँसे गउरा घूमइ हो राम।
दुअरा पर देवऽ हइ लोरिकवा के शादी करके लौटल हो राम।
सुनहु न मइयाँ चंदवा, लोरिक बिअहवा करि लौटलइ हो राम।
एतना बोलिया सुनते चंदवा मुरछा खा हइ हो राम।
चेरिया बोलइ बाँधू धीरजवा लोरिक होइ हे तोहार हो राम।
इ घड़ी जल्दी करलऽ सोरहो दूँ अपन सिंगार हो राम।
एहि घड़ि मौका हउ कि चंदवा लोरिक के जाहु मकान हो राम।
सबके बेटिआ आउ पुतोहिया लोरिक के सुमावइ हो राम।
एही जे बहाना करके मैंया से जाहु लोरिक के मकान हो राम।
एतना जे सुनते चंदवा गे होसवा करइ हो राम।
करिये सिंगरवा गे चंदवा देवि के धरइ धेयान हो राम।
एहि घरिया सुनहिं न देवी मइया हमरो एक जवाब हो राम।
आज घरवा जाहिअउ देवी लोरिकवा बीर के मकान हो राम।
बिरवा के पिरितिया गे देवी मइया हमरा से दीहऽ मिलवाय हो राम।
सात सेर पठियवा[2] गे देवि तोरा भोगवा देबउ लगाय हो राम।
मइया से चुपे गे चंदवा लोरिक के जा हइ मकान हो राम।
गोदिया मे लेलकइ गे चंदवा अरवा चाउर हो राम।
अउरा रसी लेलाइ गे चंदवा हिरवा मोती गे लाल हो राम।
चंदवा जे हलइ राजा सहदेव के बेटिया हो राम।
ओहु चलल जा हइ लोरिक बीर के मकान हो राम।

---

१ दासी। २ बकरी का बच्चा।

जुमिए मकनिया लोरिक के अगनवा गेलइ हो राम।
सब कोई देखे लगलइ चंदवा के सुरतिया हो राम।
बड़ा भाग भेलइ खुलनी के घरवा हाय हो राम।
रजवा के बेटिया चंदवा चुमावेला लोरिक के अयलइ हो राम।
बीचे अगनमा मे जे बैठल देखइ मंजरी औ लोरिक हो राम।
सब कोई लोरिक के चुमावऽ हइ, अब चदवो चुमावइ हो राम।
लोरिक से जादे चंदवा के बलवा-ताकत हलइ हो राम।
लोरिक के चुमावइ चंदवा पुटपुरिया औ कलहवा देइ दबाय हो राम।
इतना जोर से दबयलकइ गे चंदवा लोरिकवा गेलइ घबड़ाय हो राम।
अइसन नहीं देखली कि इसवर हो तिरिया होवे बलवान हो राम।
केकर इ तो घरवा के बेटी इइ केकर घर के हइ पुतोह हो राम।
जइसन जे सुरतिया गे पेलकइ ओयसने पइलक बल हो राम।
एहु मनमा करइ लोरिक के कि चंदवा से करती बात हो राम।
अँखिया जे लाल करके लोरिक बोले लगलइ हो राम।
जइसे बोलिया बोलइ हो लोरिक चंदवा गेलइ मुसकाय हो राम।
एको ना उत्तरवा चंदवा देलकइ लोरिक के हाय हो राम।
लोरिक के निछावर में चंदया दौलत अगनमा देलकइ लुटाय हो राम।
हँसते विहँसते गे चंदवा घरवा से गेलइ बहराय हो राम।

अब अप्पन घरवा चंदवा जे बैठलइ मन मार हो राम।
ओहि घड़िया बिहँसि के बोलऽइइ चेरिया हाय हो राम।
अब जुअवा जीत गेले चंदवा लोरिकवा पैबे हो राम।
जइसन तोर किकिरिआ हलउ लोरिक से कि मिलिअइ हो राम।
ओइसने फिकिरिआ पड़तइ लोरिक के चंदवा से पूछिअइ बात हो राम।
तौने घड़ी बोलऽइइ लोरिक खुलनी बूढ़ी माय से बात हो राम।
सुनहिं न सुने गे मैया कहलिया एक हमार हो राम।
केकर घरवा के बेटी हलइ अगना अयलइ हमार हो राम।
बड़ा तो दौलतिया गे मैया अगनमा अप्पन देलकउ लुटाय हो राम।
खुलनी बोलइ बड़ भाग हउ बेटा लोरिक तोहर हो राम।
इ जे हलइ बेटा हो सहदेव राज के बेटी हो राम।

एकरे जे राज हउ रे बेटा सउँसे गउरागुजरात हो राम।
चंदवे के रैयत हिश्रद हम तूँ हाय हो राम।
इ सब बतिया के लोरिक हिरिदवा लेलन बैठाय हो राम।
अपन महलिया में लोरिक रतिया के करे लगलइ विसराम[1] हो राम।
लोरिक के तिरिया सती मजरी चरनिया दबावइ हो राम।
मंजरी के सगवा में बहिनी ओगर सुदकी हलइ हो राम।
अपने जे हथवा से लुड़की बेनया[2] डोलावइ हो राम।

● ● ●

बिहने होवइते विरवा उठइ डिडियाय[3] देवि के करइ पुकार हो राम।
ओहि पखिया खुलनी टेहरिया[4] भरी लयलन गे दूध हो राम।
इइ दुधवा ले ले रे बेटा चल जा गुरु मितराजल के मकान हो राम।
दुनों भइयवा पहुँची मितराजल के मकान गुरु के करइ परनमा हो राम।
पिठिया ठोकिये गुरु देलन असीस,जुग जुग जीअ लोरिक मनिभार हो राम।
घड़ी जब घटवा तक दुनु भइया मल्लवा अखरवा जुधवा दे इइ मचाय हो राम।
बिहँसि के बोलइ मितराजल अपन देहिया के मटिया लेहु छोड़ाय हो राम।
अखरवा से निकलि दुनो भइया झुकी झुरी करइ गुरु के परनाम हो राम।
एक-एक टेहरी दुधवा गुरु मितराजल दुनों के देलन पिलाय हो। राम।
गुरु के हुकुमवा से अब दुनों भइया चललन गउरवा गुजरात हो राम।

● ● ●

अब सामर भइया से लोरिक छलवा करइ हो राम।
इहु घरे जाहु भैया सामर, हमहु पीछे से अयबउ हो राम।
भया से कहिहऽ कि लोरिक गेलउ हे गुरु के करे काम हो राम।
अब लोरिक चललइ चादवा के महलिया हो राम।
ऊँची जे महलिया से चादवा लोरिक के देखइ हो राम।
ओहि घड़िया-बेलवा लोरिकवा जुमियो गेलइ हो राम।
खिड़की से बिहँसी के चंदवा बोलइ हो राम।
एने कहाँ अयलऽहो विरवा गउरवा घुम्मे हो राम।
सुनहिं न सुनें चांदवा कहलिया एक हमार हो राम।
तोहरे कारनमा गे चांदवा गउरवा घूमिऔ हो राम।

१ विश्राम। २. पंखा। ३. शीघ्रता से। ४ दूध रखने का बर्तन।

तुहूँ तो हऽ राजा के बेटी आ हम हिअौ गरीब किसान हो राम।
एही से हम डरिअउ कि चांदवा कैसे तोरा से करिअउ बात हो राम।
मारइ छुलगवा हो विरवा खिड़की लेहि हमरा बोलाय हो राम।
खिड़की के रहिया से चांदवा लोरिक के लेलक बोलाय हो राम।
दुनो के पिरिनिया हे जुटलइ देवि के महिमा से हो राम।
विहँसि विहँसि के चान्दवा जे लोरिक में गेलइ लपटाय हो राम।
सुनहिं न सुने वीर लोरिक तोहरे से करबउ अपन विआह हो राम।
एतना बोलिया सुनऽहइ लोरिक गोसवा भेलइ हो राम।
तोहर सादी भेलउ गे चाँदवा मलसौधर से हो राम।
अब कइसे दुसर गे सदिया करेला सोचले हो राम।
तिरिया के जतिया सचे लगइ नहिं करिअइ विसवास हो राम।
तब बोले लगलइ चांदवा सुनहिं वीर बेयान हो राम।
सचे सदिया भलउ हल हम्मर मलसौधर से हो राम।
अइसन गभरू मिललउ हमरा निपुसक हाय हो राम।
धोखवा से माइ बाबू करि देलन हमरा विआह हो राम।
हम तो पहिले से सोचले हली कि तोहरा से करबइ विआह हो राम।
आज हमरा देवि के किरिपा से जोड़िया मिलल हो राम।
दुनों के पिरितिया तो दिनों दिन बढ़ल जा हइ हो राम।

● ● ●

जुमियो गेलन हो लोरिक अपनो हइ रे मकान हो राम।
दुअरा बैठल पूछऽहइ लोरिक से खुलनी बूढ़ी माय हो राम।
कहाँ देरी भइले रे बेटा भैया छोड़ले सामर हो राम।
तब लोरिक बोलऽहइ सुन मइया हम्मर बात हो राम।
गुरु के तो सेवा में लगल हली, एही से देरी भेलइ हो राम।
अब टेहरी दुधवा गे खोलनी लोरिक के देलक पिलाय हो राम।
जब तक न आवऽहऽ बेटा अँखियो हमरा न नींद हो राम।
अब तुहूँ जाहु हो बेटा करहु विसराम हो राम।
विहँसि विहँसि के गे खुलनी मंजरी के समुझावइ हो राम।
सुनहु न सुनहु पुतहु मंजर बतिया हाय हो राम।
बबुआ लोरिक के गे मजरी खुसी खुसी करिहऽ मिलाय हो राम।

बहुआ लोरिक के बलवा पर दुनियाँ जा हइ लोभाय हो राम।
चार घड़ी दिनमा हइ चार घड़ी रतिया बीतइ हो राम।
जाने कौन टोनमा लगाइये, लोरिक के दुसमन लेनइ लोभाय हो राम।
जौने रहिया चलइ हम्मर पिरवा सबहि देखइ हो राम।
हमरा घरवा हउ गे मंजरी लोरिक बे धन हो राम।
बड़ी हम गरीबनी, पोसली हे बहुआ लोरिक हो राम।
एतने हम धनमा मंजरी तोहरा देलिअउ हो राम।
इ तुहूँ धनमा गे मंजरी रखिहऽ बड़ी सजोग हो राम।
धनमा अउ सुरतिया के मंजरी चोरवा हइ अनेक हो राम।

खुसनी के बतिया सुनिये मंजरी होलइ होसियार हो राम।
जब जब घरवा आवइ लोरिक त मंजरी समुझावइ हो राम।
मत देरी करऽ हऽ सामी जी, गुरुआ के मकान हो राम।
जब तक न घरवा आवऽ हऽ, धनमा खाही न जल हो राम।
तोहरा रिजला के जुठवा तोहर पीछे हम खइअइ हो राम।
हमरा लेखे इ सामी जी तुँही ईसवर अउ भगमान हो राम।
एतना बोलिया सुनइ बीर लोरिक विहँसिए बोलइ हो राम।
तोहरा से बढ़ के तिरिया जगवा न होलइ हो राम।
तोहरा सुरतिया लगउ सती लछमी नियर हो राम।
किधरो हम जइअउ तिरिया त नइयाँ रखिअउ संम्हार हो राम।
तोहरे सुरतिया सती हम हिरिदया रखऽ ही बैठाय हो राम।
कोई के न जादू-टोना नजरी हमरा लगतइ हो राम।
अब नहिं देरी करम गुरुआ घर से सीधे अयबउ हो राम।
एतना बोलिया सुनऽ हइ मंजरी हरसिये विहँसइ हो राम।
फुलवा के सेजिया जे मंजरी महलिये देलन बिछाय हो राम।
फुलवा के सेजिए पर मंजरी सोनवा के लावइ थार हो राम।
अपने जे हथवा से लोरिक के छप्पन भोजन जेमावइ हो राम।
अप्पन जे बहिनी से मंजरी बेनिया देइ डोलवाय हो राम।
मंजरी के बहिनी के नइयाँ लुढ़की हलइ हो राम।
लुढ़की जे लोरिक के नइयाँ पर अप्पन सादी न कैलन हो राम।

दुनो जे बहिनियाँ तिरिया बनके लोरिक के सेवा करइ हो राम।

● ● ●

दुइ चार महिनमा लोरिक न गेलइ चंदवा के पास हो राम।
बड़ा घबड़ा हइ गे चंदवा, रोवइ बेजार हो राम।
बड़ा धोखा देखक देवि मइया लोरिक जवान हो राम।
खाइए महुरवा[1] गे देवि गउरवे मरवइ हो राम।
काहे लगी रखबउ गे देवि एतना सूरत औ सिंगार हो राम।
इ तो सुरतिया सिंगार के जोगे हइ लोरिक के हो राम।
अब नहिं रखबउ गे देवि अप्पन जिउआ हाय रे प्राण हो राम।
एतना कहिए गे चंदवा तेगवा लेलन हाथ हो राम।
सुनहिं न सुने माना दुर्गा कहलिया एक हमार हो राम।
लै अप्पन हथवा से सिर काटौं तोहरो दिअउ भोग हो राम।
ओहि घड़िया सातो बहिनियाँ देवि होलन सहाय हो राम।
दस पाँच दिनमा ला चंदवा धिरजवा बाँधS हो राम।
लोरिक के तो मंजरी अउ लढ़नी घरवे रखउ बिलमाय हो राम।
अब हम जाहि गे चंदवा लोरिकवा के मकान हो राम।

● ● ●

आधी रतिया मे देवि मइया गेलन लोरिक के पास हो राम।
सपना देखावे लगलन देविमइया लोरिक के हो राम।
वीर होके काहे वीर लोरिक घरवे में रहS हो राम।
तोहर गुरु सिवराजल घरवा जोहउ बाट हो राम।
तोहरो अखरवा रे बिरवा सुखिये गेलउ हो राम।
नित नित बढ़िया मिलावS हलS अखरवा गुरुमकान हो राम।
तिरिया के मोहवा मे लोरिक घरवे में गेलS लोभाय हो राम।
सभे विरतइया रे बेटा दुनियाँ से जयतउ मिट हो राम।
एही सब सपनमा हो देखS हइ लोरिकवा मनिआर हो राम।
होइते बिहनमा हो लोरिक उठलइ चकचेहाय[2] हो राम।
सुन हुन सुन तिरिया कहलिया एक हमार हो राम।
बड़ा अजगुत[3] के सपनमा देखलिअउ रात हो राम।

१. जहर। २. चौंक कर। ३. आश्चर्यजनक।

राते के सपनमा देखिमइया सन्मुख देलन देखाय हो राम।
चारे जे महिनमा बितलइ अखरवा गेला हो राम।
आज हम जयबउ निरिया गुरुआ के हाथ रे मकान हो राम।
बिहँसी के बोलिआ बोलइ सती मजरी समुझाय हो राम।
कहियो न रोकली हम सामी के अखरवा न जाहु हो राम।
जाहु अखरवा देहिआ अप्पन लेहु बनाय हो राम।
दैल रहऽहइ तेगवा, जेकरा मे जगवा लगइ हो राम।
छोड़सने जगवा लगइ देहिया में, बिरवा जब मटिया न लगावइ हो राम।
एतना जे सुनिये लोरिक सामर के करइ पुकार हो राम।
कहाँ गेलऽ बिय मेलऽ हम्मर मइया सामर सरदार हो राम।
अब नित नित जयबउ हो भइया गुरुवा के मकान हो राम।

ऊँचे जे महलिया से चंदवा बिरवा के देखइ हो राम।
लोरिक के नजरिया पड़ी गेलइ चंदवा पर हो राम।
बिहँसि बिहँसि चंदवा लोरिक के बोलावइ हो राम।
कहसे हम अइअउ चंदवा सगवा मइया सामर हो राम।
गुरु घर से लौटबउ तब हम अयबउ हो राम।
दुनो जब मइया जुमि गेलन गुरु के मकान हो राम।
गुरु मितराजल के दुनो भइया मिलिए करइ परनाम हो राम।
बिहँसि के बोलिया बोलइ गुरु मितराजल सुन हो राम।
एतना जे दिन से बेटा काहे न अयलऽ घरवा हो राम।
तोरे तो बिना बेटा अखरवा हलइ सूना हो राम।
हम तो सोचऽ हली कि बिरवा अखरवा देलन छोड़ हो राम।
तब गरजे लगलइ बिरवा लोरिकवा मनिआर हो राम।
नहिं हम छोड़बइ गुरु जी अखरवा के मिट्टी हो राम।
एहि जे अखरवा के मटिया से देहिया पोसल हो राम।
बाधिए लगोटवा रे बिरवा अखरवा कूदइ हो राम।
दुनों जब मइया में होवे लगलइ कुस्ती अउ बहियाँ मिलाव हो राम।
दुनो जब लड़ऽहइ कि भीम लगइ अउ जरासंध बलमान हो राम।
इ बोलिया बोलऽहइ गुरु मितराजल धोबी हो राम।

तोहुँ हऽ रे लोरिक जनिश्रा श्रहीर हो राम।
हम ताहर गुरुश्रा रे बेटा धोतिश्रा हियइ हो राम।
श्रइसने त गुरु हलइ भीम के धोर्बा[1] कृष्ण हो राम।
उनका जे कहऽहलइ दुनिया कि पतितपावन हो राम।
हमरा का तूँ समझऽ ऽऽ लोरिक कहऽ हाथ हो राम।
धरम के नाते वीर लोरिक बेटा तोरा लेली मनाय हो राम।
जइसन पिता इसवर श्रोयसने पिता गुरु हम समझऽही हो राम।
श्रब गुरु मित्तराजल के घर से लोरिक जा हइ हो राम।
श्रब सामर भइया के लोरिक कहलन, श्रागे जा हो राम।
भइया जे पूछउ कहिहऽ मैया गेलइ देवीथान हो राम।

● ● ●

खिड़की पर बैठिये गे चंदवा लोरिक के जोहइ बाट हो राम।
जौन घड़ी देखइ गे चंदवा लोरिक श्राते मनिश्रार हो राम।
श्रचरा पसारिये गे चंदवा भिरवा मांगइ हो राम।
जे श्रा से देखली न बिरवा सुरतिया सोहार हो राम।
हरिया से न श्रन्न-जल हमरा भेलइ मराल हो राम।
विहँसि विहँसिए हो लोरिक चंदवा में गेलन लपटाय हो राम।
तोरे रे करनमा गे चंदवा भइया के छोरली हो राम।
श्रब हम जल्दी जइबउ चंदवा, मंजरी जोहइत होतइ बाट हो राम।
एतना बोलिया सुनइ गे चंदवा बिरवा के थामइ हाथ हो राम।
हमरा लेइए हो बिरवा निकलिये चलऽ हो राम।
तोरे खातिर छोड़बइ बिरबा गउरवा के राज हो राम।
एतना धनमा लेबइ कि जिनगी लेबऽ बिताय हो राम।
एतना बोलिया सुनिए लोरिक सालले[2] देहइ जबाब हो राम।
कहाँ चलबे गे चंदवा जल्दी कह गे बात हो राम।
श्राज के दिनमा हो लेके चलऽ हरदी बजार हो राम।
तब बोले लगलन चंदवा से लोरिक मनियार हो राम।
कइसे हम छोड़बउ गे चंदवा मंजरी तिरिया हो राम।
कइसे हम छोड़बउ गे चंदवा लुइकी श्रउ मइया हो राम।

(पाप धोने वाले)। २. उत्तर।

खुलनी जे मइया के दूध पीके हम भेली बलवान हो राम।
सेहु कइसे मइया के गे चंदवा छोड़ अब भागी हो राम।
हम नहि छोड़बउ गे चंदवा मइया तिरिया हो राम।
तब बोले लगलइ चंदवा रोइए रोइए हो राम।
दुइ चार महिनमा ला विरवा गउरवा छोड़ हो राम।
फेर हम एके जगह रहबइ मंजरी अउ चंदवा हो राम।
जुटा छोड़तइ मजरी लो खोई खाके दिनमा लेबइ काट हो राम।
अइसन माया रचलक चंदवा कि विरवा लेलक लोभाय हो राम।
चंदवा अउ लोरिक के होइ गेलइ कौल करार हो राम।
आज तबे चलबउ गे चंदवा हरदिआ बजार हो राम।
दुनों के मिलनमा होतउ देवीथान हो राम।
अब लोरिक चली जे गेलन अप्पन मकान हो राम।

खुलनी जे मइया के मैंदवा मालूम हलइ हो राम।
रोइए-रोइए गे खुलनी, मंजरी के देलक समुझाय हो राम।
जइसे घरवा पेनन लोरिक बिहँसि के मंजरी लेलन बैठाय हो राम।
छप्पन परकार भोजनमा लोरिक के देलन खिलाय हो राम।
फुलवा के सेजिआ पर लोरिक के देलन सुताय हो राम।
अपने जे सुतलइ गे मंजरी लोरिक कोरवा हो राम।
लुदकी सलिआ लोरिक के गोरथरिए सुनलन हो राम।
अपना अँचरवा से लोरिक के धोतिआ लेलन बाँध हो राम।
खुलनी जे मइया बीचे दुअरिया छेंकिए सुतलन हो राम।
आधी निसि रतिआ में चंदवा घरवा से बहराय हो राम।
सोनमा के पेटरिया चंदवा बगलवे में ले हइ दबाय हो राम।
देवि के मरफिआ[1] में चदवा डेरवा देलन गिराय हो राम।
घड़ी जब घटवा लक चंदवा विरवा के जोहइ बाट हो राम।
सुनहि न देवि मइया लोरिक धोखा देलन हो राम।
अब नहि रखबउ देवि मइया अपन परनमा हो राम।
तोरे जे मदिरवा में देवि अप्पन मुरिआ देबउ चढ़ाय हो राम।

---

१ स्थान।

एतना सुनिए देवि मइया मन्मुख होलन उदार हो राम।
बाँधहि धिरजवा गे चंदवा लोरिकवा मिलतउ हो राम।
बिरवा के निनिया परियो गेलइ हो निरमेस[२] हो राम।
ले हीं हम्मर भभुतिया चंदवा लोरिक के जा ही मचान हो राम।
लेइए असीसवा गे चंदवा लोरिक के जा हइ मचान हो राम।
देवि पेयनमा धरि खुशी गेलइ लोरिक के मचनमा हो राम।
देवि के देवल अछनवा देलकइ छीटी हो राम।
मजरी अउ लुदखी के नींद पड़ि गेलइ निरमेस हो राम।
अब ओहि घड़ि जगावइ गे चंदवा लोरिक मनिआर हो राम।
निंदिया टुटते, पलटि नजरिया देखइ तो चंदवा देखइ हो राम।
बड़ा दुलारी गे चंदवा लोरिक के कहइ बात हो राम।
मरदा तू होइके हो लोरिक झूठ कैलऽ बात हो राम।
अपने जे सुतल हऽ बिरवा तिरिया ले लें साथ हो राम।
हम कौन कसुरवा कइली कि देवी मंदिर छोड़लऽ बिसार हो राम।
तब बोले लगलइ लोरिक चंदवा सुन बात हो राम।
देख हम बंधनमा में बाधल ही मंजरी के हो राम।
अप्पन अँचरवा के खुँटवा से हमरा बाधले हइ हो राम।
तब बोलइ चंदवा, खोल दे बंधनमा बिरवा जल्दी चल हो राम।
तब लोरिक मनियार लाजले दे हइ जबाब हो राम।
खोलो सनेहिया गे चंदवा कइसे खोलियइ हो राम।
दस जब मइया पच के सौंपले हइ मंजरी तिरिया हो राम।
तब बोले लगलइ चंदवा बिरवा तू धोखेबाज हो राम।
तब बोले लगलइ लोरिक सुनहि हम्मर जबाब हो राम।
हमहुँ अप्पन आधा धोती खँडवा से काटबइ हो राम।
बाधल हइ गँठवा मंजरी सुतल हइ निरमेस हो राम।
लेइए लोरिक के चंदवा के हरदी अब जाहइ बजार हो राम।

● ● ●

चलते चलते चंदवा के होइए गेलइ बिहान हो राम।
एक नदिया पड़लइ त हुँए पर डेरवा देलन गिराय हो राम।

२. बेखबर।

खोजे जग लगलन कहाँ इइ मलहवा घटवार हो राम।
ओहु जे मलहवा हलइ बड़ा विरवा बलवान हो राम।
जानिये गे बुझिए चंदवा ओहि घटिया गेलइ हो राम।
चंदवा के सुरतिया देखिए मलहवा गेलइ लोभाय हो राम।
लोरिक के विरतइया देखे खातिर मलहवा के देलन चढ़ाय हो राम।
अँखिए-अँखिए से चंदवा मलहवा के लेलन फुसलाय हो राम।
इ खातिर-सोचे हरचन्दवा कि रहिया के कँटवा दीअइ निकाल हो राम।
गरजि के बोलिया बोलऽइइ मलहवा हाय हो राम।
त्रिय तोहर नइयाँ[1] हउ बटोहिया एतना मोरे ऐनऽ घाट हो राम।
केन्नर सँ बेटिया पुतोहिया लेके भागल जाय हो राम।
मारबउ हम लॅरवा से बटोहिया रे सिरवा लबउ उतार हो राम।
अप्पन इ औरतिया के हमरा देहि अपन जान बचाव हो राम।
गोसवा मारल रे लोरिक खँड़वा लेलन तान हो राम।
लोरिक मलहवा से नदिए पर होवे लागलइ जूझमार हो राम।
अपने जे बैठिए के चदवा इसरवा दे हइ हो राम।
मारलो गेलइ लोरिक के हाथ से घटिया के मलाह हो राम।
अब खुनी खुसी मनमा से दुनु नइया पर बैठलन हो राम।
नइया खेवइन लोरिक मे चदवा बोलइ मुसकाय हो राम।
हम्मर तोहर जिनगी सामी नीके कटत हो राम।
नदिया के पार हो लोरिक होइए गेलन हो राम।

● ● ●

हाते भिनुसरवा गउरा मचलइ हाहाकार हो राम।
राजा सहदेव के बेटिया च दवा कहाँ भागलइ हो राम।
कुछ लोग कहऽइइ लोरिक लेइए गेलइ हो राम।
ओहि घड़िया सहदेव राजा नगरा ढोलवा देहइ बजवाय हो राम।
जल्दी में खोजिए लावऽ हमरो दुसमन हो राम।
चारो अवे ओरिया[2] सिपहिया खोजवा करइ हो राम।
कनहु न पावइ लोरिक आ चँदवा हाय हो राम।
खोजते-खोजते सिपाही लोग नदिया अयलइ हो राम।

---

१. नाम। २ ओर (दिसा)।

नदिया किनारे तो मरल देखइ घटवा के मलाह हो राम।
नइया न देलऽहइ अउ तेगवे के काटल मलहा के सिर हो राम।
ऐसन त रहवा बोधऽ हलन लोरिकवा मनियार हो राम।
एहि राहे लोरिक आउ चंदवा भागल हरदी बजार हो राम।
जुमिए गउरवा सिपाही लोग रजवा के कहइ हो राम।
बूढ़ बुढ्जा के बेटवा लोरिकवा चंदवा के लेइ भागलइ हो राम।
सभे बेयनमा रजवा के सुनावऽ हइ पहरू सिपाही हो राम।
एतना जो सुनी राजा सहदेव गोसवा से गेलन भर हो राम।
कोई नहिं जाये पावे हो हरदिया हायरे बजार हो राम।
अनमा अनमा खातिर मरी कइहें खुलनी लोरिक के परिवार हो राम।

● ● ●

डेगे-डेग चलइ गे चंदवा, बिहँसते जा हइ हो राम।
बीचे जे जंगलवा में चली जाहइ लोरिक अउ चंदवा हो राम।
बीचे जे रहिया मे छेड़ऽ हइ लोरिक के कोलवा-भील हो राम।
चंदवा के सुरतिया देखिय भिलवा गेलइ लोभाय हो राम।
गरजि के बोलिया बोलऽ हइ जंगलवा के भील हो राम।
तोरा संगे तिरिया हउ मुसाफिर, हमरा दे दे हो राम।
नहिं तो मरबउ हम तेगवा से तोर सिरलेबउ उतार हो राम।
तब गरजे लगलइ हो बिरवा लोरिक मनियार हो राम।
अइसन बोलिया बोलले से बोलले न तो सिरवा लेबउ उतार हो राम।
एतने मे होवे लगलइ भिलवा से लोरिक के जुझमार हो राम।
अँखिया इसरवा गे चंदवा भिलवा के दे हइ हो राम।
चदवा के ओहवा में आइ गेलइ भिलवा खूब लड़इ हो राम।
छन जब घड़िया में लोरिक भिलवा के कटलन सिर हो राम।
खुमी मनमा से जुमी गेलइ लोरिक अउ चंदवा हरदीबजार हो राम।
सउँसे हरदिया देखइ चंदवा अउ लोरिक के सूरत हो राम।
सभे कहइ नहीं देखली अइसन तिरिया अउ बलवान हो राम।

● ● ●

बीचे जे चौरहवा पर देखऽ हइ भिड़वा लगल अपार हो राम।
हरदी लोग सब पूछइ कि कहाँ हउ तोहर मकान हो राम।

ओहि घटिया बीतलऽ हइ लोरिक सुनहु हम्मर बात हो राम।
हमरो मरनिया हवऽ गउरा गुजरात अतिया अहिरवा हो राम।
हइ कोई नोकरिआ त हमरा देहु लगाय हो राम।
नीचे से चौरहवा पर हलन छटू साव बनिया हो राम।
उनका न घरवा म हल कोइ बेटवा-बेटी हो राम।
बिहँसि के बोलिया बोलइ बुढ़ा छटू साव हाय हो राम।
हमरा मरनियाँ पर ठहरऽ तूँ बेटा-पुतहू रखब बनाय हो राम।
एतना जब सुनऽ हइ चदवा बिहँसिए बोलइ हो राम।
इनके मरनिया में सामीओ दिनमाँ लेहु काट हो राम।
रहे जब लगलन बिरवा एही बनियाँ के रे मकान हो राम।
तब बोले लगलइ लोरिक सुनहु साव जी एक बात हो राम।
हरदी के रजवा फन हमरो नौकरिया देहु लगाय हो राम।
होयते बिहनमा गेलन बनिया राजा दुआर हो राम।
सुनहु न सुनऽ राजा कहलिया एक हमार हो राम।
धरम के बेटा पुतहु धरवा ऐलइ हम्मर दुआर हो राम।
रोटिया के खातिर नौकरिया खोजऽ हइ हाय हो राम।
उनकर नइयाँ हइ - राजा लोरिकवा मनियार हो राम।
अइसन मलवान राजा हरदी में एको न हइ हो राम।
तब बोले लगलइ हरदी के रजवा समुझाय हो राम।
जल्दी में हाजिर कर बनिया बिरवा हम्मर दरबार हो राम।
ओकरो नौकरिया देबै जमुनी घाट के तसीलदार हो राम।
खुसी खुसी मनमा से लोरिक जुमलइ राजा के दरबार हो राम।
झुकी झुकी करइ लोरिक रजवा के परनाम हो राम।
देखऽ हइ सुरतिया रजवा बिरवा के हाय हो राम।
तोरा हम रखलीअउ रे बिरवा नोकरिया देलिअउ हो राम।
तूँ जो तसील करी हइ जाके जमुनी घटिया हो राम।
पाइए नोकरिया बिरवा जमुनी जुमल घाट हो राम।
जमुनि घटवा पर बिरवा करे लगलइ तसील हो राम।

● ● ●

बड़ा-बड़ा बिरवा चलऽ हलइ जमुनी घटिया हो राम।
कहाँ से अयलऽ सिपहिया जमुनी घाट करे तसील हो राम।

कहियो न देलिअइ हम रजवा के इहाँ के तसील हो राम।
तब बोले लगलइ लोरिक गरजिए हाय हो राम।
सुनहिं न सुन सब जमुनी के लोगवा हम्मर बात हो राम।
हम तो जरूर करबउ जमुनी घटिया के तसील हो राम।
तब होवे लगलइ घटियो पर जुझवा मार हो राम।
लोथवा के ढेर लगी गेलइ नदिए किनार हाय हो राम।
सब मारल गेलन हो जमुनी घाट क बिरवा हाय हो राम।
इहे सब खबरिया मिललइ रजवा हरदी मे हो राम।
बड़ा खुसी मन से लोरिक के पिठया बोलाइए टोस्लन हो राम।

○ ○ ○

अब हिआ से सुनावऽ हिअइ गउरा के बेयान हो राम।
सिंगा[1] लाग गइया लेके सामर चललन पाली चरान हो राम।
पाली औ पिपरी में बड़ा-बड़ा बिरवा रहऽहलइ हो राम।
पाली अउ पिपरी में रहऽहलइ कोल्हया हाय हो राम।
ओही पाली पिपरी गइया लेले सामर जा हइ चरान हो राम।
डेगे-डेगे रोकइ सामर के बिरना बैला हो राम।
डेगे डेगे आउर रोकइ गइया के कागा बदरिल हो राम।
सुनहु न सुने सामर दादा कहलिया एक हमार हो राम।
मत तुहूँ जाहु सामर दादा पिपरी गैया चरान हो राम।
बड़ असगुन बीत इइ पलिया के आज चराइ हो राम।
आज हुआँ जइब त लोहया मे होतो मिरान हो राम।
तूँ ही अकेले घरवा बचलऽ हे सामर भइया सरदार हो राम।
गैया तोहर चलिए गेलन हे हरदिआ बाजार हो राम।
गोठवा से सामर बैला आउ कागा के सतके बधन में बाधलन हो राम।
तब बोले लगलइ कागा बादरिल अउ बिरना बैला हो राम।
कहीं मारल हो जइबऽ सामर त कौन हम्मर बधन खोलते हो राम।
हम मारल जैबउ रे बिरना त बधन खोलतउ माजर हो राम।
जौन घड़ी माजर नइया लेतउ, बँधन सत से खुलतउ हो राम।
कहीं हम पाली जीत अयबउ, लेइ चलबउ बधन खोलिए हो राम।

---

[1] सिंगवाली।

कोई के बतिया न मानऽ हइ सामर हाय हो राम।
आज बड़ा असगुनमा सामर के बीते लगलइ हो राम।
डेगे डेगे चलऽ हइ सामर कगवा बोलइ हो राम।
अब जुमी गेलइ हो सामर पाली पिपरी करइ चरान हो राम।
पाली पिपरी के कोल्हवा गरजवा मारे लगलइ हो राम।
कौने ऐसन मूरखा आयल हमरो चढ़िए गाँव हो राम।
सिंगा लारत गइया सामर के कोल्हवा सब घेरिए लेलन हो राम।
ओहि घड़िया होवे लगलइ, सामर से जूझमार हो राम।
पड़ी जब घटवा तक खूब लड़लइ सामर पिपरी हो राम।
मारलो ना गेलइ हो नारग जी सामर सरदार हो राम।
गिरते धरतिया सामर गइया के दे हइ दोहाइ हो राम।
तोरे जे करनमा गे गइया हतली[1] अपन परान हो राम।
का हम्मर नढ़ा[2] गइया का हम्मर लगहर[3] एक धार देहु दूध हो राम।
दुधवे के धरवा में हम्मर लसवा ले जा दहाय हो राम।
हमर लसवा लगा दीहऽ, कोहवा केरे बथान हो राम।
ओही गे बथनिया में हमर तिरिया अयतन सती मनायन हो राम।
एक एक धरवा-नढ़ा गइया अउ लगहर देलन गिराय हो राम।
दुधवा के नदिया उमड़ल पाली पिपरी हो राम।
ओही जने धरवा म सामर के लसवा लेलन बहाय हो राम।
ओहु जे लसवा बहते बहते लगलइ बथान हो राम।
भोरवा होयते सती मनायन अब अयलन बथान हो राम।
अपने बथनीया में देखऽ इथन सामी के लास हो राम।
रोइए रोइए सती मनायन गोदिए लेलन उठाय हो राम।
हउँसे गउरवा में मची गेलइ सामर खातिर हाहाकार हो राम।
रोवते कनइते अयलन खुलनी बुढ़ी माय हो राम।
मारलो गेलइ मजरी मोर बबुआ सामर हो राम।
लोरिक जे रहतन त एकर बदलवा लेतन, हल चुकाय हो राम।
बड़ा दगा देले रे चदवा मोर बेटा के ल गेले भोराय[4] हो राम।
रोइए-रोइए खुलनी चेरवा[5] के लोटइ समान हो राम।

---

१ हत्या की। २ बिना बिआइ गाय। ३ दूधार गाय। ४ भुला कर। ५ चेरा।

ओहि घड़िया चितवा पर बैठिए गेलइ सती मनायन हो राम।
सामी के लसवा गोदिया में लेइए सतिया होइ गेलइ हो राम।

कोइ नहि जइह ऽ हो हरदी सामर के लेके मरेके वेयान हो राम।
कोइ गउरा लोगवा खबर लेके जयतइ सिरवा लेवइ उतार हो राम।
रजवा के हुकुमवा गउरा में सगरो देलन सुनाय हो राम।
अब रोइए-रोइए खुलनी मथवा धुनइ हो राम।
सुनहिं न सुनि गे मंजरी कहलिया एक हमार हो राम।
कैसे हमर लोरिक बेटा छुतके में रना होतन अब जान हो राम।
मइयवा के जोड़ी फुन भेजइ, खबरियो न पहुँचल हो राम।
राजा सहदेव हुकुमवा गउरा में देलन जनाय हो राम।
अब कौने उपयवा से पाती भेजिअइ हरदी बजार हो राम।
ओहि घड़िया, वेलवा मंजरी जरवा रोवइ बेजार हो राम।
सिंगा लारा गइया के सासु जी कोल्हवा दुहि खाय हो राम।
बेटा कागबादरिल रहतन तो हरदी जयतन हल बजार हो राम।
बिरना बैलवा मोर रहतन तो सिंगा लारा गइया लेतन लौटाय हो राम।
सत के बधनमा में बादरिल अउ बिरना बाधल हलइ हो राम।
मंजरी के नइयाँ लेते बधनमा टुटल हो राम।
दरखत[1] उड़ाइए के कागा बादरिल उड़इ हाय हो राम।
दुअरे पर गिरलइ बदरिलवा कगवा हाय हो राम।
ओहि घड़िया दुअरा पर बिरना बजर[2] के गिरइ हो राम।
सुनते अवजवा मंजरी गेलइ घबड़ाय हो राम।
कउने असगुनमा टुटलइ सामी[3] बजरा[4] केमार[5] हो राम।
देखऽ हइ दुआरिया मंजरी निमने देखइ केमार हो राम।
खोलइ केमरिया त देखइ कागा बादरिल अउ बिरना बैला हो राम।
बिरना अउ बदरिल दुअरिया बेहोस पड़ल हलइ हो राम।
भिंगले अँचरवा से मंजरी दुना के मुँहवा पोछइ हो राम।
घड़ी जब घटवा में बादरिल अउ बिरना के होसवा भेलइ हो राम।
रोइए-रोइए दुनो सामर के कहइ रे बेयान हो राम।

१ वृक्ष। २. चोट खाकर। ३ स्वामी। ४ बज्र। ५ किवाड़ी।

अब रोइए-रोइए गे मंजरी बादरिलवा के समुझाय हो राम।
कौने खबरिया अब लेइए हरदिया जयतइ बजार हो राम।
कैसे मोरा सामी हो बादल छुतकचे रहइहें अब हो राम।
कागा बदरिलवा गरजइ, हम पनिया ले ले जैबइ हरदी बजार हो राम।
रोइए रोइए मंजरी समुझावइ, अन्न जल करके जाहु हरदी बजार हो राम।
कागा बोलइ कि अब तक खबरिया न लैबइ, अनमा न गरसबइ[1] हो राम।
रोइए रोइए गे मंजरी हियाँ पे लिखइ दुख बेयान हो राम।
जहिया से गेलऽ सामी हरदिया हाय रे बजार हो राम।
बड़ा जे दुलरूआ करी-करी जिनगी हमहु बिताय हो राम।
तनिको दरदिआ न लगलौ हरदिआ तोरा बजार हो राम।
चंदवा के मोहवा मे सामी हमनी के देलऽ बिसार हो राम।
तोहर मारल गेलो सामी भइवा सामर धरदार हो राम।
आउरे तो मारल गेलइ हमर भइया धुरा नन्दुआ हो राम।
बड़ा हो बिपतिया पड़ल हइ खुलनी बुढी माय हो राम।
अब केत्ता कहियइ सामी जी घरवा के अपन बेयान हो राम।
सती तो होइ गेलन सनिया हाय रे मनायन हो राम।
पतिआ पढइते सामी जल्दी आवऽ गउरा हो राम।
गउरा के राजा सहदेव बड़ा हमनी के जुलुम करइ हो राम।
चंदवा के बदला हमनी सब से करइ बसूल हो राम।
एको नाइ गइया भैंसिया घरवा हइ हमर दुआर हो राम।
बड़ा जे दुलरूवा करि-करि जिन्दगी दिअइ बिताय हो राम।
तनिको न तोरा लगऽ हवऽ सरनमा[2] हाय हो राम।
बहियाँ पकड़िए सामी बहिया देलऽ हो छोड़ हो राम।
हम नऽ जनलिअउ सिरवा कि होवऽ धोखेबाज हो राम।
खाइए महुरवा मर जइबो गउरा हाथ रे गाँव हो राम।
एतना बेथनमा लिखिए मजरी पतिया कागा के देलन हो राम।
लेइए जे पानी कागा बादरिल असमना उड़िए गेलन हो राम।

सात जब दिन रात चलते रहिया बीतल हो राम।
बिना अन जलवा के उड़ल जा हइ कागा बादरिल हो राम।

---

१ ग्रास करूँगा। २ लाज।

अब जुमी हरदी बिरवा के सगरो खोजइ हो राम।
ऊँची जब दरखत चढ़िए कगावादिल देखइ हो राम।
देखऽ हइ कि छतवा पर चंदवा केठिया सुखावइ हो राम।
कसिया सुखावइ गे चंदवा अउ दरपन देखइ हो राम।
दरखत पर बैठिए कागवादिल चंदवा के गेलन पहिचान हो राम।
बड़ा सुखवा गे चंदवा, तूँ भोगऽहऽ लोरिक ले के जवान हो राम।
लोरिक के जे धरवा हइ तिरिया रोव ऽ हइ हाथ हो राम।
एहि सब बतिया कागवादरिल मनमा सोचइ हो राम।
दरपन में कगवा के छाँही पहुँची गेलइ हो राम।
बड़ा जे चेहाइए[1] गे काग वादरिल के देखइ हो राम।
केने से आवऽ हइ वादरिल के सुरतिया मोर दरपन में हो राम।
लौंगिया के दरखत बैठल हलइ कागवादरिल हो राम।
मीठे-माठे बोलिया से चंदवा कागवादरिल के बोलावइ हो राम।
सुनहि न सुनि बेटा कागवादरिल हमरो जवाब हो राम।
आवहि मोर गोदिया रे वादरिल गउरा के कह कुसलात हो राम।
चिठिया देख के चंदवा सोचइ वादरिल के लिअइ फुसलाय हो राम।
गोदी में अयतइ त सुरिया[2] हम देवइ मसोड़ हो राम।
न तो चिठिया सामी पढ़तन तो गउरा चली जइतन हो राम।
तब कागवादरिल पूछे लगलइ चंदवा से लोरिक के हाल हो राम।
कहाँ हमर हथुन गे चंदवा लोरिक दादा मनियार हो राम।
मरियो में गेलन कागवादरिल लोरिक सामी हमार हो राम।
लोरिक मरि गेलउ चदवा त केकरा पर तूँ करहऽ सिंगार हो राम।
बोले लगलइ चंदवा, दिनमा खेपे ला कइली दुसरा बिआह हो राम।
तोरा जोगे कहाँ गे हरदी में बिरवा गबरू[3] हो राम।
बड़ा छल करि गे चंदवा लोरिक के लयले भगाय हो राम।
तब बोलइ चदवा आवऽ बेटा वादरिल गोदिया हमार हो राम।
तिरिया के जनिया चादवा हम ना करिअउ बिसवास हो राम।
अब हम जाहिअउ चंदवा लौटिए गउरा हो राम।
जल्दी जल्दी चिठिया चंदवा लिखऽ हइ लोरिक के पास हो राम।

---

[1] चौक कर। [2] सिर। [3] पति।

जल्दी से चल आवऽ मामी अपनो हाथ रे मकान हो राम।
बउआ चन्दराजीत आउ हमरा लशियत मेलइ खराब हो राम।
चिठिया देखइत लोरिक रजवा दरबार से चलइ हो राम।
पीछे चौरहवा छेंकि बैठल हइ कागवादरील हो राम।
परते नजरिआ लोरिक काग बादरिल के गोदिया लेलन हो राम।
रखली तूँ अपले बेटा गउरवा से हरदी बजार हो राम।
कह हम्मर मइया खुलनी के हाल हो राम।
कइसन हइ मइया सामर अउ तिरिया मंजरी हो राम।
अब नहिं रहबउ रे बदिला हरदिआ बाजार हो राम।
तोहरा देखते बादिल कलेजवा फटे हमार हो राम।
एतना सुनइते कागवादरिल रोवइ जार बेजार हो राम।
लेहु चिठिया पढ़िए लोरिक मिलतो तोरा हाल हो राम।
चिठिया पढ़िए पढ़िए लोरिक रोवइ हो राम।
घरवा चलहु कागा चंदवा के कहियइ गउरा चल हो राम।
बदरिलवा बोलऽ हइ हम न जयबो चंदवा पास हो राम।
बड़ा बुधि रचओ रे चंदवा लोरिक सुन ऽ बेयान हो राम।
हमरा से छल करको कि लोरिक मरि गेलउ हो राम।
लोरिक गोस्सा होइए जुमि गेलइ अप्पन मकान हो राम।
अब हम छोड़ देलिअउ चंदवा रजवा के नोकरी हो राम।
अलनी चले परतउ गे चंदवा गउरा गुजरात हो राम।
हम्मर मइया मारल गेलइ सामर सरदार हो राम।
आउर तो मारल गेलइ धुरनंदुआ लाला हमार हो राम।
सती मनायन गे चंदवा सतिया होइए गेल हो राम।
अब जल्दी चलहीं गे चंदवा गउरा गुजरात हो राम।
तब चंदवा बोलऽ हइ काहे ला जइबऽ गउरा हो राम।
नाहिं संगवा चलबे गे चंदवा तो अकेले हम जइबउ हो राम।
तब चंदवा घबड़ाइए लोरिक के संगवा मेलइ हो राम।
गड़िया छकरवा पर लादे लगलइ लोरिक समान हो राम।
बड़ा जो तैयरिए से चलऽ हइ गउरा गुजरात हो राम।
आगे आगे उड़ल जा हइ कागा बादरिल हो राम।

जौने रहिया चलऽ हइ लोरिक लगइ रजवा आवइ हो राम।
जुमियो में गेलन लोरिक गउरा गुजरात हो राम।
गाँव के कुछ दूरे पर डेरवा देलन गिराय हो राम।
अब कुले हलिआ गउरा के लेवे लगलन हो राम।
बेटा काग वादरिल के लोरिक लुकाइए रखलन हो राम।
अपने जे हल्ला कैलन कि हम रजवा दूर देस से अइली हो राम।

लोरिक गउरा ढोलवा पिटवैलन हम जाही करे तीरथ हो राम।
सउँसे गउरा से दही-दूध बेचे आवऽ हो राम।
सबके बेटिया पुतोहिया दही-दूध बेचे आवइ हो राम।
सबसे दही-दूध के दमवा दुगुना दे हइ हो राम।
एही खबरिया मंजरी आउ लुदकी सुनइ हो राम।
खुलनी से हुकुम लेइ मंजरी जाइइ दही बेचे हो राम।
आज सती मंजरी जुमलइ दही बेचे ला हो राम।
लुकिए-छिपिए लोरिक मंजरी के देखइ हो राम।
फटले गुदरिया मंजरी पेन्हेले अयलइ हो राम।
देखिए मंजुरी के लोरिक नैनइ घबड़ाय हो राम।
सबके दुधवा के दमवा देइए देलन हो राम।
मंजरी के पूछऽ हइ चन्दरजीत केतना लेबइ दाम हो राम।
तब बोले लगलइ मंजरी मुरिया गाड़िए हो राम।
जेतना तोरा इच्छा हउ रजवा ओतने देदऽ दाम हो राम।
हमनी गरीबनी के कहाँ तक पूछबऽ दही के दाम हो राम।
एतना जो बोलिया सुनइ भीतरे लोरिक मनियार हो राम।
बेटा चन्दरजीत के लोरिक लेलकइ बोलाय हो राम।
सुनहिं न सुनि बटा चन्दरजीत हमरो एक जबाब हो राम।
ओकर दहिया के हम अपने दाम देवइ हो राम।
भितरे जे रख देलकइ गिनिया असर्फी टेहरी[1] हो राम।
उपरे से झाँपी देलकइ धनमा आउ चाउर से हो राम।
ले जा गोआरिन कुँटी-छाँटी खइहऽ इ अनाज हो राम।

---

१ दूध का बर्तन।

हथवा में देइ देलकइ मंजरी के दस बारह आना दाम हो राम।
अब लेइए टेहरिया गे मंजरी लौटिए गेलइ हो राम।
लऽ सासु जी रजवा दहिया के देलन हैं दाम हो राम।
अउरो जे देलन हैं खुद्दी चुन्नी धनवा टेहरी भर हो राम।
टेहरी उझलऽ हइ, निकलइ गिनियाँ असरफी हो राम।
देखते असर्फी खुलनी गेलइ घबड़ाय हो राम।
इ का कयलऽ जे मंजरी जतिया देलऽ लुटाय हो राम।
एतना सुनिए जे मंजरी रोवइ जार बेजार हो राम।
सचे हम कहइ ही सासु जी इसवर साखी हमार हो राम।
रजवा के परछइयो ये सासु जी न देखली हाय हो राम।
हमर जे गरीबी देख के रजवा देलक्इ चुप्पे से धन हो राम।
हम न देखलिअइ हे सासु जी धनवा टेहरी भरल हो राम।
हम खाली देखली हल खुद्दी चुन्नी हइ धान हो राम।
हमरा सग छल करलइ रजवा तो का जानी हो राम।
खुलनी बोलऽ हइ कि तोरा फँसवे खातिर धन देलकउ हो राम।
अब मत तूँ जइह मंजरी दुधवा बेचे हो राम।
अबरी तूँ जइबऽ तो मंजरी रजवा लेतउ लोभाय हो राम।
बचतइ इजतिया* मंजरी तो धनमा इसवर देतन दुआर हो राम।
धनमा से बढ़के गे मंजरी जतिया हउ तोहार हो राम।
अब अप्पन डेरवा में बोलइ लोरिक मनिआर हो राम।
सब कोई दुधवा बेचे अयलइ वरूह के दहियारिन न ऐलइ हो राम।
तब ओकरा में से बोलऽ हइ एक ग्वारिन सुनहु बात हो राम।
आज ओकर घरवा सासु मना करकइ बेचेला हो राम।
बचतइ इजतिया त धनमा लेतइ कमाय हो राम।
अब न उ ऐतउ रजवा बेचेला दही ओ दूध हो राम।
सोसे गाँव मे तिरियवा बढ़के हइ सती मंजरी हो राम।
एतना बोलिया सुनिए लोरिक मनेमन बिहँसइ हो राम।
धन-धन हइ तिरिया हमर मंजरी सती हो राम।
ओहि घड़ी डेरवा लोरिक देलकइ हाथ उठाय हो राम।

---

* सम्मान।

पहिले खबरिया लेके भेजऽ हइ कागवादरिल के हो राम।
जुमियो में गेलइ कागवादिल मंजरी के गोदी हो राम।
सुनहि न सुनें सती मंजरी लोरिक आवइ चंदवा के संग हो राम।
खुसीय जुमी मंजरी दिअ के आरती बनावइ हो राम।
जौन घड़ी जुमी गेलइ बिरवा लोरिक मनियार हो राम।
सगवा में ले ले हो हइ बेटा चन्दरजीत हो राम।
अउरो जे सगवा में हइ चंदवा राजा के बेटी हो राम।
मउसे गउरवा मे मालुम भेलइ कि चंदवा अयलइ हो राम।
सहदेव रजवा के घरवा मे मचलइ हाहाकार हो राम।
वीर लोरिक के मइया दुखरिया हइ खाड़[1] हो राम।
दुनो जे नयनमा से फिर-फिर बहऽ हइ उनका लोर हो राम।
सासु के बगलवे में खड़ा हइ मंजरी सती हो राम।
उनको नयनमा से लोरवा गिरऽ हइ हाय हो राम।
घारऽ जे बरिखवा पर लौटलइ हे लोरिक मनियार हो राम।
पड़ते नजरिया मइया पर लोरिक दउड़इ हो राम।
दउड़िए दउड़िए बिरवा मइया में गेलइ लपटाय हो राम।
बड़ा हम नसुरवा बइली मइया पीके तोर दूध हो राम।
छुअऽ हइ चरणीया के लोरिक मनियार हो राम।
मइया में लपटल हइ बिरवा लोरिक मनिआर हो राम।
केतनो समुझावइ, लोरिक ना चुप होवइ हो राम।
चुप रहऽ, चुप रहऽ बेटा लोरिक मनिआर हो राम।
पहुँचा से दिअउ तोहर भइया सामर सरदार हो राम।
एतना बोलिया सुनऽ हइ लोरिक मनियार हो राम।
अब हमर नसुरवा गे माता देहु दिल से बिसार हो राम।
जौन हम्मर भइया के मरलइ उनकर बदला लेबइ हो राम।
देखबइ कि कइसन वीर बसइ पाली गाँव हो राम।
चुनी चुनी पाली पिपरी के गिरवा के गिरवा लेबइ उतार हो राम।
पहिल लड़इया लड़बइ राजा सहदेव से हो राम।
तब राजा जनतउ कि हम्मर हइ लोरिक नगदे दमाद हो राम।

[1] खड़ी।

जौन दिन भइया मरल, चिठिया न भेजावे देलन हो राम।
सउँसे गउरा कहलन कि कोइ ना पतिया ले जा हरदी हो राम।
ओहि घड़िया बेलवा मजरी सामी के घरइ गे मोर हो राम।
बारह जे बरिसवा पर सामी जी चरनिया छूली तोहर हो राम।
कइसे तूँ तजलऽ हल मइया खुलनी बूढ़ी हो राम।
थइसे तजल गेलो हो सामी जी मजरी तिरिया हो राम।
चंदवा बहिनियाँ के गलवा में मजरी गेलइ लपटाय हो राम।
हम भाग जिनली गे चंदवा, गे सामी लैलऽ लौटाय हो राम।
अब दुलु लगऽ हिअइ कि अप्पन बहिनियाँ हो राम।
सरम के मारे गे चंदवा मुरिया[1] लेलन झुकाय हो राम।
बारह गे बरिसवा तक मंजरी दुखवा देली हो राम।
अपना हम खातिर गे मजरी बिरवा के लेल। अपनाय हो राम।
इम्मर तो खुसी भेलइ तोर घरवा दुन पचलउ अपार हो राम।
हमरो कसुरवा गे बहिन माजर दिहऽ बिसार हो राम।
लेहु बेटा चन्दराजित गोदिया अपनो लेहु खेलाय हो राम।
बिहँसि बिहँसि मंजरी चन्दराजित के गोदिया लेइ उठाय हो राम।
बड़ा खुसी मची गेलइ घरवा लोरिक के अपार हो राम।
अनमा अउ धनमा ढेरिया लगऽ हइ सगरो अपार हो राम।
ओहि घड़िया बोलऽ हइ लोरिक गरजिए हो राम।
अब हम जाही मइया खुलनी, रजवा सहदेव के मकान हो राम।
भाइ के बदला में खँरवा से खुनमा के धार देबइ बहाइ हो राम।
तब गरजि बोलऽ हइ मइया खुलनिया हाय हो राम।
जइतन बाबू तोर बिरवा हउ बूढ कुब्जा सरदार हो राम।
ओइसन अब ससुर समझ राजा सहदेव के हो राम।
जिनकर बेटिया छिनलऽ हे चंदवा हाय हो राम।
सेकरो कइसे मरवऽ हो बेटा खँरवा तिकाय[2] हो राम।
तोहरे जे नाता से बेटा हम समधी लेबइ बनाय हो राम।
उनके जे हथवा से चंदवा के कर लेहु बिआह हो राम।
खाली धमकी दीहऽ रे बेटा खँरवा से न मरीहऽ हो राम।

---

१ सिर। २ निशाना साध कर।

एतना समुझाइए देलन हे लोरिक के मइया हो राम।
तब बेटा लोरिक के गासवा मेलइ सान्त हो राम।

मनमा सोचइ लोरिक कि गुरु के जाइ दुआर हो राम।
पहिले गुरुआ क गोर लगबइ, तब करबइ लोहा-भिरान हो राम।
गुरुमितराजल के घरवा चलल जाइ लोरिक हो राम।
अहिया से भागल हलइ लोरिक हरदिया बजार हो राम।
ओही दिन से गुरुमितराजल घरवा रहइ मनझान[1] हो राम।
हमरा जे बखवा में एको न हइ चेटवा हाय हो राम।
तुनु जे परनिया लोरिक के समझनी हल बेटा हइ हमार हो राम।
सेहु बेटा लोरिक तजिए दुआरी में भागलन हो राम।
दुअरा पर बैठिए गुरुमितराजल रोते हलइ हो राम।
ओहि घड़िया चलवा जुमलइ लोरिकवा मनिआर हो राम।
जइसे छुअइ चरनियाँ लोरिक, गुरुआ बोलइ हो राम।
कौन घरवा अयल ऽ रे बबुआ गोरवा[2] धरल ऽ हमार हो राम।
अइसने जे गोरवा धरऽ हलइ बेटा हमर लोरिक हो राम।
हमहि जे अलियो गुरु, बेटा लोरिक तोहार हो राम।
नइयाँ सुनते गुरुआ लोरिक के गोदिया लेलन बैठाय हो राम।
बारह जे बरिसवा पर इसवर बेटवा हमर लौटल हो राम।
जुग जुग जिअ रे लोरिक, अमर होवौ सरीर हो राम।
बड़ा दगवा देइ के भागलऽ हल हरदी बजार हो राम।
कहऽ तूँ कुसलवा बेटा, चंदवा कहाँ हइ तोहार हो राम।
बड़ा लेहाज करके बोलऽ हइ, लोरिक मनिआर हो राम।
सब कुसल हइ गुरु जी, चरनिया तोहर अकवाल हो राम।
देहु अब असीस गुरु जी, पाली-पीपरी करीअइ चढाइ हो राम।
पालिए मे मारल गेलइ मोरा भइया सामर हो राम।
गुरुआ बोलइ कि पहिले गउरवा के पचवा लेहु अपनाय हो राम।
सउँसे गउरवा के अहीर हउ पंच भइया तोहार हो राम।
राजा सहदेव के बेटी के लेके गेलऽ हल हो राम।

---

1. उदास चित्त। 2. पैर।

ओकरो जे मतिया पंचवा के देहु खिलायहो राम।
लोहवा के जोर से सहदेव राजा के ससुर लेहु बनाय हो राम।
ठीके मतिया कहलऽ गुरु जी मनमा ले ली बैठाय हो राम।

होयते बिहनमा लोरिक रजवा सहदेव के जाइ मकान हो राम।
नइयों जे सुनइ सहदेव, डर से दुअरा देखन लगाय हो राम।
दस-पाँच बिरवा लेले लोरिक जुमलइ सहदेव के मकान हो राम।
दुअरा में लगल हो देखऽ हइ हाय रे बजरा केमाड हो राम।
रजवा के ड्योढ़ी पर बैठल हइ पुलिस, मुंशी, देवान हो राम।
सब जे कापे लगलइ लोरिक के देख के हो राम।
खँरवा जे खीचिए लोरिक बजरवा तोड़लन केवाड़ हो राम।
कहाँ हउ, कहाँ हउ राजा तोर सहदेव हो राम।
डरवा के मारे सभे हथवा जोड़इ हो राम।
हमर कोइ कसुरवा न हउ बिरवा जनमा बकस हो राम।
तब गर्राज बोलऽ हइ बिरवा लोरिक मनिआर हो राम।
कौन ओरिया हइ रजवा के फौजवा देहि बतलाय हो राम।
ओहि सब फौजिया से पहिले करबइ हम लोहा के भिरान हो राम।
एतना लखरिया पहुँच गेलइ फौजिया में हो राम।
लोरिक के नइयाँ सुन के फौजिआ थर-थर काँपइ हो राम।
सुनऽ सुनऽ फौजी भइया अपन तेगवा देहु रख हो राम।
तेगवा बाँध के जयबऽ त बिरवा सिरवा ले तो उतार हो राम।
जब ओकरे डरवा से राजा भागल तब हमनी के का ठेकान हो राम।
राजा सहदेव भी अहीर हव आ लोरिक भी अहीरे हो राम।
दुनु जब मिली जयतउ ससुर दमदवा बनतौ हो राम।
हमनी काहे मँगनी में जनमा देवइ हो राम।
गढ़वा के बारह सौ फौजिया खाली हाथ मथिया माँगइ हो राम।
सब वीर लोरिक गरदवा मार हइ खँरवा ले हइ उठाय हो राम।
कहाँ गेलउ रे फौजिया राजा सहदेव दुअरे पर दमदा हिअइ हो राम।
डरवा से सहदेव तिरिया के महलिया में गेलन लुकाय[१] हो राम।

---

१. छिप।

एतना जे कहि के लोरिक चरनिया छुअइ हो राम।
तब राजा सहदेव गरजी गरजिए बोलइ हो राम।
अब हमरा घरवा रे बेटा मड़वा मड़तइ हो राम।
सउँसे गउरवा के पच भइया के न्योतवा देवइ घुमाय हो राम।
जाहु अपन घरवा साजी के लाहु बरात हो राम।
अपने जे हाथ से बेटी चँदवा के करबइ दान हो राम।
तब सब कोई जनतइ कि रजवा के लोरिक हइ दमाद हो राम।
लोरिकवा बोलऽ हइ सब नतवा देवी मइया देलन मिलाय हो राम।
एतना कहिए लोरिक घरवा गेलन मइया के कहे समुझाय हो राम।
आउर समुझवलन घरवा तिरियवा माजर हो राम।
तब विहँसिए बोलइ मंजरी सामी तोर सुनीला हलवों परान हो राम।
अइसन वचन बोलऽ हऽ मंजरी हिरदा हमर देलऽ जुड़ाय हो राम।
जे कुछ कसूर कइली अपना से छमा करऽ विचार हो राम।
अब जल्दी से साजऽ चदवा के घरवा मइया कन भेजऽ हो राम।
दुआँ से इनकर गौना करके लयबइ हाय रे विदाइ हो राम।
डोलिया पर बैठाइए चन्दवा के मंजरी भेजिए दे हइ हो राम।
बेटा चन्दरजीत चन्दवा के गोदिए बइठइ हो राम।
डोलिया के आगे पीछे चेरिया लउड़ी हो राम।
डोलिया के आगे हो बाजे बजवा हो राम।
जुमियो में गेलन चँदवा अप्पन मइया बाबू के पास हो राम।
झुकिए झुकिए चँदवा मइया के करइ परनाम हो राम।
बाबू के चरनीया चदवा छुए लगलइ हो राम।
बेटा चन्दराजित के चदवा ननमा के गोदिया देलन हो राम।
जे कुछ कसुरवा कइली माइ-बाबू छमा करऽ हो राम।
पचसा के बेटा जानी पचया के बेंहियाँ छुली हो राम।
हम तोहर बेटिया हियो बाबू जी, बिरवे से कइली बिआह हो राम।
एहि सोचिए कि बाबू के पगड़िया ऊँचा होलइ हो राम।
अब राजा सहदेव खुशी भेलन हो राम।
अब जे रनिया से कहलन कि मँड़वा गराबऽ हो राम।
मँड़वा के न्योतवा गउरा सउँसे देहु भेजाय हो राम।

दुअरा पर रजवा बजवा देलनइ बजवाय हो राम।

● ○ ●

दिनमा जे सदिआ के पड़लइ माघ सिरी पंचमी हो राम।
ओहि दिन लोरिक बरतिया साजी आवइ हो राम।
बरतिया के संगमा हइ गुरुमितराजल हो राम।
सउँसे गउरा के अहीरा बरतिया साजले आवइ हो राम।
बीर जे लोरिकवा सोनमा के पालकी पर बैठल हो राम।
हँथवा में सोभइ लोरिक के लँडवा तरुवार, हो राम।
बजवा अनेक बजवे चलल आवइ हो राम।
दुअरा पर जुमिए गेलइ रे बरतिया हो राम।
समधी मिलावन करइ सहदेव आउ बूढ़ कुब्जा हो राम।
गुरु मितराजल दुनों के असीसवा दे हइ हो राम।
जब मँड़वा में बइठलन बीर लोरिक हो राम।
दस पाँच बीस पंडितवा वेदया बाँचइ हो राम।
अब होवे लगलइ लोरिक के चंदवा से बिआह हो राम।
अपने हाथ से सहदेव बेटी चंदवा के दान करइ हो राम।
लोरिक के सदिआ में दान कैलन गउरा गुजरात हो राम।
छप्पन परकार के भोजन सहदेव पचवा के जिमाने हो राम।
दस दिन बरतिया रोकी लेलन गउरवे हाथ हो राम।
अब तो बराती बिदा होवे लगलइ लोरिक के हो राम।
चंदवा के गोदिया में राजा देलन गउरा के तुले धन हो राम।
अपना जे गद्दवा लिखी देलन नाती चन्द्राजित के हो राम।

● ● ●

लौटिह बरतिया लोरिक के अवनइ अपना अगना हो राम।
मुलनी औ मंजरी चंदवा के परछे लगलइ हो राम।
बिहँसि के बोलिया बोलइ हइ मुलनी सासु हो राम।
तोहरा के दान देलिअउ मंजरी अब चंदवा लोरिक हो राम।
अब दुइ चार दिनमा पर लोरिक मानऽ हइ गेहरान[1] हो राम।
बोलइ मितराजल कि तुले कारज गुरुजी मेलइ हमार हो राम।

---

1. मेना।

अब मनमा करे कि कवनी हम जइअइ भाइ के बदला लेवे हो राम।
जल्दी दहु हुकुमवा गुरु जी हम माजिअइ गोहरनमा हो राम।
जाहु जाहु रे बेटा पाली पिपरी गोहरान लेके हो राम।
साजिए गोहरनमा लोरिक पाली पिपरी जा हइ हो राम।
हुँआ के लइइया हइ बड़ा विकटवा हो राम।
डेगे-डेगे गुरुमितराजल लोरिक के समुझावइ हो राम।
पाली-पिपरी में हउ लडे वाला कोल्हवा हो राम।
ओकर मइया के अगुरी में अमृत हइ हो राम।
पहिले जे जाइ के मरिहे कोल्हवा के मइया हो राम।
तब कोल्हवा के मनवा टुटिए जयतइ हो राम।
एही सब भेदवा लोरिक के गुरुआ देलन समझाय हो राम।
तब वीर लोरिक देवी मइया के घरइ धेयान हो राम।
तोरे अकबाल से देवी मइया हरदी जितली हल हो राम।
ओइसने जितइह ऽ देवी मइया पाली-पिपरी हो राम।
देवी सुमिरनमा करिए सुमिए गेलन पाली पिपरी हो राम।
ओहि घड़िया महलिया में चुपके सुमलइ हो राम।
सुतल हलइ कोल्हवा के मइया निरभेद हो राम।
ओहि घड़िया मारइ हो लोरिक खँड़वा तानी हो राम।
राम राम कहिके कोल्हवा के मइया के छुटल परान हो राम।
लोरिक बोलइ मइया के करनमा तिरीया पर हाथ छोड़ली हो राम।
अब होवे लगलइ लोरिक जुधवा खातिर तइयार हो राम।
होयते भिनसरवा लोरिक जुधवा देलन ठान हो राम।
कोल्हवा के घरवा के घेर लेलन ले ले गोहरान हो राम।
इक्या अउ बजवा के चोट सुनइ कोल्हवा बलवान हो राम।
कौन ऐसन सुरमा रे चढ़ी ऐलन पाली पिपरी हो राम।
गोसवा के मारे रे कोल्हवा खँरवा खूँटी से लेलन उतार हो राम।
मारिए गरजवा कोल्हवा घरवा से बहराय[१] हो राम।
सो गो जे मइया हलइ कोल्हवा घरवा अप्पन हो राम।
सब छूट करके खेले लगलइ खुनमा हाय हो राम।

---

१. बाहर निकला।

लोरिक आ कोल्हवा में होवे लगलइ खूब जूझमार हो राम।
खट खट तेगवा बोलइ अउ भट भट कटइ मुड हो राम।
मुरिया अउ लोथवा के ढेरवा लगलइ हो राम।
खुनिया के धार बहे लगलइ पाली पीपरी हो राम।
घड़ी जब घटवा तक गुत्र भेलइ लोहवा के भिरान हो राम।
अब मारल गेलइ लोरिक के हाथ से कोल्हवा वीर हो राम।
अब कोल्हवा के भइयवा मइया मइया खोजइ हो राम।
मइया के मरल लसवा देखइ कोल्हवा के भाइ हो राम।
ओहु त टरवा न मारे लोरिक के छुअइ गोर हो राम।
अब हमर जान छोड द ऽ हम तोहर टहल[1] करबो हो राम।
तब बोले लगलइ लोरिक विरवा हाय हो राम।
हमर सिंगा लाख गइया रे गउरवा देहि पहुँचाय हो राम।
चल तूँ हम्मर धरवा गइया के रहिहे बथान हो राम।
गइया चरइहे अउ दुएँ दिनमा कटतउ हो राम।
पाली-पीपरी जितिए लोरिक रजवा दखल करइ हो राम।
अब खुशी मन से लौटी अयलन लोरिक अप्पन मकान हो राम।
खुशी खुशी रहे हो लगलन गउरा-गुजरात हो राम।
इ सब जीत भेलइ हे देवी मइया तोहरे हाथ हो राम।
गढ़वा में बाजे लगलइ खुसिया के बाजा हो राम।

टिप्पणी—लोरकाइन[2] का नायक है—वीर लोरिक। इसका जन्म एक निर्धन परिवार में हुआ था। बाल्यावस्था से ही यह बलिष्ट था। अखाड़े में इसने अस्त्र-शस्त्र सचालन और मल्ल युद्ध की अच्छी शिक्षा पाई थी। फलत. इसमें अद्भुत शौर्य विकसित हुआ। अपने भाग्य के निर्माण में, दुष्टों के विनाश में और सत्य के रक्षण में इसने खूब शौर्य-प्रदर्शन किया। अन्त में अपने साहस और बुद्धि के सहारे वह राजा हो गया।

अहीर लोग लोरिक की इस गाथा को अपने सभी उत्सवों और शुभसस्कारों के अवसर पर गाते हैं। 'लोरकाइन' उनका जातीय काव्य है। प्राय एक ही व्याक्त लोरकाइन गाता है। इसके गायक कभी ढोलक का व्यवहार करते हैं, और कभी नहीं। वीरकथात्मक होने के कारण इस गाथा के साथ ढोल बजा देने पर वातावरण में ओजस्विता आ जाती है।

---

१ सेवा। २ 'लोरकाइन' की कथा का साराश देखिये—खण्ड १, साहित्यभाग में।

१५ गीत राजा गोपीचन्द[1]

[६६]

(१) पहिरी गुदरी राजा बन चले। माता गुदरी धरि ठाढ़। नव महिना बेटा उदर में पाललूँ। दसवाँ में लिऐल ऽ अवतार। *जनमते मरिजैत ऽ बेटा, करतूँ सतोख।* एतना न ऽ बोल ऽ गोपीचन्द कि, जानू मैया, जन्म के हम बाँझ ही। जानू हमरा कोरा में हाक मदार जन्मल, एह से अपन पापी प्रान के समुझाऊ। एतना बोलल मैंना माता, बसल बसल नगरी कैलऽ उजाड़। तोंहि बिना मंडलिया सून गोपीचन्द। एतना न ऽ बोलऽ गोपीचन्द कहे *माता मैना*, दूध के दाम देइ लेहु, तब पाछे फकीर होइ जाहु। *एतना सुने गोपीचन्द तब सूझे धरती ऊपर असमान।* कउन ऐसन बेटा होअत जे स्वर्ग के तरग गिनत। कउन ऐसन बेटा होअत जे माता के दूध के दाम देत। जो मैना माता गाइ के दूध चाहिती, हाट बजार से मंगाय देतूँ। तोहार दूध से आलाचार है। तोहार दूध के माइ हारा बदन पालल है, तोहार दूध अनमोल है। गाइ भैंस के दूध बेटा नहि पिलोली। पिलौली हम स्थन के दूध। दूध के हरावन डाले जोगी। बेटा फकीर नऽ हो। आभ पाल ऽ गाढ़ी दीन गाढ़ी रात। एक दीन बेटा बिपत में काम आवह। तूँ निकल के, वे, *फकीर जोगी मत होअ, एतना नऽ बोलह गोपीचन्द॥*

(२) आन दे मैना माता छूरी कटारी। काट के कलेजी रख देऊँ, तब जोगी फकीर होइ जाऊँ। मैना माता दूध बकस धर्म के। निहोरे लागे परदेसी तोहार जोगी। जियत रहऽ बेटा, जोगी हो के आइ मिलह। करि तीरथ बरत होय मवाब। मुलाकात करि दूर गेल माता। एतना नऽ बोलू, मैना माता कि हमे धरम लूँ। बकसधुन परमेस्वर जे जन्म कर्म देलक॥

(३) हाथिन के छोड़े गोपीचन्द। ऊँटन के छोड़े ऊँटसार। घोड़न के छोड़े घोड़सार। नव सैं छोड़े पैंठान। पाँच सै रोए

---

१ डा० ग्रियर्सन द्वारा सम्पादित और अनूदित 'गीत राजा गोपीचन्द' का मगही प्रति[illegible] 'जर्नल ऑफ द एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल, १८८५' से उद्धृत है। यहाँ केवल [illegible]क्तियाँ ही दी गई हैं, अनुवाद नहीं।

कन्या कुमार। नव सै रोए बिदायी। मैना माता रोऐ पटकि सिंघासन। हन्सा चिरई रोए कोठा व अटारी। गाँव के रोए रैयत खिलान। बाट के रोए बटोही। कूआँ के रोए पनिहारिन। ऐसन ऐसन दुलरुआ निकल के भेलन जोगी॥

(४) एतना बाजल मैना माता, सुनऽ बेटा हम्मर बात। सात मुलुक भिच्छा माँगऽ बहिनी के देस मत जाहु। भला तो कैलू माइ, चेतैलू चेताइ। भूलल बहिनी देलू समुझाइ। रोअत बहिनी तोहार छव मास। तेह बहिनी के नैहर के आस॥

(५) पहिला मंजिल कैलन गोपीचन्द। केदली जगल में परि गेल। साँझ बन क रोए बनसपति माइ। जगल के रोए हरिन। हरिन के रोअले जगल के पात खहराय। सूरत सकल देखि कै आधी रात पछली पहर खाल के बचावे बनसपति। बनसपति के दया लागि आय। बडे बडे सेर बडे बडे सिंह मार के खाइ जै है। बहिनी से मुलाकात नहिं होय। गोपीचन्द बोलल, चाहे मरों, चाहे जीओं, जाएब बहिनी देस। बनसपति के दया लागल। गोपीचन्द के तोता बनौली, अपने हन्स चिरई बनि जाय। घडी पहर में गोपीचन्द बहिनी के देस में उतार देलन॥

(६) बहिनी के देस में गोपीचन्द पहुँचल। मुँह खाक से भभूत लगाइ गुदरी से देह छिपाइ गली गली फीरे गोपीचन्द। सभ के दोआर चन्दन के पेड़, नऽ राजा के दोआर चीन्हल नऽ परजा के, सभ के दरवाजा फरी लगौलक। नगरी के लोग कहलन, बाबा टारऽ। माइ खबर सभ रेक लेन। गोपीचन्द बोलल कि हे गाँव के बहिनी माइ। राजा के दोआर हमरा बताइ देहु। राजा के दोआर टीकब। परजा के दोआर नहिं टीकब। नगर के माइ बाइनी बाजलन, ऊँची अटारी नीची दुआर। सोना के चौकठ रूपे केवाड़। औरा भीरा दा हाथिन। बारह बरस के सुगल चन्दन॥

(७) गोपीचन्द चलि भल बहिनी के दुआर। सुगल चन्दन तर धूँई धुन जमाइ। बारह बरिस के सुगल चन्दन मेल

पचनार। देखे नगर के राजा परजा लोग। जोगी ना है। केऊ है भगवान। सूखल चन्दन बारह बरस के भेल कचनार। मूँगा लौंडी बोलली। सूखल सूखल चन्दन खातिर बरहमन खिलाऊँ। सूखल चन्दन होए कचनार। जोगी एक अनूप आऍल। चार सखि आगे चार पाछे बीच में बहिनो उन्ह के चललन। खिरकी पल्ला खोलि देलन। एक नजर जोगी के ऊपर एक नजर चन्दन के पेड़ तर। सूखल चन्दन रानी देखे कचनार, रानी गिरल मुरछाइ॥

(८) का जोगी भोजन करिहS। का करिहS अहार। कि राजा रसोइया जेमायत। गोपीचन्द बोलल, नई बिपत नराधिन देलन। धूँआँ देखि नैना से आँसू ढरे। आग देखि देहो मे फोला पाँक जाय। कह देह राजन के बरहमन के हाथ जेवनार बनावS, तब तो खाएब॥

(९) मूगा लौंड़ी भूलि गेल अपना पत्री में। रानी भूलि गेल पाट सिंगार। मक बरहमन भूलि गेल अपना भङ्ग में। आधी रात पहिले पहर बीत गेल। केऊ खाएब के खबर नहीं लेलन। एतना म गोपीचन्द मुरली बजाइ, हम्मर बहिनी खात पीत होअत, तो सत के सवाइ बढ़ि जाय। खाय बहिनी बिसरल होअत। जेतना भण्डार में रहे सभ जरि जाएत। नवठी पात पुरावS नS खाय नS हम्मर धरम जाएत। एतना में सुनली बहिनी मुरली के सबद।

(१०) मूँगा लौंड़ी, सभ खाय हमार नगरी में। जोगी उपास पर। मूगा लौंड़ी कहली, हम का जानी। बरूआ बरहमन के बोलाइ भेजल। बरूआ बरहमन के बोललन, कि जलदी रसोइ दे आवह जोगी के। बरूआ बोलल कि एक जोगी के कौन बिसात है। छप्पन सौ कुँअर जेवा देऊँ॥

(११) सोना क पड़ौआँ पर होए असवार। जाइ के खोले भण्डार। देखे तो छप्पन तौला[1] में आग लागल। छप्पन तौल। गरावS[2] ता मुठी भर करौनी[3] निकसल। बरूआ बरहमन बोलल कि मूगा लाड़ी जोगी के रसोइ दे आवS॥

---

१ भोजन। २ सिखोरो। ३ जला भोजनांश।

जात के जुटाही मूँगा, बात के होशियार। गरी, बदाम छोहाड़ा, मोनक्का, पाँच खिल्ली पान लगा देथ। सोना के थाल में मूँगा लौंड़ी धर लेल। दही करौनी कटोरा में। ले गगा जल पानी मूँगा लौड़ी चललन। ले बाबा जोगी रसोइ। तोहरा करम में आग लागे। कोपकाप करि अधियारी। उठि गोपीचन्द अकुताइ। सोना के तुमड़ी ले पानी। सोना के कटोरा में ले रसोइ।

(१२) कोप काप के अधियरियाँ अपने रसोइ देलैं के गोपीचन्द हँस देल। रात हलै, तऽ दीन हो गेलइ। चदरी खोलि गेठिया लेलक रसोइया जलल करौनी। गोपीचन्द धूनी काढ़ के राखि छानत होइ। पाँच पतरी पर रख देलक। पाँचो परकार बनि गेल॥

(१३) होत फजिर जाए पोखरा पर अस्नान करे। सभ देह गुदरा से छिपाय, औ मुँह खाक भभूती लगाय। हमरा बहिनीं नऽ चीन्हे। जोगी फकीर होइ जाऊँ। का गोपीचन्दा दाँत के बतीसी चमके। का गोपीचन्दा रे छले। एक बरन के गोपीचन्दा हलै औ आठ बरन सूरत बढे। होत फजिर जाए बहिनी के दुआर। भिच्छा माँगे। जीए बहिनी बचा मुरादाय तोहार॥

(१४) गुदड़ी बस्तर मूँगा लौड़ी नेहार, देखी जोगी के बरल सूरत, गावत आय रगमहला म। मूँगा लौंडी कहलन कि हे बहिनी जउन रग के गोपीचन्दा भाइ छोड़े, तउन रग के जोगी चन्दा बाबा। मूँगा लौड़ी तोर भाइ भतीजा लाऊँ। हम्मर भाइ गोपीचन्दा जो आवत हो उजरेधा बसे जाय।

सखि आगे चार पाछे, सोनन के थाल में भीख ले ले। ले, बाबा जोगी, छाड़ऽ दुआर॥

(१५) कक्कड़ पथल छाड़लूँ माता के महल में। एह कक्कड़ पथल ले के हम का करब। बहिनी बोलली, सोना चाँदी भिच्छा देत हिअउ, कक्कड़ पथल बनाइ देल के। जौं कउनो साल दो साला देतू तो गुदरिया बनाय देतूँ। जोगी बाबा लेते नहि, ऐसी माटी कसम खा जाय। जोगी बाबा हम्मर दुआर छोड़ देहू। तोहरा जोग कपड़ा नहि है॥

(१६) सुनि एतना बोलल गोपीचन्द, पाथ धन गैलू उधराय। नहिं चिन्हहू कोसिया के सङ्ग माइ। एतना सुन गोपीचन्द बोलल, हम नैहर के नाते तोहर भाइ॥

(१७) जब जानूँ के हम्मर भाइ ही कि बिआह जे मिलल हमरा से दे तूँ बताइ। गोपीचन्द बोलल कि देखऽ बाबा के हाथ के अगूठी सोभे। माता के चिटसार, भौजी के हाथ के कंगन॥

(१८) एतना सुनि बाहनी बिरना घर के गुदरी लागे रोवे। माय बिरोगिन[१], भाइ जोगिया आज। बैसऽ बैसऽ भैया पाट के सिंघासन। दुनियाँ दौलत देऊँ भगाय। तोहरा दरवाजा बहिनी का करूँ। दो चार पैसा होइत, चूरी पहिरे के देहत। एतना मे बोल साध ननन्द। रात मूँगा के हाथ के रसोइ छूअल खैलऽ। एतनी बेर चीन्ह पहचान भेल, ठनगन करत है। एतना सुनि बहिनी बिरना, कउन कउन बीजन[२], कउन कउन परकार खाय। चदरी के खूँट में जलल करौनी बहिनी देखिस। हाय करि के बहिनी गेल मर।

(१९) मारों छुरी कटारी। भाइ बहिनी के अगाइ मर जाऊँ। आय कारि के नरायन बरहमन के रूप धारि पकड़ लिहलन। अरे पापी, कलजुगिया में अकरित [illegible] है। [illegible]

(२०) बहिनी उठि बैठल। गली के गली रोए। चन्दन के पेड़ धरि रोए। चन्दन के पेड़ लगाव कैलक, तुम का रोऊ। तोहार भाइ जोगी होइ गेल। एतना में बहिनी हाय करे। फाटे धरती आय समाय। भाइ बहिनी क नाता दुन्नो जने के टूट गेल॥

टिप्पणी—'गीत राजा गोपीचन्द' का नायक राजा गोपीचन्द है, जो नाथ सम्प्रदाय में बहुत आदृत है। इनका चरित्र उत्तर भारत की प्रायः सभी जनपदी बोलियों में व्याप्त है। बंगाल में गोपीचन्द की गाथा बहुत लोकप्रिय है। इसका कारण यह है कि गोपीचन्द का सम्बन्ध बंगाल के पालवंश से था। जोगिया ने गोपीचन्द की गाथा को मगही में भी अत्यन्त लोकप्रिय बना दिया है। इस गाथा में करुण रस की प्रधानता है। गोपीचन्द राज्य और भोग विलास, सब कुछ छोड़ कर जोगी हो गये। इस प्रसंग में माता मैनावती तथा बहिन चम्पा की गोपीचन्द से वार्त्ता बहुत मर्मस्पर्शी है।

भरथरी और गोपीचन्द की लोकगाथा जोगी जाति के लोग गाया करते हैं। इनकी वेषभूषा विशिष्ट प्रकार की होती है। सर पर भगवे रंग की पगड़ी, शरीर पर एक ढीला कुरता, भगवे रंग की धोती, काँध में लटकी एक बड़ी झोली और हाथ में एक सारंगी, इन्हें एक विशेष रूप प्रदान करती हैं। बड़े करुण स्वर में ये गायक योगात्मक लोकगाथा सारंगी पर गली गली गाते फिरते हैं। इनके गाने में स्वर और लय की प्रधानता रहती है।

---

१६. छतरी घुघुलिया

[६७]

कामसपुर में हथन राजा रंहपाल सिंह, हथिया बाँधे तो गजनार।
घोड़िया भी रखे सुरमा दरिअहिया, देहुली जगल रखे सिगार।
बारह कोस पे हलइ देहुली जगलवा, जेकरा न देखन हैं बटवार।
जगल काट के गिरवा गउश्री बसौलन हैं, बामन गली श्रौ तिरवन बजार।
श्रोर गाँव में कचहरी एक उठौलन हल, रख लेलन मुंसी देमान।
हिथेंवा के बतवा हिथें छोड़ देली, पाटमपुर के सुनऽवेयान।
पाटमपुर में हथन माता भइया पदमा, गान में बैलवा लादे रोज।

सात सौ बैल के साढे तीन सौ बेपारी हइ, सगे एक सौदागर जाये।
हिअवाँ के बतिया हिएँ छोड देली, झाझमपुर के सुनऽबेयान।
बैलवा के आवे देखइ राजा रंडपाल सिंह, करइ पेयादा के पुकार।
कौने ही सरवा के आवइ बैलवा, सब तगी ले तूँ धराय।
तगी धराते मार के बढी मार मरीहे, बैला दीहे जंगल में बेलाय[१]।
एतना बात तो सुने पेयादा, जा हइ बेपरिया के पास।
अब आगुए मे छेंकइ पेयदवा, सुन बेपरिया एक बात।
राजा रंडपाल सिंह के पहली हुकुमिया, सब तगी देहि रे धराय।
हथवा जोड के बोलइ हुआँ बेपरिया, सुन पेयादा रे मोर बात।
नाहिएँ मे एलकइ खेन खगिहनवा, सब के हइ गलवे म लगाम।
एतना बात जब सुनइ पेयदवा, सुन बेपारी रे मोर बात।
झाझमपुर के हइ राजा रंडपाल सिंह, इथिया त बाधे गजनार।
ओही राजा के पयली हुकुमवे नरवे, सब तगी देही न धराय।

• • •

घाटमेपुर में हइ सातो भाइ घटमा, हुएँ बेपरिया जुमी जाय।
हाथ जोड के बोलऽइइ बेपरिया, सुन राजा हमर एक बेयान।
झाझमपुर में इथन राजा रंडपाल पाल सिंह, तगी लेलन धराय।
एतना जे बतिया सुनइ बडके घाटम, तडवे के लहर चढइ कपार।
जल्दी ला दे जयपत्त कोरा कगजवा, आउ ला दे कलम दवात।
पगुआ के नेओता लिखिए घाटम, गागू हजमा से दे हइ भेजाय।
अपनी महलिया बैठल राजा रंडपाल सिंह हुँए हजमा जुमि जाय।
चिठिया लेके राजा रंडपाल सिंह, रंगमहल में चलि जाय।
न्योतवा के बतिया सुनलन रानी जसोदा, रोवे लगलन जार बेजार।
एहु न्योतवा सामी मार के रखऽ, बाँथे दहिने बोले भाग।
राजा बोलइ हम छत्री कहाइला, येहु ना न्योता पूरे जायम।
लोहा पोसाक पेन्हइ राजा रंडपाल सिंह, बान्ही लेलन छप्पन कटार।
हैकल घोड़िया लेके राजा रंडपाल सिंह, घाटमपुर चलि जाय।

• • •

घाटमपुर में सातो भइया घटमा, सातो त हइ अधम चडाल।

---

१. भग (देना)।

बचा सुन के गदिया सिनौलन, जोड़ा तरहरा[1] देलन खनाय ।
एक लोटा सरबत हलइ, दुइ लोटा जहर, तीनों रपल हलइ मिलाय ।
एतने में पहुँचऽ हइ राजा रंडपाल सिंह, सातों भइया कैलन सलाम ।
राजा के बैठते गदिया पक्का हो गेल, मानो भइया गेलन सरमाय ।
एक ठांव मरजन राना भुइयाँ गिरयलन, देखि भइया लेलन चाट ।
तब धोखा से दारू पिला क, घटमा ले हइ बहनोइया के परान ।
मरे के खबरवा[2] सुनलन रानी जसोदा, रोवे लगलन जार बेजार ।
मलवा क बदला भइया मनवा तू लेलऽ हल, मोरा काहे कैलऽ राँर[3] ।
गागरा हार घाटम भेजइ डगरिन[4], राना के पेट तूँ दे ही गिराय ।
डगरिन हँड़िया भर पान के बीर लेवे, घाटम के ले हइ फुसलाय ।
परान बचावे ला भागइ रानी जसोदा, आ हइ राजा वृजभान के पास ।
रानी के सुरतिया देखि क राजा तब मनमा मे करइ बिचार ।
तोरा से रखबउ नियइहवा रानी, तोरे ही रखबउ रानी बनाय ।
एतना जे बतिया सुनलन रानी जसोदा जी, सुन राजा एक बात ।
तोरा लगीला भगिन पुतोहिया, कहते सरम न आयल ।
गोस्सा के मारे राजा दे हइ हुकुमवा, रानी के फाँसी चढ़ाय ।
रानी के सुरतिया देखइ हेमद मोदिया, जी में दया उमड़ि जाय ।
चल गेलन राजा क पास हेमद मोदिया, झुक के करऽ हइ सलाम ।
ए ननदा भउजइया म भलइ झगड़वा, मोर बहिनी घर से बहराल[5] ।
रानी सुनवा रैलन मार बहिनिया, काहे फाँसी देलऽ चढ़ाय ।
एतनी बात ■ सुने राजा वृजभान, सुन मोदी रे मोरी बात ।
जल्दी रानी जाहु घरे जगावा, बहिनी के लेहु न छोड़ाय ।
दौड़े दउड़ल गेलन हेमद मोदिया, रानी के लेलन छोड़ाय ।
जसोदा जी हेमद मोदिया घर एला, ललिया दोरान बढ़ि जाय ।

ए मोरा से अलग रह डगरिन, देवी मइया कटिहें नार।
कासीपुर से अयलइ बमना, पोथिया खोलि करइ बिचार।
छतरी कुल के तोर भगना हउ मोदी, छतरी कुल मे करतउ नाम।
बावन लाख रुपया राजा सुजभान से चुकैतउ, सूद में करतउ ओकर बेटी से बिआइ।
छत्री कुल के तोरो हउ भगिनमा मोदी, छतरी घुघुलिया धइली नाम।

❂ ❂ ❂

बारह बरस के भेलन छतरी घुघुलिया, सुरमा जा हइ गंगा नहाय।
ऊँचा अररिया[1] पर धोती रखलन, गंगा में गोता लेलन लगाय।
बुढ़िया के रूप कैले देवी मइया सरधा, धोती लेलन उठाय।
आगुए से छेंकइ छतरी घुघुलिया, सुन बुढ़िया गे मोरी बात।
एहि रहिया बुढ़िया तुहूँ जे अइले, मोरो धोती लेले चोराय।
देवी मइया बोलइ काहे तूँ बेटा, हमारा कयलऽ बदनाम।
जल्दी सनी रहिया छोड़ द बेटा, मुरखा से छूटे रे परान।
एतना जे बतिया सुनइ रे दुलरू, सुन बुढ़िया रे मोरी बात।
एक मुट्ठी अच्छत है देवी पूजन के, ओकरे भोजन तोरा खिलाम।
कैसे में खयबइ तोरा हाथ के भोजन, तोरा छुतका लगल होय।
कौने करनमा मैया लगल छुतकवा, साँचे हलवा देहु बताय।
तोहरो मामू घाटम बेटा, ओहु जे लेलकइ तोहरा बापके परान।
तोरा बाप के जान त मरलकउ, जेकरो न कयलकउ हऽ काम।
ओहि करनमा बेटा छुतका लगलउ, सच्चे हलवा देली बताय।
एतनी बतिया सुनइ छतरी घुघुलिया, तरवा के लहर चढइ कपार।
जल्दी सनी देहु न हुकुमिया देवी मैया, धातो के सिरवा लावी उतार।
एतनी जे बतिया सुनइ देवी मइया सरधा, सुन बेटा कहल हमार।
गेरु रंग कपड़वा तुहूँ रंगाले बेटा, योगी रूप लेहु ना बनाय।
घाटमपुर नगरिया मे धमकी देके, बाप के कमवा ले कराय।
हैकल घोड़ी त हउ तोरे बाप के, ओहु दान लीहऽ कराय।
लोहा पोसाक हउ तोरे बाप के बेटा, सेहु दान लीहऽ कराय।

❂ ❂ ❂

जोगी के रूपवा बना के दुलरू, घाटमपुर नगरिया चलि जाय।

---

1. अरार।

घाटमपुर में हइ चारा इनरवा, हुआँ दुलरू रे तुमि जाय।
चौरा इनरवा के पानी गमरलइ[1] लउरी[2] पूछइ सचा बात।
तोरो हीयाँ राजा चढलवा, मरकउ बहनोइए के जान।
अपने बहनोइया के मरनइ है, जेकरो न कयलकइ है काम।
ओहि करनमा लौगी न पनिया गमरलइ, मोरा केतना चढल अपराध।
दौड़ल गेलइ चेरिया घाटम के महलिया, कहइ सब बेयान।
लउरी के बतिया सुनके जयपत, घेवरा इनरवा न चलल आयल।
हथवा जोड़िला बरह्मा, बइयाँपड़िला कि मोरा घरवा भी जरा आवऽ।
एतनी जे बनिया सुन के छतरी घुघुलिया, सुन रे जयपत कहल हमार।
तोरे जे भयवा हउ अधम चढलवा, मरलकउ बहनोइए के जान।
हम तोरा घरवा पर अयबउ जयपत, मरबे हमरे रे तुहू जान।
कोइ ज उपयरा बनाय देहु बरह्मा जी, कि दोखपपवा कटि जाय।
एतनी बात जे सुने छतरी घुघुलिया, चल गेलइ घाटम के पास।
तब बोलऽ हइ घाटम, बरह्मा जी करहु उपयवा दोस-पाप कटि जाय।
तब बोली बोलऽ हइ छतरी घुघुलिया, सुन घाटम कहल हमार।
अस्सी गो बराहमन के तू भोजन करा दे, हैकल घोडिया कर दे दान।
लोहा पोसाक हउ तोरे बहनोइया के, आहु दान दे तूँ कराय।
सब जब दनवा करावे राजा, दोसपाप कटि जाय।
अस्सी गो बराहमन भोजन जे करलन, कोइ हैकल घोडि के न लेइ दान।
लोहा पोसाक लेलन छतरी घुघुलिया, हैकल घोड़ि के लेलक दान।
अब लोहा पोसाक पेन्हइ छतरी घुघुलिया, उतो बाधी लेगकइ छप्पन कटार।
हैकल घोड़िया पर सवार होके, जल्दी तेगवा लेलकइ निकाल।
सुन मामू घटमा नाहि हम जोगिया, छतरी घुघुलिया भगिना तोर।
तेगवा से करौला सलाम मामू, माथा के सिरवा लेबउ उतार।
अब घोड़वा के मार देहइ एकिया हुकुम, देवि के मंजिल में चलिआयल।
जल्दी मनी देहु हुकुमा देवी मैया, माथा के सिरवा लाइँ जे उतार।
सम्मुख दउरिया होके बोलइ देवी मइया, सुन बेटा कहल हमार।
बारन लाख सेना सुवाहट राजा वृजभान से, गड में करऽ ओकर
बेटी से बियाह।

मईंचा। २ दासी।

एतनी जे बतिया सुनइ छतरी घुघुलिया, मामू से पुछइ करजा[1] के हाल।
हेमद मोदिया कहइ काँचे तोर उमरिया, कैसे दिश्रउ करजा बताय।
चलि गेलइ मोदिया राजा दरबरिया, कहइ राजा तुँ द ऽ करजा चुकाय।
एतनी जे बतिया सुनइ राजा बृजभान, सुन मोदिया रे मोरी बात।
कुछ देवइ आसिन में, कुछ त कातिक में, पाइ-पाइ अगहन में चुकाय।
कहइ छतरी घुघुलिया, नहीं मानम मामू, हम पाइ पाइ अभी लेम चुकाय।
पहुँची गेलइ छतरी घुघुलिया राजा दरबरिया, सुन राजा मोरी बात।
बावन लाख रुपेया अबही चुका दे, दे सूद में कर अप्पन बेटी-से विश्राह।
एतनी जे बतिया सुनइ राजा बृजभान, उनकर तरवा के लहर चढ़इ कपार।
सुन रे पेयादा अलउ एक कनगार[2], बोली रो बोलऽ इउ कछु बोल।
मच्छरे नीयर सार के मार के नूँ छोड़, चटनी नीयर पीसी दे।
पेयदवा अलइ छतरी घुघुलिया के पास, हेकल घोड़िया बीतइ कनेला अहार।
हैकल घोड़िया के आंते देखइ पेयदवा, त भागऽ हइ जरवे बेजार।
जेकरे जे घोड़ी करइ मानुस के अहरवा, उनकर ताकत के केतना-ठेकान।
एतनी जे बतिया सुनलक राजा बृजभान गढ़ पर्वत पर डंका देइ बजवाय।
डंका के अवाज सुन के पलटन सब, गढ़ पर्वत पर जूमि जाय।
पलटन बीच में जब कूदे हैकल घोड़िया कि पलटन गेल घबड़ाय।
चारो तरफ नोकरी मारे हैकल घोड़िया, पलटन गेल पटियाय।
छन ही में जीत गेलइ लड़इया दुलरू, मार देलन चोदह हजार।
लोथवा के नीचू पूरममल देवनमा, उभी भागे जरवे बेजार।
जेकरे पीछू तो चलइ छतरी घुघुलिया, बैरन कचहरिया में चली जाय।
बावन लाख रुपेया राजा अबहु तो लेवउ, सूद में सुखवन्तिया के डोलाव।
चारो ही तेगवा के अड़वा बनैलन, ढाल के छवनी दे दलाय।
हुएँ पर रानी के बइठाय के दुलरू, माग मे सेनुर दे देइ डाल।
लाली जब डोलिया सजा के दुलरू, ओमे रानी के देलन बैठाय।
बावन लाख रुपेया ले ले हेमद मोदिया, लाली डोली के चलइ साथ।

● ● ●

गुपुत चिठिया लिखि के राजा विरिजभान, दिल्ली सहर में भेजी दे।
दोस[3] पर पड़लइ विपतिया, दोस दीहऽ गढ़वे में काम।

---

[1] कर्ज। [2] कीड़ा। [3] मित्र।

बामन लाख रुपिया पलटन के लूटि लिनैहऽ, रानी के तुरकिन दीहऽ बनाय।
हेमद मोदिया के सिर उतारिहऽ, मान के बदला सब लीहऽ चुराय।
चिठिया पढ़इ पूरनमल देवनमा, लाली डोलिया के लेलकइ छेंक।
डोलिया से देखऽ हइ रानी सुरमन्तिया रोवे लगलइ जरवे बेजार।
अब नहिं बचतइ परनमा देवी मइया गे, एभी जियल के धिक्कार।
एक सम्मुख हसुरिया बोलइ देवी मइया, तोर सिरवा के लाजी ला जगाय।
ऊँचे पलंगिया सूतल छतरी घुघुलिया, हुएँ देवी मइया जुमि जाय।
गुपुत चिट्ठी लिखऽ हउ राजा विरिजभान, दिल्ली सहर में भेजी दे।
दिल्ली सहर में हउ पूरनमल देवनमा, लाली डोलिया के लेलकउ छेंक।
बामन लाख रुपेया जब पलटन लूट लैतउ, रानी के तुरकिन देतउ बनाय।
एतनि जब बतिया सुनइ छतरी घुघुलिया, उनकर तरवा के लहर चढ़इ कपार।
अब लोहा पासाक पहनी छतरी घुघुलिया, बान्हीं लेलन छपनो कटार।
हेरल घोड़ि पर चढ़ि पलटन बीच गलन, सुन रे पलटन मोरि बात।
कहाँ से चललइ बरतिया, कहवाँ के कैलऽ है मोकाम।
एहु बरतिया में हमहुँ जब चलबइ रि मैं भी चुरा-कुदिया खाम।
डिलिया सहर स चललइ पलटनिया, लाली डोलिया कैली है मोकाम।
बामन लाख रुपया पलटन लूटि हम लैबइ, रानी के तुरकिन देबइ बनाय।
हेमद मोदिया के सिर उतरबइ, मान बदला लेबइ हम चुराय।
तरवा के लहर चढ़इ दुलरुआ के, अरे सुन पलटन रे मोरी बात।
जेकर घर में हउ गौना के र तिरिया, उनके भाग से फुरि जा[1]।
जेकर घर में हउ बुढ़िया ने मइया रे, उनके भाग से घुरि जा[2]।
पलटन बीच घुसइ हेरल घोड़िया जैसे भेड़िया में घुसल हइ हुँडार।
चौदह हजार पलटन मारइ छतरी घुघुलिया, एको सिरवा न देलक घुराय[3]।
लोथवा के नीचे पड़ल पूरनमल देवनमा, ओभी भागे जरवे बेजार।
बैरन कनहरिया गलइ पूरनमल देवनमा, सुन राजा जी बदल हमार।
ओभी पनगा के पनगान ममफिहऽ आभा सिरवा लेलक ओतार।
एतने में सुनइ छतरी घुघुलिया, राजा विरिजभान के सिरवा लेइ उतार।

● ● ●

ने दमगिरा खाम छतरी घुघुलिया, सुरपे से पुरनमल नेगया चलाय।

---

[1] जा। [2] लौट जा। [3] लौटा कर।

सुतले में मरते देखलन रानी सुखन्तिया, रोवे लगलन जार बे जार।
अपने सती पर जब पति के उठैलन, सिहुली जंगल में लेइ जाय।
रोइए रोइए लकड़ी चुनइ रानी सुखन्तिया, जंगल में चिता लेइ बनाय।
बुढ़िया रूप धैलन देवी मइया सरधा, सुन बेटी कहल गे हमार।
एकरा से आला दुलहा तोहरा हम खोजबउ, तोहुँ कर दूसर गे बिआह।
एतनी जब बात सुनइ रानी सुखन्तिया, सुन बुढ़िया गे मोरी बात।
बुढ़िया हैसवा[1] में लगलउ सौखवा, तूँही दूसर करे न बिआह।
हम अप्पन पति संग सती होइ जैबइ, तोरा काहे भरमा गे सुभाय।
एतना बतिया सुनइ देवी मइया, चल गेलइ रानी जसोदा के पास।
सिहुली जंगलवा तोहर बेटवा मारल गेलउ, तोहुँ लाव मंदिल म उठाय।
रोइते जाहइ जब ए रानी जसोदाजी, सिहुली जंगल म चलि जाय।
गोदी में उठा के बेटा के जसोदा जी, मंदिल म चलि जाय।
देवा देवी करि क पुकारलन जसोदा देइ, सुन गे देवी मोर बात।
पइयाँ पकड़ि देवी मिनता करों तोहर चउरवा, मोर बेटा के दऽ जिलाय।
अरवा लेबइ चउरा, चननमा के लकड़ी, तोहरे चउरवा पूजे आम।
काली जब पठिया[2] कुमारी देवी मइया तोरे, चौरा देवोअ चढ़ाय।
फूल के चदरिया ओढ़ैलन देवी मइया, अब सुरमा के देलन है जगाय।
सुरमा जे उठऽ हइ देवी के मंदिल में, सुन गे मैया मोरि बात।
अब जल्दी से हुकुमवा देहु देवी मइया, मामू के सिरवा लामी उतार।
अभी घरवा जाहु बेटा अभी घरवा रहु, अब कुछ दिनमा के बाद।

कुछ दिन के बाद जब दिनमा बीति गेलइ, मामू कन से चिठिया आय।
अगल बगल लिखल हइ सलाम, बाकि बीचे में लिखल हइ तिलाय[3]।
धाटेमपुर में हइला मातो मइया घटमा, आटपे भगिनमा जोड़ीदार।
अब छठी के नउतवा भगिना दिला भेजाइ, एही नेउतवा पूरे आव।
गंगु हजमा से चिठया लेइ कुतरी घुघुलिया, रंगमहल म चलि जाय।
मामू कन से नेओता ऐलइ मोरी मइया, नेयोता पूरे हम जाम।
इ नेयोता मति जाहू बेटा, मामू हउ अधमा चंडाल।
फगुआ नेयोता देइ बाप के मरलकउ, छुटिया नेयोता मरतउ तोर जान।

---

१ अवस्था। २ बकरी का बच्चा। ३ सौगन्ध।

बामन लाग रुपिया पलटन के लूटि लिन्हेंS, रानी के तुरकिन दीहS बनाय।
हेमद मोदिया के सिर उगाहिS, मान के बदला सब लीहS चुराय।
चिठिया पढइ पूरनमल देवनमा, लाली डोलिया के लेलनइ छेक।
डोलिया से देखS हइ रानी सुरमन्तिया रोवे लगलइ जरवे वेजार।
अब नहि बचतइ परनमा देवी मइया गे, एमी जियल के धिक्कार।
ए सन्मुख हजुरिया बोलइ देवी मइया, तार बिरवा के लागी ला जगाय।
ऊँचे पलगिया सूतल छतरी घुघुलिया, हुएँ देवी मइया भूमि जाय।
गुपुत चिठी लिखS हउ राजा विरिजभान, दिल्ली सहर में भेजी दे।
दिल्ली सहर में हउ पूरनमल देवनमा, लाली डोलिया के लेलकउ छेक।
बामन लाग रुपेया जब पलटन लूटि लेतउ, रानी के तुरकिन देतउ बनाय।
एतनि जब बतिया सुनइ छतरी घुघुलिया, उनकर तरवा के लहर चढइ कपार।
अब लोहा पोसाक पहनी छतरी घुघुलिया, जल्दी लेलन छुरनी कटार।
हैकल घोडि पर चढि पलटन बीच गेलन, सुन रे पलटन मोरि बात।
कहाँ से चललइ बरतिया, कहवाँ के कैलइ है मोकाम।
एहु बरतिया में हमहुँ जब चलबइ सिपाही भी चुरा-बु दिया राम।
डिलिया सहर से चललइ पलटनिया, लाली डोलिया कैली है मोकाम।
बामन लाग रुपेया पलटन लूटि हम लैबइ, रानी के तुरकिन देवइ बनाय।
हेमद मोदिया के सिर उतरबइ, मान बदला लेबइ हम चुकाय।
तरवा के लहर चढइ दुलरूआ के, अब सुन पलटन रे मोरी बात।
जेकरे घर में हउ गोना के रे तिरिया, उनके भाग से घुरि जा[१]।
जेकरे घर में हउ बुढिया ने मइया रे, उनके भाग से घुरि जा[२]।
पलटन बीच घुसइ हैकल घोडिया जैसे भेडिया में घुसल हइ हुँडार।
चौदह हजार पलटन मारइ छतरी घुघुलिया, एको सिरवा न देलक घुराय[३]।
लोथवा के नीचे पडल पूरनमल देवनमा, ओभी भागे जरवे वेजार।
बैरन कचहरिया गेलइ पूरनमल देवनमा, सुन राजा जी कहल हमार।
ओभी पनगा के पनगा न समामहS ओभी सिरवा लेलक ओतार।
एतने में सुनइ छतरी घुघुलिया, राजा विरिजभान के सिरवा लेइ उतार।

● ● ●

सोने पलगिया सूतल छतरी घुघुलिया, चुपके से पुरनमल तेगवा चलाय।

---

१ भाग जा। २. लौट जा। ३. लौटा कर।

सुतले में मन्ते देखलन रानी सुखन्तिया, रोवे लगलन जार बे जार।
अपने सती पर जब पति के उठैलन, सिहुली जगल में लेइ जाय।
रोइए रोइए लकडी चुनइ रानी सुखन्तिया, जगल में चिता लेइ बनाय।
बुढिया रूप धैलन देवी मइया सरधा, सुन बेटी कहल गे हमार।
एकरा से आला दुलहा तोहरा हम खोजबउ, तोहूँ कर दूसर गे बिआह।
एतनी जब बात सुनइ रानी सुखन्तिया, सुन बुढिया गे मोरी बात।
बुढिया बैसवा[1] में लगलउ सौखवा, तूँही दूसर करे न बिआह।
हम अपन पति सग सती होइ जैबइ, तोरा काहें भरवा गे बुझाय।
एतनी बतिया सुनइ देवी मइया, चल गेलइ रानी जसोदा क पास।
सिहुली जंगलवा तोहर बेटवा मारल गेलउ, तोहुँ लाव मदिल में उठाय।
रोइते जाइइ जब ए रानी जसोदाजी, सिहुली जगल में चलि जाय।
गोदी में उठा के बेटा के जसोदा जी, मदिल म चलि जाय।
देवी देवी करि के पुकारलन जसोदा देइ, सुन गे देवी मोर बात।
पइयाँ पकड़ि देवी मिनती करी तोहर चउरवा, मोर बेटा के दऽ जिलाय।
अरबा लेबइ नउआ, चननमा के लकड़ी, तोहरे चउरवा पूजे आम।
काली जब पठिया[2] कुमारी देवी मइया तोरे, चौरा देबोअ चढाय।
फूल के चदरिया ओढैलन देवी मइया, अब सुरमा के देलन है जगाय।
सुरमा जे उठऽ हइ देवी के मदिल में, सुन गे मैया मोरि बात।
अब जल्दी से हुकुमवा देहु देवी मइया, मामू के सिरवा लामी उतार।
अभी घरवा जाहु बेटा अभी घरवा रहु, अब कुछ दिनमा के बाद।

कुछ दिन के बाद जब दिनमा बीति गेलइ, मामू घर से चिठिया आय।
अगल बगल लिखल हइ सलाम, बाकि बीचे मे लिखल हइ तिलाक[3]।
रतेसपुर में रहला सातो भइया सरदार, आठवें भगिनमा छोड़ीहार।
अब छट्ठी के नउतवा भगिना दिला भेजाइ, एही नेउतवा पूरे आव।
गंगु हजमा से चिठिया लेइ छवरी घुघुलिया, रगमहल में चलि जाय।
मामू घर से नेओता ऐलइ मोरी मइया, नेयोता पूरे हम जाम।
इ नेयोता मति जाहु बेटा, मामू हउ अधमा चडाल।
फगुआ नेयोता देइ बाप के मरलकउ, छठिया नेयोता मरतउ तोर जान।

---

१. अवस्था। २ बकरी का बच्चा। ३ सौगन्ध।

हम छतरी कुल के हइला, छतरी घुघुलिया, एभी नेथोता पूरे जाम।
अब लोहा के पोसाक पेन्हि छतरी घुघुलिया, बाधि लेलक छपनो कटार।
हैकल घोडी चढि घाटमपुर गेलन, निरवा करइ मामू के सलाम।
अब हाथ मुँह धोइ लेहु ओ मोरे भगिना, जेमेला रसोइया चल भात।
अभी नहा रसोइया जेमवइ मामू, हम सैबइ कुछ देर के बाद।
घाटम बोलल जैपल तूँ जेम[1] घड़ी सिरवा लाहे उतार।
एतनी जे बात सुने छोटकी ममानी, रोव लगलन जार बेजार।
हाथ क कगनमा म लिगि जब देलन, भगिना के फैलन पुकार।
एभी घरवा में तुहूँ होसियार राहहऽ, तोहरो मरतऽ जान।
जब ले नऽ देवऽ मामू बखसीम, तब ले भोजन नहीं काम।
कुछ दे हइ सोना कुछ दे हइ चादी, मोर भागना रसाइया जेम।
हैकल घोडीया चढि छतरी घुघुलिया देवा के मदिलवा चलि जाथ।
जल्दी सना देहु न हुरगिया देवी मइया, सातो र १४ वा लामी उतार।
ए दिलवा में थिरजा धरहु वटा, अभी कुछ दिनमा के बाद।

कुछ दिनमा जब बीत गेलइ, रानी सुसन्तिया करइ विचार।
अब सैरा पोखरवा में लगलइ सिवोरवा, सैरा पोखरा नहाम।
सास बोलइ जेकर घरवा म सुनर हनरवा, से काहे सैरा नहाय।
एतनी बात जब सुनलक रानी सुसन्तिया, सुनऽ माता मोरी बात।
अब पनिया न लगलइ पिअरवा मोरा, दुधवा कैसे करि हम अधार।
अब सेरा पोखरा न अइया सीगनवा लगल है, तन कैसे चौरा निहाम।
हम नहिं देवऽ हुकुमवा बेटा के, अपना पात से पूछि लऽ।
तब बोला बालऽ हयन रानी सुसन्तिया, सुनऽसामी मोरी बात।
सैरा पोखरवा के मौगवा लगल सामी जी, हम सेरा म नहाम।
एतनी ने बात सुनइ छतरी घुघुलिया चोटे[2] सड़क देलन खिचवाय।
अब रानी जब डोलिया पर बैठ के रानी, सैरा पोखर में चलि जाय।
सैरा पोखरवा पर हइ माना भइया घाटम, सातो मछरिया मारे आयल।
रानी के सुरतिया देखइ जब घाटम, सुन जयपत रे मोरी बात।
कवन घर के हइ रे सुनर तिरिया, एकर ले चल उठाय।

१ भोजन। २ तुरत।

एतने बात जब देखइ सुधु महरा, दौड़ल गेलइ लखिया दोकान।
सैरा पोखरवा पर रानी जब गेलन कि हुँए पर घाटम जूमि जाय।
अब नहिं बचतइ इजतिया रानी ने, मोरे सग चलऽ साथ।
सैरा पोखरा पर जूमि गेलइ छतरी घुघुलिया, रानी गेल घबराय।
अब जल्दी सनी तेगवा खींच के दुलरू मामू पर देलन चलाय।
छओ मामू के मारि के बिरवा, सतवाँ पर दौड़इ खिसियाय।
तब छोटकी ममनिया करइ मगिना सेनुरा के लाज बचाव।
छोटकी ममनिया के गुनमा सोचि मामू के नक्वा काटि देलक छोड़।
बड़िय खुसी खुसी छतरी घुघुलिया लखिया दोकान लौटि जाय।
बड़िय सौख में हथन छतरी घुघुलिया, घर पर देखलन काम काज।
जब सब बतिया पूरा होलइ, रानी जसोदा मंदिल में चलि जाय।
अरघा लेलन चउरवा, चननमा के लकड़ी देवी के चउरवा पूजे जाय।
फाली लेलन पठिया, कुआँरी देवी मइया, चौरा पर देलन चढ़ाय।
हथवा उठा के देवी मइया सरधा, दुलरू के देलन बरदान।

टिप्पणी—इस लोकगाथा का नायक 'छतरी घुघुलिया' वीरता का अवतार है। इसमें क्षत्रियत्व का आदर्श रूप दिखाई पड़ता है। बाल्यावस्था से ही उसमें दैवी गुणों का विकास होने लगता है। शुक्लपक्ष के चन्द्रमा की भाँति उसके रूप और गुण की उत्तरोत्तर वृद्धि होती जाती है। अपनी अप्रतिम वीरता से वह दुर्जनों को दण्डित करता है। उसके मामा सात भाई घाटम अनार्य प्रवृत्तियों से युक्त हैं, उनका नाश करके ही वह शान्ति पाता है। राजा बिरिजभान भी अपनी करनी का फल पाता है। छतरी घुघुलिया की इस अद्वितीय वीरता से उसकी माँ रानी जसोदा के अन्तिम दिन सुख शान्ति से कटते हैं।

इस लोकगाथा का सम्बन्ध मध्ययुगीन भारत से प्रतीत होता है, क्योंकि इसमें उस युग की कई स्थितियों का संकेत मिलता है। यथा—राजा बिरिजभान द्वारा दिल्ली की सेना को लूटपाट के लिए निमंत्रण भेजना तथा रानी सुखमन्तिया को पकड़ कर 'तुरकिन' बनाने की प्रेरणा देना।

छत्री घुघुलिया की गाथा समाज के विविध स्तर के लोगों में प्रचलित है। इसे एक ही गायक गाता है। इसके लय में बिरहा गीत से सादृश्य है। इस वीरत्वात्मक लोक-गाथा के साथ ढोल बजा देने पर वातावरण में ओजस्विता आ जाती है।

———

१७. रेसमा

[६८]

देवी सुमरनमा करे रेसमा, बैठि अपन महलिया में न गे।
अगे एतबड़[1] सुरतिया[2] ना देवी काहे ला, हमरा उरेहलऽ[3] हल गे।
अगे कनहूँ न मिलइ हमरा जोगे गभरुआ[4] न गे।
हमरा जोगे हइ गे देवो मइया बीरमल चूहरमल न गे।
अगे उनके से जोड़ली न, अपन हम पिरितिया न गे।
उनके ला बरऽ हि देवी, तोहरे पुजनमा न गे।
अगे नित दिन सुबऽ हिअइ कि बिरवा हइ मोकामा टरिया न गे।
मोकाम टरिया में आ देवी चाड़ाडीह हइ अलड़वा न गे।
ओहि अलड़वा में देवी मइया हमर बीरमल चूहरमल न गे।
कौने बहनमा ले देवी हम जइअइ चड़ाडिह अलरवा न गे।
अगे आजु केर दिनमा गे देवी हम पनियाँ के बरबइ बहनमा न गे।
अगे ओहि जबे रहिया में न, तुलसीरामहिं इनरवा हइ न गे।
अगे ओहि ठइयाँ[5] आवऽ हइ न हमर बीर चूहरमल न गे।
एतना मनमा सोचिय गे रेसमा, सोरहों करइ सिंगरवा न गे।
देखइ दरपनमा रेसमा, देखि देखि बिहँसइ न गे।
मइया बहनमा करे रेसमा, तुलसीराम जयबइ इनरवा न गे।
बिहँसि बिहँसि के रेसमा मइया में गेलइ लपटाइए न गे।
अगे मइया हम पनिया लैबइ अउ तोहरो चरनिया धोवइ न गे।
जल्दी देहि हुकुमना गे मइया तुलसी हम जइबइ इनरवा न गे।
एतना बोलिया सुनिये रेसमा के, मइया समुझावइ न गे।
अगे मतु तौंहि जाहि न बेटी, तुलसीराम इनरवा न गे।
तुलसीराम इनरवा आवइ गाँव के बानू-भइया न गे।
अगे ओहि रहिया आवउ न बेटी मइया घे गुरुभाइ न गे।
जिनकर नइयाँ हइ न बेटी बीरमल चूहरमल न गे।
अगे भरनी में जनमा बिरवा चूहरमल मरतउ न गे।
अगे जैसन तोहर मइया हउ न बाबू अजयोसिंह न गे।

१. इतना बड़ा। २. रूप। ३. रचा। ४. पति। ५. जगह।

ओयछने तू मइया समफ रेसमा चूहरमल के न गे।
जेकर घरवा में बसइ रेसमा चेरिया-लौंडिया न गे।
सेकर कइसे बेटिया न रेसमा पनिया लावे जैतइ न गे।

● ● ●

अगे सुनहि न सुने देवी मइया हम जाहिअउ तुलसी इनरवा न गे।
हमर मनकामना गे देवि, करिह तोहुँ पुरनमा न गे।
मानिय मनितवा रेसमा, सोनमा के ले हइ खैरलिया[1] न गे।
गोदिया में आउरो लेलकइ रेसमा रेसम पाट डोरिया न गे।
खिड़की के रहिया से रेसमा घरवा से बहरैलइ[2] न गे।
जेठवा बैसखवा के हइ न रेसमा, तलफि रहइ भुभुरिया[3] न गे।
जुमिय गेलइ गे रेसमा, तुलसीराम इनरवा न गे।
चारो भुअनमा गे रेसमा, नजरिया बरनावऽ[4] हइ न गे।
कि कनहु न देखियइ देवी मइया बीर चूहरमल न गे।
अगे ओहि घड़िया रेसमा से पूछे लगलइ पनभरनी न गे।
अगे केकरा करनमे मइयाँ कुइयाँ पर जोहऽ बटिया न गे।
अगे सुनहि न सुन पनिहारिन एगो बतिया न गे।
तिरिया के हलिया पनभरी, तिरिय जैतइ बुझिये न गे।
अगे बड़ा जे बिपतिया हमरा पर पनिभरिन बीतइ न गे।
अगे हम अप्पन बिरवा के सुरतिया देखे ऐली न गे।
उनकर जे नइयाँ हइ बाबू बीरमल चूहरमल न गे।
एतना बोलिया सुनिय रेसमा के पनभरिन समुभावइ न गे।
अगे बीरमल चूहरमल हउ रेसमा देवी के सेवकवा न गे।
पर के तिरिया के समफउ माता अपन बहिनिया न गे।
सोरो से आला हइ रेसमा बिरवा के सुन्नर तिरियवा न गे।
सेकरो न कहियो देखलन बिरवा परछहियाँ न गे।
सेहु कइसे बिरवा के रेसमा धरम से तूँ देबऽ गिराइए न गे।
एतना बोलिया सुनिय रेसमा, रोघना[5] लेलन पसारिय न गे।
रोइये-रोइये न पनभरिन हम, बिरवा के लेबइ मनाइय न गे।
चाँड़ाडिह असरवा से बिरवा जा हइ अपन मकनिया न गे।

---

१. छोटा घड़ा। २. बाहर निकली। ३. गर्म धूल। ४. घुमाती (है)। ५. रुद-

जेठवा बैसखवा के महिनमा बिरवा के लागी गेलइ पियसिया न गे।
तुलसी राम इनरवा पर देखऽ हइ रेसमा के सिंगरवा कैले न गे।
एक लोटा पनिया पनभरनी, हमरा देहि पियाइ न गे।
अगे पानी के पियासल पनभरनि सूखल जा हइ हमर कंठवा न गे।
एतना बोलिया सुनिय रेसमा मनें मन बिहँसइ न गे।
अगे तोरे अकबलवा से देवी, बिरवा कुइयाँ पर बोलइ न गे।
बिहँसि बिहँसि रेसमा चूहरमल से पूछे लगलइ न गे।
कहाँ तोहर घर हउ बटोहिया, नइयाँ कि हउ न हो।
अगे हमरो जे घरवा हइ न मोकामा केर नगरिया न गे।
हमरो नइयाँ हउ पनभरनि बाबू चीरमल चूहरमल न गे।
एतना बोलिया सुनिय गे रेसमा घुँघटा देलन हटाइए न गे।
अहो हमरा घरवा चलहिं बटोहिया, पनिया तोरा पिलैबइ न हो।
अहो तोरे खातिर करली हम बिरवा सोरहों सिंगरवा न हो।
एतबइ सुरतिया बिरवा तोहरे ला इसवर उरेहलन हैं न हो।
अहो अपना बचनिया से न बिरवा हिरदा लेहु मिलाइए न हो।
बारह बरिस से पनभरनि एहि रहिया से अइअइ जइअइ न गे।
कहियो न सुनलिअइ ऐसन दुखवा भरल बतिया न गे।
अप्पन तनी नइयाँ-गइयाँ बताइ देहि न गे।
अहो हमर घरवा हउ मोकामा केर नगरिया न हो।
सॅसे नगरिया हउ हमरे जिमेदरिया न हो।
अहो हमर भइया के नइयाँ हउ बाबू अजवीसिंह न हो।
उनके हम बहिनियाँ ही, नइयाँ हउ रेसमा न हो।
गोमना से काँपे लगलइ, सुन रेसमा हमर बतिया न गे।
हमर गुरु भइया हे बाबू अजवीसिंह न गे।
जैसन भइया हउ बाबू अजवी सिंह ओयमने भइया हम हियौ गे।
ऊँच कुल के हहीं गे रेसमा, हम सेवक कुल के बलकवा न गे।
अगे जल्दी घरवा लौट जाहि न तो मुड़िया लेबौ उतारिए न गे।
रोइए गोलइ रेसमा बिरवा न अपनैवे तो मिरवा उतरवैवउ न हो।
जल्दी तू जाहीं रेसमा मोकमा नगरिया न गे।
एजि गोहरनमा भइया अजवीसिंह के भेजहीं न गे।

१ इसवर।

नोचिए देलकइ रेसमा अप्पन सोरहो सिंगरवा न हो।
धरिए बौरहिया[1] के रूप पहुँचलइ भइया के कचहरिया न हो।
आग लगउ भइया तोर जमेदरिया आउ कचहरिया में हो।
तोर बहिनी के लुटकउ बिरवा चूहरमल इजतिया न हो।
एहि मनमा करइ भइया कि महुरवा खाइ मरियइ न हो।
एतना सुनिये अजबीसिंह रेसमा से कहे लगलइ न गे।
हमर हउ गुरु भइयवा रेसमा बाबू चूहरमल न गे।
नहियो न देखलियइ रेसमा चूहरमल हइ धोखेबजवा न गे।
पर के तिरिया के बहिनिया कहइ सेहु कैसे इजतिया लुटकउ न गे।
एतना सुनिय रेसमा अजबीसिंह के ललकारइ न हो।
गैर के ओदर[2] क जलमल के पछ[3] लेके हमरा झूठी बनैले न हो।
एके ओदर क जलमल हइला भाइ बहिनी, करहु बिसवसिया न हो।
एतना सुनिय अजबीसिंह नाचऽ हइ तरवरिया न हो।
आजु हम जैबइ रेसमा बिरवा चूहरमल के सिरवा काटि लैबु न गे।
मुड़िया नहि कटिह भइया, बाँधि छाध बिरवा के लैहऽन हो।
अप्पन दुसमनमा से बदला हम अपने हाथे लेबइ न हो।
एतना सुनऽहइ अजबीसिंह मनमा में सोचइ न हो।
तिरिया के जतिया न हमवर दैवो न जानऽहइ न हो।
रेसमा के रोधना देखि भइया के फिर मया घेरी लेलकइ न हो।
झूठे लुतरिया[4] पर अजबीसिंह साजऽहइ गोहरनमा न हो।

सात सै गोहरनमा बाचे न दलइ बाधीराम बराहिलवा न हो।
सेहु बाधीराम हलइ बिरवा चूहरमल क अपन चचवा न हो।
ओकरे अजबी सिंह कहऽहइ तोर भतिजवा लेलकउ इजतिया न हो।
एतना सुनिय बाधीराम मुड़िया नीचे गाड़ लेलकइ न हो।
हम न जानलिअउ अजबीसिंह भतिजवा होइहे धोखेबजवा न हो।
धरम के नाते अजबीसिंह तोरे देबउ संग सथवा न हो।
आगे आगे बाधिराम चलऽहइ, ओकरे पीछे अजबीसिंह न हो।
ओकरे पीछे चलइ न इसवर सात सै गोहरनमा न हो।

---

1 पागल। 2 गर्भ। 3 पक्ष। 4 चुगली।

जुधवा के डकवा अजयीसिंह देलन बजबाइए न हो।
डेगे डेगे चलइ न अजयीसिंह फौजिया भारइ गरजवा न हो।
ऊँची महलिया चढ़ि रेसमा देखऽइइ देवी सुमरनमा करइ न गे।
आगे देवी चूहरमल के थाली परकि के मँगाइए दीहऽन गे।
परवा देलन चूहरमल तो उनका हम मनाइए लेबइ न गे।
जुमियों में गलइ फौजिया न मोकमा बीचे टँरिया न हो।
अहो ओहि अखरवा में बीरमल करइ देवी सुमरनमा न हो।
ओहि घड़िया देवी बिरवा क सम्मुख भेलन सहइया न हो।
मत घबड़ा बेटा हमर देल तेगवासे लड़िहऽ न हो।
अहो ओही जब तेगवा लेके चूहरमल देलन ललकारिए न हो।
मोकमा टँरिया बीचे जुधवा मचल घमसनमा न हो।
सात से गोहरनमा के काटि देलन बिरवा चूहरमल न हो।
डरवा के मारे अजयीसिंह भागि गेलइ कचहरिया न हो।
बिरवा चलि गेलइ अखरवा देवी सुमरनमा करइ न हो।
ओहि घड़िया जुमि गेलइ याधीराम हम न करम नोकरिया न हो।
हमर भतिजवा अजयीसिंह हउ सच्चा देवी के सेवरवा न हो।
एही से जीत गेलन सात सौ गोहरनमा न हो।
ओहि घड़िया अजयीसिंह के रेसमा ललकारइ न हो।
हमर चुड़िया पेन्हि लऽ भइया, अप्पन पगड़िया हमरा दऽ हो।
अचरि[1] भाऽइइ अजयीसिंह चौदह सौ गोहरनमा न हो।
ओहि मोकमा टँरिया मे जुधवा देलन मचाइए न हो।
अहो ओने जब चमकऽइइ चूहरमल के दुधारी तरवरवा न हो।
मारल गेलइ अजयीसिंह के चौदह सौ गोहरनमा न हो।
आउरो अजयी सिंह के मुरिया चूहरमल उतारिए लेलकइ न हो।
सिरवा उतारऽइइ चूहरमल आउ कलेजवा में मारइ न हो।
अहो रेसमा रुनमें गुरुभइयवा के सिर उतारलि न हो।
अपना हथवा से गुरुभइयवा के सिर गंगा में दहावइ[2] न हो।

● ● ●

मोकमा में गुहरमवा मचलइ मारल गेलइ वायू अजयीसिंह न गे।

---

[1] इस बार। [2] बहाता है।

श्रोने मइया रोवइ रेसमा के मुड़िया नोचइ न गे।
श्रगे श्रपनो पिरिनिश्रा कारन मइया के जनमा मरबैले न गे।
खालि श्रब बचलि गढवे में मइया बेग्यिा न गे।
जैसे मोकमा में गे रेसमा घरे घरे बिधवा बनैले न गे।
राखा हइ चूहड़मल उनका तूँ समझऽहऽ तिरिया बनैतन न गे।
श्रगे जल्दी डूब मरहीं न रेसमा काहे तूँ मुँहमा देखाबऽह गे।
जैसे कोरिया सून भेल रेसमा बाबू श्रशर्फीसिंह ला गे।
श्रगे श्रोयमने तोरा लगी करबइ गोदिया सूना न गे।
एतना बोलते बोलते मइया के छुटलइ परनमा न गे।
लइयो न हटवा छोड़ऽहइ रेसमा विरवा के नइयाँ पुकारइ न गे।
श्रगे श्रब मने मने सोचइ रेसमा कौन करि उपइवा[1] न हो।
श्रगे दलजित राम गड़ेरिया के बराहिल बनैयइ न गे।
सात से हइ पठवा उनका सूबे बिहार में न गे।
उनका बोलाइ जुधवा कराइ चूहड़मल के डराइ देबइ न गे।
एतना सोचिय न रेसमा पतिया लिखे लगलइ न गे।
पहले से सुरतिया रेसमा के दलजित राम जानऽ हलइ न गे।
कुछो कुछो मोहवा दलजित रेसमा पर रखऽ हलन न गे।
श्रहो रेसमा के चिठिया पढइ दलजित मने मने खुसी भेलइ हो।
सुनहिं न सुन विरवा मान तौ हमर बतिया न हो।
श्रहो मोकमा से चिठिया हमरा भेजलइ है रेसमा हम्मर परेमी न हो।
करहु तैयरिया भाइ जी मोकमा चलब नगरिया न हो।
मारते गरजवा दलजित चल गेलइ मोकमा नगरिया न हो।
सगे हइ दलजित के सात सो पठवा न हो।
ऊँची जे महलिया देखइ ना रेसमा बैठल दुलरी न हो।
रेसमा के सुरतिया देखइ दलजित मनमें बिहँसइ न हो।
बिहँसि बिहँसिए दलजित हेली गेलन[2] महलिया में न गे।
श्रब बोले लगलइ रेसमा सुनहि दलजित मोरा बतिया न हो।
चूहड़मल के मारहि दलजित पीछे करबऽ तोरा से बतिया न हो।
एतना सुनिए दलजित श्रब चूहड़मल से छेड़खनिया खोजइ न हो।

---

१ उपाय। २. प्रविष्ट हुश्रा।

सन के ममेसी चरइ, दलजित धर्म के छोड़ि दे हइ न हो।
चूहरमल के ममसिया दलजित बाधिय मोकमा ले ऐलन न हो।
चूहरमल के भगिनमा मामू से सबे हलवा कहइ न हो।
गारते गरजवा चूहरमल जूम गेलन दलजित के अगुआ न हो।
केकर दिमगवा पर दलजित रोग्ले हमर ममसिया न हो।
सात सो पट्ठा से होंव लगलइ लोहा के मिरनमा न हो।
मारल गेलइ सात सौ पठवा आउ दलजितवा न हो।
काटिए मिरवा दलजित के रेसमा के बीग[1] देलन अगुआ न हो।
अपने जे चलल‌इ चूहरमल गंगा करे असननिया न हो।
उनके पीछे ना लुक लुक[2] रेसमा चलल जा हइ न हो।
गंगा में हेलिये चूहरमल सूरज के धरइ धेयनमा न हो।
तोरे अरबलवा सुरुज हम जितली मात से गोहरनमा न हो।
आज मनमा करइ लियइ हम अप्पन ममथिया न हो।
एतने में रेसमा पहुँची चूहरमल के मनावइ न हो।
कैसन जलमले गे रेसमा कुलवा के देले डुबाइए न गे।
देलऽ मरषाइए गे रेसमा हम्मर गुरु भइवा न गे।
एतना बोलते बोलते चूहरमल चलि गेलन अप्पन अररवा न हो।
अब रेसमा झुमिये गेलइ गउँआ के जिरवा तमोलिन कने[3] न हो।
बिहँसि बिहँसि के रेसमा बोले लगलइ तमोलिन से न हो।
बड़ा भाग जितले तमोलिन तोरा घरे नित बैठऽ हउ चूहरमल न हो।
आगे उनका रानिर कैसी बड़ी उपहवा बइयो मुँहमाँ से बोले न हो।
हम्मर दुलखा न गिरना तोरे हाथ से मिग्तइ न गे।
वीरमल चूहरमल से हम्मर जोड़िया मिलाइए देही न गे।
एतना सुन के जिरवा रेसमा के समुझावइ न गे।
जैसन तूँ भेले बौरहिया ओयमने मिरा ला हमहुँ हली न गे।
नित नित पुकारऽ हलउ रेसमा चूहरमल हमरा बहिनिया न गे।
अब सब नाता तजिय न चूहरमल के भइया बनैली न गे।
आगे नदिया से चूहरमल न छोड़लन हमर दुअरिया न गे।
एही नतवा रगहीं चूहरमल न छोड़तउ दुआरिया न गे।

१ फेंक। २ छिप छिप। ३ के पास।

रोइए रोइए रेसमा अपन महलिया चलि ऐलइ न गे।
अब एही मनमा सोचइ रेसमा कि बनियइ जोगिनिया न गे।

० ० ०

होते भिनुसरवा[1] सुनइ रेसमा कि गाँव में ढोलवा बजइ न हो।
पीटी पीटी ढोलवा बोलइ चूहरमल लेलन आज समधिया न हो।
ठीक जब बारह पहरिया चूहरमल ले लेलन धरती में समधिया न हो।
एहि एतना सुन के रेसमा छोड़ देलेन अपन महलिया न हो।
धैले जोगिनिया के भेसवा जूमि गेलन चूहरमल के समधिया न हो।
पटकि पटकि मुड़िया रेसमा चूहरमल के समधिया पर रोवइ न हो।
सच्चा परेमी होम इसवर तो हम्मर परान छिटैं छूटे न हो।
राम नाम, चूहरमल कहते कहते रेसमा के छूट गलइ परनमा न हो।
तब समधिया से अवाज निकलइ, हम्मर जब करबऽ पुजनमा न हो।
हम्मर पुजनमा से पहिले करिहऽ पूजा बहिनी रेसमा के न हो।
एतना बोलते चूहरमल के हो गेलइ अवजवा अन्तर्धनमा न हो।

टिप्पणी—'रेसमा' दुसाध जाति का प्रिय जातीय काव्य है। इस लोकगाथा का नायक दुसाध कुलोत्पन्न है, जो अपनी अद्वितीय वीरता और अद्भुत चरित्र बल से देवता हो जाता है। 'रेसमा' इस गाथा की नायिका है। यह उच्चवंश की कन्या है, पर वीरमल चूहरमल के रूप और शौर्य पर मुग्ध हो जाती है। उसके प्रेम को पाने के लिए अनेक प्रयत्न करती है। पर चूहरमल तो ऐसा आदर्श युवक है, जो अपनी पत्नी से भी अभी तक नहीं मिला, फिर किसी अन्य नारी की तो बात ही और है। अपने गुरुभाई की बहन को वह अन्त तक बहन मानता है। रेशमा के सारे प्रयत्न विफल जाते है। यह ऐसा अपूर्व वीर है कि हजारों की सेना में अकेले कूदकर लोथों के ढेर कर देता है। कठिन से कठिन परीक्षा देता है, पर सत्य से नहीं डिगता। उसके चरित्र से यही व्यंजित होता है कि बड़प्पन और चारित्रिक उदात्तता किसी जाति और वंश की विशेषता नहीं। ये गुण व्यक्तिगत होते हैं। चूहरमल का व्यक्तित्व इन्हीं गुणों से विभूषित होने के कारण बड़ा प्यारा हो गया है।

रेसमा की गाथा प्रायः एक ही गायक गाता है। ढोल पर इसे गाने से गंभीर वातावरण की सृष्टि हो जाती है। युद्ध के प्रसंग में, वीररस के कारण उत्साह आजाता है। इस गाथा का अन्त शान्त रस में होता है। मृत्यु के बाद दोनों पूजित होते हैं।

---

[1] भोर।

१८. कुँअरविजयी

[६६]

रमना गर्राज के बोलिया बोले, बबुआ कुँअरविजयी हो ना।
रमना सुनहिं न सुन मौंजी सोनमन्तिया हो ना।
रमना हम खेले जैबइ गुल्ली डण्वा हो ना।
रमना सोसे[1] जो सोरंगगढ के लड़कवा खेलइ हो ना।
रमना बिहँसि के हुकुमवा दे हइ मइया घेघामन्तिया हो ना।
रमना बिहँस बोली बोले मौंजी सोनमन्तिया हो ना।
रमना बबुआ खेले लगलन अलि के मैदनमा हो ना।
रमना सबे जे लड़िकवन खेले लगलन हो ना।
रमना सबे लड़िकवन पे कुँवर कएलन परेननमा हो ना।
रमना सबे लड़िकन बोलऽ हइ तू जनमं के बदमसवा हो ना।
रमना तारे जे बिग्रहवा में झगड़ा भेलउ हो ना।
बामनगढ में बामन लारा बरतिया भोगइ जेहलखनमा हो ना।
कुँअर ओहि में बाबू तोहर भइया हउ हो ना।
रमना जेकरो जे बितलइ बारह रे बरिसवा हो ना।
रमना एतना जो बोलिया सुने कुँअरविजयी हो ना।
रमना रंगे रंगे खुनवा खौले लगलइ हो ना।
रमना गाभवा के मारे फेरइ गुलि डण्वा हो ना।
रमना सेहु टटा गिरल बामनगढ बुरुजवा हो ना।
रमना टूटि गेलइ बामनगढ पे बामन बुरुजवा हो ना।
रमना घूमि गेलइ कुँअरविजयी अप्पन गढ़वा हो ना।
रमना दौड़य के मइया में लपटलइ हो ना।
मइया जल्दी से बता दे कहाँ हम्मर बाबू भइया हो ना।
रमना रोवे लगलइ रानी घेघामन्तिया हो ना।
रमना रोइये रोइये बोलइ रानी घेघामन्तिया हो ना।
रमना बाबू मरि गेलथुन आउ भइया हो ना।
रमना एतना जे बोलिया सुनइ कुँअरविजयी हो ना।

---

१. सम्पूर्ण।

मइया असल-अमल भेदवा बता देही हो ना।
बबुआ तोरे जे बिअहवा भेलउ बामन गढ़वा हो ना।
रममा ससुर मागउ बामन लागा बरतिया हो ना।
एको बरतिया कमलइ, देलन सबके जेहलखनमा हो ना।
रममा जिनको जे बीती गेलइ बारह बरिसवा हो ना।
रममा तोरे पर हम रोनऽ[1] ही रँड सेवा[2] हो ना।
रममा एतना जे बोलिया सुने कुँवर विजयी हो ना।
मइया जल्दी हमरा देही कोई तेगवा हो ना।
मइया रग-रग खौलइ खुनमा बदनमा हो ना।
रममा एतना जे बतिया सुनइ रानी घेघामन्तिया हो ना।
रममा बारह रे बरस क तोर उमरिया हो ना।
रममा कैसे लड़े जैबऽ बामन गढ़वा हो ना।
मइया मत समझ हमरा छोटा कुँअर विजयी हो ना।
मइया हम काल भैरो के हिअउ औतरवा[3] हो ना।
रममा विहँसी के बोले रानी घेघामन्तिया हो ना।
रममा बामन रे कोठरिया हउ तेगवा हो ना।
रममा जौन तोरा पसउ पसिनमा[4] हो ना।
रममा एतना जे बोलिया सुनइ कुँअर विजयी हो ना।
रममा दौड़ि के देखइ सब तेगवा हो ना।
रममा एको नहि तेगवा कुँअर के पसिनमा हो ना।
मइया कैसन हलइ बाबू छोटा मँझोला अमनमा हो ना।
मइया उनकर तेगवा हमरा लगइ भुकुआवन हो ना।
मइया असली मन के खँडवा देहि बनाइए हो ना।
रममा एतना जो बोलिया सुने भौजी सोनमन्तिया हो ना।
बबुआ तोरे पर मोभे मनिया के सेनुरा हो ना।
रममा एतना जो सुने रानी घेघामन्तिया हो ना।
रममा दुनों जब सिनमा[5] से फेकइ दुध के धरना हो ना।

● ○ ○

रममा गाँव के पछिममा हइ लोहरा मइया हितवा हो ना।
रममा लोहरा के मकनमा गेलइ रानी घेघामन्तिया हो ना।

---

१. विताती (हूँ)। २. वैधव्य। ३ अवतार। ४. पसन्द। ५ *छोटा। ६. छाती।

रममा कौने करनमा रानी के आयल हमरा घर चरनमा हो ना।
लोहरा बबुआ जइहें बामन गढ लड़नमा हो ना।
रममा अस्सी मन के तेगवा कुँअरा लेतइ हो ना।
रममा बबुआ हवऽ बारह बरिस के हो ना।
रममा सेहु कइसे लड़तइ बामन गढ के लड़इया हो ना।
रानी अपनी[1] लौट जाहु अपन तूँ घरवा हो ना।
रममा एतना जे सुनइ रानी घेघामन्तिया हो ना।
रममा मनमा मान[2] धरके लौट गेलइ हो ना।
रममा ऊँचे जे महलिया से देखइ कुँअरवा हो ना।
मइया कौने जे करनमा लौटले खालि हाथे हो ना।
बबुआ बाबू के हउ तोर मितवा लोहरवा हो ना।
बबुआ तोरा समझऽ हउ बारह बरिस के लड़िका हो ना।
बबुआ एहि से बनाय हइ न अस्सीमन के खँड़वा हो ना।
मइया ऐसन मन करे सिरवा काटिअइ लोहरा के हो ना।
बबुआ जैसन तोहर बाबू राजा घोड़मल सिंह हो ना।
बबुआ ओयसने समझऽ धरम के पिता लोहरा के हो ना।
बबुआ अपने से माँगहु खँड़वा लोहरवा से हो ना।
रममा कुँअरविजयी पहुँचलन लोहरा मकनिया हो ना।
रममा गरजि के लोहरा के पुकारऽ हइ हो ना।
रममा डरवा के मारे थर-थर काँपे लगलइ हो ना।
रममा आइ गेलइ लोहरा दुअरवे पर हो ना।
रममा हरषि हरषि लोहरा दे हइ असीसवा हो ना।
बबुआ गढवा में बचलऽ एके तूँ सिरवा हो ना।
बबुआ कैसे तूँ लड़बऽ बामन गढ के लड़इया हो ना।
लोहरा जल्दी से बनवा दे अस्सीमन के खड़वा हो ना।
लोहरा मन[3] जान हमरा बारह बरिस के बलकवा हो ना।
लोहरा समझ हमरा बाल भैरो के औतरवा हो ना।
लोहरा बाँवे से दहिना हमरा सात सै जोगिनिया हो ना।
लोहरा देवी मइया देतन हमरा सतवा[4] हो ना।

१ अभी। २ उदास। ३ मत। ४ बल।

रममा बिहँसि के बोलि बोले लोहरा मितवा हो ना।
बउआ असी मन के चट्टान पर पड़ल है लोहवा हो ना।
बबुआ ओहि लोहवा लाहु तूँ उठाइए हो ना।
कुँअरा बामे हाथे असी मन के चटनमा लावइ हो ना।
रममा घड़ि घटा मे बनि गेलइ असी मन के गडवा हो ना।
रममा सेहु खड़वा दे हइ कुँअर विजयी के हो ना।
रममा झुकिझुकि कुँअरा करइ लोहरा के परनमियाँ[१] हो ना।
रममा लेइ खड़वा पहुँचलन देवी के मन्दिलवा हो ना।
रममा देवी के चरनिया रखलन असी मन के खडवा हो ना।
रममा सनमुख होलन देवी कुँअर के सहइया हो ना।
रममा कुँअर क बगलवे म मइया चेचाचन्तिया हो ना।
रममा हथवा जोड़ि देवी के करइ गोहरनमा[२] हो ना।
देवी बउआ के रहिहऽ रन[३] में सहइया हो ना।
रममा लेइए असीसवा अपन गढ़वा में लौटलन हो ना।
रममा मइया साजे लगलइ वीर बनमा[४] हो ना।
रममा सिनमा पर बाँध दइ लोहा के कवचवा हो ना।
रममा पिठिया पर बाधइ गैंडा[५] के ढलवा हो ना।
रममा बगल मगल खोंसइ बिछुआ कटरवा हो ना।
रममा सिरवा पर बाधइ केसर पगड़िया हो ना।
रममा हथवा मे मइया दे हइ असी मन के कटरवा हो ना।
रममा झुकि झुकि कुँअर करइ माता और भौजी के सलमिया हो ना।
भौजी कुले हरवा[६] हमलऽ, अब घोड़वाऽ असवरिया हो ना।
रममा एतना जे बोलिया सुने रानि चेचामन्तिया हो ना।
बबुआ एको नहिं गढ़वा में हइ घोड़ा हथिया हो ना।
रानि के एतना कहते गिरइ अँखिया से झिर-झिर पनिया हो ना।
रममा गरजि क बोलिया बोलइ सोनमन्तिया हो ना।
रममा हिड़खी पाड़िया हउ तरहरवा[७] हो ना।
रममा बारह बरिस से कोई न कैलक ओकर असवरिया हो ना।
मारिए गरजवा कुँअर जा हइ तरहरवा हो ना।

---

१ प्रणाम। २ पुकार। ३ युद्ध। ४ वेष। ५ एक जानवर। ६ हथियार। ७ तहखाना।

रममा कुदिए गेलइ कुँअरा घोड़िया के पीठिया हो ना।
रममा मइया अउ भौजी के असीसवा लेके चललन बामनगढ़ हो ना।

रममा जंगलवा बीचे मिलइ गोरखनाथ के अथनवाँ हो ना।
रममा जुमि गेलन कुँअरा गोरखनाथ के अगुआ हो ना।
रममा जूता पेन्हले छू देलन गोरखनाथ के चरनिया हो ना।
गोरखनाथ बोललन जीव होना तोरा कुँअर विजयी हो ना।
बेटवा मौने के दिन होतो तोरा मरनमा हो ना।
रममा एतना काहे देलऽ कठिन वरदनमा हो ना।
रममा तोर भउजइया सोनमन्तिया के अंगुरी में अमरितवा हो ना।
बउआ ओहि तोरा फिरू जिलैहे हो ना।
रममा करि परनमियाँ गेलन देवी मंदिलवा हो ना।
रममा देवी मइया दे दइ असीसवा हो ना।
रममा सात से जोगिनियाँ होतो सहाइ हो ना।
रममा पहिले जो डेरा गिरा दिहऽ भैरो पोखरवा हो ना।
रममा करि परनमियाँ कुँअरा पहुँचइ बामन गढ हो ना।
रममा हिछली के पाथ देलन असोगा[1] बिरिछा[2] हो ना।
रममा अपने जे बैठि गेलन बिरिछ के छहियाँ हो ना।
रममा कौने जे उपयवा से जुधवा मचाइ दिबइ हो ना।
रममा ओहि घड़िया सम्मुख होलन देवी सहइया हो ना।
रममा बउआ भैरो पोखरवा के बगलवा में रानी[3]फुलवरिया हो ना।
रममा ओहि फुलवरिया के फुलवा सब तोड़ि लावऽ हो ना।
रममा ओहि फुलवरिया के फुलवा से रानी करइ पुजनमा हो ना।
रममा फुलवा जे लेवे ऐतउ चिलहकी नउनिया हो ना।
रममा ओकरे जे सथवा रहतउ मलकी मलिनियाँ हो ना।
रममा ओहि फुलवा ला ऐतो तोहर रानी तिलक देइ हो ना।
रममा बेटवा तिरिया से तूँ रहिहऽ होसियरवा हो ना।
रममा फुलवे के बहनमें चलतो जुधवा हो ना।
रममा एतना कहिए देवी होलन अन्तरधनमा हो ना।

१. असोक। २. वृक्ष। ३. मना।

रममा फुलवा फुलवरिया आज थुरि गेलन कुँअरा हो ना।
रममा एको नहीं फुलवा बचल घानि फुलवरिया हो ना।
रममा सबे जब फुलबा के लगौलन कुँअरा बिछौनमा हो ना।
रममा फुलवा लोढ़े अलइ चिल्हकी अउ सल्हकी हो ना।
रममा एको नहीं फुलवा नजर आवइ हो ना।
रममा कौन ऐसन दुसमनमा थुरि गेलइ फुलवरिया हो ना।
रममा दुसमन के खोजते दुनों पहुँची गेलइ सैरो पोखरा हो ना।
रममा देख हइ कुँअरा क सूतल फुलवा के बिछौनमा हो ना।
रममा सूरत देखिये दुनो के मुरछा लगइ हो ना।
रममा ऐसने सुरनिया हलइ बहुआ कुँअर विजयी के हो ना।
रममा राजा के भेदवा सबे मालूम होलइ हो ना।
रममा उनका नरवा के लहर कपरवा चढ़इ हो ना।

⊙ ⊙ ⊙

रममा कुअँरा पहुँची गेलइ तिरपन पट्टी बजरवा हो ना।
रममा तिरपन पट्टी बजरिया के बगल में लाल कचहरिया हो ना।
रममा ओकरे में बैठल देखइ राजा के बेटवा मानिकचन्दवा के हो ना।
रममा लूटी लेलकइ कुँअरा तिरपन पट्टी बजरिया हो ना।
रममा गरजि के बलिया बोलइ रजवा के बेटा मनिकचंदवा हो ना।
रममा जल्दी में तइयार करहु बामन लाख फौजिया हो ना।
रममा बामन लाख फौज हइ अकेले हइ कुँअर विजयी हो ना।
रममा खूब होवे लगलइ जुधवा घनघोरवा हो ना।
रममा बारह लाख फौजिया के काटि देलकइ बिरवा हो ना।
रममा अउरो के मारल गेलइ रजवा के बेटा मनिकचँदवा हो ना।
रममा मानिकचंद के सिरवा बीगलन[1] कुँअरा बामनगढ़ हो ना।
रममा गढ़वा में मची गेलइ रोअन-पीटन हो ना।
रममा हिछली जे घोड़िया पर बैठल हलइ कुँअरा हो ना।
रममा हिछली तोरे अकबलवा से मिलली लड़इया हो ना।
रममा बामन लाख बरतिया के बिदा करइ कुँअरा हो ना।
रममा बपवा अउ भइया के बिदा करके भेजइ सोरंगगढ़ हो ना।

---
१. फेंका।

रमम्। अब अकेले बच गेलइ बामनगढ़ में कुँअर विजयी हो ना।
रमम्। अउरो जे बच गेलइ मइया नियर हिछ्ली घोड़िया हो ना।
रमम्। हिछ्ली के पीठिया पर घुसि गेलन पहिल फटकवा पर हो ना।
रमम्। मउसे जे गढ़वा के फौजिया में मच गेलइ हाहाकार हो ना।
रमम्। फौजिया से खूब लड़इ बिरवा कुँअर विजयी हो ना।
रमम्। मारते काटते जुमी गेलन सत ड्योढ़िया पर हो ना।
रमम्। बामन लाख फौजिया घेर लेलक कुँअर के हो ना।
रमम्। दंतवा से खाचे लगलन घोड़िया के लगममा हो ना।
रमम्। दुनु रे हाथ से काटे लगलन रुण्ड-मुण्ड मुअवा हो ना।
रमम्। घड़ी आठ घटवा में काटि देलन फौजिया के हो ना।
रमम्। फौजिया में खोजऽ हइ बामनगढ के रजवा के हो ना।
रमम्। ससुर दमाद में होवे लगलइ लोहा के भिरनमा हो ना।
रमम्। मारल गेलइ रजवा बामन गढ़ के हो ना।
रमम्। सुनसान गढ़वा भेलइ बामन किलवा हो ना।
रमम्। गढ़वा में बची गेलइ बामनगढ़ के रनिया हो ना।
रमम्। अउरो जे बचि गेलइ मानिकचन्द के तिरियवा हो ना।
रमम्। और बचलइ कुँअरा के तिरिया रानी तिलकदेइया हो ना।
रमम्। अब तोड़े लगलन गढ़वा के बुरुजवा हो ना।
रमम्। रनिया सब रोके लगलन कुँअरा के हो ना।
रमम्। अब काहे ला तोड़वऽ बामनगढ़ के किलवा हो ना।
रमम्। गढ़वे में एके बचलऽ हमर दुइ बेटी-दमदा हो ना।
रमम्। गढ़वा के मब राज-पाट सभालहु हो ना।
रमम्। लागू जैलन मोर मइया हइ रानी घेघामन्तिया हो ना।
रमम्। आयगन भैया हमर बामन गढ़ किलवा में हो ना।
रमम्। जल्दी अब बिदइया करऽ अपन बेटी रानीतिलकी के हो ना।
रमम्। रानी तिलकदेइ गढ़वे में करऽहइ सिंगरवा हो ना।
रमम्। देवी तारे असवान से मोर गवना होवइ हो ना।
रमम्। देवी अब तोहर पुजनवा देवइ छप्पन परकार से हो ना।
रमम्। तोहर आंगिनिया खातिर मान में देवइ पठियवा हो ना।

रमा अब होवे लगलइ रानी तिलकदेइ के रोसकदिया[1] हो ना।
रमा डोलिया पर बैठते बीते लगलइ असगुनमा हो ना।
रमा चौखट पार होते मर गेलन कुँअर विजयी हो ना।
रमा तिलकदेइ होइ गेलन बेहोसवा हो ना।
रमा बामनगढ के रजवा के पुतोहिया के हइ गरभ हो ना।
रमा ओही बदला लेवे लगलन कुँअर विजयी से हो ना।
रमा काटि कूटि के कुँअरा के कुइया में डाल देलन हो ना।
रमा हिछली घोड़िया उड़ि गेलइ सारंगपुर हो ना।
रमा तिलकी चिठिया में सब लिखि बाधि देलकइ गलवा हो ना।
रमा पूछे लगलइ रजवा घोरमल सिंह हो ना।
रमा कहाँ छोड़ले कुँअर विजयी के हो ना।
रमा घोड़िया रोवे लगलइ जरवा बेजरवे हो ना।
रमा चिठिया में लिखल हलइ कुँअरा के सब बेयनमा हो ना।
रमा सोरंगगढवा में मची गेलइ रोना पीटना हो ना।
रमा हिछली के टगवा पकड़ि सोनमनियाँ रोवे लगलइ हो ना।
रमा हिछली कहऽइइ बाबा गोरखनाथ के असीसवा हो ना।
रमा सोनमा जल्दी चल के कुँअरा के जिलाही हो ना।
रमा गेलइ सोनमा रनिया तिलकदेइ के आगे हो ना।
रमा रानी तिलक देइ पति के वियोग में हइ बेहोसवा हो ना।
रमा पनिया के छींटा देके होसवा में लावइ हो ना।
रमा सोनमा जे पूछइ बामनगढ के पुतोहिया से कुँअरा क लसवा हो ना।
रमा उ कहइ कि चन्दन के चितवा में सस्करवा करली हो ना।—
रमा लँड़वा से सोनमा रनियाँ के काटि देलथइ हो ना।
रमा कुइयाँ से निकलल कुँअर के टुकडे टुकडे लसवा हो ना।
रमा ओही घड़िया कानी अगुली फाड़ऽइइ भौजी सोनमा हो ना।
रमा अब छीटे लगलइ अमरित कुँअरा के लोथवा पर हो ना।
रमा अमरित पड़ते कुँअर विजयी हो गेलन जिंदा हो ना।
रमा कुँअर विजयी देवी क करइ सुमिरनमा हो ना।
रमा रानी तिलक देइ सामी से गेलन लपटाइए हो ना।

---

[1] गौना।

रममा बड़ा भाग पयली कि मिलल गोतनी सोनमन्तिया हो ना।
रममा उनके अचबलवा से बहुरल [१] हमर सेनुरा [२] हो ना।
रममा गढ़वा पर सोनमा ढोलवा देलक्इ बजवाइए हो ना।
रममा बामनगढ के सब राज हो गेलइ कुँअर विजयी के हो ना।
रममा अब गौना कराके चलइ कुँअर विजयो हो ना।
रममा जुमियो में गेलइ अपन जब महलिया हो ना।
रममा घउँसे सोरंग गढ में जलइ घी के दीया हो ना।
रममा दुआरे पर बजे लगलइ बाजा—बधवा हो ना।
रममा सोरंग गढ के राजा के तिलक कुँअर के मिललइ हो ना।
रममा बिहँसि-बिहँसि मइया देइ असीसवा हो ना।
रममा बड़ा रे खुसी से कुँअर रहे लगलइ दुनो मइया हो ना।
रममा देवि सुमिरनमा से सब मेलइ हम्मर कुसलवा हो ना।
रममा जय-जय-जय-जय-जय देवि मइया, दुर्गा मइया हो ना।

टिप्पणी—मगही वीरकथात्मक लोकगाथाओं में 'कुँअरविजयी' का महत्वपूर्ण स्थान है। कुँअर विजयी देवी कृपायुक्त एक वीर पुरुष है। गुल्ली डंडा के खेल-खेल में ही वह बामन गढ के राजा और अपने श्वसुर के भयंकर अत्याचार की कहानी जान लेता है। फिर वह मूक कैसे रहता! बारह साल का वह किशोर, अपनी मन के खँड़ से भयंकर युद्ध ठान देता है। बामनगढ का राज्य ध्वस्त हो जाता है। बामनगढ का राजा अपने पुत्र मानिकचन्द के साथ मारा जाता है। बामनगढ पर सोरंग गढ का झंडा फहरने लगता है। कुँअर विजयी के चार भाई और बामन लाख बराती बारह साल बाद कारा गढ़ से मुक्त होकर खुले आसमान के नीचे साँस लेते हैं। रानी तिलकदेइ ऐसे देवी-शौर्य सम्पन्न पति को पाकर फूली नहीं समाती।

कुँअर विजयी का गोरखनाथ से मिलन होता है, जिससे प्रतीत होता है कि इस गाथा का सम्बन्ध नाथ सम्प्रदाय से है। देवी का प्रसाद तो उसे प्राप्त है ही। सात सौ जोगिनियाँ सदा रक्षक बनकर उसके बायें दायें घूमती हैं। इनके प्रताप से यह अकल्पित कृत्य करता है। जैसे—सहस्रों की फौज का अकेले काट डालता है, घोड़े पर उड़ जाता है। उसकी घोड़ी बिछली माँ भी है और पथ प्रदर्शक भी। उसके बताये पथ पर चल कर कुँअर विजयी सर्वत्र विजय प्राप्त करता है।

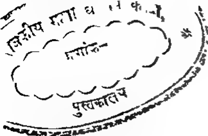
यह लोकगाथा बनिया जाति से सम्बद्ध मानी जाती है, यद्यपि अन्य जातियाँ भी इसे गाती हैं। कुँअर विजयी क्षत्रिय गुणों से संयुक्त है, प्रतीत होता है कि वह क्षत्रिय कुलोत्पन्न है। इस गाथा के गान में वर्णित भावों के अनुसार स्वरों का उतार चढ़ाव हुआ करता है। यह गाथा 'द्रुतगति लय' से गाई जाती है। लोकगाथा की प्रायः प्रत्येक पंक्ति में आरम्भ में रममा और अन्त में 'हो ना' का व्यवहार होता है। गायक द्रुतगति से इस गाथा की प्रत्येक पंक्ति गाता जाता है। इस गीत की पंक्ति-पंक्ति में उत्साह भरा है।

---

१. फिर लौटा २. सिंदुर, पति।

तृतीय अध्याय

मगही का प्रकीर्ण साहित्य



तृतीय अध्याय

मगही का प्रकीर्ण साहित्य

१. कहावत

१. अंधरा आगे रोवे, अप्पन दीदा खोवे।
    नासमझ के सामने अपना दुःख कहने से कोई लाभ नहीं है।

२. अंधड़ में बगुला के थाह।
    भारी उत्पात में कमजोर का कुछ वश नहीं चलता।

३. अंधरा के आगे मूसल सकरकन्द।
    नासमझ विवेकपूर्ण परख नहीं कर सकता।

४. अहार ला अदमी पहाड़ चढ़े हे।
    जीविका के लिये मनुष्य कठिनाई झेलता है।

५. अनकर भतार पर तीन टिकुली।
एगो कच्ची एगो पक्की एगो लाल बिंदुली।
    अन्य की वस्तु पर इतराना व्यर्थ है।

६. असकत खेती किसाने नासे, चोरे नासे खाँसी।
लिबड़ी आँख पतुरिया नासे, मिरगी नासे पासी।
    आलस्य से किसान, खाँसी से चोर, लिब-लिब आँखों से वेश्या और मिरगी[1] से पासी अपने कार्य में असफल होते हैं।

७. अनकर माल कमकौआ, छीन लेलक तो मुँह हो गेल कौआ।
    अन्य की वस्तु धारण करने पर, पीछे पछताना होता है।

८ अबरा के माउग सब के भौजाई।
    कमजोर की वस्तु पर सभी अधिकार जमाते हैं।

९. असल के बेटी, केवाल के खेती, कबहु न धोखा देती।
    कुलीन कन्या तथा केवाल मिट्टी वाले खेत सर्वदा विश्वसनीय हैं।

१०. असकताहा गिरलन कुइयाँ में, कहलन हिएँ भल हे।
    आलसी व्यक्ति विपरीत परिस्थिति को सुधारने की चेष्टा भी नहीं करता है

---

१ मानसिक रोग, जिसमें आदमी अचानक बेसुध हो जाता है।

११. अगहन बरसे दोबर, पूस[1] बरखे ड्योढा।
माघ बरसे सवाई, फागुन बरसे घर से जाई।
विभिन्न महीनों में, वर्षा होने का, उपज पर विभिन्न प्रभाव पड़ता है।

१२. अदरा गेल, तीन गेलन सन, साठी, कपास।
आर्द्रा नक्षत्र में वर्षा नहीं होने से, सन, साठीधान और कपास की खेती विनष्ट हो जाती है।

१३ अनकर चुक्का, अनकर घी, पाडे के बाप के लगल की?
पराए धन के उपयोग में मोह नहीं होता है।

१४ अरवा चाउर फँकना की, बुढ़वा भतार के ठगना की?
जवान औरत, वृद्ध पुरुष के शासन में नहीं रह सकती है।

१५ आँधर गुरू, बहिर चेला, माँगे हरे दे दे ढेला।
कार्य सम्पादन की असमर्थता, व्यवहार में गड़बड़ी पैदा करती है।

१६ आम के आम, आ गुठली के दाम।
असाधारण चीज के साथ साधारण चीज का मूल्य भी तर जाता है।

१७. आप रूप भोजन, पराये रूप सिंगार।
भोजन अपनी रुचि और शृंगार दूसरे की रुचि से होना चाहिए।

१८ आयल बहुरिया फुलल गाल, फिन बहुरिया ओही हाल।
नये में आदमी आडम्बर से रहता है, पर पुराना होने पर वह स्वाभाविक हो जाता है।

१९ आगे चलऽ, तो राह बताऽऽ।
आगे चलने वाले से पथप्रदर्शन की आशा रहती है।

२०. आम्हे धनिया, फलहे सेठ।
बिना परिश्रम के सफलता पाने की इच्छा करना व्यर्थ है।

२१ उदन्त घोड़ी, दुदन्त गाय, माघे भैंस, गोसइयाँ खाय।
बिना दाँत की घोड़ा, दो दाँतों वाली गाय, माघ में बच्चा देने वाली भैंस अपने मालिक को बरबाद कर देती है।

२२ उलट बैना पुलट बैना बाँझ घर कैसन बैना।
सम्बन्ध-व्यवहार दोनों ओर से चलता है।

२३. ए घड़ा गरल गरई हे।
यह छिपा धनी है।

२४ ऊँच घड़ेरी, खोखर बाँस।
आडम्बर के भीतर खोखलापन है।

---

१ पोष। २ भगवान्

२५. एक भर गाजी मियाँ, दु भर दफाली।
एक, दूसरे से बढ़ कर है।

२६. एक बनिया से कहुँ बजार बसे है।
एक व्यक्ति से सामाजिक संगठन नहीं व्यक्त होता।

२७. एगो हर्रे समूचे गाँव खोंखी ।
कष्ट अधिक और उपचार का उपादन कम।

२८. एगो जोरू के मरद लड़ुआ, दुगो जोरू के मरद भड़ुआ।
एक पत्नी का पुरुष आदर पाता है, और दो पत्नी का पुरुष अनादर।

२९. ऐलो न गेलो, फलनमा के माउग कहैलो।
बिना कुछ किये बदनाम होना।

३०. औरत के पेट कुम्हार के आवा है,
जेकरा से कभी गोर कभी करिया लड़का निकसे है।
जिस प्रकार एक ही आवा से कई रंग के बर्तन निकलते हैं, उसी प्रकार एक ही स्त्री के गर्भ से पैदा होने वाले बच्चों के विभिन्न रंग होते हैं।

३१. कदुआ पर सितुआ चोखा।
अपने से दुर्बल पर सब रोब गाँठते हैं।

३२ कहाँ राजा भोज, कहाँ गाँगु तेली।
बड़े की तुलना छोटे के साथ नहीं हो सकती।

३३. करिया ब्राह्मण, गोर चमार, इनका पर न करे इतबार।
ब्राह्मण का काला होना और चमार का गोरा होना उनके वर्णसंकर होने का परिचायक है, अतएव वे अविश्वसनीय हैं।

३४. कर, केतारी, निबुआ, बिन चँपले नहिं रस दे।
बिना दबाव डाले, न मालगुजारी वसूल हो सकती है, और न ऊख और नींबू से रस ही निकल सकता है।

३५. कमाय लँगोटी वाला, खाय टोपी वाला।
परिश्रमी कमाता है, परन्तु चालाक व्यक्ति उपभोग करता है।

३६. कायथ के लावा, कोयरी खाये ?
शारीरिक श्रम के सामने भी बुद्धि की हार नहीं होती।

३७. काना में कान में जाड़ा, हथिया मे हाथ में जाड़ा,
आउ चित्रा में चित्त में जाड़ा।
उत्तरा नक्षत्र में कान में जाड़ा लगता है हस्त नक्षत्र में हाथ में और चित्रा नक्षत्र में सारे शरीर में जाड़ा लगता है। (वर्षा के अन्त में धीरे-धीरे सर्दी के बढ़ने का क्रम)

३८ कान आँख में काजर।
 कुरुपता में शृंगार अशोभन होता है।

३९ केकर खेती, केकर गाय, कौन पापी हाँके जाये।
 दो आदमी के झगड़े के बीच में पड़ना अच्छा नहीं है।

४० केतनो गोआर पिंगिल पढे, तो तीन बात से हीन।
उठना, बठना अउ बोलना, लेलन विधाता छीन।
 ग्वाला कितना भी पढ़ले, उठने, बैठने और बोलने का ढंग नहीं सीख सकता।

४१ केतनो गोवार पिंगल पढे, तो एक बात जंगल के कहे।
 ग्वाले कितना भी पढ़ लें, मोटी बातें ही कह सकते हैं।

४२ केतनो बाभन सीधा, तो हँसुआ ऐसन टेढा।
 सीधा से-सीधा बाभन भी स्वभाव से टेढ़ा होता है।

४३ केतनो अहीर पढे पुरान, लोरिक छाड़ न गावे गान।
 अहीर पढ़-लिख कर भी मूर्ख ही रह जाता है।

४४ कैल के रुपैया गेल है, साँवर के रुपेया धैल है।
 सफेद पशु का रुपया डूब सकता है, परन्तु काले का नहीं।
 (पशु का मूल्यांकन है।)

४५ कोढ़िया डेरावे थूक से।
 असमर्थ निरर्थक युक्तियों से रोब जमाना चाहता है।

४६ कोयरी कुरमी जन का ? मरुआ मकई अन्न का ?
 जातियों में कोयरी कुर्मी और अन्नों में मड़ुआ मकई-महत्त्वहीन हैं।

४७ कौड़ी-कौड़ी साव बटोरे, राम बटोरे कुप्पा।
 बनिया पैसा पैसा संग्रह करता है, पर भाग्य से अकस्मात् ढेर संग्रह हो जाता है।

४८ खस्सी के जान जाये, खवइया के सवादे न।
 दूसरे को कष्ट पहुँचा कर भी, असंतोषी संतुष्ट नहीं होते।

४९ खाये ला गुड़ न अउर नेहाय के तड़के।
 अगले कदम का बिना ध्यान रक्खे, पिछला कदम उठाना।

५० खाये चना तो रहे बना।
 चना से शारीरिक पुष्टता प्राप्त होती है।

५१ खाये गहूँ न तो रहे एहूँ।
 वाञ्छित वस्तु के अतिरिक्त अन्य वस्तु की प्राप्ति के प्रति उदासीनता अपेक्षित है।

५२. खा के पसरे श्रउ मार के सँसरे।
खाकर आराम करना चाहिए और मार कर भाग जाना चाहिए।

५३. खिचड़ी के चार इयार, घी, पापर, दही अचार।
घी, पापड़, दही और अचार के साथ खिचड़ी का स्वाद बढ़ जाता है।

५४. खेवा भी दऽ आ बहल भी जा।
मूल्य देकर भी वस्तु नहीं पाना, चिन्ताजनक है।

५५. खेत खाय गदहा, मार खाय जोलहा।
अपराध कोई करे, सजा कोई पावे।

५६. गाँव के बेटी बड़ ठगनी।
परिचित स्थान में व्यक्ति जानकारी के कारण बहुत चालाक होता है।

५७. गोदी में लड़का, नगर में ढिंढोरा।
सामने की चीज पर नजर नहीं पड़ने के कारण हो-हल्ला करना।

५८. गोवार साठ बरिस में बालिग होवऽ हे।
ग्वाले में परिपक्वता बहुत विलम्ब से आती है।

५९. घर के मुरगी दाल बरोबर।
अपनी चीज का कोई मूल्य नहीं।

६०. घर घोड़ा न, खास मोल।
अकारण मोल-तोल करना।

६१. घर के योगी, जोग न, बाहर के जोगी सिद्ध।
व्यक्ति की पूछ घर में नहीं होती, बाहर होती है।

६२. चंदरमा पर धूरी फेंके से, धुमैला न होवे हे।
श्रेष्ठ को बदनाम करने की चेष्टा विफल होती है।

६३. चले न जाने, अँगनमें टेढ़।
अपनी गलती न समझ कर, दूसरों की गलती निकालना मूर्खता है।

६४. चट मरवा, पट बिआह।
किसी काम का चटपट हो जाना।

६५. चमइन के आगे कहूँ कोख छिपावल जाहे।
जानकार के आगे भेद छिपाना कठिन है।

६६. चाल चले सदा कि निबहे बाप-दादा।
सादगी का जीवन चिरस्थायी होता है।

६७ चाकरी चकरदम, कमर कसे हरदम।
न रहे के हम, न जाये के गम।
नौकरी में हमेशा सावधान रहना चाहिए। इसके रहने पर न खुश होना चाहिए और न जाने पर दुखित।

६८ चार गोड़ा बाधल जाये दु गोड़ा न।
जानवर को वश में करना सहज है, आदमी को नहीं।

६९ चिन्ता से चतुराइ घटे, दुख से घटे शरीर।
पाप से लछमी घटे, कि कहलन दास कबीर।
चिन्ता से चतुराई, दुख से शरीर और पाप से लक्ष्मी का ह्रास होता है।

७० चैत के बरखा आउ चमार के मट्ठा कोई न पूछे।
चैत की वर्षा और चमार के घर के मट्ठे की पूछ नहीं होती।

७१ चोरी आ ऊपर सीनाजोरी।
गलती करके रोब जमाना।

७२ छाजा, बाजा, केस, इ तीनों बंगाला देस।
बंगाल के छज्जा, बाजा और केश की अपनी विशेषताएँ होती हैं।

७३ छुछुन्दर के सिर में चमेली के तेल।
कुपात्र के हाथ में अच्छी वस्तु अशोभन होती है।

७४ जनमते लइका, दुकते बहुरिया।
जे लत लगावे, से लगे।
आरंभ से पड़ी आदत स्थायी होती है।

७५ जतरा[1] पर भेटतो कान, बड भाग होयतो, तो बचतो परान
अपशकुन होने पर, दुर्घटना की पूरी सम्भावना रहती है।

७६ जादे नीबू मल्ले[2] से तीता हो जाहे।
सीमा का अतिक्रमण हानिकारक है।

७७ जाड़ा में चाहे रुइए, चाहे दुइए।
रुई या शरीर का शरीर से स्पर्श ही जाड़ा को रोक सकता है।

७८ जे घर पड़े कर्कस नारी, से घर सब धन जाये।
कर्कशा नारी के कारण घर बर्बाद हो जाता है।

७९ जे नगरी बइरी[3] बसे, से तेयाग[4] करि देहु।
बैरी से दूर रहना चाहिए।

८० जादे जोगी, मठ उजार।
आवश्यकता से अधिक व्यक्तियों से काम बिगड़ता है।

---

१ यात्रा। २ मलना। ३ शत्रु। ४ त्याग।

८१. जेकर घर में मरदा ढेर, तेकर घर मे मरदा उपास।
जेकर घर में मेहरी ढेर, तेकर घर में मरदा उपास ।
आवश्यकता से अधिक व्यक्ति रहने से कार्य म बाधा पहुँचती है।

८२. जे ला कैली चेलिया भतार, से बहलौनो लगले रहल ।
भरसक कोशिश करने पर भी बचत नहीं हो सकी।

८३. जेने सुरुज उगे हे, तेन्हो आदमी गोड़ लागे हे ।
उदीयमान की ओर सब अपनी श्रद्धा दिखलाते हैं।

८४. जे न देखे बाघ, से देखे बिलाई ।
जे न देखे ठग, से देखे कसाई ।
जे न देखे लड़की, से देखे लड़की के भाई।
बिलाई से बाघ, कसाई से ठग और लड़की के भाई से लड़की का अंदाज किया जा सकता है।

८५. जेकर मन पाई, तेकर अंगना जाई ।
मन देख कर ही दूसरे के यहाँ जाना चाहिए ।

८६. जे करे बाभन के भल, से परे देवी के वल ।
बाभन का भला करने वाला भी बरबाद होने से बच नहीं सकता ।

८७. जे दिन भादो पछिया चले, ते दिन माघ पाला पड़े ।
जितने दिन भादों में पछिया हवा चलती है, उतने दिन माघ में पाला पड़ता है।

८८. जेकर बाते के न ठेकान, ओकर बाप के कौन ठेकान ।
बात के जो पक्के नहीं होते हैं, वे वास्तव में अकुलीन होते हैं ।

८९. जैसन माय ओयसन धीआ, पोछपाछ नतिनियों के दिया।
गुण-वश परम्परा में चलता है ।

९०. जैसन खाये अन्न, ओयसन हो जाये मन ।
भोजन पर मन की दशा निर्भर करती है ।

९१. जोड़े राइ रत्ती, तब होवे सम्पत्ति ।
तिल-तिल कर सम्पत्ति जुटती है ।

९२. जेऊ तरहथी में जनमें वार[1]
तइयो न करे, गोआर के एतवार।
तलहथी पर बाल का उगना सम्भव है, परन्तु ग्वाले का विश्वसनीय होना असम्भव है।

---

१. बाल

९३ जे पुरवा पुरवइया पावे, सुखल नदी में नाव दौड़ावे।
पुरवा नक्षत्र में पुरवइया हवा चलने से खूब वर्षा होती है।

९४. जोलहा जाने जौ काटे के हाल ?
अनाड़ी किसी वस्तु के मर्म को क्या जानेगा।

९५. तातल खाये, भीतर घर सोवे,
लेकर रोग घने-वन भागे।
गर्म भोजन और घर के भीतर सोने से रोग की सम्भावना जाती रहती है।

९६ तीन कनौजिया, तेरह चूल्हा।
मतभेद को पराकाष्ठा तक पहुँचाना।

९७. तीन कोस पर पानी बदले, सात कोस पर बानी।
पानी का गुण और बोली का रूप एक जगह से दूसरी जगह में बदलता जाता है।

९८ तुरुक, तेली, तार इ तीनों तिहार।
बिहार में तुर्क, तेली और ताड़ के पेड़ों का बाहुल्य है।

९९ तेली के तेल जरे, मसलची के मन फटे।
जाये चीज किसी की, कष्ट हो किसी को।

१०० थकल पैराकू फेन चाहे है।
हारा थका व्यक्ति तुच्छ से तुच्छ वस्तु का सहारा लेता है।

१०१ दमडी के हाँडी जाहे, आ कुत्ता के जात पहचानल जाहे।
छोटी से छोटी बात में ही क्षुद्र आदमी के स्वभाव की परीक्षा हो जाती है।

१०२. दरबे में सरबे बसत।
धन से सब कुछ संभव है।

१०३ दादा कहे से बनिया गुड देहे ?
खुशामद से कहीं वस्तु प्राप्त होती है?

१०४. दु कहार के डोली, राड के बोली,
चित्रा के घाम दैवो से न सहाय।
दो कहार की डोली, बदमाश की बोली, और चित्रा नक्षत्र की धूप असह्य होती है।

१०५ दुसमन दाना भल, दोस्त नादान न भल।
नासमझ दोस्त से समझदार दुश्मन अच्छा है।

[illegible] दुधारु गाय के दू लातो भल।
लाभप्रद व्यक्ति की चोट सही जा सकती है।

१०७ देव न पितर, पहले चमरे भीतर ?
स्वार्थी व्यक्ति दूसरे के अधिकार की अवहेलना करता है ।

१०८. देहे-देहे नाता, अउ खेते-खेते पट्टा ।
अपना अपना आकर्षण और अपनी अपनी विशेषताएँ !

१०९. देखे में साधु बाबा, खेलावे पाँचों पीर ।
देखने में सीधा, किन्तु कर्म में पेचीला ।

११०. धान दुद्धा, रब्बी बुड्ढा ।
धान कुछ कच्चा ही काटना चाहिए और रब्बी पकने पर ।

१११. धान पान नित असनान ।
धान और पान, पानी में डूब कर ही ठीक रहते हैं ।

११२. धान सुक्खे हे, कउआ टरटरा हे ।
बकवास से कोई काम नहीं रुकता है ।

११३. धुने-धाने तोड़े तान, ओकर रक्खे दुनियाँ मान ।
बाह्य आडम्बर से दुनिया प्रभावित होती हैं ।

११४. न राधे के नौ मन घीउ होयत, न राधे नचतन ।
असम्भव इच्छा की पूर्ति कभी नहीं हो सकती ।

११५. नहीरा जो बेटी, ससुरा जो जंगरा चलाय बेटी सगरो खो ।
परिश्रम से ही जीविका उपलब्ध होती है ।

११६ नाधा [1]तो आधा ।
कार्यारम्भ होने पर, उसे आधा समाप्त समझना चाहिए ।

११७. निरिख[2] अउ मउअत के कौन ठेकान ।
बाजार दर और मृत्यु दोनों अनिश्चित हैं ।

११८. नौ के लकड़ी, नब्बे खरच ।
महत्वहीन वस्तु पर अधिक खर्च करना ।

११९. पहला पहर सब्भे जागे, दूसरा पहर भोगी,
तीसरा पहर चोर जागे, चउथा पहर जोगी ।
पात्रानुकूल समय का भिन्न-भिन्न उपयोग होता है ।

१२०. पढ़ऽपूत चण्डिका, जेमें चढ़ो हण्डिका ।
ऐसी शिक्षा प्राप्त करो, जिससे जीविकोपार्जन हो सके ।

१२१, पाँड़े के गाय न हल, वाय हल ।
उपयोगी वस्तु झंझट का कारण हो जाती है ।

---

१. आरंभ किया । २ बाजार दर ।

१२२ पाप के पचित धन।

धन से पाप ढँका जा सकता है।

१२३. पुरुष अउ पहार दूर से लउके हे।

श्रेष्ठता का आभास दूर से ही मिलता है।

१२४ पूस के दिन फूस नियन,
माघ के दिन बाघ नियन।

पूस का दिन छोटा होने के कारण नहीं ठहरता है, और माघ का दिन ठढापन के कारण काटने दौड़ता है।

१२५. पूस पुनर्बस बूनऽ धान,
असलेसा मघा कादो सान।

पुख्य और पुनर्वसु नक्षत्र में धान का बीज छींटना चाहिए, और अश्लेषा तथा मघा नक्षत्र में खेत को कदोआ करके धान का पौधा रोपना चाहिए।

१२६ पूरबा रोपे पूरा किसान, आधा खखरी आधा धान।

भरपूर होने के कारण लापरवाह किसान ही पुर्वानक्षत्र में धान रोपता है।

१२७ पेट करे कुहुर-कुहुर जूड़ा करे महमह।

भीतर का खोखलापन, बाहर का दिखावा।

१२८. पेट भेल भारी तो कौन करे बेगारी।

तृप्ति हो जाने पर परिश्रम से अरुचि हो जाती है।

१२९. बंस बढ़े हे तो रोग बढ़े हे।

अधिक व्यक्ति वाले परिवार में झंझट लगा ही रहता है।

१३० बनिया रीझे, तो हँस दे।

कंजूस बनिया खुश होने पर भी कुछ नहीं दे सकता, केवल हँस कर टाल देगा।

१३१ बरिया हारे तो हूरे, जीते तो थूरे।

बलवान आदमी हारने पर भी कष्ट देता है, जीतने पर तो देगा ही।

१३२. बनमा में बाघ छिपे हे।

जैसा व्यक्तित्व, वैसा आचरण।

१३३. बाँझ का जाने, परसौती के पीड़ा।

बिना अनुभव के कुछ समझना सम्भव नहीं है।

१३४. बापे पूत परापत घोड़ा, कुछ बस में थोड़ा थोड़ा।

परम्पराओं का प्रभाव किसी न किसी रूप में अवश्य पड़ता है।

१३५. बाघ चीन्हे हे कहूँ बराह्मन के लइका?

स्वार्थी व्यक्ति को औचित्य का ध्यान नहीं होता है।

१३६. बाभन, कुत्ता, हाथी, अपने जात के घाती।
बाभन, कुत्ता और हाथी को अपनी जाति के लोगों से वैर होता है।

१३७. बाला सड़े तो मोती भरे, रेहड़ा सड़े तो का न करे।
बालू सड़कर उपजाऊ होता है। रेह (खाद मिली मिट्टी) सड़ कर बहुत उपजाऊ होती है।

१३८. बाबा मरिहें, तो बैल बिकैहें।
किसी बात को, दूसरी बात पर टालना।

१३९. बिन बोलाये मत जाहु भवानी।
न मिलतो तोरा पीढ़ा-पानी।
बिना बुलाये कहीं जाने से मनुष्य अनादृत होता है।

१४०. बिच्छा के मंत्रे न जाने आउ साँप के बियल में हाथ डाले।
समर्थ से बाहर का काम करना।

१४१. बिरले कान होयतन भलमानुस।
काने लोग स्वभावतः टेढ़े होते हैं।

१४२. बिन लस्सा के थमाऊँ, बिना पर के चढ़ाऊँ,
तब बाभन कहलाऊँ।
बाभनों को टेढ़े और अनोखे कामों को करने का ढोंग होता है।

१४३. बिना रोले लड़को के न दूध मिले।
चुप रहने वाला व्यक्ति कुछ नहीं पाता है।

१४४. बिना न्योता चीज्ञे।[1]
बिना निमंत्रण के किसी कार्य में भाग लेना।

१४५. बुरबक के चार लच्छन हे :—
घर घोड़ा पैदल चले, अप्पन माल अनका ही धरे।
अनकर लड़ाई अपने लड़े, अप्पन बात अनका से कहे।
मूर्ख के चार विशेष लक्षण हैं :—घर पर सवारी होने पर भी पैदल चले, अपनी सम्पत्ति पराये घर रखे, दूसरे की लड़ाई स्वयं लड़े और अपनी बात दूसरों से कहे।

१४६. बूढ़ सुग्गा कहूँ पोस माने हे ?
प्रभाव डालने के लिए वस्तु या व्यक्ति का कच्चापन अपेक्षित है।

१४७. बेंग के सरदी न, आ बाभन के पंचैती न !
बेंग सरदी से और बाभन पंचैती से परे हैं।

---

१. ज्योंनार करने को बुलाहट।

१४८. बेच खइहऽ मीरा[१], मगर मँगनी मत बटिहऽ।
मँगनी देने से वस्तु की दुर्गति होती है।

१४९. बेलदार के बेटी न नैहरे सुख, न ससुरे सुख।
गरीब को कहीं सुख नहीं है।

१५०. बेटा आ पसेरी घुमले मान पावे हे्।
चलन से ही वस्तु के गुण का मूल्यांकन होता है।

१५१. बेटी चमइन के नाम रजरनिया।
तुच्छता को ढँकने के लिये नाम का आडम्बर।

१५२ बैठल से बेगारी भल।
अकर्मण्यता से बिना पारिश्रमिक के कर्म करना अच्छा है।

१५३. बैठल बनिया का करे, इ कोठी के धान उ कोठी करे।
बेकार आदमी निरर्थक काम करता है।

१५४ भर घर देवर, भतार से ठट्ठा।
स्वाभाविक व्यवहार को छोड़ कर, अस्वाभाविक व्यवहार करना।

१५५ भइयन छओ भकार से सदा रहऽ होसियार।
भाई, भतीजा, भागीना, भाट, भॉड, भूमिहार।
'भ' से आरंभ होने वाले, इन छः व्यक्तियों से होशियार रहना चाहिए। भाई, भतीजा और भान्जा से हिस्सेदारी का भाट और भाँड से झूठी प्रशंसा पाकर मतिभ्रम का और भूमिहार से संघर्ष का डर होता है।

१५६. मँगले माड़ न, डँटले घीउ।
माँगने पर माड़ नहीं मिलता, पर डाँटने पर घी भी मिल जाता है।

१५७ मइया के जीऊ गइया ऐसन, पूता के जीऊ कसइया ऐसन।
माता प्रकृति से स्नेहमयी होती है, परन्तु पुत्र प्रकृति से कठोर।

१५८ मउगा मरदा करनी जोय, ते घर खैरियत कभी न होय।
पौरुषहीन पुरुष और लालची स्त्री के रहने से घर की खैरियत नहीं होती है।

१५९. मलिक[१], माहुरी[२] अउर मल्लाह, इ तीनों से न करे सलाह।
मलिक, माहुरी और मल्लाह से सलाह करना ठीक नहीं है।

१६०. मारल चोर, उपासल पहुना,
फिर न ऐहें, हम्मर अँगना।
शासित व्यक्ति के लौटने की सम्भावना नहीं रहती।

---

१. मालिक।

१ गवैया। २ जाति विशेष, जिसका प्रधान पेशा व्यापार है।

१६१. माघ के बरसा, भाई के हिस्सा अजर हे।
माघ की वर्षा और भाई का हिस्सा निश्चित है।

१६२. माय बेटी गितहारिन आ बाप बेटा बराती।
अपने ही दायरे में सीमित रहना।

१६३. माल महराज के मिर्जा खेले होली।
दूसरे के ऐश्वर्य पर फुटानी करना।

१६४. माघ के उक्खम, जेठ के जाड़ा, पहले भर गेल नदी नाला।
सावन कुँआ धोवे धोबी, कहे व्यास हम होयब जोगी।
माघ में गर्मी, जेठ में जाड़ा, वर्षा ऋतु के आरम्भ में अधिक वर्षा और सावन में पानी की कमी के कारण धोबी का कुँआ के पानी से कपड़ा धोना ऐसी भयकर स्थिति का परिचायक है कि निराश होकर ससारी को जोगी बन जाना चाहिए।

१६५. मुरगी मिल्लत कहुँ कायथ पहलवान।
मुर्गियों में मिल्लत और कायस्थ म पहलवानी दुर्लभ है।

१६६. मुसहर भगत न, राजपूत के धनुही।
टूटे तो टूटे, नेवे न कबही।
राजपूत का धनुष टूट सकता है, लेकिन झुक नहीं सकता है, और मुसहर किसी भी परिस्थिति में मासाहार नहीं छोड़ सकता है।

१६७. मूर लौटे बनिया नाचे।
मूलधन पाकर बनिया खुश होता है।

१६८. मोरवा चारों तरफ से नाच आवे हे,
अप्पन गोड़वा देख के मुरझा जाहे।
व्यक्तिगत हीनता की अनुभूति प्रफुल्लता नष्ट करती है।

१६९. रटन्त विद्या अउ लपटन्त जोर।
विद्या रटने से और ताकत कुश्ती लड़ने से आती है।

१७०. रहे बाँस न बाजे बँसुरी।
झंझट के मूल की समाप्ति से चिंता से मुक्ति हो जाती है।

१७१. रट[1] के खाये बैलवा, बैठ के खाय तुरंगवा।
सीधा व्यक्ति (बैल) परिश्रम की कमाई खाता है, परन्तु चालाक व्यक्ति (घोड़ा) बैठ कर खाता है।

१७२. राँड़ के बेटा साँढ़ ऐसन।
विधवा स्त्री का लड़का प्यार से बहक जाता है।

---

१. परिश्रम करके।

१७३. राजा के एक बेटा, आउ परजा के द् ।
प्रजा की भलाई राजा की भलाई की अपेक्षा अधिक गौरवपूर्ण है ।

१७४. राइ आदमी लतिऐले भल ।
बुरा व्यक्ति कठोर व्यवहार से नियन्त्रित होता है ।

१७५. लड़िका मालिक बूढ़ देवान, ममला होय सांझ विहान ।
किसी पद पर अनधिकारी व्यक्ति के होने से काम बिगड़ता है ।

१७६. लेम सेकर देम नहीं, देम सेकर मोछे के ताव से लेम ।
दूसरे के ऋण को चुकाना नहीं और अपना जबर्दस्ती वसूल करना ।

१७७. सदा देवाली सन्त घर, जो गुर गेहुम होय ।
समृद्धि रहने पर हमेशा उत्सव मनाया जा सकता है ।

१७८ सहर सिखावे कोतवाली ।
मनुष्य अनुभवसे सीखता है ।

१७९ सड़लो तेली, तो काड़ा में अधेली ।
गरीब से गरीब तेली के पास कुछ न कुछ धन अवश्य होता है ।

१८०. सब जात भगवान के, तीन जात वेपीर ।
दाव पड़े चूके नहीं, बाभन, बनिया अहीर ।
ऐसे तो सभी जाति भगवान के हैं, पर तीन जातियाँ बेदर्द होती हैं, जो मौके पर छोड़ने वाली नहीं । ये हैं—बाभन, बनिया और अहीर ।

१८१. सांझ के बादल आउ पहुना बिना बरसले न जाहे ।
शाम की आई बदली और शाम का आया मेहमान टलने को नहीं ।

१८२. सात हाथ हाँथी से डरे, चौदह हाथ मतवाला ।
अनगिनती हाथ तेकरा से टरे, जेकर जात फेटवाला ।
मतवाला व्यक्ति हाथी से भी खतरनाक है, और उससे भी खतरनाक है, धर्मांतर ।

१८३. साधु आउ नदी के चाल जानल बड़ मोसकिल है ।
साधु और नदी की गति समझना कठिन है ।

१८४. साठा तब पाठा ।
पुरुष साठ वर्ष में पुष्ट होता है ।

सावन मास बहे पुरवइया, बेचऽ बरदा कीनऽ गइया ।
सावन में पुरवइया हवा बहने से फसल खराब हो जाती है ।

सिंह गमन, सुपुरुष वचन, केदली फले एक बार ।
[illegible] तेल, हमीर हठ, चढ़ेऽ न दूजो बार ।
सिंह की चाल, सुपुरुष की बात नहीं बदलती । केला एक ही बार फलता

है। स्त्री का हठ, तेल का चढ़ना (शादी और हमीर का हठ अटल रहता है।

१८७ सुआ न सुतारी, ठेगा के व्यापारी।
विना माल के व्यापार का ढोंग।

१८८ सौ चोट सोनार के, एक चोट लोहार के।
सौ बात का एक मुँहतोड़ जवाब देना।

१८९ सौ बरस अड़ल सौ बरस खड़ल
सौ बरस पड़ल, तो जौं भर सड़ल।
सखुआ लकड़ी की विशेषता।

१९० हरियर खेती, गब्भिन गाय।
जे न देखे, तेकर जाय।
अपनी मूल्यवान वस्तु की रक्षा न करने से, उससे हाथ धोना पड़ता है।

१९१ हथिया बरसे, चित मँडराय, घर बैठल किसान डड़िआय।
हस्ति नक्षत्र की वर्षा और चित्रा नक्षत्र की धूपछाँही उपज के लिये लाभदायक है।

१९२ हड़बड़ी के बिआह, कनपट्टी मे सेंनुर।
जल्दी का काम बुरा होता है।

१९३ हाथ सुक्खल, परहमन भुक्खल।
पूरा खाकर भी तृप्त न होना।

१९४ हाथ अछत मोछ टेढ।
अकर्मण्यता के कारण काम को बिगड़ने देना।

१९५ हिसके हिसके गोइयाँ बियाये, गोइयाँ के बचवा मरल जाये।
दूसरे की नकल करने वाला व्यक्ति कभी सफल नहीं हो सकता है।

१९६ हिल्ले रोजी बहाने मौअत।
किसी के निमित्त से नौकरी मिलती है, और मौत किसी भी बहाने आ सकती है।

१९७ हे घरनी, घर सोभे हे।
न घरनी घर रोवे हे।
स्त्री से ही घर की शोभा होती है। उसके बिना घर सूना लगता है।

१९८ होती के धोती, न तो फेंटा मे लंगोटी।
समृद्धि में ठाठ बाट, नहीं तो गरीबी में गुजारा।

———

२. मुहावरे†

१. अगरासन काढ़ना।
२. अलहलह करना।
३. अरदासिया लगाना।
४. अरमेरा करना।
५. उकसी बिरखी होना।
६. उतान होके चलना।
७. उलट के धारा बाँधना।
८. उसकुन काढ़ना।
९. एक से दू करना।
१०. ओरहन देना।
११. औरी-बौरी करना।
१२. कट्टीस करना।
१३. कठ दलेली करना।
१४. करहा धुराना।
१५. करेजा खिखोरना।
१६. करेजा पर कोदो दरना।
१७. करेजा पर दाल दरना।
१८. करेजा फक-फक करना।
१९. करेजा मसकना।
२०. करेजा हकर-हकर करना।
२१. कान न देना।
२२. कुत्ता काटना।
२३. कोठी में मूड़ी छिपाना।
२४. कौआ कौंठी करना।
२५. खटवास पटवास लेना।
२६. खिस्सा भरना।
२७. खोपसन देना।
२८. गंगन होना।
२९. गंजोटा होना।
३०. गाल से देवाल जीतना।
३१. गाहे बिगाहे आना।
३२. गीत उठाना।
३३. गोड़ धो के पीना।
३४. घमलौर लगाना।
३५. घोघना फुलना।
३६. चन्दर लगना।
३७. चौका चनन करना।
३८. चौका-पुरना।

---

† मुहावरों के क्रमिक अर्थ निम्नांकित हैं :—

१. पर्व त्योहार में देवतांश निकालना। २. भ्रांति करना। ३. प्रार्थना करना। ४. अवकाश में किसी काम में लग कर मन लगाना। ५. व्याकुल होना। ६. घमंड से चलना। ७. बात फेरना। ८. छेकना। ९. दाल दरना। १०. उलाहना देना। ११. कार्य बिगाड़ देना। १२. मित्रता तोड़ लेना। १३. हठ से बहस करना। १४. करहा में पानी चलाना। १५. हृदय कचोटना। १६–१७. हृदय व्यथित करना। १८–२०. कमजोरी अनुभव करना। १९. दुःख होना। २१. ध्यान न देना। २२. खतरा या मूर्खता के काम में पड़ना। २३. मुँह-चोर होना। २४. तंग करना। २५. क्रोध से निष्क्रिय होकर बैठ जाना। २६. समाप्त होना। २७. उलाहना देना। २८. दुर्लभ होना। २९. जमकना। ३०. बात बना कर सफलता पाना। ३१. कभी-कभी आना। ३२. गीत आरंभ करना। ३३. बहुत आदर करना। ३४. भीड़-धक्का लगाना। ३५. रूठना। ३६. झाँई आना। ३७. लीप-पोत के साफ करना। ३८. बच्चों का पाखाना करना (व्यग्य में कथित)।

३६ चौरहा देना।
४० छ पाँच में पड़ना।
४१ छान पगहा तोड़ाना।
४२ जमात के करामात होना।
४३ जट्टा काढना।
४४ झपसी लगाना।
४५ झिक्का तोरी करना।
४६ झोंका देना।
४७ टर्री होना।
४८ टाट बैठाना।
४९ डाढ़ी लगाना।
५० टुकुर टुकुर देखना।
५१ टुसुर टुसुर बोलना।
५२ ठनगन करना।
५३ ठौर लगना।
५४ ढीढा फूलना।
५५ तरिकार करना।
५६ तिकिलड बिकिलड होना।
५७ थेथर दलेली करना।
५८ दाँत निपोरना।
५९ दीदा काढना।
६० दीदा का पानी ढरकना।
६१ नजर तुलाना।
६२ न्योती चरना।
६३ निमक के सरियत रखना।
६४ नुकुस निकालना।
६५ नून तेल लगाना।
६६ नाड़ी छोड़ना।
६७ नानी मरना।
६८ पहार करना।
६९ पेट डेगाना।
७० फटफुट होना।
७१ फीफीहा होना।
७२ फूल झरना।
७३ फूल के बारा होना।
७४ बस म लेड़ा लगाना।
७५ बनर घुड़की दिखाना।
७६ बह भर देना।
७७ बार टेढ़ा न होना।
७८ बाले बाल उठा लेना।
७९ बाह न होना।
८० बिख होना।

३६ खेत को अनाज पर लगाना। ४० दुविधा में पड़ना। ४१ बधन तोड़ना। ४२ सगठन में शक्ति होना। ४३ वश मे करना। ४४ निरन्तर वर्षा होना। ४५ हाथा पाई करना। ४६ चक्की में पिसने के लिये अनाज देना। ४७ बात मथना, जिद करना। ४८ बिरादरी में पचायत बैठाना। ४९ रोकना। ५० एकटक देखना। ५१ *जल्दी जल्दी बोलना।* ५२ *काम न करने की प्रवृत्ति दिखाना।* ५३ चौका लगाना। ५४ गर्म रहना। ५५ पूर्ण समाप्त करना। ५६ तीन तेरह होना। ५७ हठ से बहस करना। ५८ असमर्थता दिखाना खुशामद करना। ५९ *आँख काढ देना।* ६० *शील खोना।* ६१ *नजर टिकाना।* ६२ प्रथम बार उपभोग करना, वर्षा पड़ने पर जो प्रथम घास उगती है, उसे चरना। ६३ कृतज्ञ होना। ६४ ऐब निकालना। ६५ बढ़ा चढ़ा कर कहना। ६६, मृत्यु होना। ६७ काम से भागना। ६८ अर्घ्य चढ़ाना। ६९ भूखा रहना। ७० बटवारा होना। ७१ परेशान होना, छटपटाना। ७२ अधिक प्रसन्न होना। ७३ रुचिकर बात करना। ७४ वश को बदनाम करना। ७५ डराना। ७६ तृप्त कर देना। ७७ कुछ न बिगड़ना। ७८ जरा जरा करके उठा लेना। ७९ वश न चलना। ८० अच्छी चीज का हानिकारक होना।

८१. विह्वल होना।
८२. बुत्ता देना।
८३. बोकनारी के काम करना।
८४. बोहनी पट्टा होना।
८५. भाग्य चरचराना।
८६. मटकी मारना।
८७. मध करना।
८८. माथा पर पगड़ी बांधना।
८९. मिट्टा माहुर होना।
९० मुँह ताकना।
९१. मुँह में लेवा लगाना।
९२. मोती झरना।
९३. रेंहचौच करना।
९४. रट के सट जाना।
९५. रस्सी छूना।
९६. राड़ी वैटवारी करना।
९७. रूसल-फोहागल होना।
९८. रेका-चोकी करना।
९९. लंगट छाव लाना।
१००. लंगट-चौकारी करना।
१०१. लहालोट होना।
१०२. लाग-फाँस होना।
१०३. लार-पोआर होना।
१०४. लाल बनल रहना।
१०५. लावा-फरही होना।
१०६. लावा-धक्का न रखना।
१०७. लास-फूस न रखना।
१०८. लुस फुसायल चलना।
१०९. लू-लू, छू-छू होना।
११० लोट-पोट देना।
१११. संझौती दिखाना।
११२. संस-बरक्कत न मिलना।
११३. सखरी करना।
११४. समांग में घुन लगना।
११५. साँझ विहान करना।
११६. सिहरी फटना।
११७. सिहो-सिहो करना।
११८ हहास करना।
११९. हाँफे-फाँफे आना।
१२०. हाड़ में हलदी लगना।
१२१. हाथ-चकड़ियाना।
१२२. हियाव होना।
१२३. हीक भरना।
१२४. हुक्का पानी बन्द करना।
१२५. हेठार में पड़ना।



८१. अपमान होना। ८२. ठगना, धोखा करना। ८३. नीच कर्म करना। ८४. सिरी या श्रीगणेश होना। ८५. अकस्मात् सौभाग्य प्राप्त होना। ८६. आँखों से संकेत करना। ८७ ९२. रुचिकर बातें करना। ८८. मालिक होना। ८९. छद्मवेशी बनना। ९०. परमुखापेक्षी होना। ९१. भूखे रहना, चुप रहना। ९३. नीचता करना। ९४. अलौकिक प्रार्थना करना। ९५. साँप काटना। ९६. पति-पुत्र को लगा कर शाप देना। ९७. क्षुब्ध होना। ९८. रे-तू करना। ९९. नीचता दिखाना। १००. नीचता करना। १०१. मुग्ध होना। १०२. असामाजिक प्रेम होना। १०३. अशक्त होना। १०४. श्रेष्ठ बने रहना। १०५. परेशान होना, छटपटाना। १०६-१०७. सम्बन्ध न रखना। १०८. ललचाया हुआ रहना। १०९. अतृप्त रहना। ११०. फुसलाना। १११. घर में साध्यदीप दिखाना। ११२. तरक्की न होना। ११३. कच्ची रसोई से छुलाना। ११४. निकम्मा होना। ११५. वायदा टालना। ११६. हिचक मिट जाना। ११७. हिचकना या डरना। ११८. दूसरे की उन्नति पर जलन प्रकट करना। ११९. हड़बड़ाया हुआ आना। १२०. सगाई होना। १२१. रुपये पैसे की तंगी होना। १२२. हिम्मत होना। १२३. जी भरना। १२४. अजात करना। १२५. निर्जन स्थान में पड़ना।

३. बुझौवल

१. अँउठा[1] नियर पेड़ हे, दउरा नियर पत्ता।
एके एक फरे हे, घउद[2] लग के पके हे।—कुम्हार का चाक।

२. "अँतड़ी पर पतड़ी, पाँच गो मजुर।
घुर जो मजुर, हम जाहिअउ दूर।"—कौर।

३. अवघट[3] घाट घड़ा न डूबइ, हाथी खड़े निहाय।
आग लगई इ घाट में, कि चिड़ई पियासल जाये।—ओस।

४. आधा धुप्पा, आधा छइयाँ,
बतवे जे होवे बतवइया।—खटिया।

५. इक मदिल में दु दरवाजा।—नाक।

६. उठे त कनकन मस्से, बैठे त कहराय।
दिन भर लाखो जिउ मारे, अपने कुछ न खाय।—जाल।

७. उमत के फूल, कोई चूमऽ न हइ।
झरझर गिरइ, कोई चूनऽ न हइ।—वर्षा की बूँद।

८. एक घड़ा में दुरंग पानी।—अंडा।

९. एन्ने गेली, ओन्ने गेली, गेली कलकत्तवा।
बत्तीस गो पेड़ देखली, एके गो पतवा।—जीभ।

१०. एक चिरैयाँ रखनी,[4] खूँटा पर बसनी।
तब चलइ रग-दग, तब कमर कसनी।—तलवार।

११. एन्ने नदी, ओन्ने नदी, बीच में ककैया[5]।
फरे के लदबुद, मुँह के मिठैया।—सिंघारा।

१२. एन्ने नदी ओन्ने नदी, बीच में हवेली।
करे लगल डगमग, घर दे अघेली।—नाव।

१३. एक गाँव में ऐसन देखली, बानर दूहे गाय।
छाली काट के बीग दे, दही लेलक लटकाय।—ताड़ी।

१४. एगोफूल छिहत्तर मतिया, जे न बूझे मूरख के नतिया।—केला।

---

१. अँगूठा। २. गुच्छा। ३. कठिन। ४. मजेदार। ५. काँटा।

१५. एक छौंरा के नकिए टेढ,
एक छौंरा के पेटवे कटल ।—चुट, गेहूँ ।

१६. करिया कुत्ता बन में सुता,
मारइ लात, चेहा के उठा ।—करिग[1] ।

१७. "कबूतर के अगारी ही, चोंच न समझिहऽ ।
बकरी के बीच ही, पेट न समझिहऽ ।
बूझ न पइहऽ, त मुँह न समझिहऽ ।—क ।

१८. करिया बिलाई के हरियर पुच्छ ।—ताड़ ।

१९. करिया ही हम करिया ही,
करिया बन में रहऽ ही,
ललका पनिया पीअऽ ही ।—जूँ ।

२०. कारी गइया, आरी घेले जाये,
बापे करिया एको घान न खाय ।—रेलगाड़ी ।

२१. काठ के मैया, मटी के बौआ ।
खड़े खड़े, दूध पीए जे बौआ ।—लबनी ।

२२. "गछिया पर रहिला, बकि चिरई न ही,
पानी से भरलःहि, बकि बदरी न ही,
दू ठो आँख हे, पर मनुस न ही ।"—नारियल ।

२३. गोरा बेटा करिया बाप, भीतर पानी ऊपर आग ।—नारियल, चिलम ।

२४. चरटंगपुछे एकटग से, दुटग कहाँ गेल ।
अठटग जनावर मार के, आग लावे गेल ।—बाघ, कुदाल, आदमी, केकड़ा ।

२५. चाँदिलपुर में चोरी होल, सुटनी से पकरायल ।
हरदथी पर हाजिर होल, नोह पर पिटायल ।—जूँ ।

२६. चार नरम चार गरम, चार मरामर ।
एक हरिन के बारह टगड़ी, अलगे अलगे घर ।—महीना, ऋतु, साल ।

२७. छोटे गो टुइयाँ पटर देली सुइयाँ ।
फूटे के न फाटे के, वाहरे ! टुइयाँ ।—केराव ।

२८. जब मारइ तो जी उठइ, बिन मरले मर जाये ।—ढोलक ।

२९. जल काँपइ, जलथैया काँपइ,
पानी में कटोरा काँपइ,
चोर न धरे चोराइ ।—चन्द्रमा ।

---

१. पानी पटाने का एक यंत्र ।

३०. झाँझर कुइयाँ अजब फुलवारी,
न बुझबऽ तो परतो गारी ।—चलनी ।

३१. तनी गो डिबिया में लाल-लाल-बिटिया ।मसूर ।

३२. तनिगों कीया[1], पेटारी भर जाये रे ।
लाख गो दाम मिले, तइयो न बिकाय रे ।—आँख ।

३३. घर गेल मुरगी चलते दूरी,
लावइ चाकू काटइ मूरी ।—कठपेंसिल ।

३४. दू खड़ा एक पट, ओकर सवा हाथ के कट,
मारे फटाफट, बुझऽ लड़का ही !—ढेकी ।

३५. धरती से साम सुन्नर, बादर में लेखा,
हाय रे परान तोरा, कहियो न देखा ।—गूलर के फूल ।

३६. नौ सै बढ़ई, नौ सौ लोहार,
तइयो न कटे, झुनझुनमा पहार ।—ओस ।

३७. पहिले ढेरी अमे देलक पीछे दुहलक गाय ,
बचल रहल, गेल पेट में, मक्खन हाट बिकाय ।—पोस्ता, अफीम ।

३८ फरइ न फूलई, सूप भर झरइ ।—बहुरमा ।

३९. बिन हाथ, बिन पैर, पहाड़ चढल जा हे,
बूझऽ जी लोगन, जनावर के जा हे !—धुँआ ।

४०. भगवान बबा के अनगिनित गाय,
रात बिआये, दिन कहाँ जाये !—तारे ।

४१. मटर गोलगोल, मटर काला,
मटर सिबसिब ।—गोलमिर्च ।

४२. मट्टी के घोड़ा, मट्टी के लगाम,
ओकरा पर चढे, लदबदिया जवान ।—भात ।

४३. राजा के बेटी, करिया चोटी,
रात बधावे, भोर खुलावे ।—अंधकार ।

४४. लरबर के डाल देली, कड़ा करके निकाल लेली ।—रोटी ।

४५. लागा कहईं तो ना लगई, बभाकहईं लग जाये ।—ओठ ।

४६ लाल ढकना, खरताल ढकना,
खोल खिड़की, पहुँचाओ पटना ।—रेलगाड़ी ।

४७. लाल गइया खर खाये,
पानी पिये मर जाये ।—आग ।

---

१. डिबिया ।

४८ लाल घोड़ा, करिया जीन,
गोर सिपाही, उतरे चढ़े ।—रोटी ।

४६ लाठी पर कोठी, कोठी पर इवइव,
इवइव पर गुजगुज, ओपर करिया पहार ।—आदमी ।

५० लाल छड़ी, मैदान गड़ी ।—शकरकंद ।

५१ लाल मौर है, बकि मुरगा न ही,
चार टाँग है, बकि घोड़ा न ही,
लम्बा पूँछ है, बकि हनुमान न ही ।—गिरगिट ।

५२ सब कोई चल गेल, मकोला दाई घर में ।—चूल्हा ।

५३ सब कोई चल गेल, बुढ़वा रह गेल लटकल ।—ताला ।

५४ हरदी के गाद गूद, पीतल के लोटा,
जे न बूझे से, बानर के बेटा ।—बेल ।



परिशिष्ट

मगही लोक-साहित्य का संग्रह-विवरण

(क) मगही लोककथाओं का संग्रह-विवरण
(ख) ,, लोकगीतों ,, ,, ,,
(ग) ,, लोक कथा गीतों का ,, ,,
(घ) ,, लोकनाट्य गीतों ,, ,, ,,
(ङ) ,, लोकगाथाओं ,, ,, ,,
(च) ,, के प्रकीर्ण साहित्य का संग्रह-विवरण

मगही लोक साहित्य का संग्रह-विवरण

मगही लोक साहित्य के विषय मे अधिकाधिक श्रवण मनन एव सकलन की अभिरुचि तो इन पंक्तियों की लेखिका में प्रारंभ से ही रही है पर व्यवस्थित ढग से उसके सकलन का कार्य सन् १९५७ ई० से प्रारंभ हुआ। यह सन् १९६० ई० तक अबाध रूप से चलता रहा। इस बीच सम्पूर्ण मगह क्षेत्र का भ्रमण किया गया और अधिक से अधिक महानुभावों एव देवियों का सान्निध्य प्राप्त किया गया।

लोक साहित्य सग्रह का यह कार्य जितना ही कष्ट साध्य था उतना ही मनोरजक भी था। कष्ट साध्य इस अर्थ मे कि विभिन्न लोकगीतों लोककथाओं लोकनाटकगीतों आदि के सकलन के लिए उपयुक्त एव विश्वसनीय कथावाचक का अन्वेषण बडा दुष्कर होता। फिर उनको बैठा कर उनके मुख से फूटते लोकगीतों आदि को सचष्ट भाव मे लिपिबद्ध करने का कार्य तो और कठिन होता। वे प्रवाह के साथ गाते चलते जब कि उतनी ही क्षिप्रता के साथ लेखन सभव नहीं हो पाता। क्रम सगति के लिए यदि कुछ पीछे ले जाया जाता तो प्रवाह खण्डित हो जाता। और फिर प्रगति में बाधा पड जाती।

पर यह कार्य अत्यन्त मनोरजक भी था। इसी के फलस्वरूप मगह जीवन के वास्तविक स्वरूप से निकट सम्पर्क स्थापित करने का सौभाग्य मिला। इससे जहा मगह क्षेत्र की सांस्कृतिक गरिमा एव एकता की झाँकी मिली वहा मगही लोकसाहित्य को प्रकाश मे लाने के लिए अथक श्रम की प्रेरणा भी मिलती रही। जहा मगध क्षेत्र की विभिन्न स्थानीय विशेषताओं के फलस्वरूप से परिचित होने का अवसर मिला वहा विभिन्न रीति रिवाजों म समानताओं एव भिन्नताओं का भी बोध हुआ।

इस क्रम में अनेक जातियो क सम्पर्क मे आने का भी अवसर मिला। एक ही ग्राम म अनेक जातिया रहती मिलीं—यथा —ब्राह्मण क्षत्रिय भूमिहार कायस्थ यादव, तेली सुरी धानुक कोयरी, तमोली मल्लाह, लोहार आदि। फिर किसी ग्राम मे किसी जाति की प्रधानता है, किसी म किसी अन्य की। सबम एक बात दर्शनीय है—वह है—इनका परस्पर साहाय्य भाव। इन विविध जातियों में अनेक रीति रिवाज समान हैं और अनेक विभिन्न हैं पर इनसे इनके सामाजिक सगठन म कोई अन्तर नही आता। इन विभिन्न जातियों का अलग साहित्य भी उपलब्ध होता है, जिसमें उनके स्वभाव, सस्कार विचार आदर्श आदि के अध्ययन में अति सुविधा हो सकती है।

कथावाचक और गायक के रूप में पुरुष और नारी दोनों के दर्शन हुए। कुछ लोकसाहित्य तो स्त्री वर्ग के बीच विशेष प्रचलित हैं और कुछ पुरुष वर्ग के बीच और कुछ सामान्य रूप से दोनों के बीच। फिर इन कथा वाचकों एव गायकों की अवस्था दस साल से लेकर साठ साल तक की है। बालगीत, चकचन्दा गीत आदि के गायक प्राय बालक हैं। गाथा गीतों के गायक प्राय

प्रौढ़ पुरुष हैं। होली, चैती, कजरी आदि उल्लास के गीत युवक वर्ग के बीच अधिक लोकप्रिय हैं। महिलाओं में अवस्था के नियन्त्रण पर किसी का ध्यान नहीं है। सभी अवस्था की महिलाएँ सोल्लास लोकगीत गातीं, कथा कहतीं और सुनती हैं। हाँ, सामयिक लोकगीतों में विशेषत नयी उम्र की महिलाओं को अधिक दिलचस्पी है।

गीत गाने वाली महिलाएँ भी दो प्रकार की मिलीं—(१) समूह के साथ स्वर मिला कर गा लेती हैं और (२) स्वतन्त्र रूप से गाती हैं। स्वतन्त्र रूप से गानेवाली महिलाओं को अपने क्षेत्र में पर्याप्त लोकप्रियता प्राप्त है। कुछ व्यवसायी गायिकाएँ भी होती हैं, जो विविध मांगलिक अवसरों पर गीत गा कर पारिश्रमिक लेती हैं। इनमें 'पमेरिनी' जाति की महिलाएँ भी हैं, जो बड़े मधुर कंठ से गीत गातीं और शुभ अवसरों पर आमन्त्रित होकर पारिश्रमिक पाती हैं। बक्खो-बखाइन, नट नटी, पँवरिया आदि इसी वर्ग में हैं।

इन ग्रामीण नर नारियों में अनेक के पास अपार साहित्य-वैभव है, पर ये निरक्षर हैं। श्रुति-परम्परा से ही इन्होंने सारे साहित्य को कण्ठाग्र किया है। अपने साहित्य-कोश को समृद्ध करने के लिए ये अपने कार्य व्यापार को छोड़ते नहीं—कोई कृषि विशेषज्ञ हैं, कोई छान छौनी के कारीगर हैं कोई बैल लादते हैं, कोई बोझा ढोते हैं, कोई पूजा पाठ में संलग्न हैं, कोई घर के अन्य कार्यों में। पर इन्हीं कार्यक्रमों के बीच वे क्या कुछ सीख लेते हैं, जान लेते हैं, कहा नहीं जा सकता। अपने कार्यों के ही बीच क्रमशः ये साहित्य-भंडारी भी बन जाते हैं। ग्राम में उनका सम्मान बढ़ जाता है। लोग उन्हें 'गुनी' (गुणी) की संज्ञा देते हैं।

कुछ इन्हीं अनुभवों की थाती के साथ मगही लोक-साहित्य का अत्यन्त संक्षिप्त संग्रह-विवरण प्रस्तुत किया जाता है—

(क) मगही लोक कथाओं का संग्रह विवरण[1]

क्र० सं०	पृ०	वस्तु०	स्थान०	कथावाचक	विशेष
१	१—२	अमला	नालंदा	बरती	×
२	२—४	राजा के बेटी कुम्हार घर	राजगृह	फुलेसरी	×
३	५—६	धरम के जय	बेगमपुर (पटना)	कुलवन्ती	×

१. प्रस्तुत संग्रह की मगही लोककथाओं में अधिकांश को लिपिबद्ध इन पंक्तियों की लेखिका ने स्वयं किया था। इस क्रम में जिन ग्रामों एवं कथावाचकों का सम्पर्क प्राप्त हुआ, उनका नामोल्लेख भर उपर्युक्त विवरण में किया जा रहा है। जिन क्षेत्रों का भ्रमण कई कारणों से सम्भव न हो सका, वहाँ के नमूने डॉ० ग्रियर्सन के ग्रन्थों से उद्धृत किये गये हैं। इनसे सम्बद्ध विवरण तथा विशेष के साथ उपन्यस्त हैं। कथाओं के संग्रह में जिन सज्जनों से विशेष सहायता मिली है, उनके नाम सादर उल्लिखित किये जा रहे हैं —

१. स्वर्गीय बलदेव नारायण—एडवोकेट हाईकोर्ट, पटना।
२. श्री चन्द्रशेखर प्रसाद सिन्हा—राजगीर, पटना।
३. प्रो० रामेश्वर मिश्र—दर्शन विभाग, नालंदा कालेज, बिहार, पटना।

क्र० सं०	पृ०	वस्तु०	स्थान	कथावाचक	विशेष
४	६—७	बिसवास के महिमा	दानापुर	गनेस	×
५	७—८	लछमिन मेहरारू बस में	मनेर	लछमी	×
६.	८—९	जितिया के महातम	गुमफ्पुर (नवादा)	निलेसरी	आश्विन में जितिया व्रतके अवसर पर कथित।
७	९—१०	डरपोक बनिया	सेनदह	सुगन्न	×
८.	१०—११	गोधन के महातम	नेहुसा	पारबती	कात्तिक में गोधन या भाई दूज के अवसर पर कथित।
९	११—१२	करनी के फल	दौलतपुर	बालासाव	×
१०,	१२	सेठ आउ कुंजड़ा	गया	मगरू कुंजड़ा	×
११	१२—१३	लाला जी के करतब	जहानाबाद	सोदागर साव	×
१२,	१३,	बाघ के मउअत	कउआकोल	ठाकुरी साव	×
१३,	१४	धोखा के फल	भिसिर बिगहा	बोधी महतो	×
१४,	१५	छपोर सस	बड़हिया	नन्हकू	×
१५	१५—१७	डगर टापर	जमुई	(श्री रामेश्वर मिश्र के सौजन्य से प्राप्त)	
१६,	१७	बेरी से धोखा	दक्षिण मुंगेर और बाढ़ १	×	×
१७	१७—१८	सीख	दक्षिण मुंगेर और बाढ़ २	×	×
१८,	१८—१९	मुद्धा डर	पलामू	(डॉ० ग्रियर्सन के ग्रन्थ से उद्धृत)	
१९,	१९	धोखा के बदला	लतेहार	बालचन्द	×
२०,	१९—२१	राजा फोलन	लतेहार	हुँराइ	×
२१,	२१—२२	मेल के महिमा	धनबाद	किसुन	×
२२,	२२—२३	चोरवा के खिस्सा	हजारीबाग	बदरी	×

कुमार टोली

---

४. श्री हरिदास ज्वाल —प्रधानाध्यापक, गौतम बुद्ध उच्च विद्यालय, जहानाबाद, गया।

५. श्री भुवनेश्वर प्रसाद—कोर्ट कम्पाउन्ड, राँची।

६. श्री कुनरु साह—अध्यापक, कोर्ट कम्पाउन्ड, राँची।

१ और २ — ये "मैथली मिश्रित मगही" के नमूने हैं। दोनों कथाएँ डॉ० ग्रियर्सन के ग्रन्थ से उद्धृत हैं। इन दो कथाओं के बाद पुन "आदर्श मगही" क्षेत्र से प्राप्त कथाएँ दी गई हैं। देखिए—पृ० १८ से २५ तक।

क्र० सं	पृ०	वस्तु०	स्थान०	गायक	अवसर	विशेष
२३	२३—२४	सतनारायन भगवान के पूजा	हजारीबाग, राजा डेरा		रोदन दरबान	×
२४.	२४—२५	एक मुख्य सिपाही केर कहनी	राँची		चितावन	×
२५.	२५	असार क काम	सिंहभूम	(डॉ० ग्रियर्सन के ग्रन्थ से उद्धृत)		
२६	२६.	फौजदारी कचहरी में अपराधी का बयान	मानभूम	(डॉ० ग्रियर्सन के ग्रन्थ से उद्धृत)		
२७.	२६—२७	लालच के फल	बामरा			
२८.	२७—२८	बाप के ममता	हजारीबाग जिला			
२९.	२९—३०	बाप के ममता	राँची जिला			
३०.	३०—३१	अपराधी के बयान	मयूरभंज स्टेट			
३१.	३२.	धरम संकट	मालदा जिला के पश्चिम			

(ख) मगही लोकगीतों का संग्रह-विवरण[1]

(१) सोहर

१.	३३.	सोहर	जहानाबाद (गया)	सुन्दरी	पुत्र-जन्म	×
२.	३३—३४	सोहर	मुसल्लहपुर (पटना)	पुनपुन धोबी	पुत्र-जन्म	यह दृश्यगीत है।

(२) जनेऊ

(३)	३४	जनेऊ	मखदुमपुर (गया)	सिवरती ,,	जनेऊ संस्कार	×
४.	३५.	जनेऊ				

---

१. प्रस्तुत संग्रह के मगही लोकगीतों को इन पंक्तियों की लेखिका ने स्वयं लिपिबद्ध किया था। इस क्रम में गया और पटना जिले के गायक और गायिकाओं से ही संबंध स्थापन संभव हो सका, अतः इन्हीं दो क्षेत्रों के लोकगीतों के कुछ चुने नमूने यहाँ दिए गये हैं। प्रस्तुत विवरण में उनके स्थान और नाम का उल्लेख मात्र किया गया है। गीतों के संग्रह में जिन देवियों से मुझे प्रचुर अधिक सहायता मिली है, उनके नाम सादर उल्लिखित हैं :—

१. श्रीमती शान्ति देवी—मन्दुरहट्टा, पटना सिटी।
२. श्रीमती पुष्पा अर्याणी—राजेन्द्र नगर, पटना।
३. श्रीमती धनवन्तिया—उमरी बाजार, गया।
४. श्रीमती धान कुमारी—मुगलपुर, पटना।

क्र०	सं० पृ०	वस्तु०	स्थान	गायक	अवसर	विशेष०
(३) विवाह गीत						
५.	३५.	विवाह गीत	टेंहटा (गया)	भागमन्ती	विवाह संस्कार	×
६.	३६.	,, ,,	उमरी बाजार (गया)	घनमन्तिया	,,	×
७.	३७.	,, ,,	,,	,,	,,	×
८.	३७.	,, ,,	टाली (गया)	सोहागो	,,	×
९.	३७—३८	,, ,,	,, ,,	,,	,,	×
१०.	३८	,, ,,	चाकन्द (गया)	धानमती	,,	×
११.	३८—३९	,, ,,	रजौली (गया)	पतिया	,,	खेलवनी जाति की स्त्री से प्राप्त।
(४) जँतसार						
१२	३९	जँतसार	जामुक (गया)	जानकी	जाँता चलाते समय गाया जाता है।	×
१३	४०	,,	नासरीगंज (पटना)	सोनमा	,,	×
१४.	४०	,,	कनसारी (पटना)	बिसेसिया	,,	×
१५.	४१	,,	उमरी बाजार (गया)	घनमन्तिया	,,	×
१६.	४१	,,	,, ,,	,,	,,	×
१७.	४१-४२	,,	मुसल्लहपुर (पटना)	धानकुमारी	,,	×
१८.	४२-४३	,,	गोरहट्टा (पटना)	भगतलाल	,,	×
१९	४३	,,	मुसल्लहपुर (पटना)	धानकुमारी	,,	×
२०.	४३-४४	,,	,, ,,	,,	,,	×
(५) ऋतुगीत						
२१.	४४-४५	होली	पटना सिटी	रामचन्दर साहु	फागुन में गाया जाता है।	होली गीत प्राय पुरुष गाते हैं।
२२.	४५	,,	,,	,,	,,	,,
२३.	४५-४६	,,	गोरहट्टा (पटना)	भगतलाल	,,	,,
२४	४६	,,	मुसल्लहपुर (पटना)	धानकुमारी	,,	,,
२५.	४६	चैती	मल्ला (पटना)	गोवरधन	चैतमास में ये गीत गाये जाते हैं।	गायक प्रधानत पुरुष होते हैं।
२६.	४७		गोरहट्टा (पटना)	भगतलाल	,,	,,

५. श्रीमती लाल मुनि—गोलघर, पटना।

६. श्रीमती प्रतिमा अर्याणी—जहानाबाद, गया।

७. श्रीमती माछो देवी—महाराजगंज, पटना।

क्र. सं०	पृ०	वस्तु०	स्थान०	गायक	अवसर	विशेष
२७	४७-४८	बरसाती	उमरी बाजार (गया)	धनमन्तिया	बरसात में गाये जाते हैं।	गायिका प्रधानत स्त्रियाँ होती हैं।
२८	४८-४९	चौमासा	,,	,,	,,	,,
२९	५०-५१	बारहमासा	गोलघर (पटना)	लालमुनि	,,	,,
(६) देव गीत						
३०	५१-५२	शिव पार्वती गीत	मच्छरहट्टा (पटना)	शान्तिदेवी	मांगलिक दृष्टि से सभी शुभ अवसरों पर गेय।	ये सभी पौराणिक देवी-देवता हैं। इनसे सम्बद्ध गीत पौराणिक देव-गीत की श्रेणी में आते हैं।
३१	५२-५३	,,	,,	,,	,,	,,
३२	५३-५४	,,	उमरी बाजार (गया)	धनमन्तिया	,,	,,
३३	५४-५५	,,	मुबारकपुर (गया)	पारवती	,,	,,
३४.	५५-५७	राम-सीता का गीत	बिगुल (मुंगेर)	रामकुँअर	,,	,,
३५	५७-५८	,,	उमरी बाजार (गया)	धनमन्तिया	,,	,,
३६	५८	,,	,,	,,	,,	,,
३७	५९	कृष्ण का गीत	,,	,,	,,	,,
३८.	६०	शीतलादेवी का गीत	गोलघर (पटना)	लालमुनि	चेचक निकलने पर या शीतलादेवी की पूजा में गेय।	ये ग्राम देवी हैं।
३९.	६०-६१	,,	,,	,,	,,	,,
४०.	६१-६२	,,	,,	,,	,,	,,
४१.	६२	गंगा जी का गीत	मच्छरहट्टा (पटना)	पारवती	गंगा-पूजन में गेय।	ये पौराणिक देवी हैं।
४२	६३	,,	,,	सुरसती	,,	,,
४३.	६३-६४	,,	,,	,,	,,	,,
४४	६४	परमेसरी देव का गीत	नौआमा (गया)	मुनिया	मांगलिक दृष्टि से गेय।	ये ग्राम देवता हैं।
४५	६५	ग्राम देवों का गीत	,,	,,	,,	,,
४६	६५-६६	,,	धानाटिहरी (गया)	सहोदरी	,,	,,
४७	६६	संझा माई का गीत	मगरमा (गया)	दुलरनिया	,,	,,
४८.	६६-६७	कर्मा धर्मा का गीत	राजगीर (पटना)	जिरिया	कर्मा व्रत के अवसर पर गेय।	यह भाई के लिए किया गया व्रत है।
४९.	६७-६८	जितिया का गीत	,,	,,	जितिया के अवसर पर गेय।	पुत्र के लिए किया गया व्रत है।

क० सं०	पृ०	वस्तु०	स्थान०	गायक	अवसर	विशेष
५०.	६८	छठ का गीत	मुसल्लहपुर (पटना)	धानकुमारी	छठ के अवसर पर गेय।	छठ सूर्य का व्रत है।
५१.	६८-६९	”	”	”	×	×
५२.	६९	निर्गुण गीत	पटना	निरगुनिया साधु	×	×
५३.	७०	”	”	”	×	×

(७) विविधगीत

क० सं०	पृ०	वस्तु०	स्थान०	गायक	अवसर	विशेष
५४.	७०-७१	झूमर	गोसलबीघा (गया)	जगिया	प्रायः विवाह के अवसर पर गेय।	×
५५.	७१	”	”	”	”	×
५६	७२	”	मदासी (गया)	सुन्दरी	”	×
५७	७२-७३	”	”	”	”	×
५८.	७३	”	”	”	”	×
५९.	७४	”	मुसल्लहपुर (पटना)	धानकुमारी	”	×
६०.	७४	बिरहा	कउआकोह (पटना)	कलूठ धोबी	”	पुरुषों के गीत हैं।
६१.	७५	”	जिला	”	”	”
६२.	७५	”	मुसल्लहपुर (पटना)	फुन फुन धोबी	”	”
६३.	७५	”	”	”	”	”
६४.	७६	”	”	”	”	”
६५.	७६.	बिरहा	करन बसनी (पटना)	बांगू धोबी	×	पुरुषों के गीत हैं
६६.	७६	”	”	”	×	×
६७.	७७	”	”	”	×	×
६८.	७७.	कजरी	जहानाबाद (गया)	प्रतिमा	वर्षाऋतु में गेय	×
६९.	७७-७८	”	”	”	”	×
७०.	७८	गोदना	सदीसोपुर (पटना)	मुसिया गोदहारिन	गोदना गोदते समय गेय।	×
७१.	७८-७९	लचारी	मुसल्लहपुर (पटना)	फुनफुन धोबी	×	×

(८) बालगीत

क० सं०	पृ०	वस्तु०	स्थान०	गायक	अवसर	विशेष
७२.	७९-८०	लोरी	मच्छरहट्टा (पटना)	शान्ति देवी	×	×

क्र. सं०	पृ०	वस्तु०	स्थान०	गायक	अवसर	विशेष०
२७	४७-४८	दस्मासी	उपरी बाजार (गया)	धनमन्तिया	बरसात में गाये जाते हैं।	गायिका प्रधानत स्त्रियाँ होती हैं।
२८	४८-४९	चौमासा	"	"	"	"
२९	५०-५१	बारहमासा	गालबर (पटना)	लालमुनि	"	"
(६) देव गीत						
३०	५१-५०	शिव पार्वती गीत	मन्छरहा (पटना)	शान्तिदेवी	मगांलिक दृष्टि से सभी शुभ अवसरों पर गेय।	ये सभी पौराणिक देवी देवता हैं। इनसे सम्बद्ध गीत पौराणिक देव-गीत की श्रेणी में आते हैं।
३१	५०-५२	"	"	"	"	"
३२	५२-५३	"	उपरी बाजार (गया)	धनमन्तिया	"	"
३३	५३-५५	"	मुबारकपुर (गया)	पारवती	"	"
३४	५५-५७	राम-सीता का गीत	त्रिपुर (मुंगेर)	रामकुँअर	"	"
३५	५७-५८	"	उपरी बाजार (गया)	धनमन्तिया	"	"
३६	५८	"	"	"	"	"
३७	५९	कृष्ण का गीत	"	"	"	"
३८	६०	शीतलादेवी का गीत	गालबर (पटना)	लालमुनि	चेचक निकलने पर या शीतलादेवी की पूजा में गेय।	ये ग्राम देवी हैं।
३९	६०-६१	"	"	"	"	"
४०	६१-६२	"	"	"	"	"
४१	६२	गंगा जी का गीत	मन्छरहा (पटना)	पारवती	गंगा-पूजन में गेय।	ये पौराणिक देवी हैं।
४२	६२	"	"	"	सुरसती	"	"
४३	६३-६४	"	"	"	"	"	"
४४	६४	परमेसरी देव का गीत	नौबामा (गया)	मुखिया	मांगलिक दृष्टि से गेय।	ये ग्राम देवता हैं।
४५	६५	पच देवों का गीत	"	"	"	"
४६	६५-६६	"	धानाढिहरी (गया)	सहोदरी	"	"
४७	६६	नमका माई का गीत	मसरखा (गया)	कुलवन्तियाँ	"	"
४८	६६-६७	कर्मा धर्मा का गीत	राजगीर (पटना)	विरिया	कर्मा व्रत के अवसर पर गेय।	यह भाई के लिए किया गया व्रत है।
४९	७६८	जितिया का गीत	"	"	जितिया के अवसर पर गेय।	पुत्र के लिए किया गया व्रत है।

क० सं०	पृ०	वस्तु०	स्थान०	गायक	अवसर	विशेष
५०,	६८	छठ का गीत	मुसल्लहपुर (पटना)	धानकुमारी	छठ के अवसर पर गेय।	छठ सूर्य का व्रत है।
५१.	६८-६६	,,	,,	,,	×	×
५२.	६६	निर्गुण गीत	पटना	निरगुनिया साधु	×	×
५३.	७०	,,	,,	,,	×	×

(७) विविधगीत

क० सं०	पृ०	वस्तु०	स्थान०	गायक	अवसर	विशेष
५४.	७०-७१	झूमर	गोजलबीघा (गया)	जगिया	प्राय विवाह के अवसर पर गेय।	×
५५.	७१	,,	,,	,,	,,	×
५६.	७२	,,	मदाबी (गया)	सुन्दरी	,,	×
५७	७२-७३	,,	,,	,,	,,	×
५८.	७३	,,	,,	,,	,,	×
५६.	७४	,,	मुसल्लहपुर (पटना)	धानकुमारी	,,	×
६०.	७४	बिरहा	फतुआखोह (पटना)	कलूट धोबी	,,	पुरुषों के गीत हैं।
६१.	७५	,,	निला	,,	,,	,,
६२.	७५	,,	मुसल्लहपुर (पटना)	फुन फुन धोबी	,,	,,
६३.	७५	,,	,,	,,	,,	,,
६४.	७६	,,	,,	,,	,,	,,
६५.	७६.	बिरहा	कल्लू बस्ती (पटना)	बोरू धोबी	×	पुरुषों के गीत हैं
६६.	७६	,,	,,	,,	×	×
६७.	७७	,,	,,	,,	×	×
६८.	७७.	कजरी	जहानाबाद (गया)	प्रतिभा	वर्षाऋतु में गेय	×
६६.	७७-७८	,,	,,	,,	,,	×
७०.	७८	गोदना	सदीसोपुर (पटना)	मुसिया गोदहारिन	गोदना गोदते समय गेय।	×
७१.	७८-७६	लाचारी	मुसल्लहपुर (पटना)	फुनफुन धोबी	×	×

(८) बालगीत

क० सं०	पृ०	वस्तु०	स्थान०	गायक	अवसर	विशेष
७२.	७६-८०	लोरी	मच्छरहट्टा (पटना)	शान्ति देवी	×	×

क्र०सं० पृ०	वस्तु	स्थान०	गायक	अवसर	विशेष०
७३ ८०	,,	,,	,,	×	×
७४ ८०	,,	धनगांवा (गया)	मुनिया	×	×
७५, ८०	,,	(जहानाबाद) गया	मुनभा	×	×
		गोरछनी			
७६, ८०	,,	,,	,,	×	×
७७, ८१	मनोरंजन गीत	जहानाबाद (गया)	विजय कुमार	×	×
७८, ८१	,,	,,	,,	×	×
७९, ८२	,,	,,	,,	×	×
८०, ८२–८३	पहाना गीत	भेलावर (गया)	बदरी साव	×	×
८१, ८३	,,	,,	,,	×	×
८२, ८३–८४	चकचन्दा के गीत	जहानाबाद (गया)	विजय कुमार	गणेश चौथको	×
८३ ८४	,,			बालक समूह	
८४, ८४	,,			में गाते हैं।	×
८५, ८५	,,				
८५, ८५	चकचन्दा के गीत	आलमगंज (पटना)	ओम् प्रकाश	,,	×
८६, ८५–८६	,,				
८७, ८६	,,				
८८, ८६–८७	,,				

(ग) लोककथा गीतों का संग्रह विवरण

(९) चौहट

८९, ८७–९१	चपिया का उत्सर्ग	मन्दुरहड़ा (पटना)	शान्ति देवी	×	×
९०, ९१–९३	दोलन का करुण अन्त	जहानाबाद (गया)	भगमनिया	×	×

(१०) जतसार

९१. ९४–९६	मैना का निष्ठुर अन्त	सोनपुर (पटना)	लालमुनि	×	×

(घ) लोकनाट्य गीतों का संग्रह-विवरण

(११) बगुली

९२. ९६–९८	बगुली (नाट्य)	मुसल्लहपुर (पटना)	धानकुमारी	×	×

(१२) जाट-जाटिन

क्र० सं०	पृ०	वस्तु०	स्थान०	गायक	अवसर	विशेष
९२.	९८—९९	जाट-जाटिन (नाट्य)	महाराजगंज	माछो देवी	×	×

(१३) सामा-चकवा

क्र० सं०	पृ०	वस्तु०	स्थान०	गायक	अवसर	विशेष
९३.	९९—१००	सामा-चकवा (नाट्य)	करौता (गया)	जिरवा	×	×

(ङ) लोकगाथाओं का संग्रह-विवरण[1]

क्र० सं०	पृ०	वस्तु०	स्थान०	गायक	अवसर	विशेष
९४.	१००—१३८	लोरकाइन	गोरहट्टा (पटना)	भगतलाल	×	गाथागीतों के गायक पुरुष होते हैं।
९५.	१३९—१४४	गीत राजा	गोपीचन्द	×	×	डॉ० ग्रियर्सन के ग्रन्थ से उद्धृत।
९६.	१४४—१५३	छतरी घुघुलिया	मुसल्लहपुर (पटना)	पुनपुन धोबी	×	×
९७.	१५४—१६१	रेसमा	गोरहट्टा (पटना)	भगतलाल	×	×
९८.	१६२—१७०	कुँवर विजयी	,,	,,	×	×

(च) मगही के प्रकीर्ण-साहित्य का संग्रह-विवरण[2]

		कुल सं०	वस्तु	स्थान
१.	१७१—१८५	१—१६८	कहावत	पटना एवं गया जिले के विविध ग्राम
२.	१८६—१८८	१—१२५	मुहावरे	,,
३.	१८९—१९२	१—५४	बुझौवल (पहेली)	,,

---

१. प्रस्तुत संग्रह की चार गाथाओं को इन पंक्तियों की लेखिका ने स्वयं लिपिबद्ध किया था। ये चारो गाथाएँ पटना जिले के गायकों से ही ली गई थी। इन गाथाओं के अन्य प्रतिरूप भी विभिन्न मगही क्षेत्रों में उपलब्ध होते हैं। प्रस्तुत संग्रह में इन गाथाओं का अत्यन्त संक्षिप्त रूप ही प्रस्तुत किया गया है। मूल गाथाएँ बहुत बड़ी-बड़ी हैं। चेष्टा यही रही है कि मूल घटनाओं, स्थानों एवं पात्रों से सम्बद्ध अंश तारतम्य-समन्वित रूप में अवश्य सामने चला आये। मूल गाथाएँ इन पंक्तियों की लेखिका के पास ही सुरक्षित हैं।

२. मगह-क्षेत्र में प्रचलित कहावतों, मुहावरों एवं बुझौवलों का संग्रह केवल उपर्युक्त दो जिलों से ही संभव हो सका। इनके संग्रह में जिन व्यक्तियों से सराहनीय सहायता मिली है उनके नाम सादर उल्लिखित किये जाते हैं :—

१. पंडित कमलापति शास्त्री, मुबारकपुर (बेलागंज) गया।

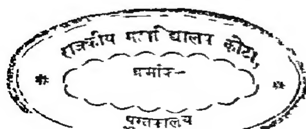
२. श्री हरिदास ज्वाल, जहानाबाद, गया।

३. श्री कृष्णकान्त प्रसाद, टाली, गया।

४. श्री बदरी साहु, मल्लहचक, जहानाबाद, गया।

५. श्री दुखहरण गिरि, ग्रा० मई, पो० पिंजोरा, गया।
६. श्री रामप्यारे साह, करोता, सन्दूराबाद, गया।
७. श्री शिवनाथ प्रसाद, आलमगंज, पटना।
८. श्री विश्वनाथ प्रसाद, मच्छरहट्टा, पटना सिटी।
९. श्री यमुना प्रसाद, (आचार्य), महाराजगंज, पटना।
१०. डॉ० जयनारायण प्रसाद, बिहार शरीफ, पटना।
११ श्री रामदास धोबी, खजांची रोड, पटना।
१२ श्री कल्लू पहलवान, जहानाबाद, गया।
१३. पं० रामनारायण शास्त्री, राष्ट्रभाषा परिषद, पटना।
१४ श्री नन्द किशोर मास्टर, रेडियम रोड, राँची।
१५ श्रीमती कौशिल्या अर्याणी, मच्छरहट्टा, पटना सिटी।
१६ श्रीमती कृष्णा अर्याणी, मच्छरहट्टा, पटना सिटी।
१७ श्री देवेन्द्र कुमार, महाराज घाट, पटना सिटी।

———



Books borrowed from the Library by the students may be retained not longer than one week. A fine of one anna will be charged each day for each volume that is overdue

Borrower's No	Must be returned on or before	Borrower's No	Must be returned on or before

GPB 1220—2 63—40 000